श्री

# जैन ग्रंथावली.

प्रसिद्ध कर्ता.

श्री जैन श्वेताम्बर कॉन्फरन्स.

मुंबई.



वीर संवत् २४३५ विक्रम संवत् १९६५

किंमत रु. ३.

मुंबईमां

( "इंदुप्रकाश स्टीम प्रेस" मां छपाव्युं छे. )

# अनुक्रमणिका.

# आ ग्रंथावलीमां जणावेला संक्षिप्त अक्षरोनी परिभाषा.

| | |
|---|---|
| बृ. | बृहट्टिप्पनिका |
| पा. १. | पाटणनो भंडार नं. १ |
| पा २. | पाटणनो भंडार नं. २ |
| पा. ३. | पाटणनो भंडार नं. ३ |
| पा. ४. | पाटणनो भंडार नं. ४ |
| पा. ५. | पाटणनो भंडार नं. ५ |
| पा. ६. | पाटणनो भंडार नं. ६ |
| जे. जेसल. | जेसलमेरनो भंडार. |
| जेसल. बे. | जेसलमेरनी हंसविजयजीनी करेली तथा हीरालाले करेली बन्ने टीपमां ए ग्रंथ नोंधेल छे. |
| लीं. | लींबडीनो भंडार. |
| खं. | खंभातनो जैनशाळानो भंडार. |
| भा-भाव. | भावनगरनो भंडार. |
| अ. १ | अमदावादनो डेलानो भंडार. |
| अ. २ | अमदावादनो चंचलबानो भंडार. |
| को. | कोडायनो भंडार |
| मुं. | मुंबईनो दशा ओशवाळनो भंडार. |
| मुं.भोईवाडो- | मुंबईनो भोईवाडामांनो दीगंबरीनो भंडार. |
| डे-डेक्कन. | डेक्कन कोलेजनो भंडार. |
| राधन. | राधनपुरनो भंडार. |
| जाम. | जामनगरनो भंडार. |
| सु. | सुरतनो भंडार. |
| प्रो. मणि. | प्रोफेसर मणिलाल नभुभाईए पाटणना भंडारोनी करेली टीपमां आ ग्रंथ नोंधेल छे. |
| नगीनदास-S. K. | खंबातना श्री शांतिनाथजीनो भंडार. |
| रि. ६. | रॉयल एसियाटीक सोसायटीनो रिपोर्ट छठ्ठो. |
| Dec. | डेक्कन कोलेजनो भंडार. |
| A. S. | रॉयल एसियाटीक सोसायटीना रिपोर्ट |
| A. S. 4 | रॉयल एसियाटीक सोसायटीनो चोथो रिपोर्ट. |
| A. S. 5 | रॉयल एसियाटीक सोसायटीनो पांचमो रिपोर्ट. |
| A. S. 6 | रॉयल एसियाटीक सोसायटीनो छठ्ठो रिपोर्ट. |
| P. 3 | पिटर्सनना त्रिजा रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे. |
| P. 4 | पिटर्सनना चोथा रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे. |
| P. 5 | पिटर्सनना पांचमां रिपोर्टमां ए ग्रंथ नोंधेल छे. |
| A. H. | पिटर्सने अमदावादमां करेला कलेकशनमां ए ग्रंथ नोंधेल छे. |
| Gov. | गव्हरमेन्ट ते रायल एसियाटिक सोसायटीनो रिपोर्ट. |
| K. K. | पिटर्सननी शोधखोल दरम्यान कोटाना भंडारमां तेना जोवामां आवेला ग्रंथोमांनो सदरहु ग्रंथ छे. |

# भंडारोना नाम तथा चोक्कस ठेकाणानी माहिती.

नीचे जणावेला भंडारोनी टीपो अमारा तरफथी माणसो मोकलीने तैयार करावेली छे. सदरहु भंडारोना जुदा जुदा नामो देखाडवा खातर जैनागमलीस्टना सामेना पेजमां नीचे प्रमाणे सोळ कोलम आपेलां छे:—

पेला कोलममां बृहट्टिप्पनिका केजे सं. १५५६ मां कोई आचार्ये संस्कृतमां लखेल छे तेमां ते ग्रंथ नोंधेल छे के केम ते जणाव्युं छे.

बाकीना पंदर कोलममां नंबरवार नीचे मुजबना भंडारो नोंधी तेमां ते छे के केम ते जणाव्युं छे.

१ पाटणनो भंडार नं. १ ते झवेरीवाडामां श्रीपार्श्वनाथजीना भंडारने नामे ओळखाय छे अने ते शेठ वाडीलाल हीराचंदनी देखरेखमां छे.

२ पाटणनो भंडार नं २ ते संघवी पाडामां लोढी पोशालना उपाश्रयनो भंडार छे अने ते पाटवानी देखरेखमां छे.

३ पाटणनो भंडार नं. ३ ते फोफलिया वाडानी आगळी शेरीनो भंडार छे अने ते शेठ हालाभाईनी देखरेखमां छे.

४ पाटणनो भंडार नं. ४ ते फोफळियावाडानी वखतजीनी शेरीमां संघनो जूनो भंडार छे अने ते संघनी देखरेखमां छे.

५ पाटणनो भंडार नं. ५ ते फोफलिया वाडानी वखतजीनी शेरीमां संघनो नवो भंडार छे अने ते पण संघनी देखरेखमां छे.

६ पाटणनो भंडार नं. ६ ते झवेरी वाडामां शा. चूनीलाल मूळचंदनो घरभंडार छे अने ते तेमनीज देखरेखमां छे.

७ जेसलमेरनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेख नीचे छे.

८ लींबडीनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेख नीचे छे.

९ खंभातनी जैनशाळानो भंडार ते शेठ पोपट अमरचंदनी देखरेखमां छे.

१० भावनगरनो भंडार ते त्यांना संघनी देखरेखमां छे.

११ अमदावादनो डेलानो भंडार ते शेठ मंगलदास ताराचंदनी देखरेखमां छे.

१२ अमदावादनो चंचलबानो भंडार ते शेठ उमाभाईना घरवाळा बाई चंचलबाईनी देखरेखमां छे.

१३ कोडायनो भंडार ते त्यांना सदागम प्रवृत्ति खाताना ट्रस्टीओनी देखरेखमां छे.

१४ मुंबईनो दशा ओशवाळोनो भंडार ते मुंबईमां वसता दशा ओशवाळभाईओनी ज्ञातिनी देखरेखमां छे अने ते मांडवी बंदरपर आवेला श्री अनंतनाथजीना देरासरमां रहेल छे.

१५ डेक्कन कॉलिजनो भंडार ते पुना शहरेमां खडकी उपर डेक्कन कॉलेजनो जे पुस्तकसंग्रह छे ते छे अने ते सरकारनी देखरेखमां छे.

श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्स ओफीस
पायधुनी, पोष्ट नं. ४ मुंबई.

उमेदचंद दोलतचंद बरोडीया.
आसिस्टन्ट सेक्रेटरि,
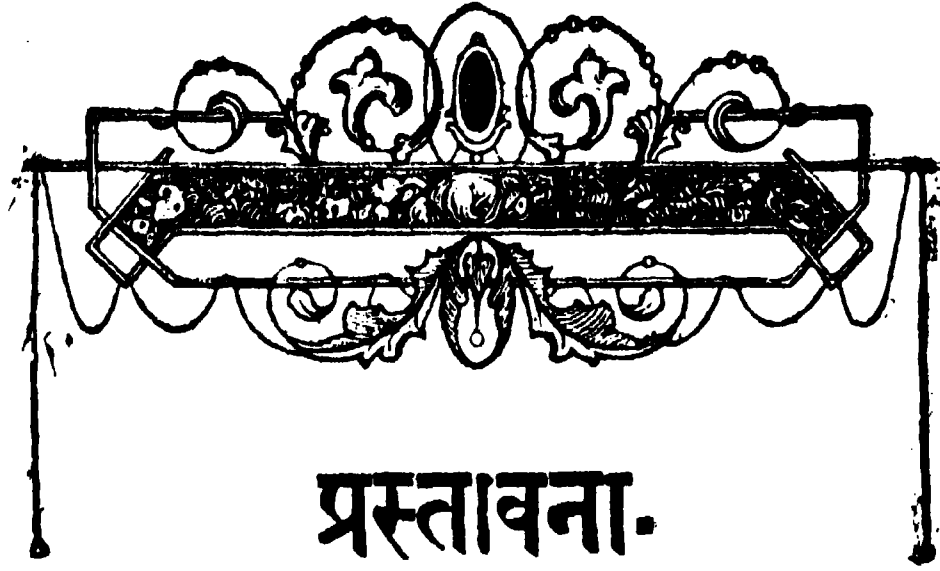
# प्रस्तावना.

विस्तीर्ण आर्यावर्तना सुस्थित प्रदेशोमां ज्यारे पंचम महाज्ञानधारक चरमतीर्थंकर श्री महावीरस्वामी विचरता हता, अने अज्ञानरूपी अंधकारमां मूर्च्छित पडेला बालजीवोने ज्ञानरूपी जाज्वल्यमान सूर्यना प्रकाशवडे पदार्थनुं सत्य स्वरूप दर्शावी तेनुं महात्म्य प्रत्यक्ष दाखला दलीलोथी सिद्ध करी बतावी तेमना उपर अनंत उपकार करता हता. ते समयना ते उच्चतम ज्ञानना महात्म्यनुं वर्णन करवुं ते केवळ झगझगता अग्नि उपर हाथ मुकवाथी थनार भावी चमत्कारनो अनुभव करी अग्निनी प्रखरतानुं वर्णन करवा सरखुंज केहेवाय. छतां कुदरती नियमे आवी प्रखर वस्तु पण केवी रीते काळना वहेवा साथे ओछापणने अंगीकार करे छे, ते जणाववा खातर अत्रे थोडुंक जणाववानी अगत्यता छे. जेम जेम समय वितवा मांड्यो तेम तेम उपरोक्त महाज्ञाननी प्रखरताए कुदरती रीते समुद्रनी भरती ओट जेवुं स्वरूप धारण कर्युं, अने ज्ञाननी न्युनता थती चाली. महाज्ञानी तीर्थंकर महाराजे पण पोताना आगममां कालनुं स्वरूप वर्णवतां उत्त्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी एवा बे प्रकारना काळ दर्शावी तेना छ भाग जणाव्या छे. ए छ भागने कोई काळ कहे छे, कोई युग कहे छे अने कोई आरा (आरक) कहे छे. उत्त्सर्पिणी काळमां प्रत्येक वस्तुनुं उत्कर्षपणुं होय छे, अने अवसर्पिणीकाळमां अवनतपणुं होय छे. ते कुदरती नियमने अनुसरीने सांप्रत चालता अवसर्पिणी काळे पोताना स्वभावनो प्रभाव देखाडवानी शरुआत करी.

श्री महावीरस्वामी मोक्षगत थया तेमनी साथे ते महाज्ञाने जाणे मोक्ष जेवा शुचिस्थानमां अचळवास करवानुं पसंद कर्युं होयनी! तेम धीमे धीमे ज्ञाननी न्युनता थवी शरु थई. पूर्वे ते वखतना पुण्यवान प्राणीओ स्वात्मशक्तिने क्षणमां तेना कर्तव्य स्थानमां मूकी उपर जणावेलुं महाज्ञान प्राप्त करता हता, अने ते ज्ञानने के जे आत्मानो संपूर्ण प्रगट करेलो गुणज छे ते जाणीने पोताना आत्मरूपी भंडारमां राखी अन्यना आत्मभंडारमां राखवा माटे अत्यंत सहेलाइथी टुंक महेनते सरळ मार्ग बतावावाने शक्तिमान थता हता.

पण अफसोस! ए समय बदलायो अने आधुनिक अवसर्पिणी कालांतर्गत छ काळमांना पांचमा दुःषम काळना प्रभावे ज्ञानरूपी समुद्रमां ओटनी शरुआत थई.

शाशन नायक श्री महावीरस्वामी निर्वाणगत थया पछी गौतमस्वामी, सुधर्मस्वामी, जंबुस्वामी आदि पंचम महाज्ञानना धारक थया. पण तेमना मोक्षमां जवा साथे ज्ञान घटतुं चाल्युं. आधारविना जेवी आधेयनी स्थिति ते अनुसारे दिनप्रतिदिन आ ज्ञानना आधार न रह्या. छेवटे ते एटली हद सुधी गुप्त थयुं के वीरपरमात्माना निर्वाण पछी आशरे बसो वर्षना अंतरमां श्री भद्रबाहुस्वामी पछी तो श्रुत केवळीनी पण परिसीमा जेवुं थयुं. तेमज पूर्वो पण विच्छेद थता गया. भद्रबाहुस्वामीना वखतमां बार वर्षनो भयंकर दुष्काळ पडतां तीर्थंकर महाराजथी सांभळेली त्रिपदीना आधारे गणधर भगवाने रचेला सूत्ररूप आगममांनुं बारमुं अंग नामे दृष्टीवाद जे अनेक विद्यावोथी भरपुर हतुं तेनो पण लोप थयो.

आम ज्ञानरूपी समुद्रनो ओट थतो जोई वीरप्रभुथी ९९३ वर्षे एटले विक्रम सं. ९२३ मां दीर्घदृष्टी सूरिवर्य देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण महाराजे भविष्यमां शनैः शनैः सर्वथैव थनार नाश तरफ पोतानी ज्ञानदृष्टी फेरवी आत्मशक्ति बळे पोताना तेमज बीजा आचार्य भगवानोना स्मरणमां रहेला ज्ञानने पुस्तकारूढ कर्युं. आवो उद्धार बे जग्याए थयो. एक मथुरामां अने बीजो वल्लभीपुरमां के जे माथुरी अने वल्लभिवांचना रूपे हालमां जणाय छे. आम आत्मशक्तिमां रहेनारा ज्ञानमांथी यत्किंचित् लखी शकाय तेटला शब्दो टुंकाणमां पुस्तकरूपमां लखाया. आ पूज्य महाशय आपणा उपर अगणित उपकार करी गया छे. एटलुंज नहि पण तेओए अणीना वखते आपणा धर्मना ज्ञानरूपी स्थंभोने जमीनदोस्त थवाना भयंकर भयमांथी बचाव्या छे. समयनी स्थितिनो विचार करीए तो आपणने चोकस रीते मालम पडशे के जो आ महाशये समयसूचकता वापरीने ज्ञानने पुस्तकारूढ करवानी हिंमत नहीं करी होत तो हालमां प्रथमना प्रमाणमां जे स्वल्प साहित्य पण आपणी नजर आगळ देखाय छे तेनो शतांश के सहस्रांश पण जोवाने आपणा चक्षु भागशाळी थात नहीं. ए वात निर्विवाद छे. शास्त्रमां कहेली आगमोनी *पदसंख्याना प्रमाण तरफ जोतां हालमां जे आगमो दृष्टिगोचर थाय छे तेनी पदसंख्या घणीज ओछी छे, अने तेमां पण अमुक अमुक स्थळे एक बीजा आगममां केटलीक वातो फेरफार जणाय छे. आ कारणथी केटलाक आगमोपर अविश्वास लावे छे. तेने अमे एटलुंज

---

* आचारंगमां ३६०० पद अने त्यार पछी दरेक अंगमां बमणा बमणा पद कह्या छे. पदनुं प्रमाण पण मोटुं छे.

कहीए छीए के आगमोमां जणाता फेरफारो तथा पृथ्वी आदिकनी बाबतमां केटलाक खुलासाओ हालना समय प्रमाणे थइ शकता नथी ते मात्र आपणा असद् भाग्यने लीधे आगमोमां थएला मोटा घटाडाने तेमज आपणी अल्प समज शक्तिने आभारी छे, अने तेथी तेनापर अविश्वास न करतां आप्तना वचनमां फेर होयज नहीं एम मानी कर्तव्य परायण थइ बाकी रहेला ज्ञाननी बने तेटली रक्षा करी तेनाथी सत्यार्थ साधवा तरफ लक्ष राखवुं एज उचित छे.

पूज्यवर्य देवर्धिगणि महाराजना पुस्कारूढ करावेला आगमना ग्रंथोनी प्रतो पण हाल नजरे पडती नथी. एम कहेवुं पडे छे, कारण के प्राचीनमां प्राचीन पुस्तक लख्यानी साल पण संवत् १००० नी अंदरनी मळती नथी. धारोके कागळ आटलो लांबो वखत न रही शके, पण ताडपत्रने रहेवामां वांधो देखातो नथी छतां पण हाल जे ताडपत्रोनी नकलो मळे छे ते पण ते समयनी मळती नथी. जे साहित्यपर अनेक प्रकारनी आफतो पडी होय तेमां जो कांइ पाठांतर देखाय अथवा अमुक बाबतनो समयने अनुसरीने खुलासो न देखाय तो पण पोताना भाग्यनो दोष गणीने वांचनारे शंकार्थी लाभ नथी एम विचारी तत्वपर नजर करी हवे अवशेष रहेला साहित्यनी रक्षामां कटिबद्ध थवुं एज उचित लागे छे. अत्रे कहेवानी जरूर छे के कोन्फरन्से हजु तमाम साहित्यनो शोध पूरो कर्यो नथी. तो कोइ महाशयने संवत् ९२३ नी अगर ते अरसानी कोइपण प्रत उपलब्ध थाय तो ते जनसमूहनी जाण माटे कोन्फरन्स ओफीसने लखवा कृपा करशे.

आगमो माटे आटली टुंक हकीकत लखी हवे आपणे आगमनी टीकाओ तथा बीजा ग्रंथो तरफ दृष्टी फेरवीए.

भगवानना निर्वाण बाद त्रण पाटसुधी कैवल्य ज्ञानी भगवंतो हता. त्यारपछी छ श्रुतकेवळी थया छे. त्यारपछी देवर्द्धिगणी महाराज सुधी पूर्वनुं ज्ञान हतुं परंतु आवा धुरंधर पूर्वाचार्योना करेला ग्रंथो पण विशेष दृष्टिगोचर थता नथी. जे* ग्रंथो जणाय छे तेमां श्री भद्रबाहुस्वामीना, श्रीसिद्धसेन दीवाकरना, श्रीकाळीकाचार्यना अने एवा पांच सात आचार्योना करेला ग्रंथोज हालमां जणाय छे. पण स्थूळभद्रनी अने तेमना पछी थयेला बीजा आचार्योनी कृती समुळगी जणाती नथी. आवा महान धुरंधर पंडितो अने जेमनुं शील केवळ परमार्थ करवानुंज हतुं तेवा महाशयो पोतानी आखी जींदगीमां छती

---

* महावीर स्वामीना हस्तदीक्षीत शिष्य श्री धर्मदासगणिनी करेली उपदेशमाळा सौथी प्राचीन छे.

शक्तिए एकाद ग्रंथ पण न लखे ए बनवुं असंभवित छे पण वखतो वखत देशमां पडता दुष्काळथी राज्यक्रांतियोथी तथा धर्मना झगडाने लइने थतां तोफानोथी आपणा अपूर्व ज्ञानीओनां बनावेला ग्रंथो आपणने मळी शकता नथी.

आ विषयमां हजु शोध करवानो घणो बाकी छे अने हालमां मळता ग्रंथोनो बचाव करी कोन्फरन्स ते तरफ पण ध्यान आपवा धारे छे प्रथम आ शोधनुं काम पूरुं न करवानुं कारण आ प्रमाणे छे.

जनसमुहने तारवा तथा तेमने सत्यमार्ग बतावा जेमणे पोताना आयुष्यना छेडा-सुधी प्रयास करेलो अने जेमनुं ज्ञान अगाध हतुं, एवा महात्माओ ग्रंथो न लखे एम तो बनेज नहीं, पण ते वखते छापखाना विगेरेना अभावे लखेला ग्रंथनी एक अगर बे प्रतो कोइ स्थळे होय अने ते अमदावादमां हालमां जेम एक भंडारना गृहनो अग्निथी नाश थतां तेमां सेंकडो कींमति अने जेनी बीजी नकल भाग्येज मळे तेवा ग्रंथोनो नाश थइ गयो तेम आवा पूर्वधर महाराजाओना बनावेला ग्रंथानो पण नाश थएलो होवो जोइए एवुं अनुमान थाय छे. अने तेथी रहेलुं साहित्य बचावी लेवानु पहेलां धार्युं छे.

हालमां जे साहित्य मळ्युं छे अने मळे छे तेमां आगम शिवायना बीजा घणा ग्रंथो संवत् आठसें पछीनी सालमां लखाएला मळे छे, अने जो अमारूं अनुमान खरूं होय तो जे साहित्य आजे काळना, राजक्रांतिना अने रक्षकोना प्रमादना कारणथी नाश थतां बचेलुं छे. ते तमाम साहित्य बार आनीथी चौद आनी जेटलुं संवत् ८०० पछीना सैकामां लखाएलुं जोवामां आवे छे.

बौद्धनुं पण आ समयमां पुरजोर हतुं भगवानना समकाळीन बुद्धदेवनो मत धीमे धीमे पुरजोरमां आवतो जतो हतो. संप्रति महाराजाना प्रपिताए तेने आ देश अने बीजा देशमां पोतानी राज्यसत्ताने नीचे सारी रीते स्थापित कर्यो हतो, परंतु आ देशमां आपणा धुरंधर पंडीतो विद्यमान होवाथी आपणा धर्मने ते लोको कांइ नुकशान करी शक्या नहोता. ज्ञाननी न्यूनता थता ज्ञानना धारक महात्माओ कमती थता बौधोने पण आपणा धर्मपर हल्लो करवानुं मन थयुं. आ समय संवत् ५२३ पछीनो गणवानो छे. आ समयमां शिलादित्य राजानी सभामां प्रतिज्ञापूर्वक वाद थयो वादमां एवुं ठरेलुं के हरनारने देशपार कहाडवा. एमां बौधो हारवाथी तेओ देशपार थया एवो संभव छे विक्रम पछी कोईपण जैन राजा थयो होय तेवो इतिहासिक लेख जणातो नथी, अने तेथी

गुजरातमां शिलादित्य राजा थयो ते पहेलाना ग्रंथोनो वखते मतना द्वेषथी बौद्धोए पण नाश कर्यो होय एम अनुमान बांधवाने कारण छे.

उत्तरमांथी शंकराचार्ये, दक्षिणमांथी कुमारिल भट्टे अने गुजरातमांथी मूळसूरिए बौद्धोने देशपार काव्या त्यारपछीनुं जैन साहित्य कांइ कांइ दृष्टिगोचर थाय छे.

बौद्धोनो प्रथम विशेष जुलम होवानो संभव छे. कारणके तेम नहोत तो शंकराचार्ये अने कुमारिल भट्टे बौद्धोनुं नाम निशान पण आ देशमां रहेवा दीधुं नहि, अने तेमनी राजाओ पासे कतल करावी तेम करवाने तेमने कारण मळत नहीं.

शिलादित्यनी सभामां पण जैनोनो बौद्धोए प्रथम पराभव करी गुजरातमांथी जैनोने हांकी कहाड्या हता. आवे वखते बौधोना हाथमां जैन भंडार आवे तो तेनो नाश करवा तेओ चुके नहीं एम मानवुं छेक कारण विनानुं नहीं गणाय.

देवर्द्धिगणी महाराज पछीथी छेक धनेश्वर सुधी शत्रुंजय महात्म्यना कर्ता थया छे. तेमनी वचेना ४०० वर्षोमां ते समयना कर्तानो करेलो तो एक पण ग्रंथ मळी आव्यो नथी. आ संबंधमां हमारी शोधखोळ चालु छे, अने जो कोई ग्रंथ मळशे तो ते अमे जाहेरमां मुकवा चुकीशुं नहीं.

प्रथम विवाद थइ गया पछी पाछो मूळसूरिए बौद्धो साथे वाद कर्यो अने तेमने हराव्या, अने आ देशमां तेमनुं नाम निशान पण रहेवा दीधुं नहीं. एक तरफथी वेदांतना आचार्य अने बीजा तरफथी जैनाचार्योए बौद्धनुं जोर तोडयुं, अने पोताने कृतकृत्य मानवा जेवो प्रसंग लाव्या, पण ते झाझो वखत चाल्युं नहीं. एक गइ अने बीजी आवी तेम आ देशमांथी एक आफत गइ अने तेने बदले मुसलमानो आवता थया. तेथी ग्रंथो पुस्तकारूढ करी तेना रक्षणरूप भंडारोमां व्यवस्थित रीते प्रतो राखवानो प्रचार शरु थयो. आम थवाथी पण अवशेष रहेला ज्ञाननो नाश सर्वथैव बंध थयो नहीं. केम के ठरी ठाम बेठाने थोडो वखत वित्यो नहीं एटलामां विक्रमना दशमा सैकामां एवो बारीक वखत आवी लाग्यो के मुसलमान लोको हिंदुस्तानमां आव्या. तेमणे सोमनाथ लुंटयुं, अने देवालयोनो तथा तेमना पुस्तकोनो नाश कर्यो. लाखो माणसोनी कतल थइ, अने करोडोनो माल हिंदमांथी उपाडी गया. आम करवानुं कारण इस्लामी धर्म प्रवर्ताववा जोर जुलम करवो एज हतुं. हिंदुओना धर्मना चिन्होनो समुळगो विध्वंस थाय तो आ नवो धर्म प्रवर्ते. एम जाणी आर्य शास्त्रोनो नाश करवा लाग्या. तेमना भयथी रक्षणार्थे

भंडारोमां राखेलुं जैन साहित्य सैकडो वर्ष सुधी बंध बारणे रह्युं. तेथी परिणाम एवुं भयंकर आव्युं के पूर्वेना धुरंधर आचार्योए अपरिमित परिश्रम वेठी रचेला अद्भुत उपयोगी ग्रंथो उद्देहीआदि जंतुओना भक्षणथी तेमज शरदी विगेरे कारणोथी नाश पामी गया.

दाखला तरीके अत्रे अमारी जाणना दुर्लभ्य तथा अनुपलब्ध ग्रंथोनी टुंक नोंध लेवानी अगत्यता जोइए छीए. महानिशीथ जेवा अत्युपयोगी छेद सूत्रनी टीका हालमां क्यांय पण मळी शकती नथी. पंचकल्पना मूळनी स्थिति तेवीज जणाय छे, धरसेनाचार्य रचित विद्यानुं निधान योनीप्राभृत जेनां सतावीश पीठ छे, तेनी पण जीर्णशीर्ण हालत थवाथी नष्ट प्राय थयुं छे. हरिभद्राचार्य महाराजे रचेलां १४४४ प्रकरणोमांथी हालमां गण्या गाठ्यांज मळी आवे छे. उमास्वाती वाचके रचेला ५०० ग्रंथो पैकी पांच ग्रंथो पण पुरा मळी आवता नथी, अने श्रीमद् हेमचंद्राचार्यकृत साडात्रण क्रोड श्लोकनो पण घणो भाग मळतो नथी. मात्र बसो वर्ष अगाउज थएला उपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराजे रचेला सो ग्रंथो पैकी पण जूज ग्रंथोज हाथ आवे छे. बाकी क्यां छे तेनो पत्तो पण लागतो नथी. कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्रसूरिकृत हैमवृहन्न्यास क्यांय पण संपूर्ण स्थितिमां जोवामां आवतो नथी. श्री हेमाचार्यना शिष्य श्रीमद् रामचंद्र सूरिए एकसो प्रबंधो रच्या हता. तेमांना एक दशक जेटला प्रबंधो पण जोवामां आवता नथी विगेरे विगेरे. अनेक विद्वान् आचार्योए रचेला तत्वोना ग्रंथो नाबुद थइ गया.

आवे समये ग्रंथोनो नाश अटकाववाने बाने मुर्खोमां जुना वखतनुं पिशाच पेठुं ते ए के ज्यारे आपणा वडीलोए ग्रंथो प्रसिद्धिमां नहीं लावतां तेमनुं उत्तम रीते संरक्षण करवामांज श्रेय मान्युं. तो आपणे पण तेज मार्गनुं अवलंबन करवुं श्रेष्ट छे. आवी अत्यंत खेदजनक अंधपरंपराना चकडोळामां हिंचका खातुं जैन साहित्य वखत जतां नष्ट प्राय थशे एम जाणी हालमां राज्य कर्ता, दयाळु ब्रिटिश सरकारनी सत्ता तळेना शांत समयमां "**श्री जैन श्वेतांबर कोन्फरन्स**" ना उत्पादक अने नेता **नररत्न शेठ फकीरचंद प्रेमचंद शेठ गुलाबचंदजी ढढ्ढा** एम्. ए., आदि धर्मपरायण जैन कोमना आगेवानोए आपणा पूर्वाचार्योए अथाग महेनते रचेला आपणा जैन साहित्यना संग्रहस्थानो ( भंडारो ) क्यां क्यां छे अने तेमां क्या क्या ग्रंथो सुरक्षित रीते अवशेष रह्या छे. तथा ते ग्रंथो केवी स्थिति भोगवे छे. तेनो तपास करी एक टीप त्वरतमां प्रसिद्ध करवानी अत्यंत अगत्य छे एम जाणी कोन्फरन्स ओफीसना पुस्तकोद्धार खाता तरफथी प्रसिद्ध भंडारोनी जाणवा जोग माहिती साथेनी उपयोगी टीपो करवा माटे विद्वान पंडितोने रोकी ते कार्यने माटे मोकलवामां आव्या. तेमना प्रयासथी

पाटणना छ भंडार, जेसलमेरनो भंडार, लिंबडीनो भंडार, तथा खंभातनो भंडार एम नवभंडारोनी टीप तैयार करवामां आवी. अने बाकीना भंडारोनी टीपोनी नकलो उतरावी लीधी.

आ रीते एकत्र करेली टीपो उपरथी ग्रंथोनी अकारादि अनुक्रमवार तारवणी करी विषयवार वर्गणी करवामां आवी छे. मोटा मोटा भागो पृथक् पृथक् देखाडवा माटे तेने लिस्ट नंबर आपी तेना अवयवोना अंगरूप एक नाम आपवामां आव्युं छे.

आ अंगरूपनामो साथे चडतो लिस्ट नंबर जोडवामां आव्यो छे. तदनुसार तेना अंग नव पाडेला होवाथी लिस्ट नंबर पण नवज थया छे. दरेक अंगना अवयवोमां पृथक्त्क देखाडवा माटे तेना वर्ग तथा क्लास पाडवामां आव्या छे. आ अनेक वर्ग तथा क्लासयुक्त विषयोथी भरपूर लीस्ट-रूप पुस्तकनुं "जैन ग्रंथावळी" एवुं नाम आपवामां आव्युं छे आ पुस्तकना नंबर पहेलामां आगम ग्रंथोनुं लीस्ट छे. आ लीस्ट आपतां पृष्ठनी एक बाजुए ग्रंथनुं नाम, तेनी श्लोक-संख्या, ग्रंथना रचनारनुं नाम तथा ते ग्रंथ विक्रमनी कइ सालमां रचायो छे. ते जणाव्युं छे. अने सामेनी बाजुपर ते ग्रंथ क्या भंडारमां मोजुद छे ते जणाववा माटे उपर जणावेला भंडारोना संक्षिप्त नाम जणाव्या छे. तेमना पूरा नामनी ओळखाण माटे तथा चोकस स्थळ माटेनी वीगत आगळ आपवामां आवशे. दरेक नाममां शक पडती बाबतोना विशेष खुलासा माटे जोईती फुटनोटस आपवामां आवी छे.

नंबर बीजामां जैन न्याय ग्रंथोनुं लीस्ट छे. आ लीस्टथी मांडीने छेवट सुधीना लीस्टोमां दाखल करेला ग्रंथोनी संपूर्ण माहितीनो एक पेजमांज सारी रीते समावेश थतो होवाथी भंडारोना नाम पण एकज पेजमां नोंध्या छे. नंबर त्रीजा, चोथा, पांचमामां जैन फिलोसोफीना ग्रंथोनुं लिस्ट आपवामां आव्युं छे.

नंबर छमां जैन औपदेशिक ग्रंथोनुं लीस्ट, नंबर ७ मां जैन महात्म्य ग्रंथोनुं लीस्ट नंबर ८ मामां जैन भाषासाहित्यना ग्रंथोनुं लीस्ट, अने नंबर ९ मामां जैन विज्ञानना ग्रंथोनुं लीस्ट आपवामां आव्युं छे.

आ रीते नव लीस्टोना नव नंबर पूरा थाय छे. आ नव नंबरोना नव लीस्टरूप ग्रंथावळी नामनुं पुस्तक तैयार थवाथी आपणा महान पूर्वाचार्योए धर्मनी रक्षाना साधनरूप तात्त्विक ग्रंथो रची आपणा हितमाटे केटलो बधो अपरिमित परिश्रम लीधो छे. ते प्रत्यक्ष रीते पुरवार थयुं छे.

जैन साहित्यने झीलवाना शोखीनोने आ एक उमदा मानस सरोवर हाथ लाग्युं छे. जैन साहित्य हालमां केटलुं अने क्यां क्यां विद्यमान छे. तेनी जिज्ञासावाळा महाशयोने आ ग्रंथावळी बनता लगण चोकस माहिती मेळवी आपवामां अद्वितीय साधन थयुं छे. आ ग्रंथावळीमां मात्र संस्कृत अने मागधी साहित्यज दाखल करवामां आव्युं छे. गुजराती लेखको पण जैन धर्मनी अंदर घणा थया छे, अने तेमांना केटलाक लेखको तो हालमां गुजरातीना सारा गणाता लेखकोथी पण विशेष चडता छे. तेओना अलंकारभूत गणाता कादंबरीनी जेवा लेख कविताना रूपमां शुद्ध गुजरातीमां लखी गया छे. गुजराती साहित्य जो के १००० मा संवत् पहेलानुं मळतुं नथी तोपण एक हजार पछीनुं घणुं साहित्य मळे छे. आ साहित्यमां संस्कृत कथाओ उपरथी रचाएला रासो, भगवाननी स्तवनाओ, सझायो, अने बालावबोध ( भाषांतरो ) नजरे पडे छे. अत्यार सुधीमां वेपारार्थे पुस्तको छपावनाराओए आवा रासो, स्तवनो, स्तुतिओ विगेरे जुदा जुदा रूपमां छपावी प्रसिद्ध करी पुस्तक प्रसिद्धिना कार्य साथे धन मेळववानुं पण कार्य साध्युं छे. पण बीजाओ करे छे तेम कोइपण कर्ताना समग्र लेखो अगर तेवा लखाण उपर सारी टीका अगर लेखकनो इतिहास विगेरे आपी सारा टाइपथी अने सारा कागळोथी पुस्तक छपावी तेने प्रसिद्ध कर्यानुं देखातुं नथी. भीमशी माणेके छापेला रासो विगेरे आमां अपवाद रूप छे. कारण के ते सारा टाइपने सारा कागळ उपर बनता सुधी शुद्ध करीने छापेला छे अने अत्यारे बहोळी संख्या हजु तेवीज बहार पडेली छे. आवा पुस्तको छपाववाना कार्य तरफ हालमां श्री जैनधर्मप्रसारक सभा, विद्याप्रसारकवर्ग, ज्ञान प्रसारक मंडळी विगेरे उद्योग करे छे. अने ते ग्रंथो भाषामां होवाथी तेनी नकलो पण सारी खपे छे. तेथी कोन्फरन्से ते माटे प्रयास करवानो मुलतवी राख्यो छे. पण आ ठेकाणे कह्या विना चालतुं नथी के हालमां जेम श्री त्रिषष्टिशलाकापुरुष चरित्र मूळने भाषांतर सफाईदार कागळ उपर छपायुं छे तेम बीजा रासो विगेरे पण एकत्र करी विवरण साथे गुजरातीना काव्य दोहननी पेठे छपाववानी जरूर छे. पूर्वोक्त मंडळीओए गुजराती साहित्यनी जेम बने तेम ताकीदे शोध अने उद्धार करवानुं काम हाथमां लेवानी जरूर छे. हालमां जेम एकवार छपायेला रासो विगेरे पाछा फरीने छपाय छे तेम न करतां जुदा जुदा भंडारोमां शोध करावी गुजराती साहित्यनी नोंध करी तेमांथी जरूरी जे अनुकूळ अने जेमां तत्वनो समावेश होय तेवा ग्रंथो प्रथम प्रसिद्धिमां लाववानी जरूर छे. आम करवाथी धर्म अने अर्थ बंने सधाशे. एकतो साहित्यनी शोध थशे अने तेम करतां कांइ अपूर्व ग्रंथो हाथ लाग्या तो तेनाथी द्रव्यपण मेळवाशे. आ मंडळोथी जुदो जुदो प्रयास न थाय तो फाळाप्रमाणे पैसा आपवानी व्यवस्था करी हालमां संस्कृत प्राकृतना उद्धारपर लक्ष आपती आ कोन्फरन्सने ए काम करवामां मदद आपवा कमर बांधशे एवी आशा

छे. अने तेम करतां मुनिवर्ग तरफथी पण तेमने सहायता मळी शकशे. गुजराती भाषामां रचायेलुं साहित्य अमे आ लिस्टमां दाखल कर्युं नथी. ते बाद करतां फक्त संस्कृत तथा मागधीमां रचाएलुं जैनसाहित्य अमारी अटकळ मुजब लगभग साठ लाख श्लोक जेटलुं थाय छे. जो के अत्यारे विद्यमान छे, ते पण सघळुं आ लीस्टमां दाखल थइ शक्युं नथी. हजु लगभग आटलुंज बीजुं साहित्य अमने नहीं मळेला भंडारोमां तेमज जुदाजुदा मुनिराजना भंडारोमां होवानो संभव छे. ते सिवाय विच्छेद गएल साहित्य विगेरे तरफ जोतां जैनसाहित्य घणुं बहोळुं हतुं. अने तेनी बराबरी कोईपण मतवाळाए करी नथी. ते आ ग्रंथावळी तैयार थवाथी सिद्ध थयुं छे. उच्च श्रेणीना तत्वरुचिवाळा दरेक सज्जनोने आ ग्रंथावळी घणी उपयोगमां आवे तेवी छे.

आ **जैन ग्रंथावळी** नामनुं पुस्तक जैनमां प्रथमज उदयने पाम्युं छे, अने कोन्फरन्सनो पण आवुं एक उपयोगी पुस्तक बहार पाडवामां प्रथमज प्रयास छे. आ पुस्तक तैयार थतां दरमियान तेनी एक एक नकल हिंदुस्तानमांना तमाम साक्षर प्रोफेसरोने मोकलवामां आवी हती. जेमांना दरेक महाशयोए सदरहु पुस्तक माटे पोताना उच्च अभिप्राय आपी तेना उपयोगी पणानी कदर बुझी छे.

आ रीते जो के आपणे आवो एक साहित्यनो भोमियो (गाईड) मेळववामां फतेहमंद थया छीए. तो पण ए साधनथी आपणुं कर्तव्य समाप्त थयुं नथी. अमे पूर्वे जणावी गया तेम मुसलमानोनी जुलमी राज्यपद्धतिनी यथास्थित रीते क्रांति थतां हालनी ब्रिटिश सरकारनी न्यायी राज्यनीतिना शांत अमलमां ज्यारे तमाम धर्मीओ पोताना धर्मने पुष्टी आपवाने माटे नानाप्रकारना शोधोमां तल्लीन थई दिनप्रतिदिन आगळने आगळ वधताज जाय छे त्यारे आपणे लोकालोक प्रकाशक श्री महावीर स्वामीना वंशजो दिनप्रतिदिन अधो स्थितिमांज अफळाता रहीए ए केटलुं शोचनीय कहेवाय. आपणी जाहो जलालीना समयमां आंग्ल, अमेरिकन, जर्मन, इटालियन, जपानीझ, आफ्रिकन आदि मनुष्यो जेओ ज्ञान वस्तुनुं महात्म्य नहि समजता होवाथी जेमने आपणे (बारबेरीयन्स) जंगली तरीके ओळखता हता तेज आंग्ल आदि लोको तेमनी शोधक बुद्धिना बळे एटला सुधाराना शिखरपर चडी चुक्या छे के सायन्सआदि शोधोथी आपणा तत्ववेत्ताओना गुढ विचारोने पण मान आपवा सामर्थ्यवान थया छे. ज्ञाननी वृद्धि तथा ज्ञानरक्षा तेओ एवी उत्तम प्रकारे समजवा लाग्या छे के पोताना साहित्यनी रक्षा करवा उपरांत आपणा महात्मा, आचार्योए रचेला अमूल्य ग्रंथो जेनुं हालमां आपणे दर्शन तो शुं पण नाम पण सांभळवानुं दुःशक्य थयुं छे. तेवा अपूर्व ग्रंथो जर्मनीनी विशाळ लायब्रेरीमां सुरक्षित रीते

राखवामां आव्या छे, एम आपणे सांभळीए छीए. आपणा पवित्र ग्रंथो आवा महदंतर उपर अन्यधर्मीओना हाथमां जवानुं कारण विचार करतां आपणी शिथिलता तथा आपणे शोधक वृत्तिथी वेगळा रह्या तेज जणाय छे. तेमज रोयल एशियाटिक सोसाइटीमां ते लोकोए बजावेली ज्ञाननी उत्तम सेवा जोइने एक बाजुथी अंतरात्मा एटलो शांत थाय छे के तेनुं वर्णन करवुं शक्तिनी बहार छे अने बीजी बाजुए आपणी कोम तरफ दृष्टी फेरवतां एटलो अफसोस तथा लज्जा उत्पन्न थाय छे के शुं आर्यमातानोज आपणापर कोप थयो छे. के आपणा अंतःकरणमां तेवा सद्विचारोने स्थानज आपती नहीं होय ! आ उपरथी एक बीना अत्रे जणाववानी जरूर छे ते एके ज्ञान जेवी सर्वोत्कृष्ट वस्तुने तुच्छ गणनार अन्य भूमिवासीओए शोधक बुद्धिथी पोताना कुविचार फेरवी ज्ञाननी पुष्टी तथा रक्षा करवामां यावत् प्राणांत सुधीनुं कष्ट सहन करवा तत्पर थएला आपणे प्रत्यक्ष जोईए छीए. तो आपणे जे असलथीज ज्ञाननी महत्वता जाणी तेनी यथायोग्य सेवा बजाववानुं व्रत धारण करनार छीए तेमांना दीर्घदृष्टीवाळा आचार्यो, विद्वान मुनिवरो, श्रेष्ट आगेवानो तथा गर्भ श्रीमंतोए समग्र जैन साहित्यनी एक जगोए व्यवस्थित रीते रक्षा थई शके तेवा साधनरूप एक "**धी सेंट्रल जैन लायब्रेरी**" स्थापन करवा माटे उदार विचारोने एकत्र करी तेने माटे मकान आदिनी योजना जेम बने तेम शिघ्रताथी शा माटे करवी न जोईए?

ज्ञाननी रक्षा एज संसाररूपी निबिडबंधनमांथी मुक्त थवानो सेहलो मार्ग छे. ज्ञान एज मोक्षरूपी मंदिरमां प्रवेश करवानुं प्रथम द्वार छे. ज्ञाननी भक्ति करवाथीज तीर्थंकर आदि महान पुरुषो भवसमुद्रने तरीने मुक्तिने पाम्या छे. ज्ञाननो महिमा जेटलो वर्णवीए तेटलो ओछो छे. ए बाबतनो विशेष विस्तार सूत्रोमां तथा ग्रंथोमां लखाएलो छे. ज्ञाननो आवो अगाध महिमा जाणी आपणा ज्ञानात्मा पूर्वाचार्योए ज्ञाननी रक्षारूप भक्ति करवा माटे वर्षमां खास करीने एक दिवस पण नीर्मी आप्यो छे ते दिवस कार्तिक शुक्ल पंचमीनो छे. अने जे ज्ञान पंचमीना महापर्व नामे प्रसिद्ध छे. पूर्वना पुण्यवान प्राणीओ आ पवित्र दिवसे मुनिवरोनी माफक तेवुंज पौषध आदि व्रत लइ ज्ञाननी भक्ति करवामां तल्लिन थता हता. तेओ भंडारमां बंद बारणे राखेली तमाम प्रतो दर्शन करवा माटे बहार काढता, अने तेमांनी जे जे प्रतने उद्देही तथा शरदीआदि नुकसान कारक चीजोथी भय पहोंचवानुं अथवा पहोंचेलुं तेमना जाणवामां आवतुं तो तेनो तात्कालीक पुनरुद्धार करवानुं नक्की करी ज्ञाननी रक्षा उत्तम प्रकारे थवाना साधनोनी तेज दिवसे विशेष योजना करी संपूर्ण प्रतोनुं पूजन, अर्चन, मार्जन आदिथी ज्ञाननी भक्ति करी महत्पूण्य उपार्जन करवामां लक्ष आपता हता. ते परंपरागत रूढीने मान आपीने हालमां पण ज्ञाननी रक्षा रूप भक्ति करवा माटे ज्ञान पंचमीने दिवसे ठेर ठेर महोत्सव थाय छे, पण आश्चर्य

ए छे के जेम जेम काळ बदलातो जाय छे तेम तेम मनुष्यो पण शुक्तिभासने रजताभास मानवा लागता जणाय छे. पूर्वना वखते भंडारमां रहेला तमाम ग्रंथोने व्यवस्थित रीते तपासी जोइ तेमां पहोंचेला नाश तरफ पूर्ण लक्ष आपी ग्रंथोने दुरस्त तथा अपूर्ण ग्रंथोने पूर्ण बनाववानी अगत्यता विचारता; त्यारे हालमां ज्ञानना रक्षकपणानुं अभिमान धरावनार महाशयो फक्त जे उपाश्रयमां कोइ मुनिराज विराजता होय तो ते अगर ज्यां मुनिराजनो जोग न होय त्यां ते भंडारना मालिक पोते पोताना भंडारमांथी उत्तममां उत्तम सारा अक्षरोथी लखावेली अगर सोनेरी अक्षरोथी लखावेली पांच दश प्रतो दर्शन माटे बहार काढी तेना उपर चित्र विचित्र झीक अने चळकता कसबथी भरेलां पाठां, चंद्रुआ, रुमाल आदि शणगारी तेनी बाह्य सुंदरतामांज पोतानी कृतकृत्यता मानी ज्ञानभक्तिनी साफल्यता माने छे पण आम बाह्य सुंदरतामां सार्थकता मानवाथी ज्ञाननी केटली हानी थई छे अने थाय छे, ते तरफ तेमनुं तिलमात्र पण ध्यान खेंचायुं होय तेम जणातुं नथी. आम पूर्वना शुद्ध ज्ञानभक्तिना मार्गनो विपर्यास थवाथी आपणा ज्ञानना अभ्यासी मुनि महाशयोने जोईता ग्रंथो मेळववा माटे केवी अनिवार्य अगवडो भोगववी पडे छे. तेना घंटानाद शुं हजी तेमना कर्णरंध्र ऊपर पड्या नथी! हवे शुभ वखत आवी लाग्यो छे. आ ग्रंथावळी तैयार थवाथी साहित्यना ग्रंथो मेळववा माटेनी चिंता दूर गई छे. ए निर्विवाद छे. हवे साध्य समीप छे, अने साधन मेळवामाटे अमे चतुर्विध संघने नम्रतापूर्वक विनंति करीए छीए तो आवो सर्वोपयोगी हेतु सिद्ध करवा शा माटे संघे तैयार थवुं जोईए नहीं. ?

अमारी पूर्ण खात्री छे के जैन शासननी उन्नती इच्छनार महाशयो आ वात तेमनी जाणमां आव्यानी साथे एक वेळाए आ पुण्यनुं काम माथे उपाडी लेवा तैयार थशे, अने ते तेमने घटे पण छे.

अमे आ जमानाने अनुसरतुं कार्य आपनी सन्मुख मूक्युं छे. योग्य लागे तो स्वीकार करवो ते तमारुं काम छे. अने अयोग्य जणायतो जेम प्रथमथी थयुं छे, थतुं आवे छे; अने थाय छे तेम थशे. एटलुं ध्यानमां राखवानुं छे.

प्रस्तुत ग्रंथावळी तैयार करवामां जे जे मुनि महाशयोए तथा गृहस्थोए पोताथी बनती सहाय आपी आ कार्यने उत्तेजन आप्युं छे ते बाबत तेमनो अंतःकरणपूर्वक उपकार मानीए छीए. आ कार्य खास विद्याविलासी मुनिवर्योनुंज छे, अने पूर्वना प्रबुद्ध आचार्योनुं अनुकरण करवुं ए तेमने उचित छे. अमे आशा राखीए छीए के हालमां विद्वाननी पंक्तिमां गणाता आपणा मुनिवर्यो आ ग्रंथावळी माटे पोताने योग्य लागे ते सूचना आपवामां कोई पण प्रकारे ढील करशे नहीं. अने अमारा करेला परिश्रमने फलिभूत करशे.

आ ग्रंथावळीनुं कार्य अमे अमारी अल्प मति मुजब तेमां जणावेला ग्रंथनुं नाम, कर्तानुं नाम, श्लोकसंख्या तथा रचना काळना संवतनी चोकसी करवा माटे अमाराथी बनती काळजी राखी पूर्ण लक्ष आप्युं छे. छतां भूल करवी ते मनुष्य मात्रनो स्वभाव छे. अने क्षमा करवीं ए सज्जनोनुं शील छे. ए उक्ती मुजब अमारा अल्प ज्ञानना योगे मतिदोष अगर प्रुफ सुधारती वेळाए दृष्टीदोषथी ग्रंथना नामनां, श्लोकसंख्यामां, कर्ताना नाममां, रचना काळमां, तथा पद्धति आदिमां जे कांइ भूल चूक थइ होय तेनी कृपापर सुज्ञो हंसनी पेठे उदार बुद्धि वापरी क्षमा करशे अने अमने लखी जणाववा तस्दी लेशे एवी अमे नम्रतापूर्वक प्रार्थना करीए छीए.

विशेषमां विनंती करवानी के नीचे आपेली फुटनोटोमां अमे जे जे ग्रंथो दुर्लभ्य जणाव्या छे. ते ते ग्रंथो माटे विद्वान मुनि महाराजाओए खास लक्ष राखी शोध खोळ करी ते ग्रंथो दृष्टीगोचर थतां तेमनी हकीकत तथा अमे जणावेला ग्रंथना नाममां, श्लोकसंख्यामां, कर्ताना नाममां अगर रचना काळमां जे कांइ भूल तेमना जाणवामां आवे ते बाबतनी सूचना आ कोन्फरन्स ओफीसना सेक्रेटरीपर मोकली आपवामां आवशे तो तेनो महाउपकार साथे स्वीकार करी हेरल्ड पत्र मारफत ते प्रसिद्ध करवामां आवशे. ॐ शांतिः

पायधुनी मुंबई.<br>ता. १-३-०९ } श्री जैन श्वेताम्बर कोन्फरन्स.

---

# लिस्ट नं. १

# जैनागम.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | अंग ११. | | | |
| १ | आचारांग. | | | |
| | मूळ | २५२५ | सुधर्मस्वामि | |
| | निर्युक्ति गा. ३६२ | ४५० | भद्रबाहुस्वामि | |
| | चूर्णि | ८३०० | | |
| | वृत्ति | १२००० | शीलाचार्य (शीळांक) | ९३३ |
| | दीपिका (प्र. श्रु.) | | अजितदेव | |
| — | दीपिका | ९२२५ | खरतर जिनहंस | १५८२ |
| २ | सूत्रकृतांग. | | | |
| | मूळ | २१०० | सुधर्मस्वामि | |
| | निर्युक्ति गा. २०८ | २६५ | भद्रबाहुस्वामि | |
| | चूर्णि | ९९०० | | |
| | वृत्ति | १२८५० | शीलाचार्य | |
| | दीपिका* | ६६०० | हर्षकुल | १५८३ |
| — | दीपिका (सम्यक्त्व दीपिका) | १०००० — | साधुरंग | (Gov5) |
| ३ | स्थानांग. | | | |
| | मूळ | ३६०० | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | १४२५० | अभयदेव | ११२० |
| — | वृत्तिगत गाथावृत्ति | १३६०४ | खर. सुमतिकल्लोल | १७०५ |
| — | दीपिका | १०५०० | नगर्षि | |

* डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां पाने ४९ मां दीपिकाना कर्त्ता रत्नशेखर लख्या छे, अने ते प्रत

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

संवत् १५८३ मां लखेली नोंधी छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ४ | समवायांग. | | | |
| | मूळ | १६६७ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ३५७४ | अभयदेव | ११२० |
| ५ | भगवती. | | | |
| | मूळ | १५७५२ | सुधर्मस्वामि | |
| | चूर्णि | ३११४ | | |
| | वृत्ति | १८६१६ | अभयदेव | ११२८ |
| — | अवचूर्णि | २८०० | | |
| — | द्वितीयशतकवृत्ति | ३७५० | मलयागिरि | |
| — | लघुवृत्ति | १२९२० | दानशेखर | |
| | बीजक | ४९० | हर्षकुळ | |
| ६ | ज्ञातधर्मकथा. | | | |
| | मूळ | ५४०० | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ३८०० | अभयदेव | ११२० |
| ७ | उपाशकदशा.* | | | |
| | मूळ | ८१२ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ८०० | अभयदेव | |
| ८ | अंतकृद्दशा. | | | |
| | मूळ | ८९९ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ४०० | अभयदेव | |

* जेसलमेरनी वे टीपमां उपासकदशानी चूर्णि श्लोक ७५० नी ताडपर छे, अेम लख्युं छे. पण ते अमारा

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | [illegible] | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

धारवा प्रमाण टीका होवी जोइये. तो ते बाबत चोकश तपास करी नक्की करवी जोइये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ९ | अनुत्तरोपपातिक. | | | |
| | मूळ | १९२ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | १०० | अभयदेव | |
| १० | प्रश्नव्याकरण. | | | |
| | मूळ | १२५६ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ४६०० | अभयदेव | |
| — | वृत्ति ( बीजी ) | ७५०० | नयविमल | |
| ११ | विपाक. | | | |
| | मूळ | १२१६ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ९०० | अभयदेव | |
| — | द्वादशांगी वृत्ति | पत्र ११७ | प्रद्युम्नसूरि | De.p.47* |
| | उपांग १२. | | | |
| १२ | औपपातिक. | | | |
| | मूळ | ११६७ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ३१२५ | अभयदेव | |
| १३ | राजप्रश्नीय. | | | |
| | मूळ | २१२० | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ३७०० | मलयगिरि | |

* डेक्कन कॉलेजमांनी आ प्रत सं. १४७४ मां लखेली छे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाट ग. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदाबाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कनकों | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| १४ | जीवाभिगम. | | | |
| | मूळ | ४७०० | सुधर्मस्वामि | |
| — | चूर्णि | १५०० | | |
| | वृत्ति | १६००० | मलयगिरि | |
| — | लघुवृत्ति | ११९२ | हरिभद्र | |
| | ,, | पत्र ४३ | देवसूरि | Dc.p,62* |
| १५ | प्रज्ञापना. | | | |
| | मूळ | ७७८७ | श्यामाचार्य | |
| | वृत्ति | १४५०० | मलयगिरि | |
| — | लघुवृत्ति | ३७२८ | हरिभद्र | |
| | तृतीयपद संग्रहणी गा. १३३ | १५० | अभयदेव | |
| — | ,, अवचूरि | ४३० | कुलमंडन | |
| १६ | जंबूद्वीप प्रज्ञप्ति. | | | |
| | मूळ | ४४५४ | सुधर्मस्वामि | |
| | चूर्णि | १८७९ | | |
| | वृत्ति (प्रमेयरत्नमंजूषा) | १८००० | शांतिचंद्र | १६५० |
| | वृत्ति | १८२५२ | धर्मसागर | १६३९ |
| | वृत्ति | १८२५२ | हीरविजय | |
| | वृत्ति | १३२७५ | खरतर. पुण्यसागर | १६४५ |
| | वृत्ति | १५००० | ब्रह्मर्षि | |

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण | पाटण | पाटण | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | छे | | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | छे | | | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | छे | | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | | | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | | | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | | | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | | | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| १७ | चंद्रप्रज्ञप्ति. | | | |
| | मूळ | २२०० | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ९५०० | मलयगिरि | |
| १८ | सुर्यप्रज्ञप्ति | | | |
| | मूळ | २२९६ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ९००० | मलयगिरि | |
| २३ | पंचोपांग. | | | |
| | मूळ | ११०९ | सुधर्मस्वामि | |
| | वृत्ति | ७०० | श्रीचंद्र† | १२२८ |
| | छेद ६. | | | |
| २४ | निशीथ. | | | |
| | मूळ | ८२१ | सुधर्मस्वामि | |
| | बृहद्भाष्य | १२००० | | |
| | भाष्य. गा. ६५२९ | ७५०० | | |
| | चूर्णि | २८००० | जिनदासमहत्तर | |
| | ,, विंशोद्देशक वृत्ति | १६०० | श्रीचंद्र§ | |

† आ श्रीचंद्रसूरि ते शीलभद्रसूरि तथा धनेश्वरसूरिना शिष्य हता.

§ आ श्रीचंद्रसूरि ते मलधारि हेमचंद्रसूरिना शिष्य हता.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | • | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | निशीथ विंशोद्देशक वृत्ति* | १०० | पार्श्वदेव | ११७३ |
| | अवचूर्णि.† | | प्रद्युम्नशिष्य | De.p.47 |
| | पर्याय | पत्र ४१ | | De.p.116 |
| | भाष्यविवेक.‡ | पत्र १५० | रत्नप्रभशिष्य | |
| २५ | बृहत्कल्प. | | | |
| | मूळ | ४७३ | भद्रबाहुस्वामि | |
| | बृहद्भाष्य § | १२००० | | |
| | लघुभाष्य | ७६०० | | |
| | चूर्णि× | १४७८०¶ | | |

* आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेली छे, पण ते कोई भंडारमां देखवामां आवी नथी, तेथी होवाथी अेम अनुमान बंधाय छे के कदाच बृहट्टिप्पनिकामां ते मूलथी नोंधाइ होवी जोइये. सिवाय सहाय करी छे तो ते प्रमाणे आ व्याख्यामां पण तेमनी सहायता संबंधे कंई लखेलुं हशे ते परथी

† अवचूर्णि डेक्कन कॉलेजमां ताडपत्रपर लखेली छे. तेना कर्त्ता प्रद्युम्नसूरिना शिष्य लखेल छे पण

‡ अेना कर्त्ता रत्नप्रभसूरिशिष्य लखेल छे पण ते कोण छे ते नक्की करवानुं छे.

§ डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ८६ मां बृहत्भाष्यना श्लोक ८६०० आपेला छे.

× डेक्कन कॉलेजना पेज ४९मां लख्युं छे के बृहत्कल्पनी चूर्णिना कर्ता प्रलंबसूरि छे. अने भाष्य

¶ आ श्लोक संख्या एवी रीते छे के श्लो. ११७०० नी सामान्यचूर्णि छे अने श्लोक णनी एक टीपमां श्लो. १४७८० नो आंक मल्यो छे ते परथी ते संख्या कायम राखी छे. छतां

| [illegible] | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | |
| छे | | ० | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |

अे संबंधे श्लोक संख्या तथा रच्यानो संवत् तपासता ते श्रीचंद्रसूरिकृत व्याख्याने मलतां देखातां श्रीचंद्रसूरिकृत मुनिसुव्रत चरित्रना अंते तेमणे लख्युं छे के पार्श्वदेव गणिए ग्रंथनी पोथी लखतां तेमने ते भूल थइ हशे अेम पण संभव छे. माटे आ बाबत शोध करी नक्की करवानी छे.

ते कोण छे ते तपासी नक्की करवानुं छे.

तथा चूर्णि बन्ने तेमां ताडपत्रपर लखेली छे. लख्यानुं संवत् १३३४ छे.

३१०० नी विशेषचूर्णि छे अेम बे संख्या मेलवतां श्लोक १४८०० थाय छे अने ते प्रमाणेज पाट-शोधकजने ए बाबत चोकस करवी जोइए.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | ४२००० | तपाक्षेमकीर्ति.† | १३३२ |
| — | लघुटीका.‡ | १३१४ | | |
| | निर्युक्ति.¶ | ६२५ | भद्रबाहुस्वामि | |
| २६ | व्यवहार | | | |
| | मूळ | ३७३ | भद्रबाहुस्वामि | |
| | भाष्य गा. ४६२९ | ५७८६ | | |
| | चूर्णि | १०३६० | | |
| | वृत्ति | ३३६२५ | मलयगिरि | |
| — | अवचूरि+ (लघुवृत्ति) | पत्र १४२ | | |
| २७ | दशाश्रुतस्कंध. | | | |
| | मूळ§ | | भद्रबाहु | ८९० |
| | निर्युक्ति गा. १४४ | १८० | भद्रबाहु | |
| | चूर्णि | २२२५ | | |
| | वृत्ति | ५१५० | ब्रह्मर्षि.‖ | |

† एमां आदिना श्लोक ४६०० मलयगिरिकृत छे अने बाकीना क्षेमकीर्तिकृत छे.

‡ एना कर्ता कोण छे ते डेलावाली प्रत जोवाथी नक्की थाय तेम छे.

¶ दश निर्युक्तिओनी गाथामां कल्प तथा व्यवहारनी निर्युक्ति गणावी छे, पण तेमांनी आ हारनी निर्युक्ति भाष्य भेगी होवी जोइये. ते शिवाय तेनी जूदी प्रत मळी नथी, माटे शोधक जनोए

+ पाटणनी टीपमां अवचूरि लखेल छे ने डेलानी टीपमां लघुवृत्ति लखेल छे, माटे ते एकज श्लोकसंख्या मेळववी जरूरनी छे.

§ कल्पसूत्र ए दशाश्रुतस्कंधनु आठमुं अध्ययन छे अने ते श्लोक १२१६ नुं गणाय छे, ते मां आवनार होवाथी तेना श्लोक बाद करीने आ सूत्रनी श्लोक संख्या आपी छे.

‖ ब्रह्मर्षि पार्श्वचंद्रना शिष्य हता अने तेणे विक्रम संवत् १६०० ना अरसामां आ टीका करी छे

| बृहट्टिप्पणी | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

बृहत्कल्पनी निर्युक्ति फक्त पाटणना पांचमा नंबरना भंडारमां ताडपर लखायली मोजुद छे अने व्यव-
आ बृहत्कल्पनी निर्युक्तिनो पण उतारो करवा माटे तेनी चोकस तपास करवानी खास जरूर छे.
छे के केम ते बाबतमां अमे सामान्य धोरणे एवुं मान्युं छे के ते एकज हशे छतां ते बाबतमां तेनी

साथे लइए तो आ सूत्रनी श्लोक संख्या २१०६ नी थाय. पण आ लिस्टमां कल्पसूत्रने जुदुं लख-

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| २८ | पंचकल्प | | | |
| — | मूळ. * | ११३३ | † | |
| | भाष्य गा. २५७४ | ३१८५ | संघदास | |
| | चूर्णि. § | ३२७५ | | |
| २९ | महानिशीथ. | | | |
| | मूळ. $ | ४५४८ | मू. सुधर्मस्वामि उद्धारकर्ता हरिभद्र. ‖ | |

* पंचकल्पनुं मूल संवत् १६१२ सूधी मोजुद हतुं, पण हालमां ते गुम थयुं छे. एना संबंधे एटलो पत्तो मल्यो छे के खंबातमां गोरजी देवचंदजिना पासे जे पुस्तको छे तेमां ते प्रत पाना १० तपास करवी जोइये छीए.

सदरहू सूत्र गुम थतां हालमां ४५ आगमनी गणतीमां तेना बदले जीतकल्प नामना सूत्रनुं

† पंचकल्पना कर्त्ता कोण हता ते संबंधे भाष्यकारे मंगलाचरणमां "वंदामि भद्दबाहुं" अेवुं पद कुलमंडनसूरिए तेना कर्त्ता संघदास जणाव्या छे एम सांभल्युं छे. हवे बीजी रीते जोइये तो संघदास-

§ डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ६२ मां चूर्णिकार आम्रदेव लखेल छे. तो ते शा प्रमाण

$ बृहटिप्पनिकामां एनी लघुवाचना, मध्यमवाचना, अने बृहद्वाचना अेम त्रण वाचना लभ्य थाय छे.

‖ अशलनी प्रत उद्देहीए बगाड्याथी तेमानो तूटतो भाग श्रीहरिभद्राचार्ये सांधीने ते प्रतनो देवर्द्धिगणिए सूत्रो पुस्तकारूढ कर्या अने विक्रम संवत् ५८५मां हरिभद्रसूरि स्वर्गवासी थया तेथी पुस्त-

| बृहट्टिप्पणी | पाटण | पाटण. | पाटण | पाटण | पाटण | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | बहु शोध करतां पण एनी प्रत हाथ आवी नथी. डेक्कन कॉलेजना संग्रहमां पण ते मळी नथी. फक्त नी तेनी टीपमां लखेली जणाय छे तो ते त्यां होवानो संभव छे, माटे सत्रुचि शोधक जनोए त्यां |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | नाम गणवामां आवे छे. |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | लख्युं छे तेथी एम अटकळ थाय छे के ते भद्रबाहुस्वामिए रचेलुं हशे—छतां विचारामृतसंग्रहमां गणि तो एना भाष्यकर्त्ता छे, माटे ए बाबत वधु तपास थवाथी नक्की थाय तेम छे. |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | | छे | उपरथी लखे छे ते तपासवुं जरूरनुं छे. |

अनुक्रमे श्लो. ३५००–४२००–४५४८ नी नोंधी छे, पण हालमां एनी बृहद्वाचनाज उप-

उद्धार करेलो छे. तेथी एना उद्धारकर्त्ता तरीके हरिभद्रसूरिनुं नाम नोंध्युं छे. विक्रम संवत् ५२३ मां कालकना समय अने हरिभद्रसूरिना स्वर्गवासना समयना अंतरालमां आ सूत्रनो उद्धार थयो छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | मूळ ७.* | | | |
| ३० | आवश्यक. | | | |
| | मूळ | १३० | सुधर्मस्वामि | |
| | निर्युक्ति गा. २५५० | ३१०० | भद्रबाहुस्वामि | |
| | भाष्य ( विशेषावश्यक ) गा. ३६२५ | ४००० | जिनभद्रगणि | |
| | चूर्णि | १३६००† | जिनदासमहत्तर | |
| — | बृहद्वृत्ति. | २२००० | हरिभद्र | |
| | वृत्ति § | १८००० | मलयगिरि | |
| | लघुवृत्ति | १०६५० | तिलकाचार्य | १२२६ |
| | अवचूरि | ७८८५ | ज्ञानसागर | १४४० |
| — | अवचूरि पत्र.‡ १२६ | | शुभवर्द्धन.¶ | |

* आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन तथा पिंडनिर्युक्ति के ओघ निर्युक्तिमांनां गमे ते एकने सहेलाई माटे ७ गणाव्या छे.  § जेसलमेरनी टीपमां एना श्लोक १०००० लखेल छे.

† बृहट्टिप्पनिकामा एनी श्लोकसंख्या १३६०० तथा १८४७४ एम बे आपेली छे ते पर्था बाबत तपास करी नक्की करवी.

‡ दर पत्रे अनुमाने ५० श्लोक गणिए तो ६३०० ना लगभग होवी जोइये.

¶ शुभवर्द्धनगणि हेमविमलसूरिना वारे हतां. हेमविमलसूरि सं. १५७० मां थया छे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
| छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे |
| छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे |
| छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे |
| छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे |
| छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० |

रिमार्क.

छइने चार मूळ गणाय छे पण अहीं ओघनिर्युक्ति, नंदि तथा अनुयोगद्वारने साथे लइ गणतीनी

एम अनुमान थाय छे के एनी नानी अने मोटी एम बे वाचना होवी जोइये माटे शोधक जनोए ए

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता | रच्यानो संवत्. |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| | टिप्पनक | ४६४० | मलधारि हेमचंद्र* | |
| | विशेषावश्यकवृत्ति | २८००० | मलधारि हेमचंद्र | |
| | ,, † | ९००० | मलयगिरि | |
| — | जीर्णवृत्ति§ | १४००० | | |
| | दीपिका | ११७०० | माणिक्यशेखर¶ | De. |

* आ हेमचंद्रसूरि ते पेहेला हेमचंद्र जाणवा तेओ सिद्धराजना समकालीन हता. तेमना गुरुनुं नाम ओलखाय छे.

† आ वृत्ति बृहट्टिप्पणिकामां नोंधायली छे, पण हजु उपर नोंधेला भंडारोमां उपलब्ध थइ नथी,

§ आ जीर्णवृत्ति पाटणमां ताडपत्रपर छे पण ते तूटेली हालतमां छे, बाकी पीटर्सनना रिपोर्टमां माटे ते त्यांथी मेलवी तेनो उद्धार करवो घटे छे.

¶ माणिक्यशेखरनुं नाम पीटर्सनना रिपोर्टमां नथी मलतुं पण तेणे मूल सूत्रोपर दीपिकाओ करी चिंतामणिना कर्त्ता जयशेखरना संतानमां ते चालेली छे तो आ माणिक्यशेखर ते शाखाना होवा जोइये

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |

अभयदेव छे. तेओए सं. ११६४ मां जीवसमासनी टीका रची छे. अने तेओ मलधारिनी अटकथी

तो शोधकजनोए ए माटे खास ध्यान राखी शोध करवी जोइये.

खंभातमांना ताडपत्रना पुस्तकोनुं लिस्ट आपेल छे तेमां ते सं. १२९४ मां ताडपत्रपर लखायली नोंधी छे.

छे एम आ लिस्ट परथी देखाय छे. शेखरनी शाखा अंचलगच्छमां प्रसिद्ध छे. केमके उपदेश

एम अमारुं अनुमान छे, छतां दीपिकाओनी प्रशस्ति जोई नक्की निर्णय करवो जोइये,

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | **मूळावश्यकनी व्याख्याना परचूरण ग्रंथो.** | | | |
| | षड्विधावश्यकसूत्र वृत्ति | १५५० | नमिसाधु* | ११२३ |
| | ,, (वंदारुवृत्ति नाम्नी)† | २७२० | देवेंद्रसूरि | |
| | षडावश्यक वृत्ति(अर्थ दीपिका) | ६६४४ | रत्नशेखर | १४९६ |
| — | षडावश्यक अवचूरि ‡ | | | |

* एमना गुरुनुं नाम शालिसूरि छे. एणे रुद्रटकृत काव्यालंकारपर सं, ११२५ मां टीका रची छे.

† वंदारुवृत्तिने हालमां वृंदारवृत्ति कहे छे पण तेनुं आदिपद वंदारु होवाथी शुद्ध नाम वंदारुवृत्ति छतां पाटणनी टीपमां एकादजगे तेना कर्त्ता तरीके देवेंद्रसूरिनुं नाम हाथ लाग्युं छे, पण डेक्कन कॉलेजना तेना कर्त्ता सोमतिलक जणाव्या छे. छतां अमारा धारवा प्रमाणे एना कर्त्ता देवेंद्रसूरि एम कहेलुं होवाथी एने " श्रावकानुष्ठानविधि " एवा नामथी पण कोइ वेळा ओळ· सूत्रव्याख्यारूपं तपा श्रीदेवेंद्रसूरिकृतं २७७० " आ परथी असलमां एनुं नाम षडावश्यक हशे एम

‡ षडावश्यकनी अवचूरि फक्त पाटणनी एक टीपमां आवेली देखाय छे, तेथी ओ अनुमान श्राद्धप्रतिक्रमणनी तिलकाचार्यकृत वृत्तिओ साथे लखेली हशे अगर तेमांथी अमुक भाग टांकी निर्णय थाय.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | ४ | १५ | |
| छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

छे. एनो कर्त्ता कोण छे ते बाबत तपास करतां तेनी घणी खरी प्रतोमां तो कंइ नामज मलतुं नथी.
रिपोर्टमां पेज ११७ मां तेना कर्त्ता देवकुशलसूरि लख्या छे तथा भरूचनी टीपमां
होवा जोईये, एनी आदिना काव्यना चोथा चरणमां "वक्ष्याम्यनुष्ठानविधिं सुबोधां"
लखवामां आवे छे. बृहट्टिप्पणिकामां अेना माटे आवो उल्लेख छे. "षडावश्यकं चैत्यवंदनादिसर्वं
पण जणाय छे अने कर्त्ता देवेंद्रसूरि छे एम वधु पूरवार थाय छे. श्लोक संख्यामां सहेज फेर छे.

छे के इरियावही चैत्यवंदन अने वंदनकनी यशोदेवसूरिकृत अवचूरि तथा साधुप्रतिक्रमण अने
आवश्यक उपर कोइए अवचूरि लखी होय तो तेम पण संभव छे. माटे पुस्तक जोये

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| | षडावश्यक विधि | २३७५ | आंच० महीसागर * | १४९८ |
| | षडावश्यक लघुवृत्ति | ३००० | कुलप्रभ † | |
| | ललित विस्तरा | १२७० | हरिभद्र | |
| | ,, टिप्पनक | १८०० | मुनिचंद्र ‡ | |
| — | चैत्यवंदना वृत्ति | ४८२ | हरिभद्र | |
| — | ,, (बालावबोधा). (जूनीगुर्जर) | ७००० | खरतर तरुणप्रभ | १४११ |
| — | चैत्यवंदना महाभाष्य गा० | ९२२ | शांतिसूरि ¶ | |
| | ,, भाष्यवृत्ति§ | | | |
| | चैत्यवंदना विचार (गाथाबद्ध)§ | | | |

* आ महीसागर उपाध्याय आंचलिक जयकेशरिसूरिना शिष्य हता.

† अेमनो रचेलो बीजो ग्रंथ आराधनासत्तरी छे.

‡ मुनिचंद्रसूरिए सं. ११७४ मां उपदेशपदनी टीका रची छे. एमना हाथे सं. ११८१ मां

¶ उत्तराध्ययन वृत्तिकर्त्ता थारापद्रगच्छना वादि वेताल शांतिसूरि सं. १०९६ मां स्वर्गस्वासी स्वीकारिए तो पृथ्वीचंद्र चरित्रना कर्त्ता शांतिसूरि के जेमणे ते चरित्र सं. ११६१ मां रच्युं छे ते बे शांतिसूरिमांथी आ महाभाष्य कोणे कर्युं छे ते तेवा विशेष उल्लेख शिवाय जाणवुं मुस्केल छे. माटे

एना माटे बृहट्टिप्पणिकामां नीचे मुजब उल्लेख छेः—" चैत्यवंदनामहाभाष्यं श्रीशांतीयं

§ § आ बे ग्रंथ बृहट्टिप्पणिकामां नोंधायला छे पण त्यां तेमना कर्त्ता तथा श्लोक संख्या नोंधेल माटे ते बाबत कांइ विशेष लखी शकातुं नथी. चैत्यवंदनाविचारमाटे बृहट्टिप्पणिकामां आवो

| [illegible] | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | केकनकों. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| • | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | • | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | • | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | ० | ० | ० | • | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | • | | |
| छे | ० | ० | • | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

लखायली ओघनिर्युक्तिनी ताडनी प्रत पाटणनां भंडारमां मोजुद छे.

थएला छे एम वेबरे नोंघ करी छे तेने भांडारकर तथा पीटर्सने स्वीकारी छे. एटले आपणे पण जुदा ठरे छे. आ बीजा शांतिसूरि पीपलिया गच्छना स्थापक तरीके ओळखायला छे. हवे ए ते बाबत आ भाष्यनी संघाचार नाम्नी वृत्तिमां कंइ खुलासो होय तो ते जोवो जोइये.

सूत्रव्याख्याचरणादिवाच्यं महामहपणमं तेतिपदं गाथा ९२२"

नथी. वधुं दिलगीरी ए छे के ते बे ग्रंथ अमोने पण हजुलगण कोई टीपमां जोवामा आव्या नथी उल्लेख छे:—" चैत्यवंदनाविचारो गाथाबंधेन सूत्रव्याख्यारूपः "

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| — | चैत्यवंदन कुलक | * | खरतर जिनदत्त | |
| — | ,, वृत्ति | ४४०० | जिनकुशल | १३८३ |
| — | ,, टिप्पन | ९६१ | लब्धिनिधान † | |
| | भाष्यत्रय (६३-४१-४१) | १७५ | देवेंद्रसूरि ‡ | |
| | चैत्यवंदना भाष्य वृत्ति ( संघाचार नाम्नी ) | ९७५० | धर्मघोष § | |
| | ,, अवचूरि | १०२७ | सोमसुंदर | |
| | ,, अवचूरि (बीजी ) | ४२५ | | Gov. |
| | चैत्यवंदना भाष्य ( गाथाबद्ध ) | १०८ | पार्श्वचंद्र ‖ | Gov. |

* आ कुलक केटली गाथानुं छे ते नोंधायुं नथी पण ते कुलकना नामे छे एटले वीस

† लब्धिनिधानगणिए टीकापर टिप्पन रचेल छे माटे ते पंदरमी के सोलमी सदीमां चोकस मुदत जाणी शकाशे.

¶ त्रणे भाष्यनी गाथा १४५ छे तेमा श्लो. १७५ नोंध्या छे.

‡ देवेंद्रसूरि संवत् १३२६ मां स्वर्गवासी थया छे. माटे ते समयना पूर्वे आ ग्रंथ रचायो छे.

§ धर्मघोषसूरि देवेंद्रसूरिना शिष्य हता. तेओ सं. १३२७ मां गच्छाचार्य पदे आवेला छे. तेमणे आ वृत्ति करेली छे तेपरथी केटलीक टीपोमां संघाचारवृत्तिना कर्त्ता तरीके धर्मकीर्तिनुं नाम

× सोमसुंदरसूरि सं. १४५७ थी १४९९ सुधी विद्यमान हता.

‖ आ पार्श्वचंद्र ते जूना थया छे ते छे के सोलमी सदीमां थया ते छे ते ग्रंथ जोये मालम

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |

पचीश गाथानुं अथवा तेथी सहेज वधु हशे. चोकस प्रमाण टीका जोयाथी मली शकशे.

रच्युं होवुं जोइए. छतां ते ग्रंथमां ते वखतना कोइ आचार्यनुं नाम आप्युं हशे तो ते परथी

तेओ ज्यारे उपाध्याय पदे हता त्यारे तेमनुं नाम धर्मकीर्त्ति हतुं अने ते पदमां हता त्यारेज पण आप्युं छे.

पडे. सदरहु ग्रंथ डेकनकॉलेजना संग्रहमां छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
| --- | --- | --- | --- | --- |
| — | चैत्यवंदनचूर्णि * | ता. १७८ | सौभाग्य | |
| — | चैत्यवंदनविवरण | ८४० | रत्नप्रभ ‡ ¶ | ११७४ |
| — | बृहच्चैत्यवंदन सटीक υ | | हेमचंद्र | Dec. |
| — | चैत्यसाधुवंदन श्राद्धप्रतिक्रमण वृत्ति | २००० | पार्श्वसूरि | ९५६ |
| — | चैत्यवंदनादिसूत्र साधुश्राद्ध प्रतिक्रमण पदपर्याय मंजरीओ | ५०० | अकलंकदेव § | |
| | ईर्यापथिकी अवचूर्णि | १५० | | |
| — | चैत्यवंदनावचूर्णि | ८४० | यशोदेव | ११७४ |
| | वंदनकावचूर्णि | ७२० | | |
| | चैत्यवंदनावंदनक प्रत्याख्यान वृत्ति | ५५० | तिलकाचार्य × | |
| | चैत्यवंदनादिवृत्ति (कुलप्रदीप)¶ | २४५८ | | |

* आ प्रत फक्त पाटणना एक भंडारमां ताडपत्र उपर लखायली देखाय छे माटे एनो अवश्य आ नाम कंइक अपूर्ण जेवुं लागे छे तेम ए संबंधे कंइ ऐतिहासिक विना नोंधाइ नथी. पण

‡ आ नाम आपतां भूल करेली लागे छे केमके सं. ११७४मां तो मुनिचंद्रसूरिए उपदेशपदनी टीका छे के जेमणे सं. १२३६ मां उपदेशमालानी टीका रची छे माटे जेसलमेरनी टीप करनारे कर्त्ताना रची छे तेज ए ग्रंथ होवो जोइए.

υ आ प्रत डेकन कॉलेजना लिस्टमां नोंधी छे तो ते खास जोवी जोइए.

§ पाटणनी टीपमां आ प्रत केवल श्राद्धप्रतिक्रमण वृत्तिना नामे नोंधेली छे अने तेमी श्लोकसंख्या

§ अकलंकदेवसूरिनो इतिहास मली शक्यो नथी. दिगंबरमां अकलंक आचार्य थया छे ते अने

× तिलकाचार्ये सं. १२९६ मां आवश्यक लघुवृत्ति रची छे.

¶ आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण ऊपर नोंधायला भंडारोमां उपलब्ध थइ नथी.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे§ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

उद्धार थतो घटे छे.

ताडपत्रनी प्रत होवाथी तेना कर्ता कोई प्राचीन आचार्य होवा जोइए.

रची छे तेमना शिष्य वादिदेवसूरि कुमारपालना वारे विद्यमान हता अने तेमना शिष्य ते रत्नप्रभ नाममां गोटो वाल्यो छे. अमारा अनुमान प्रमाणे श्रीदेवसूरिए सं. ११७४ मां अवचूर्णि

१२९७ आपी छे.

आ अकलंक देव जुदा छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | साधुश्राद्धप्रतिक्रमणचैत्य-गुरुवंदन अवचूरि | ८६० | | |
| — | साधु प्रतिक्रमण वृत्ति | २९६ | तिलकाचार्य | |
| — | ,, | ५४८ | जिनप्रभ | १३६४ |
| — | ,, | ६७२ | पार्श्वदेव * | |
| | श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र † गा. ५१ | ६० | | |
| | ,, चूर्णि | ४५९० | विजयसिंह ‡ | ११८३ |
| | ,, वृत्ति | १९५० | श्रीचंद्र | १२२२ |
| | ,, लघुवृत्ति | २०० | तिलकाचार्य | |
| | ,, वृत्ति | ५७७ | पार्श्वसूरि | ९५६ |

* पार्श्वदेवगणि सं. ११२१ थी ११९० सुधी हता एवा पुरावा मळे छे. एमणे सं. कर्ता पाटणनी टीपमां एवुं नोंधायुं छे के यशदेवना शिष्य पार्श्वदेवे सं. ९५६ मां आ वृत्ति करी छे, सूत्रवृत्तिनो ज एक भाग होवो जोइए एम वधु संभवे छे.

† एने वंदित्तुसूत्र पण कहे छे.

‡ आ विजयसिंह ते पीपलिया गच्छना शांतिसूरिना शिष्य छे.

§ आ वृत्ति ते पार्श्वसूरिनी प्रथम नोंधायली बे हजार श्लोकवाली वृत्तिनो ककडो छे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जैसलमेर. | लींबडी | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

११६९ मां न्यायप्रवेशनी पंजिका रची छे तथा उवसग्गहर स्तोत्रनी वृत्ति पण एमणे रची छे. तो तेना अनुसारे पार्श्वदेवकृत आ वृत्ति ते बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेली पार्श्वकृत चैत्यसाधुवंदन, श्रावक प्रतिक्रमण-

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | * श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमण सूत्रव्याख्याप्रकरण गा. २९३ | ३६५ | जिनदेव | ११८३ |
| | प्रतिक्रमण वृत्ति | ७१८ | जिनहर्ष * | १५२५ Gov. |
| | „ अवचूरि | १६२० | कुलमंडन + | Gov. |
| — | प्रतिक्रमण वृत्ति ‡ | | (वडगच्छीय) सिद्धसेनसूरि | |
| | प्रतिक्रमण क्रमविधि | ९०० | जयचंद्र × | १५०६ |
| | प्रतिक्रमण संग्रहणी § (प्रा.) | ११५ | | Gov. |
| — | प्रत्याख्यान स्वरूप गा. ३६० | ४०० | यशोदेव ¶ | ११८२ |
| | „ वृत्ति ‖ | ५५० | „ | „ |

* आ ग्रंथ माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब चोक्कस नोंध छे:—

" श्राद्धसामायिकप्रतिक्रमणसूत्रव्याख्याप्रकरणं ११८३ वर्षे जैनदेवं गा. २९३ श्लो.

जिनदेवसूरि सोमतिलकसूरिना शिष्य हता तेमनो संक्षिप्त इतिहास जिनप्रभसूरिकृत तीर्थकल्पमांना- निकामां सं. ११८३ आपेल छे त्यां लिखितदोषथी तगडाना बदले एकडो लखायो लागे छे.

* आ जिनहर्षगणि तपगच्छना सोमसुंदरसूरिना शिष्य जयचंद्रसूरिना शिष्य छे के जेमणे सं. नोंध्या छे.

+ कुलमंडनसूरि संवत् १४४२ थी १४४५ सधीमां हता.

‡ बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे आ रीते उल्लेख छे:—" प्रतिक्रमणसूत्रटीका दिगंबरी "

× जयचंद्रसूरि ते सोमसुंदरसूरिना शिष्य हता.

§ आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजमां छे, ते शिवाय बीजे मलतो नथी तो तेशुं छे तेनी तपास

¶ यशोदेवसूरिने कोई कोई जगोए यशोभद्रना नामथी प[illegible]लेला छे, तेथी एम जणाय तेना कर्ता यशोभद्र लख्या छे.

‖ बृहट्टिप्पनिकामां आ वृत्ति नोंधी छे पण ते उपलब्ध थई नथी.

| वृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

२६९ ” तेम छतां ते गुम थाय छे माटे तेनी खास लक्ष राखी शोध करवी जोइये.

कात्यायनीय वीरकल्पमां आपेल छे, अने त्यां तेमना माटे सं. १३८३ नी नोंध आपी छे. बृहट्टिप्प-

१५०२ मां विंशतिस्थान विचारामृतसंग्रह रच्यो छे. सरकारी रिपोर्टमां भूलथी तेमने खरतर तरीके

करवी जोइये.

छे के बखते तेओना बे नाम पण हशे. दाखला तरीके लींबडीना भंडारमानी प्रत्याख्यान स्वरूपनी प्रतमां

5

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| — | प्रत्याख्यानचूर्णि | ४०० | ( अजमेरमां छे ) | |
| — | प्रत्याख्यानविचारणामृत गा. २३७ | २८० | शालिसूरि* | Gov. 5 |
| — | प्रत्याख्यानस्थान विवरण | ७०० | जयचंद्र | |
| | पंचपरमेष्ठिविवरण † ( प्राकृतगाथामय ) | २५० | मतिसागर ‡ | ११६८ |
| ३१ | दशवैकालिक. | | | |
| | मूळ | ७०० | शय्यंभवस्वामी¶ | |
| | निर्युक्ति गा. ४४५ | ५५० | भद्रबाहुस्वामी | |
| | चूर्णि | ७००० | | |
| | बृहद्वृत्ति | ६८५० § | हरिभद्रसूरि | |
| | वृत्ति | ७००० | तिलकाचार्य | १३४६ |
| | लघुवृत्ति | २६०० | सुमतिसूरि + | |
| | लघुवृत्ति | २१०० | आंच. विनयहंस | १५७२ |

* शालिसूरि ते कदाच शालिभद्रसूरि हशे के जे सं. १२०४ मां हता.

† आ ग्रंथ माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—" पंचपरमेष्ठिविवरणं प्रा० गाथामयं

‡ बृहट्टिप्पनिकाना नोंधप्रमाणे ए आचार्य सं. ११६८ मां हता. एटलुं जणाय छे, ते शिवाय

¶ सुधर्मस्वामिना शिष्य जंबूस्वामि तेमना शिष्य प्रभवस्वामि अने तेमना शिष्य ते

§ बृहटिप्पनिकामां एनुं प्रमाण ७५५० आपेल छे ते सूत्र साथे छे एम लागे छे.

+ सुमतिसूरि बे थएला छे. एक देवभद्र तथा गुणचंद्रना गुरु अने प्रसन्नचंद्रसूरिना शिष्य अने सुमतिसूरिए ते करी छे एम लखेलुं मळे छे. परंतु बोधकाचार्य ते कोण हता ते संबंधे कांइ जाणवामां

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदाबाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | छाणकां. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

बहुंतरकथं ११६८ वर्षे मतिसागरं गा. २५० " ए ग्रंथ उपयोगी छतां क्यां पण उपलब्ध थयो नथी तेमना माटे वधु इतिहास मल्यो नथी.

शय्यंभवस्वामि हता.

बीजा लक्ष्मीसागरसूरिना शिष्य अने हेम विमलसूरिना गुरु. पण खुद टीकामां तो बोधकाचार्यना शिष्य आव्युं नथी माटे आ बाबत शोधक जनोए इतिहास संबंधे वधु शोध करवी जोईये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| — | ,, अवचूरि | | शांतिदेव * | |
| | ,, | १८०० | | |
| | ,, | १२०० | | |
| | ,, ( शब्दार्थवृत्ति ) | ३०३३ | समयसुंदर | अजमेर |
| — | निर्युक्त्यवचूरि | पत्र ९ | | |
| | वृत्तिदीपिका | पत्र १११ | माणिक्यशेखर | |
| ३२ | उत्तराध्ययन. | | | |
| | मूळ | २००० | सुधर्मस्वामी | |
| | निर्युक्ति गा. ६०७ | ७०० | भद्रबाहुस्वामी | |
| | चूर्णि | ५८५० | गोवालिय महत्तर शिष्य † | |
| | बृहद्वृत्ति | १६००० | शांतिसूरि ‡ | |
| | लघुवृत्ति | १२००० | नेमिचंद्रसूरि ¶ | ११२९ |
| | वृत्ति | १४२५५ | भावविजय | १६७९ |



* शांतिदेव ने शांतिसूरि ते एकज छे के जुदा छे ते चोकस थवुं जोइए. अने जुदा सावित

† जो के इहां गोवालिय महत्तरना शिष्य ते कोण ते संबंधे विशेष नाम आपेल नथी, पण अमारा
छतां कोइ चोकस पुरावो मले तो वधु निर्णय थइ शके.

‡ आ शांतिसूरि ते थारापद्रगच्छीय वादिवेतालशांतिसूरि छे के जेमना माटे वेबरे एवी नोंध

¶ एमनुं साधुपणामां देवेंद्रनाम हतुं पण तेओ सूरि थया त्यारे नेमिचंद्रना नामे ओळखाया छे.
सैद्धांतिक शिरोमणि तरीके पंकाता हता.

| बुहट्टिप्पणी | पाटण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण | पाटण | जेसलमेर. | लींबडी | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |

थाय तो ते क्यारे हता ते पण शोधवुं जोइये.

धारवाप्रमाणे तेओ जिनदास महत्तर होय तो होय. कारणके बन्नेना नाममां महत्तरनी अटक रहेली छे.

करी छे के तेओ संवत् १०९६ मां स्वर्गवासी थया छे.

तेमणे आ वृत्ति उपरांत आख्यानमणिकोश, लघुवीरचरित्र तथा रत्नचूड चरित्र रचेल छे अने तेओ

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | १५००० | खर० लक्ष्मीवल्लभ | |
| | ,, | १४००० | कमलसंयम | १५४४ Gov. |
| | ,, | ८२६५ | आंच० कीर्त्तिवल्लभ | १५५२ |
| | दीपिका | ८५०० | आंच० उदयसागर | १५४६ |
| | दीपिका* | १०७०७ | | १६३७ |
| | दीपिका | पत्र ११४ | विनयहंस † | |
| | दीपिका | | हर्षकुल ‡ | |
| | अवचूरि | | अजितदेवसूरि § | |
| | अवचूरि | ३६०० | ज्ञानसागर ¶ | १४४१ |
| — | अवचूरि | ६११६ | | |
| — | अवचूरि | ९२१० | | |
| | कथाओ | २३५० | पद्मसागर | १६५७ |
| | कथाओ | १२५५ | तपा पुण्यनंदन + | |

* आ दीपिका रचायानुं संवत् नोंधायुं छे पण कर्तानुं नाम मल्युं नथी ते मेलववुं जोइये.

† आंचलिक विनयहंसे दशवैकालिकनी लघुवृत्ति अर्थात् दीपिका सं. १५७२ मां रचेली छे.

‡ हर्षकुलगणिए सं. १५८३ मां सूत्रकृतांगनी दीपिका रची छे.

§ अजितदेवसूरिए सं. १२७३ मां योगविधि रचेली छे तेमां ते पोताना गुरुनुं नाम ( भानु अवचूरि कोणे करेली छे ते खुद्द प्रत जोवाथी मालम पडे एम छे.

¶ एमणे सं. १४४० मां आवश्यकावचूरि रचेल छे.

+ पुण्यनंदन क्यारे हता ते संवत् मल्यो नथी, माटे पुस्तक जोइ ते निर्णय थशे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनको. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

रविप्रभ जणावे छे. वली बीजा अजितदेवसूरि ते मुनिचंद्रसूरिना पाटे थएला छे. माटे ए बेमांथी आ

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ३३ | पिंडनिर्युक्ति. | | | |
| | मूळ गा. ७०८ | ८३५ | भद्रबाहुस्वामी | |
| | वृत्ति | ४००० | | |
| | लघुवृत्ति | * ३१०० | वीराचार्य † | |
| | बृहद्वृत्ति | ६७०० ‖ | मलयगिरि | |
| | अवचूरि | २८३२ | माणिक्यशेखर | |
| ३४ | ओघनिर्युक्ति. | | | |
| | मूळ गा. ११६४ | १३५५ | भद्रबाहुस्वामी | |
| | भाष्य गा. २५७० | ३००० | | |
| — | § चूर्णि | | | |
| | वृत्ति | ६८२५ | द्रोणाचार्य‡ | |
| | वृत्ति | ¶ ७५०० | मलयगिरि | |
| | दीपिका | ५७०० | माणिक्यशेखर | |

* एमां आदिना श्लोक १३५० हरिभद्र सूरिकृत छे. अने बाकीना वीराचार्यकृत छे.

† वीराचार्य माटे बृहट्टिप्पनिकामां एवो उल्लेख छे के " देवाचार्य शिष्य वीराचार्यीया. " हवे छे. अेम समयसुंदरकृत अष्टलक्षीनी प्रशस्तिमां छे. जुवो रिपोर्ट चोथो पेज ६९ माटे अे देवाचार्यना लिखित दोष थयो मानिये तो सं. ११६२ मां जीवानुशासननी वृत्तिना कर्त्ता देवसूरि थया तेमना

‖ ससूत्र वृत्तिना श्लोक ७५०० छे.

§ चूर्णि बृहट्टिप्पनिकारने पण उपलब्ध थई नथी तेथी ते लांबा वखतपर गुम थएली लागे छे.

‡ एमणे अभयदेवसूरिकृत नवांगीवृत्तिओ शोधी छे. माटे ते सं. ११२० मां हता.

¶ ससूत्र श्लोक संख्या ८९७० छे.

| बृहट्टिप्पणिका | पाटण. | पाटण. | पाटण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

देवाचार्यनुं नाम खरतर गच्छनी पट्टावलीमां ३६ मां पाटमां छे अने तेमना पाटे नेमिचंद्रसूरि थएला शिष्य वीराचार्य थया होय तो होय. ते शिवाय बृहट्टिप्पनिकामां जो गुरुना बदले शिष्यपद लखवानो गुरु वीरचंद्र हता ते वीरांचार्य होय तो तेम पण वखते होय.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | अवचूरि | ३२०० | ज्ञानसागर | |
| | उद्धार | १११ | — | |
| ३५ | नंदि | | | |
| | मूळ | ७०० | देवर्द्धिगणि † | |
| | चूर्णि | १५०० | — | ७३३ |
| | लघुवृत्ति | २३०० | हरिभद्र | |
| | बृहद्वृत्ति | ७७३२ | मलयगिरि | |
| — | लघुवृत्ति टिप्पनक $ | | | |
| | ( विषमपदपर्याय ) | ३३०० | श्रीचंद्र | |
| — | सर्वसिद्धांतविषमपदपर्याय | २५९५ | श्रीचंद्र | |
| | अवचूरि | १६०५ | देव्यावसूरि ‡ | |
| ३६ | अनुयोगद्वार. | | | |
| | मूळ | १८९९ | आर्यरक्षित | |

† देवर्द्धिगणिए वीरप्रभुथी ९९३ वर्षे एटलेके विक्रम सं. ५२३ मां सूत्रो पुस्तकारूढ करतां

$ आ बन्ने ग्रंथ जूदा जूदा छे के केम ते विषे विचार करतां तेना कर्त्ता एक होवाथी एम बीजी संख्या सरखीज थई रहे छे ते परथी ते एकज ग्रंथ होय तो पण होय माटे ए बाबत बन्ने ग्रंथना

‡ चंचलबाना भंडारमां रहेली आ अवचूरिना अंते तेना कर्त्ता देव्यावसूरि लखेल छे. पण ए देव्यावसूरि नहि पण देवसूरि होवुं जोईये.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | |
| छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

मंगलाचरण तरीके आ नंदिसूत्र रची लखेल छे.

लागे छे के पेली श्लोकसंख्या नंदिना सूत्रने साथे थई टांकी होय तो ते बाद करिए तो लगभग पेली तथा आद्यंत तपासथाथी नक्की निर्णय थाय एम छे.

नाम विचित्र लागे छे तेथी वखते तेमां लिखितदोष होय तो होय अने तेम हशे तो एना कर्त्तानुं नाम

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | चूर्णि | २२६५ | जिनदासमहत्तर | |
| — | लघुवृत्ति | ३००० | हरिभद्र | |
| | बृहद्वृत्ति | ५८०० | मलधारि हेमचंद्र | |
| | पयन्ना १०. | | | |
| ३७ | चतुःशरण* | | | |
| | मूळ गा. ६४ | ८० | वीरभद्रगणि † | |
| | वृत्ति | ८०० | आंच० भुवनतुंग § | |
| | अवचूरि | | गुणरत्न ‡ | |
| ३८ | आतुरप्रत्याख्यान. | | | |
| | मूळ गा. ८४ | १०० | | |
| | वृत्ति | ४२० | आंच० भुवनतुंग | |
| | अवचूरि | | गुणरत्न | |
| ३९ | भक्तपरिज्ञा. | | | |
| | मूळ गा. १७१ | २१५ | | |
| | अवचूरि | | गुणरत्न | |

* एनुं बीजुं नाम "कुशलानुबंधि अध्ययन" एवुं पण छे.

† आ वीरभद्र महावीर प्रभुना शिष्य हता एम तेनी टीकामां लखेलुं छे तेथी आराधनापताकाना

§ भुवनतुंगसूरि आंचलिक जयशेखरसूरिना वारे हता तेमणे बीजो ग्रंथ सीताचरित्र नामनो रचेल छे.

‡ गुणरत्नसूरि सोमसुंदरसूरिना गुरुभाई हता. तेमणे षड्दर्शन समुच्चयनी टीका तथा सं. १४६६

| बृहट्टिप्पणी | पाटण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | छे | ० | छे | ० | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |

कर्त्ता वीरभद्र के जेणे ते सं. १०७८ मां रची छे ते अने आ वीरभद्र जूदा छे.

मां क्रियारत्नसमुच्चय रचेल छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ४० | संस्तारक. | | | |
| | मूळ गा. १२१ | १५५ | | |
| | अवचूरि* | | गुणरत्न | |
| ४१ | तंदुलवैचारिक. | | | |
| | मूळ गा. ४०० | ५०० | | |
| | वृत्ति | पत्र ३८ | विजयविमल † | |
| ४२ | चंद्रवेध्यक | | | |
| | मूळ गा. ११४ | २०० | | |
| ४३ | देवेंद्रस्तव. | ३७५ | | |
| | मूळ गा. ३०३ | | | |
| ४४ | गणिविद्या. | १०५ | | |
| | मूळ गा. | | | |
| ४५ | महाप्रत्याख्यान. | १७६ | | |
| | मूळ गा. १४३ | | | |
| ४६ | वीरस्तव. | ५० | | |
| | मूळ गा. ४३ | | | |

* चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा तथा संस्तारक ए चारे पयन्नानी अवचूरिओ मळीने

† एमणे सं. १६३४ मां गच्छाचार पयन्नानी वृत्ति रचेल छे.

| बृहट्टिप्पणी | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेकनकॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | ० | ० | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

श्लोक ८०० नी छे.

# उपसंहार.

आपणामां पिस्तालीश आगम कहेवाय छे तेना बदले उपला लिस्टमां ४६ नम्बर थया छे, ते सम्बन्धे जणाववानुं ए छे के, पिस्तालीश आगमनी गणतरीमां पिंडनिर्युक्ति अथवा ओघनिर्युक्ति ए बेमांथी गमे ते एक लईने गणाय छे, पण अमे आ लिस्टमां ते बन्ने गणी छे, तेथी एक नम्बर वध्यो छे. परंतु आपणा पिस्तालीश आगमो माहेलुं एक सूत्र नामे पंचकल्प आजकाल उपलब्ध थतुं न होवाथी ते एक सूत्र ऊणुं पडे छे, एटले तेनी ऊणाइना बदलामां अहीं एक नम्बर वधतो देखाय छे ते पूरो थइ रहेतां आपणी पिस्तालीश आगम हाल विद्यमान होवानी मान्यता कायम राखी शकाय एम छे. माटे आ लिस्टमां आपेला ४६ नम्बरोने ४५ तरीकेज गणवा एवी अमारी नम्र सूचना छे.

आ रीते अहींलगण आपणा पवित्र पिस्तालीश आगम तेमनी पंचांगी साथे हालमां जे प्रमाणे उपलब्ध थया छे, ते प्रमाणे नोंध्या छे.

प्रसिद्धकर्त्ता.

# अवशिष्ट आगमो.

# पूर्वप्रदर्शित पिस्तालीश आगमना अंतर्भूत रहेला छतां

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| १ | पर्युषणाकल्प ‡ | | | |
| | मूळ | १२१६ | भद्रबाहुस्वामी | |
| | निर्युक्ति गा. ६८ | ९५ | ,, | |
| | निरुक्त | १५८* | विनयचंद्र † | |
| | टिप्पन | ६४० | पृथ्वीचंद्र ¶ | |
| | संदेह विषौषधी वृत्ति | ३०४१ | जिनप्रभ‡ | |

१ आ दशे सूत्रो पिस्तालीश आगमना पेटामांज समाय छे अने ते कया कया आगमना नामना विशेष स्मरणना अर्थे इहां तेमने नंबरवार नोंधवामां आव्या छे.

‡ आ सूत्र दशाश्रुतस्कंधना आठमा अध्ययन रूपे छे, छतां ते अलग लखातुं होवाथी वली ए बारसे श्लोक प्रमाण होवाथी एने " बारसासूत्र " ना नामे पण ओलखवामां आवे छे. ए ए सूत्र छेदग्रंथ होवाथी प्रथम सभा समक्ष वंचातुं न हतुं पण विक्रम सं. ५२३ मां आनंदपुर सभासमक्ष वंचाय छे.

* डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां एना श्लोक ४०० आप्या छे. पण बृहट्टिप्पनिकामां एना श्लोक

† एमणे मल्लिचरित्र नामे महाकाव्य सं. १२८६ मां रचेल छे. तथा तेज वर्षमां उदय

¶ पृथ्वीचन्द्रसूरिए सदरहू टिप्पनना प्रांतमां आ प्रमाणे प्रशस्ति आपी छे. शीलभद्रशिष्य धर्मघोष

‡ एमां श्लोक २४६८ सूधी कल्पसूत्रनी व्याख्या छे अने त्यारकेडे श्लोक ५७३ कल्पसूत्रनी

# हाल अलग ओळखवामां आवता दश अवशिष्ट सूत्रो.[१]

| बृहट्टिप्पणी | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद. | कोडाय. | मुंबई. | डेक्कन कॉ. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |

पटामां समाय छे ते दरेकना नाम साथे जोडेली फूटनोटमां जणाववामां आवशे. छतां तेमना

इहां ते जूदुं गण्युं छे. एनुं मूलनाम पर्युषणाकल्प छे, छतां हाल ते कल्पसूत्रना नामे वधु प्रसिद्ध छे.
सूत्रनी आदिमां स्थविरावली छे ते देवर्द्धिगणिकृत छे, अने बाकीनो भाग भद्रबाहुस्वामिकृत छे.
( वडनगर ) ना ध्रुवसेन राजानी समक्ष तेना पुत्रना मरणनो शोक निवारवा ते वंचायुं त्यारथी ते

१५८ आप्या छे.

सिंहकृत धर्मविधिवृत्ति पण तेमणे सुधारी छे.

तच्छिष्य यशोभद्र तच्छिष्य देवसेनगणि अने तेना शिष्य ते पृथ्वीचंद्र.

निर्युक्तिनी व्याख्याना छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | किरणावली | ४८१४ | धर्मसागर | १६२८ |
| | सुबोधिका | ६००० | विनयविजय | १६९६ |
| | कल्पकल्पलता | ७७०० | समयसुंदर † | |
| | कल्पमंजरी | ६००० | रत्नसागर § | Gov. |
| | प्रदीपिका | ३३०० | संघविजय | १६७४ |
| | कल्पद्रुकलिका | ४१०९ | लक्ष्मीवल्लभ | Gov.‡ |
| | कल्पदीपिका† | ३५३२ | पं. जयविजय | १६७७ |
| | कल्प लघुटीका | १००० | | |
| | अवचूरिरूपवृत्ति | २०८५ | उदयसागर $ | |
| | अवचूरिलेश * | ७०० | महीमेरु | |

† समयसुंदर उपाध्याय विक्रमनी सतरमी सदीमां थएला छे.

§ डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज २७५ मां एना कर्त्ता सहजकीर्ति लख्या छे. परंतु अजमेरनी

‡ डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां एना श्लोक ४५०० नोंध्या छे.

† आ कल्पदीपिका श्रीभावविजयजी वाचके शोधेली छे.

$ उदयसागर बे थया छे:—एक सं. १५५७ मां श्रीपालकथाना रचनार लब्धिसागरना गुरु रची छे. हवे आ वृत्तिकार ए बेमांथी कया हशे ते विषे अमारुं धारवुं एवुं छे के ते बीजा उदयसागर

* आ अवचूरिलेश संदेहविषौषधि उपरथी उद्धृत करेल छे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

टीपमां रत्नसागर लखेल छे माटे एनी प्रत तपाशी नक्की करवुं जोईये.

तथा बीजा अंचलगच्छना आचार्य पण उदयसागर थया छे के जेमणे सं. १८०४ मां स्नात्रपंचाशिका

हशे. कारणके आ सूत्रपर दरेक गच्छवालानी जूदी जूदी टीका थई छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | अवचूरि | २२०० | — | |
| | कल्पांतर्वाच्य * | २५०० | कुलमंडन | |
| | ,, | १८०० | सोमसुंदर | |
| | ,, | १९०० | | |
| | ,, | १५०० | | |
| | कल्पसमर्थन | १००० | | Gov. |
| | कल्पचर्चा पत्र ३५ (प्रा.) | | | |

* चंचलबेनना भंडारनी टीपमां रत्नशेखरकृत तथा जिनहंसकृत कल्पांतर्वाच्य नोंधेला छे.

| ढाइल्याणी | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| २ | जीतकल्प * | | | |
| | मूळ गा. १०५ | १३० | जिनभद्रगणि | |
| | चूर्णि | १००० | सिद्धसेन ¶ | |
| | टिप्पनक(विषमपदव्याख्या) | ११२० | श्रीचंद्र | १२२७ |
| | वृत्ति | १८०० | तिलकाचार्य | १२७४ |
| | विवरण | ५४३ | | |
| | भाष्य | ३१२५ | | |
| | सार $ पत्र २१ | | मेरुतुंग | |

* छ छेदमां पंचकल्प हालमां गुम थइ जतां तेना स्थले आ जीतकल्पने केटलाएक गण-जुदुं गण्युं छे. बाकी परमार्थे तो ते पण छेदग्रंथमांथी उद्धृत करेलो होवाथी छेदग्रंथ तरीके

¶ सिद्धसेन नामना पांच आचार्य नीचे प्रमाणे थया जाणवामां आव्या छे:—

१ सिद्धसेन दिवाकर ते वृद्धवादिसूरिना शिष्य हता. तेमनुं बीजुं नाम कुमुदचंद्र हतुं

२ सिद्धसेनगणि ते दिन्नगणिशिष्य–सिंहसूरितच्छिष्य भास्वामिना शिष्य हता अने तेमणे

३ सिद्धर्षि ते सूराचार्य शिष्य देलमहत्तर शिष्य दुर्गस्वामि शिष्य सद्दर्षिसूरिना शिष्य

४ सिद्धसेनसूरि ते देवभद्रसूरिना शिष्य अने यशोदेव सूरिना गुरु हता एमणे सं. ११४२

५ सिद्धसूरि ते उक्केश गच्छना देवगुप्तसूरिना शिष्य हता एमणे सं. ११९२ मां बृहत्-

हवे आ जीतकल्पनी चूर्णि ए पांच आचार्य माहेला कया आचार्ये रची छे ते संबंधे विचार तो मूलकार जिनभद्रगणिनी पूर्वे थइ गया छे एटले तेमनी ते रचेली संभवी शके ज नहि–बाकी कया आचार्ये ते रची छे ते संबंधी चोकस निर्णय सदरहु चूर्णिनी प्रत नजरे जोवाथी ज त्रीजा आचार्य सिद्धर्षिनी ते रचेल होवी संभवित लागे छे.

$ आ सार पत्र २१ नो चंचलबाईना भंडारनी टीपमां नोंधेल छे.

| बृहट्टिप्पण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | |

तरीमां ल्ये छे. परंतु पंचकल्पना भाष्य अने चूर्णि कायम होवाथी अमे एने त्यां नहि गणतां इहां ज गणाय तो तेमां पण कांइ वांधा जेवुं नथी.

अने तेमणे सम्मतिसूत्र तथा कल्याणमंदिरस्तव वगेरे रचेल छे.

तत्वार्थनी टीका रची छे.

हता तेमणे सं. ९६२ मां उपमितभवप्रपंच तथा उपदेशमालानी वृत्ति रची छे.

मां प्रवचनसारोद्धारनी वृत्ति रची छे.

क्षेत्रसमासनी वृत्ति रची छे.

करतां एम मालम पडे छे के पेला आचार्य सिद्धसेनदिवाकर तथा बीजा आचार्य सिद्धसेनगणि त्रीजा चोथा तथा पांचमा आचार्यमांथी कोइए पण ते रची होवी जोइए. हवे ए त्रणेमांथी थइ शके तेम छे तो जिज्ञासु जने ते प्रत जोई निर्णय करवानो छे. अमारा अनुमाने

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ३ | यतिर्जीतकल्प * | | | |
| | मूळ | ५०० | सोमप्रभ $ | |
| | वृत्ति | ५७०० | साधुरत्न | १४५६ |
| ४ | श्राद्धजीतकल्प * | | | |
| | मूळ गा. २२५ | ३०० | तपा धर्मघोष | |
| | वृत्ति | २६४७ | सोमतिलक † | |
| | अवचूरि | | | |
| | लघुश्राद्धजीतकल्प | | | |
| | मूळ गा. ३० ¶ | ३६ | तिलकाचार्य | |
| | वृत्ति ¶ | ११५ | तिलकाचार्य | |

* यतिजीतकल्प तथा श्राद्धजीतकल्प ए जीतकल्पसूत्रना पेटा सूत्र जेवा होवाथी परमार्थे ते

$ सोमप्रभसूरि सं. १३१० थी १३७० सूधीना कालमां विद्यमान हता.

† सोमतिलकसूरि संवत् १३७३ मां सूरिपदे आव्या अने सं. १४२४ मां स्वर्गवासी थया सत्तरिसयठाण नामे प्रकरण पण एमणे ज रचेला छे.

कोडायनी टीपमां वृत्तिना कर्त्तानुं नाम पण धर्मघोष आप्युं छे पण ते भूल होवी

¶ बृहत्टिप्पनिकामां आ बे ग्रंथ माटे नीचेमुजब उल्लेख छे:—

" सिरिवीरजिणं नमिउं–इतिश्राद्धजीतकल्पस्य सूत्रवृत्ती श्रीतिलकीये गा. ३० वृ. ११५ " संबंधे वधु शोधखोल करवानी जरूर छे.

| [illegible] | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्तो | रिमार्क |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

पण छेदग्रंथज छे.

छे. एमणे सं. १३९४ मां शीलतरंगिणी नामे ग्रंथ रचेल छे. तथा बृहत्नव्यक्षेत्रसमास अने

जोईए केमके बृहट्टिप्पनिकामां तथा पाटणनी टीपोमां सोमतिलकसूरिनुं ज नाम आपेल छे.

परंतु आ बे ग्रंथ हाल सुधी जोवामां आवेला भंडारोमां उपलब्ध थया नथी माटे ए

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ५ | पाक्षिक सूत्र* | | | |
| | मूळ | ३०० | | |
| | वृत्ति | २७०० | यशोदेव | ११८० |
| | अवचूरि | ७०० | | |
| | चूर्णि † | ४०० | | |
| | विषमपदपर्याय मंजरी ‡ | | अकलंकदेव | |
| ६ | क्षमण सूत्र § | | | |
| | मूळ | १५ | | |
| | अवचूरि | | | |

*पाक्षिकसूत्र ए आवश्यक सूत्रना पेटा विभागनुं सूत्र छे, कारणके तेमां पाक्षिक दिवसे गणाय छे.

† जेसलमेरनी हंसविजय महाराजे करावेली टीपमां ताडपत्रना पहेला बंधनमां ज पाक्षिक-माटे ते चूर्णि छे के अवचूरि अथवा विवरण छे ते तपासी नक्की करवुं जोईये छीए बृहत्टिप्पनिकामां " प्र. ईर्यापथिकी १ चैत्यवंदना २ वंदनक ३ चूर्णयः ११७४ वर्षे यशोदेवकृता: केम ते पण तपासवानुं छे.

‡ पदपर्यायमंजरी माटे बृहत्टिप्पनिकामां आ प्रमाणे उल्लेख छे " चैत्यवंदनादि सूत्र १ लागे छे के साधुप्रतिक्रमणमां पाक्षिकसूत्रनी पदपर्यायमंजरी पण अंतर्गत आपी हशे.

§ क्षामणासूत्रने पाक्षिकक्षामणासूत्र पण कहे छे अने ए सूत्र पाक्षिक सूत्रना प्रांते आववुं होवाथी ते कोई कोई स्थले अलगुं पण लिखित मळे छे. तेथी इहां तेने अमे विशेष स्मरणार्थे जूदुं नोंध्युं छे.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंबात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता | रिमार्क्स. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |

करवाना प्रतिक्रमणनी विगत आपेली छे, अने प्रतिक्रमण ए षडावश्यक मांनुं चोथुं आवश्यक

प्रतिक्रमणचूर्णि नोंधी छे ते परथी इहां ते टांकी छे, छतां ते बीजा भंडारोमां उपलब्ध थई नथी

प्र. ई. १५० चै. ८४०, वं. ७२७ " ए प्रमाणे उल्लेख छे तो तदंतर्गत आ चूर्णि छे के

साधु २ श्राद्धप्रतिक्रमणसूत्र ३ पदपर्यायमंजर्योऽकलंकदेवसूरीयाः " ए उल्लेखपरथी एम

तेनी साथेज गणाय छे. अने तेनी अवचूरि पण पाक्षिक सूत्रनी अवचूरिना प्रांते आवे छे. छतां

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ७ | वंदित्तु सूत्र गा. ५४* | ६५ | | |
| ८ | ऋषिभाषित ‡ | | | |
| | मूळ | ८१५ | | |
| ९ | संसक्तनिर्युक्ति $ गा. ६४ | ८० | भद्रबाहुस्वामी | |
| १० | विशेषावश्यकसूत्र¶ गा. ३६२५ | ४००० | जिनभद्रगणि | |

* वंदित्तुसूत्र ते श्राद्धप्रतिक्रमण होवाथी आवश्यकसूत्रनुं पेटा सूत्रज छे तेना व्याख्याना ग्रंथो ते नोंध्या नथी. इहां फक्त ते पण एक सूत्र तरीके गणाय छे एवुं जणाववा खातर ते नंबरवार

‡ ऋषिभाषितना पिस्तालीश अध्ययन अथवा भाषित छे. नंदिसूत्रमां चोरासी आगमना नाम हती एम दशनिर्युक्तिना नामोनी गाथा ऊपरथी जणाय छे, पण ते निर्युक्ति हाल उपलब्ध थती

$ आ निर्युक्ति कोई सूत्रपर नथी पण अळगी रहेल छे, ते चौदपूर्वधर भद्रबाहुस्वामिनी

¶ आनुं बीजुं नाम महाभाष्य पण छे तेना व्याख्याग्रंथो पूर्वे आवश्यक सूत्रना पेटामां ते महा-मानवामां आवे छे एवुं खास जणाववा खातर तेने नंबरवार आपी इहां नोंधवामां आव्युं छे.

| बृहट्टिप्पण | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | |
| छे | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |

पूर्वे आवश्यक सूत्रनी व्याख्याना परचूरण ग्रंथोनी व्याख्यामां नोंधवामां आव्या छे, तेथी इहां नोंधवामां आव्युं छे.

आप्यां छे त्यां एनुं नाम कालिक सूत्रोमां गणाव्युं छे. एना ऊपर भद्रबाहुस्वामिए निर्युक्ति करेली नथी. आ सूत्र उत्तराध्ययनना पेटामां गणी शकाय एवी रचनावालुं छे.

रचेल होवाथी पिंडनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्तिना माफक सूत्रतरीके गणिये तो गणी शकाय तेम छे.

भाष्यनुं नोंध लेतां त्यां नोंध्या छे. आ स्थळे आ ग्रंथने पण आगमसूत्रना पेटामां सूत्र तरीके ज

# अवशिष्ट पयन्ना.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | **अवशिष्ट वीस पयन्ना.** | | | |
| | बीजी गणत्रीए १० पयन्ना. | | | |
| १ | अजीवकल्प गा. ४४ | ५५ | | |
| २ | गच्छाचार गा. १३८ | १७५ | | |
| | वृत्ति | ५८५० | विजयविमल* | १६३४ |
| | अवचूरि | १५६० | वानरर्षि | |
| | अवचूरि | १६०० | हर्षकुल | R. 6 |
| | अवचूरि | ४०० | | |
| ३ | †मरणसमाधि गा. ६५६ | ८३७ | | |
| ४ | सिद्धप्राभृत‡ गा. १२० | १५० | | |
| | वृत्ति | ८५० | | |
| ५ | तीर्थोद्गार § गा. १२३३ | १५६५ | | |

* विजयविमलगणि ते आनंदविमलसूरिना शिष्य हता.

डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज १२३ मां आ वृत्तिना कर्ता मलयगणि लखेला छे. ते भूलथी कोई ठेकाणे इतिहास पण जोवामां आव्यो नथी.

† मरणसमाधिने मरणविधि अथवा मरणविभक्ति पण कहेवामां आवे छे.

‡ एने प्राकृतमां सिद्धपाहुडो कहे छे.

§ एने प्राकृतमां तित्थोगालियपयन्नु कहे छे.

| [illegible] | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | छे | ० | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | छे | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | |
| छे | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | छे | छे | ० | छे | छे | |

लखेला होवा जोईये. कारण के ते नाम कोई ठेकाणे जोवामां आव्युं नथी. तथा मलयमणिसंबंधी

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ६ | आराधनापताका गा. ९९३ | १२०० | वीरभद्र ʊ | १०७८ |
| ७ | द्वीपसागर प्रज्ञप्ति गा.२२३ | २८० | | A. S. |
| ८ | ज्योतिष्करंडक | १८५० | | |
| | वृत्ति ( ससूत्र ) | ५००० | मलयगिरि | |
| ९ | अंगविद्या | ९००० | | |
| १० | तिथिप्रकीर्णक | | | |
| | त्रीजी गणत्रीए १० पयन्ना. | | | |
| १ | पिंडविशुद्धि गा. १०३ | १२५ | जिनवल्लभ $ | |
| | वृत्ति | ४००० | श्रीचंद्र ‡ | ११८० |
| | लघुवृत्ति | २८०० | यशोदेव | ११७६ |
| | दीपिका† (लघुवृत्तिरूपा ) | ५५० | | |

ʊ वीरभद्र सम्बन्धी विशेष इतिहास मळ्यो नथी. परंतु संवत् मळ्युं छे. वृहट्टिप्पनिकामां

$ जिनवल्लभगणि विक्रमनी बारमी सदीना मध्यमां हता.

‡ श्रीचंद्रसूरि ते मलधारि हेमचंद्रसूरिना शिष्य छे. तेमणे संवत् ११९३मां मुनिसुव्रतस्वामिनुं चरित्र के तेमना गुरु हेमचंद्रसूरिनी संवत् ११६४ मां स्वहस्तालिखित पोथी पाटणमां मोजूद छे. एम किलहार्ने " एगवीससहस्से " भूलथी छपायुं छे ते परथी पिटर्सनसाहेब गोथो खाधो लागे छे. आ वृत्ति माटे वृत्तिकार श्रीचंद्र ते मलधारि हेमचंद्रसूरिनांज शिष्य छे एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

† आ दीपिका वृहट्टिप्पनिका शिवाय उपर बतावेल कोईपण भंडारमां उपलब्ध थइ नथी.

| बृहट्टिप्पणिका | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद. | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई. | कलकत्ता. | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | छे | ० | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | छे | ० | छे | ० | छे | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| छे | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | |
| छे | ० | छे | ० | छे | ० | ० | छे | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |

आराधनापताकाने माटे आवो उल्लेख छे. "आराधनापताका १०७८ वर्षे वीरभद्राचार्यकृता ९९३".

रच्युं छे. पिटर्सनना पांचमा रिपोर्टमां मुनिसुव्रतचरित्र रच्यानुं संवत् ११२१ आपेल छे. ते भूल करी छे कारण नोंध करी छे. रिपोर्टना सातमे पाने आ चरित्रनी प्रशस्ति आपेल छे त्यां " एगवाससहस्से " ना बदले पाटणनी एक टीपमां पार्श्वदेवनी सहाय्यताथी आ वृत्ति रची छे एम पण लखेल छे. ते परथी आ

बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे आवो उल्लेख छे. " दीपालिका लघुवृत्तिरूपा ५५० "

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| | दीपिका अवचूरि | | अजितदेव § | १६२७ |
| | ,, अवचूरि | ६०० | धीचंद्र ʊ | |
| | वृत्ति ( दीपिका ) | ७०३ | उदयसिंह * | १२९५ |
| | पंजिका ‡ | ९०० | | |
| २ | सारावलि गा. ११६ | १४५ | | ¶ Dec. |
| ३ | पर्यंताराधना गा. ६९ | | सोमसूरि + | Re. 5 |
| ४ | जीवविभक्ति गा. २५ | | जिनचंद्र | R. 5 |
| ५ | कवच प्रकरण गा. १२३ | | जिनचंद्र $ | R 5. |
| ६ | योनिप्राभृत ‡ | ८०० | धरसेनाचार्य | १३० |

§ आ अवचूरि फक्त पाटणना एक भंडारमां जोवामां आवी छे. अने तेमा कर्ता महेश्वर आ अवचूरी केटला श्लोकनी छे ते पुस्तक जोये नक्की थाय तेम छे.

ʊ आ कर्त्तानुं नाम शक पडतुं लागे छे. अने ते संबंधी बीजे कोईस्थळे पुरावो जोवामां करेली छे तेनो तपास करी नक्की करवुं जोईये.

* आ उदयसिंहसूरि ते माणिक्यचंद्रसूरिना शिष्य हता. उदयसिंहसूरिए संवत् १२५३ मां १२८६ मां ते टीका पूर्ण करी. त्यार पछी आ वृत्ति रची छे.

‡ आ पंजिका संबंधी ऐतिहासिक बिना मळी नथी.

¶ सारावलि पयन्नाने माटे डेक्कनकॉलेजना रीपोर्टमां पेज ४९ मां एम लख्युं छे के सरयावलि

+ सोमसूरि ते कोना शिष्य हता ते संबंधी विशेष हकीगत मळी नथी.

$ आ जिनचंद्रसूरि ते जिनेश्वरसूरिना शिष्य अने नवांगाभयदेवसूरिना गुरु हता. तेमणे संवेग-

‡ आ ग्रंथ फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे ते शिवाय बीजे कोई ठेकाणे उपलब्ध थतो नथी. तपास करी तेनी श्लोकसंख्या विगेरेनो निर्णय करवो जोईये.

एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां आवो उल्लेख छे. " योनिप्राभृतं वीरात् ६०० धारसेनं ".

| [illegible] | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | छे | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | छे | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | |

सूरिना शिष्य अजितदेव आपेल छे. महेश्वरसूरिए संवत् १५७३ मां विचाररसायन प्रकरण रच्युं छे.

आवतो नथी अने ते फक्त जेसलमेरना भंडारमां छे एम हीरालाले नोंध्युं छे. तो ते कोणे

श्रीप्रभसूरिए रचेली धर्मविधि उपर टीका रची छे. परंतु ते टीकानो नाश थतां तेमणे संवत्

पयन्ना पत्र ७५ तेर लींटीवाळा तो ते शुं छे ते पुस्तक तपासी नक्की करवुं जोईए छीए.

रंगशाला नामे मोटो ग्रंथ रचेल छे.

जेसलमेरमां छे एम नोंध्युं छे पण ते त्यां त्रुटक छे. तो ते डेक्कनकॉलेजमां पूर्ण छे के नहीं तेनो

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो संवत्. |
|---|---|---|---|---|
| ७ | अंगचूलिया § | ८०० | | |
| ८ | वंगचूलिया ʊ | पत्र ५ | | |
| ९ | वृद्धचतुःशरण गा. ९० | ११५ | देवेंद्रसूरि | S. K. |
| १० | जंबुपयन्नो | पत्र ४५ लाइन ५ | | Dec. |

§ आनी श्लोकसंख्या केटला प्रमाणनी छे ते चोक्कस निर्णय थयो नथी. कारणके पाटणनी परंतु कोडायनी टीपमां तेना श्लोक ८०० चोक्कस आपेला छे ते उपरथी ते प्रमाणे इहां आपेल छे.

ʊ वंगचूलियानुं खरुं नाम तो वग्गचूलिया छे. एनुं बीजुं नाम "सुयहीलुप्पत्ति अज्झयण" पण छे. बाना भंडारमां तेना कर्ता यशोभद्र जणावेल छे. परंतु ते संबंधी बीजो कोई विशेष पुरावो मळ्यो नथी.

| बृहट्टिप्पणि | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | पाटण. | जेसलमेर. | लींबडी. | खंभात. | भावनगर. | अमदावाद | अमदावाद | कोडाय. | मुंबई | कलकत्ता | रिमार्क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | |
| ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | छे | |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | छे | ० | ० | छे | |

एक टीपमां तेना श्लोक १७२८ आपेल छे. अने लींबडीनी टीपमां तेना १६४८ आपेला छे. छतां ए बाबत चोक्कस करवानी खास जरूर छे.

अंगचूलिया तथा वंगचूलिया कोणे रच्या छे, तेनी चोक्कस माहिती मली नथी. परंतु अमदावादना चंचल-

# उपसंहार.

आ रीते पिस्तालीश आगम दश अवशिष्ट सूत्रो ग्रंथो तथा वीश अवशिष्ट पयन्ना मळी एकंदरे आजकालमां कुले पंचोतेर आगम मळया छे. उपरांत चौदपूर्वधारीकृत जे ग्रंथ होय ते आगमरूपे ज गणाय एम नंदिसूत्रमां जे कहेलुं छे तेने अनुसारे चौदपूर्वधारी श्रीभद्रबाहुस्वामिकृत तमाम निर्युक्तिओ आगमरूपेज रहेली छे ते निर्युक्तिओमांनी बे निर्युक्तिओ नामे पिंडनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्ति तो पिस्तालीश आगममां ज गणाई गई छे अने संसक्तनिर्युक्ति अवशिष्ट आगममां नोंधी छे. उपरांत तेमणे रचेली नीचे मुजबनी दश निर्युक्तिओ छेः—

१ आवश्यकनिर्युक्ति

२ दशवैकालिकनिर्युक्ति

३ उत्तराध्ययननिर्युक्ति

४ आचारांगनिर्युक्ति

५ सूत्रकृतांगनिर्युक्ति

६ सूर्यप्रज्ञप्तिनिर्युक्ति

७ वृहत्कल्पनिर्युक्ति

८ व्यवहारनिर्युक्ति

९ दशाश्रुतस्कंधनिर्युक्ति

१० ऋषिभाषितनिर्युक्ति

आ दश निर्युक्तिमांथी सूर्यप्रज्ञप्तिनी तथा ऋषिभाषितनी निर्युक्ति मळी शकती नथी एटले ते बाद करतां बाकीनी आठ निर्युक्तिओ हमणा मळे छे तथा वधारामां कल्पसूत्रनी निर्युक्ति पण मळी आवे छे एटले कुले नव सूत्रनी निर्युक्तिओ ते ते सूत्रनी पंचांगीना नोंधमां पूर्वे नोंधी छे. ते नवे निर्युक्तिओने जो आगमरूपे गणिये तो कुले ८४ आगम थाय छे.

श्रीनंदिसूत्रमां पूर्वे ८४ आगम गणाव्या छे तेमां चोत्रीस सूत्र छे अने पचास पयन्ना छे, त्यारे हालमां मळी आवता ८४ आगममां एकताळीश सूत्र छे, त्रीश पयन्ना छे, बार निर्युक्तिओ छे, अने एक महाभाष्य छे.

# चोरासी आगमना संक्षिप्तनाम.

## एकताळीस सूत्र.

| अंग ११ | उपांग १२ | छेद ५ | मूळ ५ | छूटक ८ |
|---|---|---|---|---|
| १ आचार | १ औपपातिक | १ निशीथ | १ आवश्यक | १ कल्पसूत्र |
| २ सूत्रकृत् | २ राजप्रश्नीय | २ बृहत्कल्प | २ दशवैकालिक | २ जीतकल्प |
| ३ स्थान | ३ जीवाभिगम | ३ व्यवहार | ३ उत्तराध्ययन | ३ यतिजीतकल्प |
| ४ समवाय | ४ प्रज्ञापना | ४ दशाश्रुत | ४ नंदि | ४ श्राद्धजीतकल्प |
| ५ भगवती | ५ जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति | ५ महानिशीथ | ५ अनुयोगद्वार | ५ पाक्षिक |
| ६ ज्ञात | ६ चंद्रप्रज्ञप्ति | ( छ छेदमानो पंचकल्प हाल मळतो नथी ) | ( पिंडनिर्युक्ति तथा ओघनिर्युक्तिने निर्युक्तिओ साथे टांकी छे ) | ६ क्षामणा |
| ७ उपासकदशा | ७ सूर्यप्रज्ञप्ति | | | ७ वंदित्तु |
| ८ अंतकृद् | ८–१२ निरयावल्यादि | | | ८ ऋषिभाषित |
| ९ अनुत्तरोपपातिक | ( पंचोपांग ) | | | |
| १० प्रश्नव्याकरण | | | | |
| ११ विपाक | | | | |
| श्लो० ३५३३९ | श्लो. २५८३३ | ( श्लो. ७१०५ ) | ( श्लो. ५४२९ ) | ( श्लो. ३३४१ ) |

## त्रीस पयन्ना.

| पहेली गणत्रीए. | बीजीगणत्रीए. | त्रीजीगणत्रीए. |
|---|---|---|
| १ चतुःशरण | १ अजीवकल्प | १ पिंडनिर्युक्ति |
| २ आतुरप्रत्याख्यान | २ गच्छाचार | २ सारावली |
| ३ भक्तपरिज्ञा | ३ मरणसमाधि | ३ पर्यंताराधना |
| ४ संस्तारक | ४ सिद्धप्राभृत | ४ जीवविभक्ति |
| ५ तंदुलवैचारिक | ५ तीर्थोद्गार | ५ कवच |
| ६ चंद्रवेध्यक | ६ आराधनापताका | ६ योनिप्राभृत |
| ७ देवेंद्रस्तव | ७ द्वीपसागरप्रज्ञप्ति | ७ अंगचूलिया |
| ८ गणिविद्या | ८ ज्योतिष्करंडक | ८ वंगचूलिया |
| ९ महाप्रत्याख्यान | ९ अंगविद्या | ९ वृद्धचतुःशरण |
| १० वीरस्तव | १० तिथिप्रकीर्णक | १० जंबूपयन्नो |
| ( श्लो. १९५५ ) | ( श्लो. १५५१२ ) | ( श्लो. २९२५ ) कुल २०६९२. |

## बार निर्युक्ति.

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १ आवश्यक | ४ आचारांग | ६ बृहत्कल्प | ९ कल्पसूत्र | १० पिंडनिर्युक्ति | ( सूर्यप्रज्ञप्ति तथा ऋषिभाषितनी निर्युक्ति मळती नथी. | (कुले श्लो. ८७३५ ) |
| २ दशवैकालिक | ५ सूत्रकृदंग | ७ व्यवहार | | ११ ओघनिर्युक्ति | | |
| ३ उत्तराध्ययन | | ८ दशाश्रुत | | १२ संसक्तनिर्युक्ति | | |

## एक महाभाष्य.

विशेषावश्यक ४००० | ( श्लो. कुल ११०४७५ )

# सूचना.

आ रीते आपणा पिस्तालीश आगम तथा त्रीश अवशिष्ट आगम तथा नव निर्युक्तिओ मळीने एकंदर चोराशी आगमो आपणा जैनधर्मरूप महाप्रासादना स्तंभरूपे विराजमान रहेला छे.

ए चोराशी आगमोना मूळनी एकंदर श्लोकसंख्या सुमारे एक लाख दश हजार ना लगभग थाय छे. तेथी ए चोराशी आगमोनो उतारो लेवो होय तो दर हजारे पांच रुपिया लखामणी अने दश रुपिया शोधामणीना गणतां कुले रुपीया १६५० खरच आवे तथा कोई दुर्लभ्य आगमनी शोध खोळ माटे रु. ३५० वधु खरचवा योग्य गणिये तो पण कुले बे हजार रुपियानी रकममांथी आ काम पार पाडी शकाय तेम छे. माटे आवा काममां पोताना द्रव्यनो सदुपयोग करवा कोई पण आगमभक्त श्रद्धालु सद्गृहस्थ खरी खंतथी बहार पडे तो थोडा खरचे मोटुं काम करी शके तेम छे.

अमे आशा राखिये छीये के अमारी आ नम्र सूचनाथी कोई पण महाशय जागृत थईने जाते अथवा बीजाने समजावीने आ टुंका खरचनुं उपयोगी काम अवश्य हाथ धरी संपूर्ण करी उत्तम पुण्यनो भागीदार थशेज.

---

# विशेष सूचना.

शिवाय ए स्तंभरूपी आगमोना टेकारूपे रहेला भाष्य-चूर्णि-वृत्ति-अवचूरि-दीपिका-टिप्पन वगेरे तेमनी व्याख्याना आप्तग्रंथो साथे गणिए तो आखा जिनप्रवचननी श्लोकसंख्या सुमारे चौदपंदर लाखना लगभग थवा जाय छे. आ आखा जिनप्रवचननो एक स्थळे संग्रह करवा माटे तेनी अतिशुद्ध एक नकल उतरावबी होय तो ऊपरना हिसाबे पंदरलाख श्लोकना रुपिया साडीबावीस हजार थाय छे अने ते साथे तेमाना दुर्लभ्य ग्रंथोनी शोध खोळ करवा माटे जूदा जूदा स्थळे माणसो मोकलावी पत्तो मेळवी प्रतो मेळवतां जे खरच लागे ते माटे रुपिया सातआठ हजारनी रकम उमेरिए तो

कुले खरच रुपीया त्रीश हजार लागे छे. जो आटलुं काम कोई धनाढ्य शेठ अथवा गर्भश्रीमंत महाशय पार पाडवा इच्छे तो ते पण कोई रीते दुष्कर के दुस्साध्य नथी कारण के आपणी जैनकोममां द्रव्य खरचनार उदार पुरुषोनो कशो टोटो नथी, पण तेमनुं लक्ष्य आवी बाबतोपर खेचावुं जोईये.

श्री जैन श्वेतांबर कॉन्फरन्स ऑफिस.
चंपागली–मुंबई, ता. १–२–०७

**मोहनलाल चुनीलाल दलाल.**
आसिस्टंट सेक्रेटरी,

# लीस्ट नंबर २.

# जैन न्याय.

# जैनन्याय.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग १ लो.** | | | | |
| | **मोटा ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अनेकांतजयपताका. | ३५०० | हरिभद्रसूरि | | बृ., पा.४ खं, डेक्कन. |
| | वृत्ति | ८२५० | ,, | | बृ., पा. १ |
| | टिप्पन | २००० | मुनिचंद्र | | बृ., पा. ३, को. |
| २ | अनेकांतवादप्रवेश. A | ७२० | हरिभद्रसूरि | | बृ., पा. ४-५भा. अ., १, अ. २. |
| | अवचूरि | पत्र १७ | | | अ. २ |
| ३ | उत्पादसिद्धिप्रकरण. B | — | चंद्रसेन C | १२०७ | S. K. |

A अमदावादनी चंचलबाना भंडारनी टीपमां "अनेकांतमतप्रवेशावचूरि" एम लख्युं छे तेथी वखते आ ग्रंथने तेवा नामथी पण ओळखवामां आवतो हशे.

B आ ग्रंथ घणो सरस छतां ते दुर्लभ्य छे. ते फक्त खंबातमां शांतिनाथना ताडपत्रवाला जूना भंडारमां छे. परंतु ते भंडार हालमां नगीन कमाना दीकराओना कबजे छे, अने तेओ ते भंडार बनतां लगण कोईने बतावता नथी ए घणी अफसोसनी वात छे. आवा उत्तम ग्रंथोनी ताडपत्र पर रहेली दुर्लभ्य प्रतोना सौथी पहेलां उतारा करावी लेवानी आवश्यकता छे.

आ ग्रंथ सटीक छे. तेना आदि तथा अंतना श्लोको पीटर्सनना त्रीजा रिपोर्टमां पेज २०९ मां मोजुद छे. मूळग्रंथना आदिश्लोकनो अर्धभाग आ रीते त्यां आप्यो छे:—यस्योत्पादव्यय-ध्रौव्य-युक्तवस्तूपदेशतः ।....

C चंद्रसेनसूरि प्रद्युम्नसूरिना शिष्य हता तेमणे टीकामां ते गुरुना माटे आ रीते उल्लेख कर्यो छे. "श्रीमांश्चंद्रकुलेभवद्गुणनिधि प्रद्युम्नसूरिः प्रभु–र्बंधु र्यस्य स सिद्धहेमविषये श्रीहेमसूरिर्विधिः" आ उपरथी स्पष्ट समजाय छे के ए प्रद्युम्नसूरि हेमसूरिना भाई थता हता.

| वर्ग. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | ५००० | चंद्रसेन | १२०७ | S. H. |
| ४ | तत्वार्थ सूत्र.A | २२५ | उमास्वातिवाचक | | वृ., मुद्रित. |
| | भाष्य B | २१४२ | ” | | वृ., पा. ३-४ को. मुद्रित. |
| | वृत्ति | १८२८२ | सिद्धर्षि C | | वृ., पा. ३-४ लीं. |
| | वृत्ति D | १०८०० | यशोभद्र E | | पा. ५. |
| | लघुवृत्ति F | १०००० | हरिभद्र G | | डेक्कन रिपोर्ट पेज १४५ |
| ५ | तर्कभाषा | ८०० | यशोविजय | | पा. ४-५ खं. Gov. 6. |

A आ सूत्रने तत्वार्थाधिगम तथा मोक्षशास्त्र पण कहेवामां आवे छे. ए सूत्रो श्वेतांबर तथा दिगंबर बन्ने मान्य करे छे, तेथी एनाऊपर बन्ने पक्षोना आचार्योए जूदी जूदी व्याख्या करी छे. आ कारणथी आ जगोए एनी श्वेतांबराचार्यकृत व्याख्याओ नोंधी छे अने आना चोथा वर्गमां दिगंबरकृत व्याख्याओ नोंधवामां आवशे.

B आ भाष्यना कर्त्ता उमास्वातिवाचक पोतेज छे एम एनी टीकाना आद्यंतनुं अवलोकन करतां जणाय छे. पाटणनी एक टीपमां तत्वार्थनी नागरवाचककृत एक वृत्ति श्लो. २८९० नी नोंधी छे, पण ते अमारा अनुमान प्रमाणे भाष्यज होवुं जोईये. कारण के भाष्यनी प्रांते ते नागरवाचके रच्युं छे एम लख्युं छे अने नागरवाचक ते खुद्द उमास्वातिनुं बीजुं नामज छे. आ बाबतनी खातरी करवी होय तेणे पीटर्सनना त्रीजा रिपोर्टमां पेज ८३ थी ८४ मां नोंधेलो तत्वार्थवृत्तिनो प्रांतनो उल्लेख वांची जोवो.

C आ सिद्धर्षि ते दिन्नगणिशिष्य सिंहसूरि तच्छिष्य भास्वामिना शिष्य छे.

D आ वृत्ति फक्त पाटणनी पांचमी टीपमां नोंधाइ छे एटले ते दुर्लभ्य जेवी छे.

E आ यशोभद्रसूरि ते धर्मघोषसूरिना शिष्य होवा जोईये एम अमारुं धारवुं छे, अने पीटर्सनना पेला रिपोर्टना ७६ मां पेजमां प्रत्याख्यानस्वरूप नामना ग्रंथनी प्रांतगाथामां सं. ११८२ मां ते ग्रंथ यशोभद्रसूरिए रच्यो छे एम जणाव्युं छे ते यशोभद्र ते आज यशोभद्र छे एम अमारुं अनुमान छे पण चोकस निर्णय पुस्तक जोयाथीज थई शके तेम छे.

F आ लघुवृत्ति फक्त डेक्कन कॉलेजमां मळी आवी छे अने ते डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज १४५ मां नंबर ३६९ मां नोंधेल छे. माटे ए ग्रंथनी पण नकल उतारवानी खास जरूर छे.

G आ हरिभद्रसूरि ते पहेला हरिभद्रसूरि छे के बीजा हरिभद्रसूरि छे ते नक्की करवानी खास अगत्य छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | द्रव्यानुयोगव्याख्या. A | पत्र ४५ | भोजपंडित B | | अ. १. |
| ७ | द्रव्यालंकारतर्क C | ४०० | पं. रामचंद्र गुणचंद्र D | | वृ. |
| ८ | नयचक्रवाल E | | मल्लवादि F | | अ. १. |

A आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधायलो छे माटे ते दुर्लभ्य होवाथी तेनी नकल करावी लेवानी खास जरूर छे.

B भोजपंडित श्वेतांबर छे के दिगंबर छे तेमज ते क्यारे रचेल छे ते वगेरे हकीकत ग्रंथ जोयाथी मालम पडे तेम छे.

C आ ग्रंथ बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेल छे छतां ते हजु सुधी अमने उपलब्ध थयो नथी. ग्रंथना नामपरथीज ते बहु उपयोगी अने सरस हशे एम जणाय छे माटे एवा ग्रंथनो विशेष पत्तो मेळववानी खास जरूरीयात छे.

D पं. रामचंद्र ते अमारा अनुमानप्रमाणे हेमाचार्यना शिष्य रामचंद्रगणि होवा जोईये केमके तेमना रचेला जैन नाटक ग्रंथोमां तेमणे प.ना इलकाबथीज पोताने ओळखावेल छे तेथी बृहट्टिप्पनिकाकारे तेज इलकाबे ओळखाव्या छे. अने तेमना साथे गुणचंद्र नाम छे ते गुणचंद्रनामना बे आचार्य थया छे तेमांना बीजा होवा जोईये. पेहेला गुणचंद्रसूरिए सं. ११३९ मां प्राकृत वीरचरित्र रचेल छे, एटले ते तो हेमाचार्यनी पूर्वे थई गया छे. पण बीजा गुणचंद्रसूरि के जेमणे हैमविभ्रमऊपर टीका रची छे ते आ गुणचंद्र छे. अने ते रामचंद्रगणिना संघाती होवाथी वखते हेमाचार्यना शिष्य होय तो पण होय, छतां चोक्कस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके.

E नयचक्रवालने टुंकामां नयचक्रना नामे पण ओळखवामां आवे छे. तेना बार विभाग होवाथी तेने "द्वादशार" एटले बार आरकवाळुं एवुं विशेषण पण अपाय छे. ए ग्रंथनुं मूळ केटला श्लोकनुं छे ते जाणवामां नथी आव्युं माटे जे कोई विद्वान् मुनिमहाराजना पासे ते ग्रंथ होय तेमणे ते हकीकत अमने अवश्य जणाववा कृपा करवी एवी तेमने नम्र विनंति करवामां आवे छे.

F मल्लवादि आचार्ये वीरनिर्वाणथी ८८४ वर्षे एटले के विक्रम सं. ४१४ मां पद्मचरित्र रच्युं छे एम प्रभावक चरित्रमां कहेलुं छे एवी नोंध पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां ते रिपोर्टना मध्य भागमां पेज त्रीजामां छे. मल्लवादिए सम्मतिसूत्रपर टीका रचेली छे एवो बृहट्टिप्पनिकामां उल्लेख छे पण ते टीका हाल उपलब्ध थती नथी. एमणे बौधाचार्य धर्मोत्तरकृत न्यायबिंदु ऊपर पण टीका एटले के टिप्पन रचेल छे. आ मल्लवादि आचार्ये राजसभामां वाद करी बौद्धोने हरावी जिनशासननी उन्नति करी तेथी तेओनुं नाम आठ महाप्रभावकनी गणत्रीमां मशहुर छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति A | १८००० | सिद्धर्षि | | वृ. पा. लीं. को. मुं. |
| | नयचक्र B | | देवचंद्र C | | मुद्रित. |
| ९ | नयरहस्य | ५९१ | यशोविजय | | पा. ५. |
| १० | न्यायप्रवेशकसूत्र. | १०८ | हरिभद्र | | वृ. पा. ४. |
| | वृत्ति | ८८७ | ,, | | वृ., पा. २-५. |
| | टिप्पन D | | श्रीचंद्र | ११६८ | वृ. |

A नयचक्रना टीकाकार कोण छे ते तेनी लींबडीना भंडारमां रहेली प्रतमां जणाववामां आव्युं नथी तेमज वृहत्‌टिप्पनिकाकारे पण तेना कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी. छतां पाटणनी टीपमांथी एवी नोंध मळे छे के तेना कर्त्ता सिद्धर्षि छे. तो आ सिद्धर्षि पूर्वे जीत-कल्पसूत्रनी फुटनोटमां जणावेला पांच सिद्धसेन नामना सूरिओमांथी क्या सिद्धर्षि छे ते शोधवानी जरूर छे, तेमाटे विद्वान् मुनिमहाशयोने विनंति करवामां आवे छे के तेमना पासे जो सदरहु टीका मोजुद होय तो तेना अंतमां तेना कर्त्ता माटे जे कंई प्रशस्ति लेख होय तेनी नकल कान्फरन्स ऊपर मोकलावी आपवा महेरबानी करवी.

B आ नयचक्र प्रकरणरत्नाकरना भाग पेलामां छपायलुं छे, अने ते सूत्ररूपे नहि पण विस्तारित गद्यमां गुजराती भाषामां रचायलुं छे.

C आ देवचंद्र ते खरतरगच्छना देवचंदजी महाराज छे के जेमणे चोविशी रची छे. तेओ विक्रमनी अढारमी सदीनी आखरमां विद्यमान हता एवुं सांभळवामां आव्युं छे.

D आ टिप्पन फकत वृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधायलुं देखाय छे; बीजे स्थळे उपलब्ध थयुं नथी. वृहत् टिप्पनिकामां तेनामाटे आवो उल्लेख छे:—

" न्यायप्रवेशकटिप्पनं ११६८ वर्षे श्रीचंद्रीयं " श्लोकसंख्या कंई आपी नथी. माटे आ ग्रंथ पण जे कोई मुनिमहाशयना जाणवामां के जोवामां आव्यो होय तो तेमणे ते विषे अमने माहिती आपवी तथा तेनी श्लोकसंख्या सूचववी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | पंजिका A | १७०० | पार्श्वदेव | ११६९ | S. k. जे. |
| ११ | न्यायालोक. | १२०० | यशोविजय | | पा., ४ डेक्कन. |
| १२ | न्यायावतार. | ९२ | सिद्धसेन B | | बृ., पा., १-२. |
| | वृत्ति | १९०० | हरिभद्र | | बृ., पा., १,, २. |
| | वृत्ति ( बिजी ) C | | सिद्धव्याख्यानिक D | | बृ., |
| | टिप्पन | ९५३ | देवभद्रमलधारि E | | पा., १.-४.-५., |
| १३ | न्यायखंडखाद्य. | ५५०० | यशोविजय | १५१५ | अ. २. S. K. मुद्रित. |
| १४ | न्यायामृततरंगिणी. | | यशोविजय | | पं. आणंदसागरजी. |

A पंजिकानी प्रत खंबातना शांतिनाथना भंडारमां छे. एम पीटर्सनना रिपोर्टमां ते भंडारनी नोंध आपेल छे तेमां देखायछे, तथा तेना आद्यंतनो उल्लेख पेला रिपोर्टमां पेज ८१ मां नं. १२३ मां आपेल छे. जेसलमेरनी हिरालालकृत तथा हंसविजयजीकृत टीपमां ए पंजिकानी नोंध छे.

B आ सिद्धसेन ते सिद्धसेनदिवाकर होवा जोइये एम अमारूं अनुमान छे. बृहत्टिप्पनिकामां एनामाटे आवो उल्लेख छे:—

" न्यायावतारसूत्रं सिद्धसेनीयं तद्वृत्तिर्हारिभद्री सू. ३२ वृ. २०७३ "

ए उल्लेखमां तेना मूळना श्लो. ३२ लख्या छे, पण पाटणनी टीपमां तेना श्लोक ९२ आपेला छे तेप्रमाणे अमे इहां तेना ९२ श्लोक नोंध्या छे.

C आ वृत्ति बृहत्टिप्पनिकामां तेना कर्त्ताना नामसाथे नोंधी छे पण तेनी श्लोकसंख्या तेमां नोंधी नथी, तेम एनी प्रत हजुलगण अमारा जोवामां आवी नथी माटे तेनी श्लोकसंख्या आपी नथी.

D आ सिद्धव्याख्यानिक ते सं ९६२. मां उपमितभवप्रपंचना रचनार तथा उपदेशमालानी टीकाना करनार सिद्धर्षि छे. केमके उपदेशमालापर बीजी टीका रचनार रत्नप्रभसूरिए तेमने " व्याख्यातृचूडामणि " एवुं विशेषण आपेल छे. जुवो रिपोर्ट ३ पेज १६८.

E मलधारि देवभद्रसूरि ते मलधारि हेमचंद्रसूरिशिष्य श्रीचंद्रसूरिना शिष्य हता. तेमणे श्रीचंद्रसूरिकृत लघुसंग्रहणीनी टीका रची छे. तेओ तेरमी सदीनी शरुआतमां थया होवा जोइये.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १५ | पंचविमर्श A | पत्र १९ | उदयप्रभ B | | डेक्कन रि. पेज ४१० |
| १६ | प्रमाणग्रंथ C | पत्र १०८ | गुणरत्न D | | डेक्कन. |
| १७ | प्रमाणप्रमेयन्याय E | ताडपत्र २२४ | | | जेसलमेर. |
| १८ | प्रमाणमीमांसा F | | हेमाचार्य | | बृ. जे. |
| | वृत्ति | २५०० | ,, | | बृ. जे. पा. ५ डेक्कन. |

A पंचविमर्श ए नाममां वच्चे हेतुपदनो अध्याहार करीए तो एनुं बीजुं नाम पंचहेतुविमर्श एवुं थइ शके. ए ग्रंथ पण दुर्लभ्य जेवो लागे छे. माटे अवश्य उतारवा योग्य छे.

B उदयप्रभसूरि बे थया छे. एक द्वितीय हरिभद्रसूरिना शिष्य विजयसेनसूरिना शिष्य हता. तेमणे वस्तुपाळमंत्रिनी हकीकतनुं संघपतिचरित्र अथवा धर्माभ्युदय महाकाव्य रचेल छे. वळी तेमना नामनो एक शिळालेख संवत् १२८७ मां कोतरेलो मळी आव्यो छे. एम विल्सन साहेबे एशियाटिक रीसर्चिसना १६ मां अंकमां पेज ३०९ मां नोंध करी छे. बीजा उदयप्रभसूरि रविप्रभसूरिना शिष्य अने मल्लिषेणसूरिना गुरु हता. तेमणे प्रवचनसारोद्धारना विषमपदपर्याय रचेल छे. ए बीजा उदयप्रभ पण चौदमी सदीनी शरुआतमां थएला होवा जोईए. केमके तेमना शिष्य मल्लिषेणसूरिए सं. १३४९ मां स्याद्वादमंजरी रची छे.

हवे आ पंचविमर्श कया उदयप्रभे रचेल छे ते संबंधे अमारुं अनुमान ए छे के ते मल्लिषेणसूरिना गुरु बीजा उदयप्रभ होवा जोईए. छतां चोकस पुरवारी माटे ग्रंथ जोवानी जरूर छे.

C आ नाम अपूर्ण लागे छे. छतां ए पण दुर्लभ्य ग्रंथ छे माटे एमा शुं हकीकत छे ते जाणवा माटे तेनो उतारो लेवानी खास जरूर छे.

D गुणरत्नसूरि देवसुंदरसूरिना शिष्य हता. तेमणे सं. १४६६ मां क्रियारत्नसमुच्चय रचेल छे. तथा षड्दर्शनसमुच्चयनी टीका पण तेमणे रचेली छे.

E आ ग्रंथनुं नाम पण विचित्र लागे छे. छतां ते जेसलमेरनी बन्ने टीपमां तेज नामे नोंधेल छे, ते साथे तेना कर्त्तानुं नाम के श्लोकसंख्या आपी नथी. तेथी ते संबंधे बीजो कशो खुलासो मळयो नथी. पण ए अपूर्व ग्रंथ होवाथी एनी पण नकल उतारवानी खास जरूर छे.

F प्रमाणमीमांसानुं मूळ केटला श्लोकनुं छे ते माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे. ए ग्रंथ तेनी टीका सहित पंन्यासजी श्रीनेमिविजयजी महाराज पासे पण छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १९ | प्रमाणसंग्रह A | ७१२ | | | बृ. |
| २० | प्रमाणसुंदर B | ८०४ | पद्मसुंदर C | | पा. ४, अ. २ |
| २१ | प्रमालक्ष्यालक्षणD | ३३०० | बुद्धिसागर E | | पा. ५. जेसलमेर. |
| २२ | प्रमेयरत्नकोश | १६८० | चंद्रप्रभF | | बृ. पा. १-४-५ अ. १ |

A आ ग्रंथनुं नाम फक्त बृहत्टिप्पनिकामांथी मल्युं छे. एनामाटे त्यां आवो उल्लेख छेः—

" प्रमाणसंग्रह प्रकरणं ९ प्रस्तावं जैनं ७१२ "

आ उल्लेखपरथी देखाय छे के आ ग्रंथ पण घणो सरस होवो जोईये. तो आवा अपूर्व ग्रंथ माटे विशेष शोध खोल करवा आपणा मुनिमंडळने खास विनंति करवामां आवे छे.

B आ ग्रंथ जैनन्यायनो छे के परमतना न्यायपर जैनकृत व्याख्या ग्रंथ छे ए संबंधे निर्णय ते ग्रंथ जोयाथी थइ शकशे.

C पद्मसुंदरगणि नागपुरीय तपागच्छमां थएला छे. तेओ सं. १६१२ थी १६६१ सुधी अकबरनी सभामां विद्यमान रहेला छे. तेमना रचेला बीजा ग्रंथ आप्रमाणे छे. तेमणे सं. १६१५ मां रायमल्लाभ्युदय महाकाव्य रचेल छे. तथा सं. १६२५ मां पार्श्वनाथकाव्य रचेल छे. तथा प्राकृतभाषामां तेमणे जंबूस्वामिकथानक रचेल छे, एम पीटर्सनना चोथा रिपार्टमां तेमना नाम साथे नोंध करी छे.

D आ ग्रंथ पण खास उतारवा योग्य छे. ते जेसलमेरनी बन्ने टीपमां नोंघायेल छे.

E बुद्धिसागरसूरि नवांगवृत्तिकार अभयदेवसूरिना गुरु जिनेश्वरसूरिना समकालीन हता. एमणे बुद्धिसागर व्याकरण विक्रम सं. १०८० मां रचेल छे.

F चंद्रप्रभसूरि बे थया छे. एक प्रद्युम्नसूरिना शिष्य अने धनेश्वरसूरिना गुरु चंद्रप्रभसूरि थया छे एम उपदेशकंदलिना प्रशस्ति लेखपरथी जणाय छे. अने बीजा जयसिंहसूरिना शिष्य चंद्रप्रभसूरि थया छे के जेमणे सं. ११५८ मां पूर्णिमागच्छनी स्थापना करी. आ बीजा चंद्रप्रभसूरिए दर्शनशुद्धि प्रकरण रच्युं छे. आ प्रमेयरत्नकोश कया चंद्रप्रभसूरिए रच्यो हशे ते ए ग्रंथनो प्रशस्ति लेख जोयाथी मालम पडी शके तेम छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २३ | युक्तिप्रकाश A | ३०० | पद्मसागर B | | पा. ५ |
| २४ | युक्तिप्रबोध. C | | मेघविजय D | | डेक्कन |
| | वृत्ति | ५००० | „ | | डेक्कन. |
| २५ | रत्नाकरावतारिका E | ५००० | रत्नप्रभ F | | वृ. सुलभ्य |
| | टिप्पन | | राजशेखर G | | पा. १ |
| | „ | २१०४ | ज्ञानचंद्र H | | पा. १ |
| | आद्यश्लोकशतार्थ | पत्र ३१ | | | अ. १ |

A आ ग्रंथ एना नामपरथी तो न्यायनो हशे एम लागे छे, छतां वखते चर्चाग्रंथ होय तो पण होय ते माटे ते ग्रंथ कोई मुनिमहाशय पासे होय तो तेमणे तेमां शी हकीकत छे ते जणाववा अमारी नम्र विनंति छे.

B पद्मसागरगणि ते धर्मसागर उपाध्यायना शिष्य हता. तेमणे सं. १६३३ मां नयप्रकाश तथा तेनी वृत्ति रची छे.

C आ ग्रंथ पण तेनी टीकासाथे खास उतारवा योग्य छे.

D मेघविजयजी उपाध्याये सं. १७५७ मां हैमशब्दानुशासनपर चंद्रप्रभा नामनी टीका रचेली छे.

E रत्नाकर एटले स्याद्वादरत्नाकर तेमां प्रवेश करवा माटे अवतरण करावनार ते रत्नाकरावतारिका एम एनां नामनो अर्थ छे.

F रत्नप्रभसूरि ते वादिदेवसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १२३८ मां उपदेशमाळानी दोघट्टी नामनी टीका रची छे.

G राजशेखरसूरि मलधारि गच्छना हता. अने ते सं. १४०५ मां हता. एम बुह्लरे नोंध करी छे. एम पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां जणावेल छे. एमणे चोवीश प्रबंध तथा कथाना चोराशी ग्रंथ रचेल छे.

H ज्ञानचंद्रगणि क्यारे हता ते माटे कंइ इतिहास मळ्यो नथी तेथी आ टिप्पनना अंते रहेल प्रशस्ति लेख जोवाथी ते मालुम पडी शके तेम छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २६ | वादरत्नाकर A | ११५० | | | डेक्कन. |
| २७ | वादिविजय | ७४८ | साधुविजयB | | पा. ४-५. को. |
| २८ | शास्त्रवार्त्तासमुच्चय | | हरिभद्र | | पा. ५, को. |
| | वृत्ति | ७००० | स्वोपज्ञ | | डे. पे. २०९ पा. ५भा. |
| | वृत्ति ( स्याद्वादकल्पलता ) | १३००० | यशोविजय | | पा. ५, को. |
| २९ | (१) षड्दर्शनसमुच्चय | ८६ | हरिभद्र | | वृ. सुलभ्य. मुद्रित. |
| | वृत्ति | १२५२ | गुणरत्नC | | वृ पा. १-४. को. मुद्रित. |
| | वृति ( बीजी ) | ४२५२ | ,, | | पा १-४ |
| | वृत्ति ( त्रीजी ) | पत्र २८ | विद्यातिलक D | | अ. २ |
| | अवचूरि | पत्र ६ | | | को. |
| | (२) षड्दर्शनसमुच्चय | २४० | राजशेखर E | | पा. ३, लीं, डेक्कन. |
| ३० | सम्मतितर्क गा. १६८ | २१० | सिद्धसेनदिवाकर | | वृ. सुलभ्य. |
| | वृत्ति | २५००० | प्रद्युम्नशिष्याभयदेव F | | वृ. ,, |

A आ ग्रंथ कोनो रचेल छे, तथा तेमां शी हकीकत छे, ते माटे तेनी प्रत जोवानी खास जरूर छे.

B साधुविजयगणि क्यारे थया छे ते संबंधे वधु हकीकत मळी नथी, पण तेओ हीरविजयसूरिना पछी थएला छे. एम तेमना नामपरथी जाणी शकाय छे.

C गुणरत्नसूरि माटे प्रमाणग्रंथना नीचे नोट आपी छे ते जुवो.

D विद्यातिलक ए सोमतिलकसूरिनुं बीजुं नाम छे. तेओए सं. १३८९ मां तीर्थकल्पना अंते रहेलुं वीरकल्प रच्यु छे. जिनदेवसूरि एमना शिष्य हता.

E राजशेखरसूरि माटे रत्नाकरावतारिकाना टिप्पननी लाईनमां तेमना नाम नीचे आपेली नोट जुवो.

F आ अभयदेवसूरि ते राजगच्छना प्रद्युम्नसूरिना शिष्य हता. आ अभयदेवसूरि ते घणुं करीने उत्तराध्ययन बृहद्वृत्तिकार वादिवेताळ शांतिसूरि के जेओ सं. १०९६ मां स्वर्गवासी थया छे ने जेमणे ते टीकाना प्रांते पोताना बे गुरु नामे सर्वदेवसूरि तथा अभयदेवसूरि जणावेला छे तेमांना होवा जोईए. अने ए प्रमाणे तेओ विक्रमनी अगीयारमी सदीमां हता एम जणाय छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति A | ७०८ | मल्लवादि | | वृ. |
| | वृत्ति B | | | | वृ. |
| ३१ | सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण | ७३० | हरिभद्र | | वृ.जेसल,अ.२, डेक्कन |
| ३२ | सिद्धांतरत्न C | १००० | विनयचंद्र D | | डेक्कन. |
| ३३ | सिद्धांतरत्नावली E | ८५० | जिनोदयशिष्य हेमसूरिनाशिष्यF | | डेक्कन. |
| ३४ | सुबोधमंजरी G | पत्र ३ | | | अ. २ |
| | वृत्ति | | | | अ. २ |
| ३५ | स्याद्वादमंजरी | ३००० | मल्लिषेण | १३४९ | वृ. सुलभ्य. मुद्रित. |
| ३६ | स्याद्वादरत्नाकर H | १३००० | वादिदेवसूरि I | | वृ. पा. १,२, जे.अ.१ १ अ २ का डेक्कन. |

A आ वृत्ति बृहत्‌टिप्पनिकारे श्लोकसंख्या साथे नोंधी छे, छतां ते दुलभ्य थई पडी छे, माटे एवा अपूर्व ग्रंथोनो पत्तो लगाडवा माटे आपणा मुनिमहाराजाओए खास लक्ष्य राखवुं घटे छे.

B आ त्रीजी वृत्ति माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां आ रीते उल्लेख छे:—“ सम्मतिवृत्तिरन्यकर्तृका.”

C आ ग्रंथ न्यायनो छे के व्याकरणनो छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत जोवानी खास जरूर छे.

D विनयचंद्रसूरिए सं. १३२५ मां कल्पनिरुक्त रचेल छे.

E आ ग्रंथना आद्यंतनो उल्लेख पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां पाने १२४ मां आपेल छे.

F जिनोदयसूरि खरतरगच्छमां ५४ मां पाटे थया छे. तेओ सं.१४१५मां आचार्यपदे आव्या अने सं. १४३२ मां स्वर्गवासी थया. तेमना शिष्य हेमसूरि थया अने ते हेमसूरिना शिष्ये आ ग्रंथ करल छे.

G सुबोधमंजरी ए न्यायनो ग्रंथ छे के व्याकरणनो छे के औपदेशिक ग्रंथ छे ते चोकसपणे ग्रंथ जोए मालम पडे, पण त्यां लगण अमे एने इहां न्यायग्रंथमां नोंध्यो छे.

H स्याद्वादरत्नाकर चोरासी हजार श्लोकनो हतो. एम परंपराथी सांभळेल छे. बृहत्‌टिप्पनिकामां तेना श्लोक ३६००० नोंध्या छे. परंतु हालमां तो ते तेर हजारनो अपूर्ण ग्रंथज मळे छे. आ एक खरेखर खेदनी बिना छे के आवा उत्तम ग्रंथ माटे जो पूरी काळजी राखवामां आवी होत तो तेनी आवी दुर्दशा नहि थात. पण ज्यारे अमूल्य ताडपत्रोना भंडार कोईने पण बताव्या वगर लांबा वखत लगण बंध बारणे रखाया हशे त्यारेज आवा उत्तम ग्रंथो नष्टप्राय जेवी स्थितिए पहोंच्या छे. विशेषमां ए जणाववुं पडे छे के हजु पण जो आपणा लोको सुलभ्य ग्रंथोना उतारा पर उतारा करावता रही अपूर्व पुस्तकोना उद्धार माटे तदन बेदरकार रहेशे तो ए अपूर्व ग्रंथो टुंक मुदतमां गुम थई जशे एमां जराए संशय नथी.

I वादिदेवसूरि ए नाममां वादि ए विशेषण छे अने देवसूरि ए नाम छे. तेओ मुनिचंद्रसूरिना पाटे थया छे. तओनो जन्म सं. ११४३ मां, दीक्षा ११५२ मां, सूरिपद ११७४ मां अने स्वर्ग १२२६ मां थयो छे. एटले तेओ हेमसूरिना समकालीन हता. तेमणे सं. ११८१ मां सिद्धराजनी सभामां दिगंबर कुमुदचंद्रने हराव्यो हतो. वळी तेमणे सं. १२०४ मां फलोधीमां प्रतिष्ठा करेली छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याना सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** | | | | |
| | **नाना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | कंटकोद्धार. A | ४८० | | | पा. ४ |
| २ | खंडनमंडन B | ८५० | परमानंदसूरि C | | जेसलमेर. |
| ३ | जैनन्याय D | २५०० | | | " |
| ४ | त्रैवेद्यगोष्टी E | ८९७ | मुनिसुंदर | १४५५ | पा. ३. ४. ५. भ. २ को. |
| ५ | नयप्रकाश F | | पद्मसागर G | १६३३ | |
| | वृत्ति | ८४० | " | | पा. ५ को. |

A कंटकोद्धार एकलो ४८० श्लोकनो छे के केम ते शक पडती विना छे केमके कोडायना भंडारमां प्रमाणप्रमेयकलिकानी प्रतना अंते ते लखेल छे अने ते श्लोक १५ थी २० नो हशे एम प्रोफेसर रवजीभाई जणावे छे.

B आ नाम अचोकस जणाय छे, कारणके आ कंई विशेषनाम नथी पण सामान्य नाम छे अने ग्रंथनुं नाम तो खास करीने विशेषनाम ज होवुं जोईये.

C परमानंदसूरि सं. १२२१ मां विद्यमान हता, ( जुवो पीटर्सनना त्रीजा रिपोर्टना पेज ६९ मां आपेलो प्रशस्तिलेख ) एमणे गर्गर्षिकृत कर्मविपाक ग्रंथनी टीका तथा प्रव्रज्याविधान नामे ग्रंथ रचेल छे. एमनी वंशावळी आ प्रमाणे छे:—

भद्रेश्वरसूरिना शिष्य शांतिसूरि तथा अभयदेवसूरि हता अने ए अभयदेवसूरिना शिष्य परमानंदसूरि थया.

D आ नाम पण अचोकसज लखेल छे. जेसलमेरनी टीप करनार हीरालाले कोण जाणे शा कारणे आवी अचोकस टीप करी छे ते मालम पडतुं नथी. माटे जेसलमेरनी टीप फरीने कोई शोधकना हाथे करावयानी जरूर छे, पण दिलगिरी ए छे के ए भंडारना रक्षको हवे फरीने टीप करवा आपे एम लागतुं नथी.

E आ ग्रंथ न्याय तथा साहित्य बन्नेने लागु पडे तेवो छे.

F नयप्रकाशने नयप्रकाशस्तवन पण कहेवामां आवे छे, कारण के ते स्तुतिरूप छे.

G पद्मसागर उपाध्याय धर्मसागरना शिष्य हता.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | नयप्रदीप A | पत्र ८ | | | भा. |
| ७ | न्यायतत्व B | २५० | | | जेसल. |
| ८ | न्यायाष्टाध्यायी C | पत्र २५ | | | पा ४ |
| ९ | प्रमाणसार D | ३०० | हर्षमुनि E | | लीं. |
| १० | प्रमाणांतःस्तव F | १२०० | यशोदेव G | | जेसलमेर. |
| ११ | लिंगलिंगिविचार H | १५०० | | | ,, |
| १२ | विप्रचकूत्रमुद्गर I | | | | डेक्कन. |
| १३ | श्वेतांबरदर्शनसिद्धि J | ५१९ | | | वृ. |

A नयप्रदीप कोणे रचेल छे ते माटे भावनगरथी खबर मेळववानी छे.

B आ नाम पण हीरालाले नोंधेलुं छे एटले शक पडतु छे.

C न्यायाष्टाध्यायी पाटणनी टीपमां जैनकृत जणावी छे एटले तेना भरोसे अमे इहां तेने नोंधी छे. छतां शक रहेछे के वखते ते गौतमप्रणीत न्यायसूत्र तो नहि होय, माटे आ पुस्तक जोवानी पण खास जरूर छे.

D प्रमाणसार जैनन्याय ग्रंथ छे के परमतना न्यायपर जैनकृत व्याख्याग्रंथ छे ते संबंधे कंई नोंधायुं नथी एटले ते ग्रंथ जे मुनिमहाशये जोयो होय तमणे ते हकीकत जणाववानी कृपा करवी.

E हर्षमुनि ए टुंकुं नाम छे माटे हर्षकीर्ति, हर्षभूषण के हर्षवर्द्धन ए त्रण पैकी कयुं नाम हशे ते तेनी विशेष माहिती मळ्याथी मालम पडे तेम छे.

F जेसलमेरनी बन्ने टीपमां आ नाम नोंधेल छे.

G. H. आ नामोपण जेसलमेरनी हीरालालनी टीपमां नोंधेला छे, एटले तेमना माटे तथा तेना कर्त्ताना नाम माटे अने श्लोकसंख्या माटे शक राखवो पडे छे. आ ग्रंथ खरी रीते तो खंडनमंडननो होवाथी ते वर्गमां गणवा घटित छे, पण अमे एमां न्यायनो विशेष भाग हशे एम मानीने इहां नोंध्यो छे.

I आ ग्रंथ पण ऊपरना ग्रंथ मुजब खंडनमंडननोज हशे पण तेमां पण न्यायनो मुख्य भाग हशे एम धारी इहां नोंध्यो छे.

J सदरहु ग्रंथ फक्त बृहट्टिप्पनिकामां नोंधेलो देखाय छे. पण बीजे स्थले ते उपलब्ध थयो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४ | षड्दर्शनदिङ्मात्रविचार A | | | | बृ. |
| १५ | षड्दर्शनस्वरूप B | पत्र ३ | | | को. |
| १६ | षण्मतनाटक C | | | | पा. ३ |
| १७ | सप्तनयविवरण D | पत्र ८ | | | अ. १ |
| १८ | सप्तभंगीप्रकरण E | पत्र १० | | | अ. १ |
| १९ | सर्वज्ञपरीक्षा F | पत्र ४ | | | जेसलमेर. |
| २० | स्त्रीनिर्वाणसिद्धि G | | | | डेक्कन. |
| २१ | स्याद्वादकलिका | ४० | राजशेखर | १२१४ | पा. ४ |
| २२ | स्याद्वादभाषा | ६०० | शुभविजय | १६६७ | पा. ५ |
| २३ | हेतुखंडनपांडित्य | | सुमति साधु H | | पं. आनंद सागरजी. |

A. B. आ बे नानकडा निबंध छे. पेलो निबंध बृहत्टिप्पनिकामां नोंधेल छे. बीजो निबंध कोडायमां छे.

C आ ग्रंथ जेम इहां नोंध्यो छे तेम तेने नाटकना विभागमां पण फरीने नोंधवामां आवशे.

D.E. सप्तनयविवरण तथा सप्तभंगीप्रकरण कोना रचेल छे ते प्रत जोवाथी मालम पडे.

F सर्वज्ञपरीक्षानी जेसलमेरनी बन्ने टीपमां नोंध छे.

G आ ग्रंथ अने बृहत्टिप्पनिकामां नोंधेल केवलिभुक्तिस्त्रीमुक्ति प्रकरण के जे शब्दानुशासनकार शाकटायने करेल छे ते एकज छे के केम ते माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

H आ सुमतिसाधु ते सोमसुंदर सूरिना पाटे थयेल लक्ष्मीसागर सूरिना शिष्य हता. अने तेओ विक्रमनी सोलमी सदीना मध्यमां थएला छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो.** | | | | |
| | **वादस्थळो.** | | | | |
| १ | अनेकांतव्यवस्थापन A | २०० | | | वृ. |
| २ | अग्निशीतत्वस्थापनावाद | | | | डेक्कन. |
| ३ | अपशब्दखंडन | १०० | कीर्तिचंद्र B | | पा. ५. |
| ४ | अपशब्दनिराकरण C | २१५ | | | वृ. |
| ५ | अपौरुषेयदेवनिराकरण D | ५११ | यशोदेव E | | वृ. |
| ६ | ईश्वरनिराकरण | | | | डेक्कन. |
| ७ | एकसमयज्ञानदर्शनवाद F | पत्र ३ | | | को. |
| ८ | गणधरवाद G | | | | डेक्कन. |
| ९ | तमोवाद | | | | डेक्कन. |
| १० | दृष्टांतदूषण | | | | डेक्कन. |

A. C. D. आ त्रणे वादस्थळ वृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधेला छे तेपरथी एमनी नोंध करी छे बाकी उपलब्ध थया नथी.

B कीर्त्तिचंद्र क्यारे थया छे तेसंबंधी विशेष जाणवामां आव्युं नथी.

E आ यशोदेवसूरि ते सिद्धराजना वखतमां सं. ११८० मां जेमणे पाक्षिकसूत्रनी वृत्ति रची छे ते होवा जोइये, एम अमो धारिये छीये, छतां ग्रंथ मळ्याथी चोकस खातरी थई शके तेम छे.

F आ वाद विशेषावश्यकनी टीकामांथी छुटो ऊतारेल छे एम कोडायवाळा प्रो. रवजीभाई कहे छे के मने याद छे.

G आ वाद पण वखते विशेषावश्यकनी टीकामांथी उद्धरेल होय तो होय.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | नास्तिकनिराकरण | १७ | | | लींबडी. |
| १२ | परब्रह्मोत्थापनस्थळ | २४६ | भुवनसुंदर A | | पा. ५ को. |
| १३ | परहेतुतमोभास्करस्थळ B | पत्र १५ | | | अ. २ |
| १४ | परिणामिवस्तुव्यवस्थापन | ८० | | | बृ. |
| १५ | पंचदर्शनखंडन | पत्र ३ | | | को. |
| १६ | प्रत्यक्षानुमानाधिकप्रमाण निराकरण | ५१९ | यशोदेव | | बृ. |
| १७ | यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थळ C | पत्र २६ | अजितदेव D | ११८५ | बृ. |
| १८ | वस्त्रव्यवस्थापनस्थळ | | | | बृ. |
| १९ | वेदखंडन | १०० | कीर्तिचंद्र | | पा. ५ |
| २० | वेदबाह्यतानिराकरण E | | हरिभद्रसूरि | | डेक्कन. |
| २१ | शब्दनिराकरण F | | | | डेक्कन. जेसल. |

A भुवनसुंदरसूरि मुनिसुंदरसूरिना वारे हता.

B आ ग्रंथ जैनकृत छे के केम तेनो चोकस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके तेम छे.

C. E आ बे स्थळ पण फक्त बृहट्टिप्पनिकामां नोंधायला छे तेपरथी इहां नोंध्या छे.

D अजितदेवसूरि मुनिचंद्र तथा मानदेवसूरिना शिष्य हता.

E आ ग्रंथ खास उतारवा योग्य छे केमके ते अपूर्व ग्रंथ छे.

F आ ग्रंथ अने बृहट्टिप्पनिकामां नोंधायलो अपशब्दनिराकरण ए एकज छे के केम ते प्रत जोयाथी जणाइ शके तेम छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | षड्दर्शनखंडन | पत्र २ | | | पा. ४ |
| २३ | सर्वज्ञवादस्थळ A | | | | डेक्कन. |
| २४ | सर्वज्ञव्यवस्थापनावाद B | | | | को. वृ. |
| २५ | सर्वज्ञव्यवस्थापनास्थळ C | | | | डेक्कन. |
| २६ | सर्वस्थळ D | | | | डेक्कन. |
| २७ | सर्वार्थनिराकरणस्थळ | २५० | रविप्रभ E | | पा. ४–५, डेक्कन. खं. |
| २८ | संक्षेपेणसर्वज्ञसिद्धि F | | | | डेक्कन. जे. |

A. B. C. D. आ ग्रंथ एकज छे के जूदा जूदा छे ते जाणवा माटे तेमनी प्रतो जोवी जोईये.

E रविप्रभसूरि उदयप्रभ तथा विनयचंद्रना गुरु हता अने तेओ तेरमी सदीना वचगाळे थया होवा जोईये.

F आ ग्रंथ माटे जेसलमेरनी हंसविजयजीकृत टीपमां सर्वज्ञसिद्धि एटलुंज नाम लखेल छे अने ते ताडपत्र ८ नी छे एम नोंध्युं छे. भावनगरनी टीपमां पण तेज नामनी प्रत छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ४ थो.** | | | | |
| | **दिगम्बरकृत न्यायग्रंथो.** | | | | |
| १ | अध्यात्मतरंगिणी टीका | | शुभचंद्र | | बृ. पा. २ |
| २ | अव्याप्तिवाद † | | प्रभादेव | | † |
| ३ | आप्तमीमांसा A | | समंतभद्र B | १२५ | डेक्कन. |
| | टीका | | वसुनंदि | | डेक्कन. |
| | भाष्य | | अकलंकदेव | | डेक्कन. |
| | वृत्ति ( अष्टसाहस्री ) | ८००० | विद्यानंद | | डे. मुं. मोइवाडो २. |
| ४ | आप्तपरीक्षा | २०० | ,, | | ,, |
| | वृत्ति | ४५०० | ,, | | लीं. डेक्कन. |
| ५ | आलापपद्धति | | देवसेन | | मुद्रित. |

† आवी निशानीवाला ग्रंथो सुरतना शेठ भगवानदास कल्याणदास के जेओ पिटर्सन साहेबने त्यां नोकरीमां हता, तेमना प्राइव्हेट रीपोर्टमां नोंध्या हता ते परथी मुंबईना दिगम्बर पंडित पन्नालालजीये उतारो करेल हतो. ते उतारो अमने मळतां तेपरथी आ ग्रंथो अमे अत्रे नोंध्या छे. परंतु ते ग्रंथो क्यां पण उपलब्ध थया नथी, माटे जे जे ग्रंथना नाम आगळ अने तेना स्थळना खानामां † आ चिन्ह जोवामां आवे ते ते ग्रंथ दुर्लभ्य छे एम जाणवुं, ग्रंथनी तथा कर्तानी माहिती माटे जूदी निशाणीओ करी छे. तो आवा दुर्लभ्य अपूर्व ग्रंथोनी शोधखोल करी दिगंबर सुजनो तेनो पुनरुद्धार करशे एवी अमारी तेमने खास करीने सूचना छे.

A आप्तमीमांसा ते गंधहस्तिमहाभाष्यना मूळनी ११५ कारिकाओ छे. अने तेने देवागम-स्तोत्र पण कहे छे.

B समंतभद्रस्वामिए तत्वार्थनी वृत्ति रची छे. ते शिवाय युक्त्यनुशासन, रत्नकरंडक, स्वयं-भूस्तोत्र, अने जिनशतक पण तेमणेज रचेलां छे. रत्नकरंडकनुं अपरनाम उपासकाध्ययन छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | जिनसत्तालंकार † | | समंतभद्र | | † |
| ७ | जीवास्तित्ववाद A | १५० | | | डेक्कन. |
| ८ | तत्वार्थनी टीकाओः— | | | | |
| | गंधहस्ति महाभाष्य B | ८४००० | समंतभद्र | | † |
| | टीका ( पहेली ) | २४०० | प्रभाचंद्र ( तत्व-प्रकाशिका ) | | डेक्कन. |
| | टीका ( बीजी ) ( सर्वार्थसिद्धिनाम्नी ) | ६००० | पूज्यपादस्वामी ( देवनंदी ) | | डे. मुं.भोइवाडो २ |
| | टीका ( त्रीजी ) | ११००० | श्रुतसागर | | डे. मथुरा. |
| | टीका ( चोथी ) | ८००० | धर्मभूषण (न्याय-दीपिका) | | डेक्कन. मुद्रित. |
| | टीका † ( पांचमी ) | ३२५० | विबुधसेन | | † |
| | टीका † ( छठी ) | | लक्ष्मीदेव | | † |
| | टीका † ( सातमी ) | | शुभचंद्र | | † |
| | टीका † ( आठमी ) | | प्रभाचंद्र ( तत्त्वप्रकाशिका) | | † |
| | टीका † ( नवमी ) | | योगींद्रदेव ( तत्व-प्रकाशिका ) | | † |
| | टीका † ( दशमी ) | | देवीदास | | † |

† आ चिन्ह माटे पाछळपाने अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

A आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजना रीपोर्टमां नोंधेल होवाथी ते प्रमाणे तेने अमे इहां नोंध्यो छे परंतु ते न्यायनोज छे के खंडनमंडननो छे ते ग्रंथ जोई नकी करवुं जोईये.

B गंधहस्ति महाभाष्य ते तत्वार्थनी बृहत्वृत्ति छे. अने ते चोराशी हजारनी हती एम परंपराथी सांभळेलुं छे. ते प्रमाणे तेने इहां टांकी छे. परंतु ते वृत्ति हालमां क्यां पण उपलब्ध थती नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | टीका ( अग्यारमी ) † | | योगदेव | | |
| | टीका (बारमी) † (सुखबोधिनी ) | ५००० | रविनंदि | | † |
| | राजवार्तिक | १९००० | अकलंक शिष्य | | डेक्कन. |
| | राजवार्तिकालंकार | १३००० | भट्टाकलंक | | मुं. भोइवाडो २ |
| | तत्त्वानुशासन † | ५००० | नागचंद्रमुनि | | † |
| | तत्त्वदीपक † | | ब्रह्मदेव | | † |
| | तत्त्वसार | | देवसेन A | | डेक्कन. |
| | टीका † | | सकलकीर्ति B | | † |
| | दीपिका † | ६०० | बालचंद्र | | |

† आ चिन्ह माटे पेज ८७ मां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

A दिगम्बर देवसेन त्रण थया छेः—

एक देवसेन ते वीरसेनना शिष्य अने अमितगतिना गुरु हता. आ देवसेनने माटे अमितगतिनी रचेल धर्मपरीक्षाना प्रशस्तिलेखमां नोंध छे.

बीजा देवसेन ते विमलसेनना शिष्य हता अने तेमणे भावसंग्रह रचेल छे. एम पीटर्सनना पांचमा रिपोर्टमां नोंध्यु छे.

त्रीजा देवसेन भट्टारक ते रामसेनना शिष्य हता. तेओनो जन्म संवत् ९५१ मां थयो छे. अने तेमणे सं. ९९० मां दर्शनसार रचेल छे. ते शिवाय तत्वसार अने अर्हत्सार ए त्रणे ग्रंथ प्राकृतमां तेमणेज रचेला छे. अने नयचक्र तथा आलापपद्धति संस्कृतमां रची छे. वळी तेमणे रचेलो धर्मसंग्रह पण संस्कृतप्राकृत हतो एम पिटर्सने नोंध्युं छे.

हवे आ त्रण आचार्यमांथी तत्वसारना करनार देवसेन ते आ त्रीजा देवसेन छे. एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

B आ सकलकीर्ति ते पद्मनंदिना शिष्य हता. अने तेमणे ऋषभनाथ चरित्र रचेल छे. एम पिटर्सन रिपोर्ट पाचमामां नोंध्युं छे. तेमना माटे वेबरे एवी नोंध करी छे के तेओ वि. सं० १५२० मां विद्यमान हता.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | तत्त्वार्थसार | ८०० | अमृतचंद्र A | | डे. को. मुं. भोइवाडो२ |
| | दीपिका | १८०० | सकलकीर्ति | | डेक्कन. |
| | तत्त्वार्थलंकार $ | | विद्यानंद | | $ |
| | श्लोकवार्तिकोद्धृतकारिका | २५० | | | डेक्कन. |
| | स्फोटकवृत्तिB | | | | अ. २ |
| ९ | तत्त्वानुशासन$ | | समंतभद्र | | $ |
| १० | तर्कशास्त्र | | शुभचंद्र | | $ |
| ११ | तर्कभाषा C | ताड ७ | यति मोक्षाकर-गुप्त | | पा. २ |
| १२ | तर्कदीपिका $ | | वादिसिंह | | $ |
| १३ | तर्कपरीक्षा $ | | विद्यानंद | | $ |
| १४ | तर्कवाद $ | | प्रभादेव | | $ |
| १५ | तर्कामृत $ | | आशाधर | | $ |
| १६ | तत्त्वविनिश्चय $ | | वर्धमानकवि | | $ |
| १७ | दृष्टिवाद D | पत्र ४२ | | | डेक्कन. |
| १८ | द्रव्यगुणपर्यायनिरूपण | ३०० | देवसेन | | जेसलमेर. |

A आ अमृतचंद्रसूरिये कुदकुंदाचार्यकृत समयसारपर आत्मख्याति नामनी टीका रची छे. वळी एक दिगम्बर पट्टावळीमां तेओ संवत् ९६२ मां विद्यमान हता. तेमणे प्रवचनसारटीका, पचास्तिकायटीका, तत्वार्थसार, पुरुषार्थसिद्ध्यु अने तत्वदीपिका पण रचेलां छे एम पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां जणाव्युं छ.

$ आ चिन्ह माटे दिगम्बर न्यायनी शरुआतमां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

B आ स्फोटकवृति अमदावादना चंचलबाना भंडारनी टीपमां नोंधाइ छे. ते प्रमाणे तेने अमे इहां नोंधी छे. तेसंबधी विशेष खुलासो पुस्तक जोये मळी शके तेम छे.

C आ तर्कभाषा पाटण नंबर बीजामां ताडपत्र उपर लखेली छे.

D आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजमां छे. ते शिवाय बीजे कोई ठेकाणे जोवामां आव्यो नथी. तो ते शुं छे. अने ते कोणे रचेल छे तेनी तपास करवी जोईये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १९ | (१) नयचक्र | १८० | देवसेन | | डे. भा. मथुरा. |
| | वृत्ति | | ,, | | डेक्कन. |
| २० | (२) नयचक्र † | | धर्मसागर | | † |
| २१ | नयवाद † | | प्रभादेव | | † |
| २२ | न्यायदीपिका | ८०० | धर्मभूषण | | मुद्रित. |
| २३ | न्यायकुमुदचंद्र A | | अकलंकदेव | | वृ. |
| | न्यायकुमुदचंद्रोदय | १६००० | प्रभाचंद्र | | वृ. मुं. गुलालवाडी. |
| २४ | न्यायविनिश्चयालंकार † | २०००० | अकलंकदेव | | † |
| २५ | न्यायविनिश्चयवृत्ति | | अनंतवीर्य | | कोडाय. |
| २६ | न्यायसदर्थसंग्रह | पत्र ५१३ | | | डेक्कन |
| २७ | न्यायामृत † | | आशाधर | | † |
| २८ | परीक्षामुख | पत्र ४२ | माणिक्यनंदि | | वृ. डेक्कन. |
| | वृत्ति ( प्रमेयरत्नमाला ) | १५०० | अनंतवीर्य | | मुद्रित. |
| २९ | पत्रपरीक्षा | | | | वृ. |
| ३० | प्रमाणप्रमेयकलिका B | ६० | | | डे. को. वृ. |

† आ चिन्ह माटे पेज ८७ मां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

A आ ग्रंथ बृहत्‌टिप्पनिकामां तेनी वृत्तिसाथे नोंधायो छे. अने तेना माटे त्यां आवो उल्लेख छे:— " न्यायकुमुदचंद्रसूत्रवृत्ती दिगंबरी अकलंकदेवप्रभाचंद्रकृते सू. वृ. १६००० "

B प्रमाणप्रमेय कलिकाना मूळकार कोण छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | २००० | नरेंद्रसेन | | डे. को. |
| | वृत्ति | २८७३ | शांतिसूरिA | | वृ. पा. २ |
| ३१ | प्रमाणनिर्णय * | | विद्यानंद | | * |
| ३२ | प्रमाणमीमांसा * | | * | | * |
| ३३ | प्रमाणविलास * | २००० | धर्मभूषण | | * |
| ३४ | प्रमाणदीपिका * | | प्रभाचंद्र | | * |
| ३५ | (१) प्रमाणनौका* | | वादिसिंह | | * |
| ३६ | (२) प्रमाणनौका * | | वीरसेन | | * |
| ३७ | प्रमाणपरीक्षा | १४०० | विद्यानंद | | डे. जयपुर. |
| ३८ | प्रमितवाद * | | प्रभादेव | | * |
| ३९ | प्रमेयकमलमार्तण्ड | १२००० | प्रभाचंद्र | | वृ. पा. २–४ मु. भोइवाडो. |
| ४० | भाषामंजरी | २४०० | भट्टाकलंक | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | ८००० | | | डेक्कन. |

A आ शांतिसूरि तेमना नाम उपरथी ते श्वेताम्बर होवा जोइये. अने आ ग्रंथ सरस होवाथी तेना उपर तेमणे आ टीका रची होवी जोइये, कारण के श्वेताम्बर आचार्योए अन्यमतिना ग्रंथोपर पण टीकाओ रचेली छे. आ वृत्तिनी प्रत ताडपत्र उपर लखायेली पाटणमां मोजूद छे. माटे तेनो खास करी उतारो करी लेवानी जरूर छे.

आ चिन्ह माटे पेज ८७ मां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४१ | युक्तिचिंतामणि † | | सोमदेव A | | † |
| ४२ | युक्तिवाद † | | प्रभादेव | | † |
| ४३ | युक्त्यनुशासन | | समंतभद्र | | ईडर |
| | वृत्ति | २७८२ | विद्यानंद | | ईडर |
| ४४ | राजमार्तण्ड † | | प्रभाचंद्र | | † |
| ४५ | वाक्यप्रकारव्याख्या | पत्र २ | | | वृ. |
| ४६ | वाग्विलास B | पत्र ६७ | | | ज २ |
| ४७ | वादमंजरी † | | वादिराज | | † |
| ४८ | वादिकौशिकमार्तण्ड † | | प्रभाचंद्र | | † |
| ४९ | विश्वतत्त्वप्रकाश | | भावसेन त्रैविद्यदेव | | मुं. भोइवाडो २ |
| ५० | वृहत्पंचनमस्कार वृत्ति | ५०० | | | लींबडी |

† आ चिन्ह माटे दिगंबरकृत न्यायनी शरुआतमां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

A आ सोमदेवे यशस्तिलक नामे काव्य शके ८८१ एटले विक्रम संवत् १०१६ मां रचेल छे. अने ते डेक्कन कॉलेजमां मोजूद छे. पिटर्सन चोथा रिपोर्टमां तेमनी आप्रमाणे वंशावळी लीधी छे. पेहेला देवसंघतिलक तेमना पाटे यशोदेव तेमना पाटे नेमिदेव अने नेमिदेवना पाटे सोमदेव थया छे.

B आ ग्रंथ अमदावादना चंचलबाना भंडारनी टीपमां नोंध्यो छे. अने ते न्यायनो हशे एम धारीने तेने अमे हहां नोंध्यो छे. परंतु वखते ते साहित्यनो पण होय माटे तेमां शुं छे अने ते कोणे रचेल छे ते नक्की करवा माटे ते प्रत नजरोनजर जोवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५१ | बृहत्षड्दर्शनसमुच्चय † | | सिद्धसेन A | | † |
| | टीका † | ६००० | गुणरत्न B | | † |
| ५२ | सप्तभंगीतरंगिणी | | विमलदास | | मुद्रित. |
| ५३ | संशयिवदनविदारण | १०३१ | शुभचंद्रशिष्य | | अ.२ मुं. भोइवाडो.२ |
| ५४ | सुखबोधार्थमालापद्धति | पत्र १५ | देवसेन | | डेक्कन. |

† आ चिन्ह माटे दिगंबर न्यायनी शरुआतमां अव्याप्तिवाद उपरनी नोट जुओ.

A आ सिद्धसेनसूरि ते सिद्धसेन दिवाकर छे. सिद्धसेन दिवाकरने श्वेताम्बर तथा दिगंबर बन्ने माने छे. तेमनुं अपरनाम कुमुदचन्द्र हतुं अने ते नामपरथीज दिगम्बरो तेमने दिगम्बर तरीके माने छे.

B आ गुणरत्नसूरि श्वेताम्बर होवा जोइये. कारण के श्वेतांबराचार्य हरिभद्रसूरिकृत षड्दर्शन समुच्चयनी टीका पण गुणरत्नसूरियेज रचेल छे. श्वेताम्बराचार्य गुणरत्न बे थया जाणवामां आव्या छे. एक माणिक्यसूरिना शिष्य हता. अने बीजा देवसुंदरसूरिना शिष्य के जेमणे हरिभद्रसूरिकृत षड्दर्शन समुच्चयनी टीका वि. सं. १४६६ ना अरसामां रची छे. ते प्रमाणे आ सिद्धसेनकृत षडदर्शननी टीका पण तेज गुणरत्नसूरिये रची होवी जोइये एम अमारुं अनुमान थाय छे. छतां आ टीका कोइ स्थले उपलब्ध थाय तो ते कया समयमां थई छे, अने आ गुणरत्न कोण हता तेनो तपास करी नक्की करवुं जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ५ मो** | | | | |
| | परमतना न्यायग्रंथोउपर जैनाचार्योए करेला व्याख्याग्रंथो. | | | | |
| १ | अभावग्रंथव्याख्या A | पत्र ९२ | | | डेक्कन रिपोर्ट पेज १२४ |
| २ | कंदलिटिप्पन | | नरचंद्रसूरि B | | पा. १ |
| ३ | कंदलिपंजिका | | राजशेखर | | बृ. |
| ४ | तर्कफक्किका | ७'१० | क्षमाकल्याण C | | डेक्कन. |
| ५ | तर्कभाषावार्त्तिक | १३०० | शुभविजय | १६६३ | लींबडी. |
| ६ | तर्करहस्य दीपिका | | गुणरत्न D | | पा. ४ |
| ७ | न्यायबिंदु | १२९५ | मल्लवादि | | पा. ४ जे. |
| ८ | न्यायसारवृत्ति | २९०० | आंचलिक जयसिंह E | | बृ अ.२पा.१राधनपूर |

A आ व्याख्या कोणे रचेल छे ते चोकस जाणवा माटे ग्रंथ जोवानी जरूर छे.

B नरचंद्रसूरिना शिष्य उदयप्रभसूरिए सं. १२९९ मां उपदेशमाळानी कर्णिका वृत्ति रची छे माटे नरचंद्रसूरि तेरमी सदीना वचगाळे होवा जोइये.

C क्षमाकल्याण उपाध्याय ओगणीसमी सदीमां हता.

D गुणरत्नसूरि सं. १४६६ मां हता.

E जयसिंहसूरिए सं. १४३६ मां उपदेशचिंतामणि रचेल छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | न्यायालंकार टिप्पन | १०००० | अभयतिलक A | | जेसलमेर. |
| १० | महाविद्याविडंबनावृत्ति | २०७० | भुवनसुंदर | | पा. ४ |
| | टिप्पन | ६५७ | ,, | | पा. ४ लिंबडी. को. |
| ११ | लक्षणसंग्रह B | ६९९ | रत्नशेखर C | | डेक्कन. |
| १२ | सप्तपदार्थी | १९०० | जिनवर्धन D | | पा. १, खं. अ. २ |

A अभयतिलक उपाध्याये सं. १३१२ मां द्व्याश्रयनी टीका रचेली छे.

B आ ग्रंथनुं नाम स्वतंत्र लागे छे, छतां अमे तेने इहां व्याख्याग्रंथमां नोंध्यो छे, माटे पुस्तक जोवाथी ते जो स्वतंत्र जैनन्यायनो ग्रंथ जणाय तो तेने जैनन्यायना बीजा वर्गमां नाखवो जोइये.

C रत्नशेखरसूरि १५०२ थी सं. १५१७ सूधीमां हता.

D जिनवर्धनकृत आ ग्रंथ खंभातना भंडारमां सं. १५११ मां लखेल छे माटे तेना अगाऊ जिन-वर्धन गणि होवा जोईये.

## लीस्ट नंबर ३.

# जैन फिलॉसोफि.

# हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथो.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अनेकान्तजयपताका A | ३५०० | हरिभद्र B | | वृ., पा. १-४. |
| | वृत्ति | ८२५० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. १. |
| | ,, टिप्पन | २००० | मुनिचंद्र | | कोडाय. जेसल. |
| २ | अष्टकसूत्र C | २५६ | हरिभद्र | | वृ. पा. १सुलभ्य |
| | वृत्ति | ३३७४ | जिनेश्वर | १०८० | वृ., पा. १-२,को. |
| ३ | उपदेशपद | गा.१०४० | हरिभद्र | | वृ., पा. २ को. |
| | वृत्ति | १४००० | मुनिचंद्र | ११७४ | वृ., पा.१-४.कोडाय |

A आ ग्रंथ पूर्वे जैन न्यायना पाडामां नोंधायो छे, परंतु आ पाडामां हरिभद्रसूरिए रचेला ग्रंथो अनुक्रमवार नोंधवामां आवनार होवाथी एने इहां पण नोंधवामां आवेल छे.

B हरिभद्रसूरि विक्रम संवत् ५८५ मां स्वर्गवासी थया छे. तेओ याकिनी महत्तरा पासे बोध पामेल होवाथी पोताना नाम साथे " धर्मतो याकिनीमहत्तरासूनु " एवुं विशेषण जोडे छे. एमणे १४४४ प्रकरणो रच्यां हतां एम प्रशस्तिलेखो परथी मालम पडे छे, परंतु दिलगिरीनी वात छे के तेमांना हालमां अमोने गण्याने गांठ्या प्रकरणोज हाथ आव्या छे. हरिभद्रसूरिए तथा यशोविजयजी उपाध्याये रचेलां केटलांक प्रकरणो अमदावादमां पंन्यास दयाविमळजी महाराजना भंडारमां मोजूद छे एम सांभळवामां आव्युं छे. हालमां ते भंडार पं. सौभाग्यविमळजी महाराजना हस्तगत छे अने श्रीमान् शेठ मनसुखभाईना भाई जमनाभाई भगुभाई जेवा धार्मिक पुरुषनी देखरेखमां छे, तो तेओ अथवा शेठ जमनाभाई ते भंडार उघडावी तेमांना पुस्तको देखाडवा बाबत अवश्य लक्ष आपशे एवी आशा छे.

C आ सूत्रमां जूदा जूदा बत्रीश अष्टको छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति ( बीजी ) A | ६४१३ | वर्द्धमानसूरि B | | जेसलमेर. |
| ४ | जंबूद्वीप संग्रहणी C | गा. ३० | हरिभद्र | | सुलभ्य. |
| ५ | ज्ञानादित्य प्रकरण D | | हरिभद्र | | पा. २, P. 4. |
| ६ | दर्शनसप्तरी गा. १५० | | हरिभद्र | | पा. ३ कोडाय. |
| | अवचूरि | | शिवमंडन | | पा. ३ |
| ७ | देवेंद्रनरकेंद्र प्रकरण E | | हरिभद्र | | डेक्कन. पेज २०९ |
| | टीका | | मुनिचंद्र | | डेक्कन. |
| ८ | धर्मबिंदु | २७३ | हरिभद्र | | वृ., पा., १-३-५. |
| | वृत्ति | ३००० | मुनिचंद्र | | वृ., पा. १अ, सुलभ्य |
| ९ | धर्मसंग्रहणी गा. १३९६ | १७५० | हरिभद्र | | वृ. १ पा. मुं. |

A आ वृत्ति जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां ताडपत्रपर लखेली तेना कर्त्ताना नाम साथे नोंधाइ छे. पण बीजा कोईपण भंडारमां जोवामां आवी नथी, माटे जरूर तेनो उतारो थवो जोइये.

B आ वर्द्धमानसूरि ते जिनेश्वरसूरिना गुरु हता ते छे के बीजा छे ते पुस्तकनी प्रशस्ति मेळव्याथी मालम पडी शके तेम छे.

C केटलीक टीपोमां एनी ११२ गाथा नोंधाइ छे.

D आ प्रकरणनुं प्राकृतमां "नाणाइत्त" एवुं नाम छे ते परथी क्लेट, वेबर तथा पीटर्सने तेने संस्कृतमां नानाचित्रकना नामे पण नोंध्युं छे. अने पीटर्सन रिपोर्ट चोथामां हरिभद्रसूरिना नाम नीचे ते तेमणे रचेल छे एम जणाव्युं छे.

E आ प्रकरण डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज २०९ मां तेनी वृत्ति साथे नोंधेल छे. आ प्रकरण तेना नाम उपरथी ते बहुज सरस लागे छे, पण रिपोर्टमां तेनी पत्रसंख्या के कांइ हकीकत जणावेल नथी, फक्त ग्रंथनुं नाम अने कर्त्ताना नाम मात्र जणाव्या छे. माटे डेक्कन कॉलेजमां रहेला आ अपूर्व प्रकरणनी शोधखोल करी तेनो पतो मेळवी तुरत उतारो करावी लेवानी अत्यंत जरूर छे. हमणा खबर मळी छे के ए ग्रंथ पं. आणंदसागरजी पासे पण छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति A ( सूत्रमिश्रा ) | ११००० | मलयगिरि | | वृ., पा., २-३-४. |
| १० | धूर्ताख्यान ( प्रा. ) | ६०२ | हरिभद्र | | पा. ४. |
| ११ | न्यायप्रवेशकसूत्र. | १०८ | हरिभद्र | | वृ. पा. ४. |
| | वृत्ति | ८८७ | स्वोपज्ञ | | पा. २-५ |
| १२ | पंचाशक B | ११८४ | हरिभद्र | | वृ. पा. २-३-४, को |
| | वृत्ति | ७४८० | अभयदेव | ११२४ | वृ. सुलभ्य. |
| | प्र. पंचाशक चूर्णि C | ३२०० | यशोदेव | ११७२ | वृ. पा. १-५. |
| १३ | पंचवस्तुक | १७९४ | हरिभद्र | | वृ. पा. २ |
| | वृत्ति | ५०५० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. ४, कोडाय |
| १४ | पांच सूत्र D | २१० | हरिभद्र | | वृ. पा. २-३. |
| | वृत्ति | ८८० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. २-४-५. |
| १५ | यतिदिनकृत्य E | ५०० | हरिभद्र | | A. S. उ, अ. १. |

A आ वृत्तिने माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां आवो उल्लेख छेः—“ धर्मसंग्रहणीवृत्तिर्मलयगिरीया सूत्रमिश्रा ११०००–१०५०० प्रत्यंतरे ”

B पंचाशक १९ छे एम बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे.

C आ चूर्णि माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां “ आद्यपंचाशकचूर्णिः ११७२ वर्षे यशोदेवीया सभावाच्य ३२०० ” आवो उल्लेख छे.

D बृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे चोकस उल्लेख नीचे मुजब छेः—

“ पांचसूत्रं प्राकृतमुख्यं वृत्तिश्च हारिभद्री सू. २१० वृ. ८८० पापप्रतिघातगुणबीजाधान १ साधुधर्मपरिभावना २ प्रव्रज्याग्रहणविधि ३ प्रव्रज्यापरिपालना ४ प्रव्रज्याफल ५ सूत्ररूपं.”

E यतिदिनकृत्य केटला श्लोकनुं छे ते संबंधी निर्णय थयो नथी. अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां तेना पत्र १५ छे एम नोंधेल छे, माटे डेलाना भंडारमांनी प्रत नजरे जोयाथीज तेनो चोकस निर्णय थइ शके तेम छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १६ | योगबिंदु | ५२० | हरिभद्र | | बृ. पा. १-४, को. |
| | वृत्ति | ३६२० | स्वोपज्ञ | | बृ. पा. १-४-५ |
| १७ | योगदृष्टिसमुच्चय | २२३ | हरिभद्र | | पा. १-३, कोडाय |
| | वृत्ति | ११७५ | स्वोपज्ञ | | पा. १-३, कोडाय |
| | अवचूरि | ४५० | साधुराजगणि | | A S. कोडाय. |
| १८ | योगशतक A गा. १०१ | | हरिभद्र | | S. K. |
| १९ | लग्नशुद्धि गा. १२८ B | | ,, | | पा. ३ S.K.कोडाय |
| २० | लोकतत्वनिर्णय | १७० | ,, | | बृ. कोडाय. |
| २१ | वीरांगदकथा C | पत्र ८ | ,, | | अ. २ |
| २२ | वेदबाह्यतानिराकरण D | | ,, | | छे. |
| २३ | शास्त्रवार्तासमुच्चय | | ,, | | पा. ५ डेक्कन पेज २०९ |
| | लघुवृत्ति | ७००० | स्वोपज्ञ | | भा. |

A आ शतक फक्त खंभातमां शांतिनाथजीना भंडारमां ताडपत्रपर लखेल छे एम पीटर्सनना रिपोर्टमां नोंध्युं छे. ते शिवाय बीजे कोइपण स्थळे उपलब्ध थयुं नथी. माटे तेनो उतारो करावी लेवानी जरूर छे.

B आनुं अपरनाम लग्नकुंडलिका पण छे. जुवो रिपोर्ट पेहेलो पेज ८८

C अमदावादना चंचलबाना भंडारमां आ कथा हरिभद्रसूरिए रचेल छे एम नोंध्युं छे. परंतु ते संबंधी बीजो कोई विशेष पुरावो जोवामां आव्यो नथी माटे ते कोणे रची छे ते बाबत नकी करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

D पीटर्सनना पेला रिपोर्टमां पेज १२६ मां आ ग्रंथना कर्त्ता हरिभद्रसूरि जणाव्या छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति (स्याद्वादकल्पलता) | १३००० | यशोविजय | | कोडाय. |
| २४ | श्रावकधर्मतंत्र A | | हरिभद्र | | डेक्कन पेज २०९ |
| | वृत्ति | | मानदेव | | डेक्कन पेज २०९ |
| २५ | षड्दर्शनसमुच्चय. | | हरिभद्र | | पा. १-३-४. |
| | वृत्ति | ४२५२ | गुणरत्न | | पा. ३-४. |
| २६ | षोडशक | ३३० | हरिभद्र | | वृ. पा १-३-४ को. |
| | वृत्ति | १५०० | यशोदेव | | वृ. सुलभ्य. |
| २७ | समरादित्यचरित्र ( प्रा ) | १०००० | हरिभद्र | | पा. ४-५, A. S. |
| | ,, टिप्पन | | मतिवर्धन | | A. S. |
| २८ | सर्वज्ञसिद्धिप्रकरण B | ७३० | हरिभद्र | | जेसलमेर वृ. |
| २९ | संबोधप्रकरण C | २०५४ | हरिभद्र | | अ. १, GOV. 6. |
| ३० | साधुप्रवचनसारप्रकरण D | पत्र ९ | हरिभद्र | | अ. २ |

A डेक्कन कॉलेजना रिपॉर्टमां पेज २०९ मां श्रावकधर्मतंत्र नामे ग्रंथ तेनी वृत्ति साथे नोंधेल छे. पण ते अमोने अत्यार सुधी कोई पण जगोए उपलब्ध थयो नथी, अजायबनी वात ए छे के त्यां पण तेनी श्लोक संख्या पण लखी नथी. माटे शोधक जनोए गुम थता आवा उपयोगी ग्रंथनी डेक्कन कॉलेजमां शोध खोल करी अगर ते ज्यां होय त्यांथी तेनो पतो मेळवी उतारो करावी लेवो जोइये.

B आ प्रकरण फक्त जेसलमेरनी हंसविजयजी महाराजनी टीपमां नोंधायुं छे, ते शिवाय बीजे कोइपण स्थळे उपलब्ध थयुं नथी. माटे जेसलमेरना भंडारमांनी प्रत उपरथी तेनो खास उतारो लेवो जोइये. हमणा खबर मळी छे के ते भावनगरमां तथा पं. आनंदसागरजीना पासे पण छे.

C एनुं अपरनाम तत्वप्रकाशक छे. डेलाना भंडारमां ते पत्र ८८ नुं छे एम नोंध्युं छे परंतु ते केटला प्रमाणनुं छे तेनो चोकस निर्णय डेलाना भंडारमांनी प्रत नजरे जोयाथीज थइ शके.

D आ नाम शक पडतु लागे छे अने ते फक्त अमदावादना चंचलबाना भंडारनी टीपमां नोंधायुं छे. ते शिवाय बीजो कोइ विशेष पुरावो जोवामां आव्यो नथी. माटे तेनुं खरुं नाम शुं छे तेनो निर्णय करवो जोइये.

सूचनाः—आ ग्रंथो उपरांत हरिभद्रसूरिए जे सूत्रो उपर टीकाओ रची छे ते जैनागमना लिस्टमां नोंधाइ छे.

# यशोविजयवाचककृत ग्रंथो.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अध्यात्मोपनिषत् | २३१ | यशोविजय A | | छपाय छे. |
| २ | अध्यात्ममतदलन | | ,, | | छपाय छे |
| ३ | अध्यात्मसार | १३०० | ,, | | पा. ४. को.मुद्रित |
| ४ | अध्यात्ममत परीक्षा | | यशोविजय | | पा. ५ |
| | वृत्ति | ४००० | स्वोपज्ञ | | पा. ५ |
| ५ | उपदेशरहस्य | | यशोविजय | | कोडाय. |
| | वृत्ति | ३७०० | स्वोपज्ञ | | को. |
| ६ | कर्मप्रकृति टीका | १३००० | यशोविजय | | पा. ३ को. |
| ७ | गुरुतत्वनिर्णय | | ,, | | पा. ५, को. |
| | वृत्ति | ६८७१ | ,, | | पा. ५, को. |
| ८ | ज्ञानबिंदु | १२५० | ,, | | छपाय छे. |

A आ यशोविजयगणि ते नयविजयगणिना शिष्य हता अने तेमणे विक्रम सं. १७४२ मां श्रीपाल राजानो रास रचेल छे. तेमणे काशीमां पंडितोने जीतीने सभासमक्ष "न्यायविशारद" तथा "महामहोपाध्याय" ना पद मेळव्यां हतां, अने तेमणे सो ग्रंथ रचतां तेओने न्यायाचार्य पद आपवामां आव्युं हतुं.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ज्ञानसार A | | यशोविजय | | मुद्रित. |
| | वृति | | देवचंद्र | | अ. १ |
| १० | तर्कभाषा B | ४०० | यशोविजय | | पा. ४-५,खं. Gov6 |
| ११ | देवधर्मपरीक्षा | | ,, | | मुद्रित. |
| १२ | द्वात्रिंशद्वात्रिंशिका | | ,, | | अ. १ को. |
| | वृत्ति | | स्वोपज्ञ | | पा. ३-५ |
| १३ | धर्मपरीक्षा | | यशोविजय | | पा. ३ अ १. |
| | वृत्ति | ५५५० | स्वोपज्ञ | | पा. ३. अ. १ |
| १४ | नयरहस्य C | ५११ | यशोविजय | | पा. ५ |
| १५ | नयोपदेश | | यशोविजय | | पा. ३, अ. १ |
| | टीका D | पत्र९१ | स्वोपज्ञ | | अ. १ |
| १६ | न्यायालोक | १२०० | यशोविजय | | पा. ३, Gov |

A एमां बत्रीस अष्टको छे.

B एने "जैनतर्कभाषा" पण कहे छे.

C आ ग्रंथ फक्त पाटणनी टीपमां नोंधायो छे. माटे आ दुर्लभ्य ग्रंथनो उतारो करावी लेवानी खास जरूर छे.

D आ टीकानुं नाम नयामृततरंगिणी छे अने ते पं. आणंदसागरजी महाराज पासे पण छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ | न्यायखंडखाद्य A | ५५०० | यशोविजय | | अ २ S K. मुद्रित |
| १८ | प्रतिमाशतक | का. १०४ | यशोविजय | | मुद्रित. |
| | टीका B | ६००० | स्वोपज्ञ | | पा. ३ |
| १९ | प्रतिमास्थापनन्याय | पत्र ४ | यशोविजय | | कोडाय. |
| २० | भाषारहस्य C (प्रा.) | गा. १०१ | यशोविजय | | खंबात. |
| | टीका D | पत्र ३२ | स्वोपज्ञ | | अ. १ |
| २१ | मार्गपरिशुद्धि | पत्र १० | यशोविजय | | कोडाय. |
| २२ | मुक्ताशुक्ति E | | यशोविजय | | |
| २३ | यतिलक्षण समुच्चय | २६३ | यशोविजय | | पा. ३-५ |
| २४ | वैराग्यकल्पलता | ६७५० | यशोविजय | | पा. ५, खंबात. |
| २५ | षोडशक वृत्ति | १२०० | यशोविजय | | भावनगर. |
| २६ | सामाचारी प्रकरण F | | यशोविजय | | भावनगर, |
| | वृत्ति | पत्र ३२ | स्वोपज्ञ | | भावनगर. |

A एनुं बीजुं नाम महावीर स्तव पण छे. पीटर्सने खंबातना शान्तिनाथना भंडारनी नोंध लेतां पोताना त्रीजा रिपोर्टमां पेज १९४ मां सदरहू प्रत लख्यानो सं. १७३६ जणावेल छे.

B पंन्यास आणंदसागरजी जणावे छे के आ टीका उपरांत बीजी एक लघुटीका आसरे श्लोक १२०० नी पूनमिया गच्छना आचार्ये रचेली छे एम तेमना स्मरणमां छे.

C आ प्रकरण प्राकृत भाषामां रचायेलुं छे. अने ते खंबातना भंडारमां छे.

D अमदावादना डेलाना भंडारमां आ टीका पत्र ३२ नी नोंधाइ छे.

E आ ग्रंथ ते वैराग्यकल्पलताना प्रथमना बे स्तबक छे एम पं. आणंदसागरजी जणावे छे.

F आ प्रकरण फक्त भावनगरनी टीपमां तेनी वृत्ति साथे नोंधायुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रचया-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २७ | स्याद्वादकल्पलता A | १३००० | यशोविजय | | पा. ५. |
| २८ | स्तोत्रत्रय B | | | | |
| | संखेश्वर स्तोत्र | का. ११२ | यशोविजय | | खंबात. |
| | गोडीपार्श्वस्तोत्र | का. १०८ | यशोविजय | | खंबात. |
| | समीकापार्श्वस्तोत्र | का. ९ | यशोविजय | | खंबात. |
| २९ | स्तोत्रावलि | पत्र ७ | यशोविजय | | अ. १ |

A हरिभद्रसूरिकृत शास्त्रवार्ता समुच्चयना उपर आ टीका रचेली छे.

B आमां त्रण स्तोत्रो छे तेमना नीचे क्रमवार नाम नोंध्या छे. आ त्रणे स्तोत्रना काव्य अपूर्व छे. माटे उतारवा लायक छे. आ स्तोत्रनी प्रत यशोविजयजीए स्वहस्तेज लखी होय एम लागे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | महो० श्रीयशोविजयजी कृत न मळता दशग्रंथ. A | | | | |
| १ | छंदश्चूडामणिटीका | | यशोविजय | | |
| २ | ज्ञानार्णव | | यशोविजय | | |
| ३ | त्रिसूत्र्यालोक | | यशोविजय | | |
| ४ | पातंजलकैवल्यपादवृत्ति | | यशोविजय | | |
| ५ | मंगलवाद | | यशोविजय | | |
| ६ | मार्गशुद्धि पूर्वार्ध | | यशोविजय | | |
| ७ | लताद्वय | | यशोविजय | | |
| ८ | विधिवाद | | यशोविजय | | |
| ९ | सिद्धांत तर्क परिष्कार | | यशोविजय | | |
| १० | स्याद्वादरहस्य | | यशोविजय | | |

A आ दश ग्रंथो कोन्फरन्स ऑफीस तरफथी प्रगट थता मासिक हॅरल्डना सन १९०६ ना एप्रिल मासना अंकमां टाइटल पेजपर नोंधाया छे, ते परथी तेमना नामो अमे इहां दर्शाव्या छे. परंतु अत्यंत दिलगिरीनी वात ए छे के, आ उपर जणावेला दश ग्रंथोना नाम जाणवामां आव्या छतां तेमांनो एक पण ग्रंथ अत्यार सुधीमां हाथ लाग्यो नथी. तो सुज्ञ मुनि महाराजाओने अमारी नम्र सूचना ए छे के, एमांनो जे जे ग्रंथ तेओश्री पासे होय तो ते अगर ते क्या जगोए मळी शकशे ते जाणवामां आव्युं होय तो ते संबंधी माहिती अमने लखी जणाववा कृपा करवी. उपरांत आवा अत्युपयोगी गुम थता ग्रंथोने प्रकाशमां लाववा तेओए बनतो प्रयास करवो जोइये.

आ रीते अत्यार सुधीमां अमोने उपर जणाव्या मुजब यशोविजयजी उपाध्याये रचेला ग्रंथो कुल ओगणचालीसज हाथ आव्या छे, ते प्रमाणे आ लिस्टमां दाखल कर्या छे. ते शिवाय तेमना रचला केटलांक प्रकरणो विद्यमान होवा छतां हाथ लाग्या नथी. अजायबी ए थाय छे के, ते प्रकरणो घणीज टुंक मुदतमां एटले सुमारे अढीसो वर्षना दरमियान गुम थइ गया लागे छे. छतां तेमांना केटलांक प्रकरणो अमदावादना पंन्यास दयाविमलजी महाराजना भंडारमां छे एम सांभळवामां आव्युं छे तो ते भंडारना रक्षको आ गुम थता ग्रंथोनी पडेली मोटी खूटने कोइपण रीते पूरी पाडी सकल संघना आभारने पात्र थशे एवी अमारी तेमने नम्र प्रार्थना छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्याना सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | कोडायमां अवशेष रहेला कटकाना नाम. | | | | |
| १ | तत्वविवेक A | | यशोविजय | | |
| २ | स्याद्वाद्मंजूषा B | | यशोविजय | | |
| ३ | ( कूपना दृष्टांत परग्रंथ )C | | यशोविजय | | |

A तत्वविवेकनुं फक्त प्रथम पत्र कोडायमां छे.

B मल्लिषेणसूरि रचित स्याद्वादमंजरी उपर यशोविजयजीए आ स्याद्वादमंजूषा रची छे. तेना ड्राफ्टना थोडाक पाना कोडायमां छे.

C आ ग्रंथनुं फक्त प्रथम पत्र कोडायमां छे.

# अध्यात्मना ग्रंथो.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो स | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अध्यात्मकल्पद्रुम | ४२२ | मुनिसुंदर | | पा. ३-४ कोडाय. |
| | वृत्ति | ३००० | धनविजय A | | पा. ३. को. डेक्कन. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | २७८८ | रत्नचंद्रगणि | १६७४ | पा. ३-४-५ |
| २ | अध्यात्मबिंदु | का. ३२ | हर्षवर्द्धन B | | P. 4 अ. २ |
| | टीका | ७०० | हर्षवर्द्धन | | P. 4 अ. १-२, खं. |
| ३ | अध्यात्मकमलमार्तंड | २०५ | राजमल्ल (दिगं) | | A. S. |
| ४ | अध्यात्मसार | १३०० | यशोविजय | | पा. ४. को मुद्रित. |
| ५ | अध्यात्मदीपिका C | पत्र ९ | | | अ. १ |
| ६ | अध्यात्मगीता D | ६०० | जिनदत्त | | जेसलमेर. |
| ७ | आत्मज्ञान E | ता. ४९ | | | पा २. |
| ८ | आत्मावबोध F | ५५० | देवप्रभ (मलधारि) | | बृ. |

A धनविजय गणि सत्तरमी सदीमां होवा जोइए.

B आ हर्षवर्द्धन क्यारे थएला छे ते संबंधी ऐतिहासिक बीना मळी नथी.

C आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधेल छे. ते शिवाय बीजे स्थळे उपलब्ध थयो नथी.

D आ ग्रंथ शक पडतो लागे छे. कारण के ते संबंधी कोइ पुरावो जोवामां आवतो नथी, अने ते जेसलमेरनी हीरालालकृत टीपमां तेना कर्त्ताना नाम साथे नोंधेल छे. हवे देवचंदजीए अध्यात्म-गीता भाषामां रचेली छे अने ते फक्त श्लोक बावनथी त्रेपन जेटलीज छे. ते परथी वखते आ गीता पण भाषामां रचाई हशे एम अनुमान थाय छे. तो ते भाषामां रचाई छे के केम ? तथा ते कोणे रची छे ते बाबतनी चोकस खात्री जेसलमेरमांनी तेनी प्रत जोयाथीज थई शके.

E आ ग्रंथ पाटणना बीजा भंडारमां नोंधायो छे अने ते ताडपत्रपर लखेल छे माटे ते खास उतारवा लायक छे.

F आत्मावबोध बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधेल छे, पण हजुलगी ते कोई भंडारमां मळ्यो नथी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | आत्मानुशासन | ७० | पार्श्वनाग | १०४२ | पा. २-३. |
| | टीका | ताड१४७ | | | पा. २ |
| १० | आत्मानुशासन | | गुणभद्र A | | A. S. |
| ११ | आनंदसमुच्चय B | | | | वृ. |
| १२ | उपदेशरत्नमाला | ३१०० | सकलभूषण ( दिगं ) | १६२७ | A. S. |
| १३ | चारित्रसार | १७०० | चामुंडराज C ( दिगं ) | | A. S. |
| १४ | चित्तसमाधि प्रकरण D | ३०० | ( त्रुटक ) | | जेसलमेर |
| १५ | जिनप्रवचनरहस्यकोश | ३०२ | अमृतचंद्र | | पा. ३—५ |
| १६ | ज्ञानप्रकाश E | गा. ११३ | | | पा. २. |
| १७ | ज्ञानदीपिका F | | | | वृ. |
| १८ | ज्ञानतरंगिणी | पत्र ३६ | (ज्ञानभूषण दिगं) | १५६० | पा. ५ |

A गुणभद्रसूरि त्रण थया छे जेमां बे दिगंबर थया अने एक श्वेतांबर छे. हवे आ ग्रंथकार कया गुणभद्र छे ते ग्रंथ तपास्याथी मालम पडे छतां अमारा धारवा मुजब ते दिगंबर होवा संभव छे.

B एना माटे फक्त बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" आनंदसमुच्चयोऽध्यात्मशास्त्रं बहुप्रकरणमयं " ते उपरांत कंई माहिती मळी नथी.

C चामुंडराज सं. १०३५ मां हता एम श्रवण बेल्गोलाना लेखमां छे एम पीटर्सनना चोथा रिपोर्टमां नोंध्युं छे.

D आ प्रकरण फक्त जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंध्युं छे अने ते त्रुटक छे एम जणावेल छे. पण ते संबंधी तपास करतां कंई पण पुरावो मळतो नथी, ते कोणे रच्युं छे अने तेनुं खरुं नाम शुं छे ते बाबत नक्की करवा जेसलमेरना भंडारमांनी तेनी प्रत नजरे जोया वगर खात्री थवी मुश्केल छे.

E आ ग्रंथ फक्त पाटणना वीजा भंडारनी टीपमां नोंधायो छे, अने ते प्राकृतमां रचायेलो छे माटे उतारवा योग्य छे.

F ज्ञानदीपिकाने माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " ज्ञानदीपिका पिंडस्थादिध्यानवाच्या " आ रीते उल्लेख छे, पण ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी. माटे शोधकजनोए ते कोणे रची छे अने क्यां छे ते बाबत शोधखोळ करी तेनी प्रत मेळवी उतारो करावी लेवो जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्या छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १९ | ज्ञानार्णव A | ४००० | शुभचंद्र ( दिगं) | | पा. ३-५ वृ. |
| २० | ज्ञानांकुश | का. २८ | | | वृ. |
| २१ | तत्वबिंदु प्रकरण | पत्र ३ | | | अ. १ |
| २२ | तत्वामृत | पत्र ५५ | | | अ. १ |
| २३ | दर्शनरत्नाकर | १९८६४ | सिद्धांतसार B | १५७० | पा. ३-४-५, खं. |
| २४ | धर्मलक्षण C | १५ | | | A.S. S. K. पा. २ |
| २५ | धर्मोपदेशामृत | १९९ | (दिगं)पद्मनंदि | | लींबडी. |
| २६ | ध्यानसार D | पत्र ६ | ( जैन ) | | अ. १ |
| २७ | ध्यानदीपिका E | पत्र १६ | ( जैन ) | | अ. १ |
| २८ | ध्यानविचार | १९ | | | लींबडी. |
| २९ | निर्वाणकांड | पत्र २ | | | पा. ३ |
| ३० | निःश्रेयसाधिगम प्रकरण F | पत्र ३४ | चंद्रानंद | | जेसलमेर. |

A. पाटणनी बन्ने टीपोमां एनी श्लोकसंख्या २४९९ आपी छे.

B. सिद्धांतसारसूरि तपागच्छना सोमजयसूरिना शिष्य इंद्रनंदिसूरिना शिष्य हता.

C धर्मलक्षणमाटे पीटर्सन रिपोर्ट चोथामां तेना आद्यमां "धर्मार्थं क्लिश्यते लोको नच धर्मं परीक्षते । कृष्णं नीलं सितं रक्तं कीदृशं धर्मलक्षणम्" आ रीते नोंध करी छे.

D. E. आ बन्ने ग्रंथो अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधाया छे. पण ते संबंधी कंई पण ऐतिहासिक बीना जाणवामां आवी नथी. अमारा धारवा प्रमाणे ते जैनाचार्योएज रच्या होवा जोइये. छतां ते संबंधी चोकस निर्णय डेलाना भंडारमांनी प्रतो जोयाथीज थई शके.

F आ ग्रंथ तेना कर्त्ताना नाम साथे जेसलमेरनी बन्ने टीपमां नोंधायल छे. माटे ते ऊतारवा योग्य छे. परंतु तेना कर्त्ता चंद्रानंद ते कोण हता ते संबंधी कांइ खुलासो जाणवामां आव्यो नथी. पण तेमना नाम उपरथी ते दिगंबर हशे एम लागे छे, छतां ते संबंधी तेवो कोई विशेष पुरावो मळ्या वगर निर्णय थवो मुश्केल छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्या छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | परमात्मप्रकाश ( दूहा ) | ३४५ | योगींद्रदेव | | डेक्कन. P. 5. |
| ३२ | परमसुखद्वात्रिंशिका | ४० | जिनप्रभ | | जेसलमेर. |
| | टीकाA | ताड ६५ | | | पा २ |
| ३३ | पद्मनंदिपंचविंशतिका | | (दिगं.) पद्मनंदि | | पा. १ लींबडी. |
| ३४ | परमानंदपंचविंशतिका | पत्र १ | | | अ. १ |
| ३५ | प्रबोधसार | ५०० | (दिगं) यशःकीर्ति | | A. S. |
| ३६ | पुरुषार्थसिध्युपाय | २२७ | (दिगं) अमृतचंद्र | | पा. ३-५. A. S. |
| | टीका B | | | | A. S P. 4 |
| ३७ | बुद्धिसागर | ४०२ | संग्रामसिंह | | पा. ५ डेक्कन. |
| ३८ | मनःस्थिरीकरण विवरण | २३०० | महेंद्रसिंह C | | पा. २ |
| ३९ | योगप्रदीप | १२७० | शुभचंद्र | | पा. १-३-५. |
| ४० | योगकल्पद्रुम | ४१५ | विरूपाक्ष | | वृ. पा. १-४ |
| ४१ | योगसार | २०६ | योगचंद्र D | | वृ. ३-४ लींबडी. |

A आ टीका फक्त पाटणना बीजा भंडारनी टीपमां नोंधी छे पण ते कोणे रची छे ते संबंधी हकीकत जाणवामां आवी नथी. छतां ते ताडपत्र पर लखेली होवाथी तेनी नकल करावी लेवानी जरूर छे.

B टीका तेना मूळ साथे पिटर्सनना रिपोर्ट चोथामां नोंधी छे. पण ते केटला श्लोकनी छे, ते संबंधी कंई हकीकत आपी नथी. तो ते कोणे रची हशे अने केटला श्लोक प्रमाणनी छे ते बाबत तपास करी नक्की करवी जोइये.

C आ महेंद्रसिंहसूरि ते आंचलिक धर्मघोष सूरिना शिष्य के जेमणे शतपदिका नामनो ग्रंथ विक्रम सं. १२९४ मां रचेल छे, ते छे के बीजा छे ते प्रशस्ति जोये मालम पडे तेम छे.

D आ योगचंद्र क्यारे थया छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४२ | योगरत्नसमुच्चय A | पत्र १२ | | | अ. १ |
| ४३ | योगानुशासन B | १५०० | | | जेसलमेर |
| ४४ | योगशतक C | गा. १०१ | हरिभद्र | | S. K. |
| ४५ | योगसंग्रहसार D | | | | बृ. |
| ४६ | लघुरत्नत्रय | गा. ४० | | | पा. २ |
| | टीकाE | ताड६३ | | | पा २ |
| ४७ | समाधि तंत्र | | दिगं. कुंदकुंद | | A. S. |
| | टीका | पत्र १५४ | पर्वत धर्मार्थी | | जेसलमेर. |
| ४८ | समाधिशतक | | (दिगं) पूज्यपाद | | A. S. |
| ४९ | समभावशतक F | १०२ | धर्मघोष | | बृ. |
| ५० | साम्यशतक | १०४ | विजयसिंह | | बृ. पा. ३ |

A आ ग्रंथ अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंधायो छे. ते परथी तेने टांक्यो छे. ते तेना नामपरथी योगनो हशे एम लागे छे, छतां वखते वैदकनो पण होइ शके. तो ते योगनो छे के वैदकनो छे ते बाबत तपास करी नक्की करवुं जोइये.

B आ ग्रंथ शक पडतो लागे छे कारण के ते फक्त जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यो छे. अने ते त्रुटक छे एम जणावेल छे, तो ते कोणे रच्यो छे तथा तेनो केटलो भाग तुटक छे ते तपासी नक्की करवानी जरूर छे.

C आ ग्रंथ हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोमां नोंधायो छे तेज छे.

D एना माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" योगसंग्रहसाराध्यात्मशास्त्रं "

E आ टीका फक्त पाटणना बीजा भंडारमां ताडपत्रपर लखायेली छे ते अमारा धारवा मुजब दिगंबरकृत छे.

F एना माटे बृहत् टिप्पनिकामां "समभावशतं अंतरंगकथावाच्यं श्रीधर्मघोषसूरिकृतं १०२" आ रीते उल्लेख छे. पण अत्यारसुधी ते कोइपण भंडारमां ऊपलब्ध थयुं नथी.

## लीस्ट नंबर ४.

# जैन फिलॉसोफि.
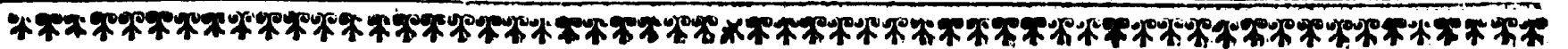
# प्राक्रियाग्रंथो.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग १ लो.** | | | | |
| १ | कर्मग्रंथो. A | | | | |
| | (१) कर्मप्रकृति B गा.४१५ | ६०० | शिवशर्म C | | वृ, पा. ३ सुलभ्य |
| | चूर्णि D | ७००० | | | वृ. पा. २ जे. खं. |
| | टिप्पनक | १९२० | मुनिचंद्र | | वृ. जेसल E |
| | वृत्ति (ससूत्र) | ८००० | मलयगिरि | | वृ. पा. ३-४ सुलभ्य |
| | वृत्ति | १३००० | यशोविजय | | पा. ३ मु. को. |
| | (२) पंचसग्रह F | | चंद्रर्षिमहत्तर | | वृ. |
| | वृत्ति G | | स्वोपज्ञ | | वृ. |
| | वृत्ति | १८८५० | मलयगिरि | | पा. १-२-३ ली. |

A आ मथाळा नीचे कर्मसंबंधी वर्णनना पांच ग्रंथ नोंध्या छे.

B एने प्राकृतमां "कम्मपयडि" कहे छे. ए ग्रंथ कर्मप्रवाद नामना पूर्वमांथी उद्धृत करेल छे एम तेमां जणाव्युं छे. दिगंबराम्नायमां नेमिचंद्रसैद्धांतिके रचेली बीजी कर्मप्रकृति आशरे श्लोक अढीसेनी छे अने ते पाटणना नं. ४ तथा ६ वाळा भंडारमां छे.

C शिवशर्मसूरि देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणथी पूर्वे थइ गया छे. केमके नंदिसूत्रनी स्थविरावळीमां कम्मपयडिनुं नाम आपेल छे. तेथी ए ग्रंथ अत्यंत प्राचीन छे.

D एमां वेदनादि आठ करण दर्शावेलां छे.

E जेसलमेरनी बे टीपमां एने विशेषवृत्ति तरीके नोंध्युं छे.

F पंचसंग्रहमां शतक–सप्ततिका–कषायप्राभृत–सत्कर्म अने कर्मप्रकृति ए नामना पांच विभागो छे.

G आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण ते कोई भंडारमां उपलब्ध थइ नथी. एना माटे ते टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

"पंचसंग्रहस्य शतक १ सप्ततिका, २ कषायप्राभृत, ३ सत्कर्म, ४ कर्मप्रकृति, ५ संग्रहात्मकस्य वृत्तिः सूत्रकारचंद्रर्षिकृता पत्तनंविना न."

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | दीपक A | २५०० | जिनेश्वर शिष्य वामदेव B | | नगीनदास |
| | ( ३ ) पांच प्राचीनकर्मग्रंथ | | | | |
| | (१)कर्मविपाक | गा. १६८ | गर्गर्षि C | | नगीनदास |
| | वृत्ति | ९२२ | परमानंद D | | वृ नगीन. डेक्कन पा ६ |
| | टिप्पन | ४२० | उदयप्रभ E | | वृ. अ. २ |
| | ( २ ) कर्मस्तव | गा. ५७ | | | वृ. नगीनदास |
| | भाष्य F | पत्र १० | | | पा. २—५ |
| | वृत्ति | १०९० | गोविंदाचार्य G | | वृ. पा.५ डे. लीं. को. |
| | वृत्ति | | हरिभद्र H | | पा. २ |
| | टिप्पन | २९२ | उदयप्रभ | | वृ. |

A आ दीपक ते कोइ दीपकनामनी वृत्ति होवी जोईए.

B आ वामदेवसूरिनो वधु इतिहास जाणवा माटे प्रशस्ति जोवानी जरूर छे.

C गर्गर्षिने उपमितिभवप्रपंचानी प्रशस्तिमां सिद्धर्षिए पोताना दीक्षादायक गुरु तरीके जणाव्या छे. हवे सिद्धर्षिए ते कथा सं. ९६२ मां रची छे, माटे गर्गर्षि ते समयना पूर्वे थया छे.

D परमानंदसूरिनी वंशावली आप्रमाणे छे:—

" भद्रेश्वरसूरि–शांतिसूरि–अभयदेवसूरि अने परमानंद तेओ कुमारपाळना राज्यमां सं. १२२१ मां हता. एम खंबातना नगीनदासना भंडारमां रहेली तिलकसुंदरी अने रत्नचूडनी कथाना पुस्तकमां नोंध छे. जुवो रिपोर्ट ३ पेज ६९.

E उदयप्रभसूरिए सं. १२९९ मां उपदेशमाळानी कर्णिकावृत्ति रचेली छे.

F आ भाष्य पाटणना भंडारमां ताडपत्र उपर लखेल छे.

G गोविंदाचार्यना गुरुनुं नाम देवनाग छे.

H पाटणनी टीपमां आ हरिभद्रने जिनदेवना शिष्य लख्या छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (३) बंधस्वामित्व | | | | |
| | वृत्ति | ५६० | हरिभद्र | ११७२ | वृ. जेसल. |
| | (४) षडशीति A | | जिनवल्लभ | | वृ. सुलभ्य |
| | भाष्य | | | | पा. ३—५ |
| | वृत्ति | ८५० | हरिभद्र | ११७२ | वृ. पा. १ |
| | वृत्ति (प्रा.) | ८०५ | रामदेव B | | वृ. जेसल. |
| | वृत्ति | २००० | मलयगिरि | | वृ. पा. २-४-५ |
| | वृत्ति | १६३० | यशोदेव | | वृ. |
| | विवरण | पत्र ३२ | मेरुवाचक | | अ. २ |
| | अवचूरि | ७०० | | | खं. |
| | उद्धार | १६०० | | | खं. |
| | (५) शतक | गा. १११ | शिवशर्म | | डेक्कन. |
| | भाष्य | गा. ३५ | | | डे. पा. ३ |
| | चूर्णि | २३८० | | | वृ. पा. २-३ जे.अ.२ |
| | वृत्ति | ३७४० | मलधारि हेमचंद्र | | वृ. पा. ४-५. डे. |
| | टिप्पन | ९७४ | उदयप्रभ | | वृ. |
| | अवचूरि | पत्र २५ | गुणरत्न | | पा. ४ |

A षडशीतिनुं बीजुं नाम आगमिकवस्तुविचारसार छे.

B रामदेवगणि जिनवल्लभसूरिना शिष्य हता.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | सार्द्धशतक A | | जिनवल्लभ | | वृ. सुलभ्य. |
| | भाष्य | | | | पा. ३—५ |
| | चूर्णि | पत्र ६९ | मुनिचंद्र | | अ. २ |
| | वृत्ति | ८५० | हरिभद्र | ११७२ | वृ. |
| | वृत्ति | ३७०० | धनेश्वर | ११७१ | वृ. पा. १-३-६ खं. |
| | वृत्ति B | ताड१५१ | चक्रेश्वर C | | वृ. पा ३ अ, २ |
| | टिप्पनक | १४०० | | | वृ. जेसल. |
| | (४) पांच नव्यकर्मग्रंथ D | ५२२ | देवेंद्रसूरि E | | मुद्रित. सुलभ्य. |
| | वृत्ति F | १०१३७ | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. १-३-४ को. सुलभ्य. |

A आ सार्द्धशतकनुं अपरनाम "सूक्ष्मार्थविचारसार" छे. आ ग्रंथ अमे शतकना पेटामांज नोंध्यो छे. तेनुं कारण ए के तेना प्रांतमां शतक शब्द जोडायलोज छे एटले तेनो आ पेटा ग्रंथज छे.

B बृहत्‌टिप्पनिकामां सार्द्धशतकनी प्राकृतवृत्ति नोंधी छे. ते आ वृत्ति कदाच होय तो होय पण चोकस निर्णय प्रत जोवाथी थइ शके.

C चक्रेश्वरसूरि बे थया छे. एक सं. ११८७ मां हता. ते वर्द्धमानसूरिना शिष्य हता. अने बीजा चक्रेश्वरसूरि ते तिलकाचार्यना गुरु शिवप्रभसूरिना गुरु हता. तेमना गुरुनुं नाम धर्मघोषसूरि हतुं. माटे आ वृत्तिना करनार चक्रेश्वरसूरि ए बेमांथी कया छे ते प्रतनी प्रशस्ति जोयाथी मालम पडे तेम छे.

D आ पांच नवा कर्मग्रंथना नाम कर्मविपाक–कर्मस्तव–बंधस्वामित्व–षडशीति अने शतक छे. आजकाल आ नवा कर्मग्रंथनो प्रचार चालु छे.

E देवेंद्रसूरि सं. १३२६ मां स्वर्गवासी थया छे.

F वृत्तिना पांच विभागनी श्लोक संख्या नीचे मुजब छे:—

| | | |
|---|---|---|
| १ कर्मविपाकवृत्ति १८८२ | २ कर्मस्तववृत्ति ८३० | ३ बंध स्वा. अवचूरि ३८५ |
| ४ षडशीतिवृत्ति २८०० | ५ शतकवृत्ति ४२४० | |

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | अवचूरि | २९५८ | मुनिशेखर A | | पा. १ |
| | अवचूरि B | ५४०७ | गुणरत्न | | पा. ५—६ |
| | कर्मस्तवविवरण | १५० | कमलसंयम | १४५९ | जेसलमेर. |
| | (५) सत्तरि C | गा. ९१ | चंद्रर्षिमहत्तर | | वृ. |
| | भाष्य D | | अभयदेव | | वृ. पा. ४ |
| | चूर्णि | पत्र१३२ | | | वृ. अ. २ जेसल. बे. |
| | वृत्ति (प्रा.) E | २३०० | चंद्रर्षिमहत्तर | | वृ. |
| | वृत्ति | ३७८० | मलयगिरि | | वृ. पा. २-३-४-५. |
| | वृत्ति | ४१५० | मुनिशेखर | | भावनगर. |
| | टिप्पनक | गा. ५४७ | खरतर रामदेव | | वृ. जेसलमेर. |
| | अवचूरि F | | गुणरत्न | | पा. ५-६ |

A मुनिशेखरसूरिए पद्मप्रभसूरिकृत पार्श्वस्तव उपर अवचूरि रचेल छे. एटली हकीकत जाणवामां आवी छे. माटे तेमना संबंधे वधु इतिहास जाणवा माटे आ ग्रंथनो प्रशस्ति लेख जोवानी जरूर छे.

B आ अवचूरिनी श्लोकसंख्या पांच कर्मग्रंथ तथा छठ्ठी सत्तरिनी अवचूरि मेळवीने नोंधी छे.

C सतरि ए प्राकृत नाम छे. संस्कृतमां सप्ततिका नाम छे. एने साथे गणतीमां लईए तो छ जूना कर्मग्रंथ थाय छे, अने नवा साथे पण तेज चालु रहेल होवाथी नवा कर्मग्रंथ पण छ गणाई शके. तेथी सत्तरिने छठ्ठो कर्मग्रंथ गणे छे.

D पाटणनी टीपमां आ भाष्यना कर्त्ता अभयदेव नोंध्या छे तो ते कया अभयदेव छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत जोवी जोईये.

E आ वृत्ति वृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधी छे पण ते क्यां पण उपलब्ध थती नथी, माटे आवा प्राचीन ग्रंथनो शोध करवा माटे दरेक जैने ध्यान आपवुं घटे छे.

F अवचूरिनी श्लोकसंख्या नवा कर्मग्रंथनी अवचूरिना साथे गणाई छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २ | क्षेत्रसमास. | | | | |
| | (१)'नमिऊण' क्षेत्रसमास A | गा. ३७ | जिनभद्रगणि | | पा. २-४ लीं. डेक्कन. |
| | वृत्ति | ३००० | सिद्धसूरि ( देवगुप्तशिष्य ) | ११९२ | वृ. पा. १-२-५ |
| | वृत्ति | ७८८७ | मलयगिरि | | वृ. पा. ३. डे. को. |
| | (२)'नमिऊणसजल' क्षेत्र. B | गा. १२७ | जिनभद्रगणि | | पा. ३. भा.अ.२लीं.खं. |
| | वृत्ति | ३२५६ | विजयसिंह | १२१५ | पा. ४-५भाव. |
| | वृत्ति | २००० | आनंदसूरि (जिनेश्वर शिष्य) | | पा. ५ लीं. |
| | वृत्ति | ३३३२ | देवानंद ( पद्मप्रभशिष्य ) | १४५५ | पा. ५ अ. २ |
| | वृत्ति | ५११ | हरिभद्रसूरि C | | वृ.पा.१-३अ.२. जे.डे. |
| | (३)'नमित्तुवीरं'क्षेत्रस. D | गा. ३४१ | श्रीचंद्र | | मगीनदास. |
| | वृत्ति E | १००० | देवभद्र | १२३३ | वृ. |

A आ क्षेत्रसमासने साधारण रीते वृहत् क्षेत्रसमासना नामथी ओळखवामां आवे छे. तेनी आदिमां " नमिऊण सजल जलहर " ए प्रथमपद होवाथी अमे तेनी विशेष ओळख करावया माटे ते नामे इहां नोंध्यो छे.

B आ क्षेत्रसमासने लघु क्षेत्रसमासना नामे ओलखवामां आवे छे. तेना कर्त्ता जिनभद्रगणि छे एम पीटर्सनना पेला रिपोर्टमां पाने २६ मे नोंध्युं छे. छतां ते संबंधे तेनी टीकापरथी चोकस निर्णय थई शकसे. आ क्षेत्रसमासनी गाथाओ कोई प्रतमां थोडी वधु तो कोईमां थोडी कमी मळे छे माटे टीकापरथी ते नक्की करवी जोईये. एनुं आदिपद पण " नमिऊण सजलजलहर " छे. वळी आ ग्रंथने जंबूद्वीपप्रकरण तरीके पण ओलखवामां आवे छे.

C आ हरिभद्रसूरि याकिनीसूनु छे के बीजा छे ते प्रत जोयाथी जाणीशकाय तेम छे.

D एनुं आदिपद " नमित्तु वीरं सयलत्थसाहगं " छे.

E आ वृत्ति वृहत्‌टिप्पनिकाकारे वृहत्‌क्षेत्रसमासनी वृत्ति तरीके नोंधी छे, पण अमारा अनुमाने ते आ क्षेत्रसमासनी होवी जोईये. कारणके मूळकार श्रीचंद्रसूरि आ वृत्तिकारना गुरु थाय छे माटे गुरुना ग्रंथपर शिष्ये टीका करी होवी जोईये. छतां चोकस निर्णय ग्रंथ जोये थई शके पण ते ग्रंथ हजु लगण अमने कोई भंडारमां हाथ लाग्यो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (४)पद्मदेवीय क्षेत्रस० A | गा. ६५६ | पद्मदेव B | | पा. २ |
| | (५)'वीरंजय' क्षेत्रस० C | २६२ | रत्नशेखर D | | पा. १-३ मुद्रित. |
| | वृत्ति | १६०० | स्वोपज्ञ | | पा.१-३-४ सुलभ्य. |
| | (६) संस्कृत क्षेत्रस. E | ५०७ | उमास्वातिवाचक | | वृ. पा. ४ अ.१-२ |
| | वृत्ति | २८०० | | | अ. १ |

A आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद जणायुं नथी एटले तेने कर्त्ताना नामे ओळखाववो पड्यो छे. एनी गा. ६५६ छे के श्लोक ६५६ छे ते माटे ग्रंथ तपासवानी जरूर छे.

B पद्मदेवसूरि बे थया छे त्यां एक पद्मदेव मानतुंगसूरिना पाटे विराजनार हता अने बीजा मलधारि नरचंद्रसूरिना वंशमां थया जे श्रीतिलक उपाध्यायना गुरु हता. आ बीजा पद्मदेवसूरि सं. १२६१ थी १२९६ ना समयमां हता अने पेला पद्मदेव सं. १२९२ मां हयात हता माटे समकालीन गणी शकाय. ते शिवाय पीटर्सने पांचमा रिपोर्टमां बीजा पद्मदेवसूरि लक्ष्मचंद्रगणिना गुरु तरीके जुदा जणाव्या छे, पण अमारा धारवा मुजब तेओ ऊपरना बे पद्मसूरिमांना एक होवा जोईये. कारणके फक्त शिष्यना नामपरथी बीजा पद्मदेवसूरि थया होय एम मानी शकवुं मुश्केल छे.

हवे आ बे पद्मदेवमांथी कया पद्मदेवसूरिए आ ग्रंथ रच्यो छे ते ते ग्रंथनी प्रशस्ति जोयाथी जणाय तेम छे, माटे ए ग्रंथनो आद्यंत तपासवानी जरूर छे.

C आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद " वीरंजयसेहरपय " एवुं छे. आ क्षेत्रसमास आजकाल लोकोमां विशेष प्रचलित छे.

D रत्नशेखरसूरिए सं. १४९६ मां अर्थदीपिका नामे षडावश्यकनी वृत्ति रची छे.

E आ संस्कृत क्षेत्रसमास चार आन्हिकनो छे. पाटणनी टीपमां तेना श्लोक ५०७ लखेला छे, अमदावादनी चंचलबाना भंडारनी टीपमां श्लोक १३२१ आपेला छे अने डेलानी टीपमां ते सटीक जणावीने तेना पत्र ४४ नोंध्यां छे, ते माटे डेलानी प्रत तपाशी चोकशी करवी जोईये छीये. आ क्षेत्रसमासने जंबूद्वीपसमास पण कहे छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (७) "सिरिनिलयं" क्षेत्रस॰ A | गा.४८९ | सोमतिलकB | | बृ. खं. |
| | वृत्ति C | २३४५ | | | |
| | लघुवृत्ति D | १०३६ | गुणरत्न | | पा. ४ |
| | अवचूरि | ३८८ | " | | पा. ३ |
| | अवचूरि | ५०० | ज्ञानसागर | १४६५ | खं. |
| | (८) " सिरिवीरजिणं " क्षेत्रस॰ E | गा. ७७ | | | पा. ४ खं. |
| ३ | जीवविचारना ग्रंथो. | | | | |
| | (१)जीवविचार | गा. ५१ | शांतिसूरि F | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | १००० | रत्नाकरसूरिG | | डेक्कन. |

A आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद " सिरिनिलयं वीरजीणं " एवुं छे. आने खंबातनी टीपमां नवो बृहत्क्षेत्रसमास तरीके ओळखवामां आव्युं छे. बृहट्टिप्पनिकामां एनी गा. ३८९ लखी छे, पण खंबातनी टीपमां ४८९ छे.

B सोमतिलकसूरिए सं. १३९४ मां शीलतरंगिणी रची छे. (जैनागम लिस्ट पेज ५६ मांनी नोट जुओ.)

C आ वृत्ति कोणे रचेल छे ते माटे तेनी प्रत जोवी जोईये ते प्रत कया भंडारमां छे ते तारवणी करतां नोंधतां रही गई छे.

D आ लघुवृत्ति अने अवचूरि एकज छे के जूदी छे ते तपाशी नक्की करवानुं छे. श्लोक-संख्या जोतां जूदी जणायाथी अमे तेने जूदी नोंधी छे.

E आ क्षेत्रसमासनुं आदिपद " सिरिवीरजीणं वंदिय " एवुं छे. तेनी टीका मळी नथी, पण ते क्यां पण होवी जोईये. माटे तेनी शोध करवी जोईये.

F शांतिसूरि माटे जैनागम लिस्ट पेज २४ मां आपेली तेमना नाम नीचेनी नोट जुवो.

G रत्नाकरसूरि सं. १३७० मां हता एम आपणे जाणिये छीये पण डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां तेमना नाम साथे वाचक पद जोडयुं छे, ते भूलथी जोडायुं लागे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | | ईश्वराचार्य A | | पा. ४ अ. १ |
| | वृत्ति | | मेघनंद B | | अ. १ |
| | वृत्ति | | क्षमाकल्याण | १८५० | अ. १ |
| | (२)जीवविचार(बीजो)C | गा. २८ | | | डेक्कन. |
| | (३)जीवसमास D | गा. २६७ | | | पा. ३ सं. लीं. |
| | वृत्ति E | ६६२७ | ारि हेमचंद्र | ११६४ | बृ.पा.१-४नगीनदास. |
| | वृत्ति | पत्र २२ | शैलाचार्य F | | अ. २ |
| ४ | दंडकना ग्रंथो. | | | | |
| | दंडक G | गा. ३६ | गजसार}H | | मुद्रित. |

A ईश्वराचार्य क्यारे थया छे ते जाणवा माटे आ वृत्तिनी प्रशस्ति जोवी जोईये. कारण के तेमनासंबंधी बीजो कंई इतिहास अमने मळी शक्यो नथी. वृत्तिनी श्लोकसंख्या पाटणनी टीपमां ३३५ आपेली छे.

B मेघनंद ए नाम शक पडतुं लागे छे, माटे प्रत तपासवानी जरूर रहे छे.

C आ जीवविचार डेक्कनकॉलेजमां ताडपत्रपर लखेलो छे एम पीटर्सनना पांचमा रिपोर्टपरथी जणायुं छे.

D जीवसमास प्राचीन ग्रंथ छे तेना कर्त्ता कोण छे ते जणायुं नथी.

E आ वृत्ति खंभातना नगीनदासशेठना भंडारमां ताडपत्र ऊपर खुद मलधारि हेमचंद्रसूरिना हाथनी लखेली मोजूद छे.

F डेलानी टीपमां शैलाचार्य एवुं नाम लखेल छे पण अमारा धारवा मुजब ते शीलाचार्य होवा जोईये. अने जो तेम होय तो ए टीका खास उतारवा योग्य छे.

G आ ग्रंथने आजकाल दंडक तरीके ओळखवामां आवे छे पण असलमां ए नाम चालु होय एम लागतुं नथी. असलमां एनुं नाम विचारषट्त्रिंशिका छे. ते उपरांत एने दंडकगर्भित जिनस्तव तरीके पण ओळखवामां आवे छे, परंतु हालमां तेने दंडक तरीकेज ओळखाय छे तेथी अमे पण दंडक तरीके तेनी नोंध करी छे.

H गजसारमुनि क्यारे हता ते जणायुं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | पत्र १४ | रूपचंद्र A | | अ. १ |
| | अवचूरि | | | | पा.१ |
| | महादंडक (अवचूरि) | | | | पा. ३ |
| ५ | नवतत्वना ग्रंथो. | | | | |
| | (१)नवतत्व B | गा. ५३ | | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | ताड.५४ | अंबप्रसाद C | १२२० | पा. १-२. |
| | वृत्ति | | कुळमंडन | | अ. २ |
| | वृत्ति | | देवेंद्र | | अ. २ |
| | वृत्ति | | समयसुंदर | | अ. २ |
| | वृत्ति | ४०० | | | लींबडी |
| | विवरण | १३०० | | | डेक्कन. |
| | अवचूरि | | हर्षवर्ध्धन | | अ. २ |
| | अवचूरि | | साधुरत्नसूरिD | | पा. १-३-४ |
| | (२) नवतत्वविचार E | १२८ | | | पा. ४ अ. १ |

A रूपचंद्रमुनि गई सदीमां थया छे ते छे के बीजा कोई छे ते प्रत जोयाथी मालम पडे तेम छे.

B नवतत्व कोणे रच्युं छे ते जाणवामां आव्युं नथी केमके तेना प्रांते कर्त्तानुं नाम मळतुं नथी.

C अंबप्रसाद ए नामना माटे पाटणमां रहेली ताडपत्रनी प्रत फरी तपासवी घटे छे.

D साधुरत्नसूरिए सं. १४५६ मां यतिजीतकल्पनी टीका रची छे.

E आ ग्रंथ संस्कृतमां छे. अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां तेनुं नाम नवतत्वविचारसार आप्युं छे अने ते पत्र ८ नुं नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | सारोद्धार A | गा. ८ | | | डेक्कन. |
| | (३)नवतत्वगाथा B | | देवगुप्त C | | वृ. |
| | भाष्य | गा. १५३ | नवांगीकार अभयदेव | | वृ. डेक्कन. |
| | वृत्ति | २४०० | यशोदेव | ११७४ | वृ. डेक्कन. पा. ३-४ |
| | (४)वृहन्नवतत्व D | | | | डेक्कन. |
| ६ | संग्रहणीना ग्रंथो. | | | | |
| | (१)जिनभद्रीय वृहत् संग्रहणी E | गा. ५२० | जिनभद्रगणि | | पा. ४ खं. |
| | वृत्ति | २५०० | शालिभद्र F | ११३९ | वृ. पा. ३-४-५डेक्कन. |
| | वृत्ति | ५००० | मलयगिरि | | वृ. सुलभ्य. |
| | वृत्ति G | पत्र ४७ | जिनवल्लभ | | जेसलमेर बे. |

A आ नवतत्वविचारसारोद्धारनी आठ गाथा छे अने तेनुं आदिपद " अरहंता भगवंता " एवुं छे. ते डेक्कनकॉलेजमां ताडपत्र ऊपर छे.

B " एगविहं सम्मरुई " इत्यादि नवतत्वनी गाथाओ छे.

C देवगुप्तसूरिनुं अपरनाम जिनचंद्र छे तेओ उकेशगच्छना हता अने तेमणे सं १०७३ मां पोते रचेला नवपदप्रकरणऊपर " श्रावकानंदी " नामनी वृत्ति रची छे.

D वृहत्नवतत्व केटली गाथानुं छे तथा कोणे रचेलुं छे ते संबंधी कंई पण हकीकत मळती नथी. माटे ए संबंधी डेक्कनकॉलेजमांनी तेनी प्रत तपासवी जोइये छीये.

E आ संग्रहणीनुं आदिपद " निठविय अठकम्मं " एवुं छे.

F शालिभद्रना बदले पीटर्सनना रिपोर्टमां शीलभद्र नोंध्या छे, पण वृहत् टिप्पनिकामां तथा पाटणनी टीपोमां तथा डेलानी टीपमां शालिभद्र नाम मळे छे, माटे रिपोर्टमां नामफेर थयुं लागे छे अथवा कदाच तेमना बे नाम पण होय तो होय.

G जिनवल्लभसूरिए करेला स्वतंत्र ग्रंथ मळे छे, पण तेमणे करेली वृत्ति कोई पण जाणवामां आवी नथी, माटे आ वृत्ति तेमणेज करेली छे के केम ते माटे तेनी प्रत फरीने नजरे जोवानी जरूर रहे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या॰नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (२)प्रतिक्रमण संग्रहणी | गा॰ १६९ | | | खं. |
| | (३)श्रीचंद्रीय संग्रहणी A | गा. ३१३ | श्रीचंद्र | | सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ३५०० | मलधारि देवभद्र | | सुलभ्य. |
| | अवचूरि | १६०० | ” | | पा. १-३-४ |
| | (४)संस्कृत संग्रहणी B | पत्र१६ | | | अ. २ |
| | (५)हारिभद्री जंबूद्वीप संग्रहणी | गा॰ ११२ | हरिभद्रसूरि | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | ६६७ | प्रभानंद | १३९० | पा. २-४-५ |
| | (६)हारिभद्री लघुसंग्रहणी | गा.३३ | हरिभद्र | | मुद्रित. |

A आ संग्रहणीनुं आदिपद “ नमिउ अरिहंताई ” एवुं छे.

B आ संस्कृत संग्रहणी कोणे रचेली छे ते माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** | | | | |
| | **मोटा ग्रंथो.** | | | | |
| १ | धम्मसुयप्रकरण A | ३२७० | | | पा. २ |
| २ | प्रवचनसंदोह B | गा. २५० | | | वृ. पा. २—६ |
| | वृत्ति C | | | | वृ. |
| ३ | प्रवचनसारोद्धार गा. १६०६ | २००० | नेमिचंद्र D | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | १६५०० | सिद्धसेन | १२४२ | वृ. पा.१-२-४ को. सु. |
| | विषमपदपर्याय | ३२०२ | उदयप्रभ E | | वृ. पा. १-२ खं. |
| | लघुप्रवचनसारोद्धार F | पत्र. ४ | श्रीचंद्र | | भरूच. |

A आ नाम प्राकृत छे तेनुं संस्कृत रूप धर्मश्रुत थई शके—पण पाटणनी टीपमां "धमासुयप्रकरण" ना नामे नोंध्युं छे माटे तेनुं संस्कृतरूप केवुं थाय ते ग्रंथ तथा तेनी अंदर हकीकत जोई निर्णय थई शके तेम छे ते कारणे अमे इहां तेने प्राकृत नामथी नोंध्युं छे.

B वृहत्‌टिप्पनिकामां एने " पवयणसंदोह " एवा प्राकृतनामथीज नोंध्युं छे. परंतु तेने अमे इहां संस्कृत नामथी नोंध्युं छे.

C प्रवचनसंदोहनी वृत्ति फक्त वृहत्‌टिप्पनिकामां लखेली जणाय छे, पण ते अमारा जोवामां हजूलगण आवी नथी, माटे जे मुनिमहाराज पासे ते ग्रंथ होय तेमणे तेनी श्लोकसंख्या लखी जणाववी.

D नेमिचंद्रसूरि त्रण थया छे. एक सर्वदेवसूरिना शिष्य अने पृथ्वीचंद्र चरित्रना कर्त्ता शांतिसूरिना गुरु, बीजा खरतरगच्छनी पट्टावळीमां नोंधेला उद्योतनसूरिना गुरु, अने त्रीजा सं. ११२९ मां उत्तराध्ययननी लघुवृत्ति रचनार नेमिचंद्रसूरि के जेओ सैद्धांतिकशिरोमणि तरीके ओळखायला छे. आ त्रणेमांथी कया नेमिचंद्रसूरिए आ ग्रंथ रच्यो छे ते माटे एनी टीकामांथी खुलासो मेळववो जोइये.

E उदयप्रभसूरिए सं. १२९९ मां उपदेशमालानी कर्णिकावृत्ति रची छे.

F आ ग्रंथ पं. आनंदसागरजी महाराज पासे पण छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४ | लोकप्रकाश | १७६२१ | विनयविजय | १७०८ | सुलभ्य. |
| ५ | विचारसार A | गा. ८९७ | प्रद्युम्नसूरि B | | वृ. नगीनदास. |
| ६ | शास्त्रवार्त्तासंग्रह | पत्र ५४ | शांत्याचार्य | | भाव. |
| ७ | स्थानप्रतिद्वार C | ६५४० | | | पा. २ |

A विचारसार माटे वृहत्टिप्पनिकामां आवो उल्लेख छे:—" विचारसारप्रकरणं प्रद्युम्नसूरिकृतं सोपयोगिवहुसंग्रहं गा. ८९७." माटे बहु थोडे ठेकाणे हाल मळे छे.

B प्रद्युम्नसूरि आठ थया छे:—

१ प्रद्युम्नसूरि—ते यशोदेवसूरिना शिष्य अने मानदेवसूरिना गुरु हता, मानदेवसूरिना शिष्य विमलचंद्र थया अने तेमना शिष्य उद्योतनसूरि थया. एमणे सर्वदेवसूरिना मार्फत वडगच्छनी स्थापना सं. ९९४ मां करावी माटे उद्योतनसूरिथी पूर्वे चोथी पेढीए थएला तेमना दादागुरु प्रद्युम्नसूरि सं. ९०० ना लगभग थया होय एम मानीए तो मानी शकाय तेम छे.

२ प्रद्युम्नसूरि—सर्वदेवसूरिना शिष्य. सर्वदेवसूरिए सं. ९९४ मां वडगच्छनी स्थापना करी माटे तेमना शिष्य आ प्रद्युम्नसूरि सं. १००० ना अरसामां थया गणी शकाय.

३ प्रद्युम्नसूरि—एओ राजगच्छना हता अने तेओना शिष्य अभयदेवसूरि थया के जेमणे सम्मतितर्कनी टीका रची छे. ए अभयदेवसूरिना शिष्य शांतिसूरि थया अने ते संवत् १०९६ मां स्वर्गवासी थया तेपरथी एम अनुमान बांधी शकाय के तेमना दादागुरु सं. १०५० ना अरसामां होवा जोइये.

४ प्रद्युम्नसूरि—ते यशोभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमना शिष्य गुणसेन थया, तेमना शिष्य देवचंद्रसूरि थया अने तेमना शिष्य ते हेमसूरि थया. हेमसूरिना गुरु देवचंद्रसूरिए सं. ११६० मां प्राकृत शांतिचरित्र रचेल छे तो तेमनी चोथी पेढीए थएला प्रद्युम्नसूरि सं. ११०० ना लगभग थया मानी शकाय. आ प्रद्युम्नसूरिए मूळशुद्धिप्रकरण रचेलुं छे. के जेनुं बीजुं नाम स्थानकप्रकरण छे अने तेना ऊपर हेमसूरिना गुरु देवचंद्रसूरिए वृत्ति रचेली छे.

५ प्रद्युम्नसूरि—ते सं. ११५९ मां पूर्णिमापक्षना स्थापनार चंद्रप्रभसूरिना गुरु थया छे.

६ प्रद्युम्नसूरि—ते बुद्धिसागरसूरिना शिष्य अने देवचंद्रसूरिना गुरु सं. १२९२ मां थएला छे.

७ प्रद्युम्नसूरि ते सं. १२९४ मां थएला धर्मघोषसूरिना शिष्य देवप्रभसूरिना शिष्य हता. एटले तेओ सं. १३२५ ना अरसामां थया गणी शकाय.

८ प्रद्युम्नसूरि ते कनकप्रभसूरिना शिष्य हता तेओए सं. १३२२ मां विवेकमंजरीनी टीका शोधी छे तथा सं. १३३४ मां शालिभद्र चरित्र शोधेल छे.

आ रीते आ आठ प्रद्युम्नसूरिओमांना सातमा देवप्रभसूरिना शिष्य प्रद्युम्नसूरिए आ विचारसार प्रकरण रचेलुं छे. ( जुवो पीटर्सनना रिपोर्ट त्रीजानो पेज २७० )

C आ ग्रंथनुं नाम पण अपूर्व जेवुं लागे छे छतां तेमां शी बिना छे ते ग्रंथ जोयाथी जाणी शकाय माटे पाटणमां ताडपत्रपर रहेला आ ग्रंथनी नकल उतरावबी जोइये.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्या छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो.** | | | | |
| | संग्रह ग्रंथो. | | | | |
| १ | अनेकशास्त्रसारसमुच्चय A | ११०० | | १६८५ | डेक्कन. |
| २ | अनेकग्रंथविचारसंग्रह | पत्र ३९ | | | अ. १ |
| ३ | कर्मादिविचा सार | | | | डेक्कन. पेज १७२ |
| ४ | गाथाविचार | ७०७ | | | पा. ४ |
| ५ | गाथासहस्त्री B | | समयसुंदर | | पीटर्सनरिपोर्ट३मां अ. |
| ६ | ग्रंथसारसमुच्चय | ३४० | कुलभद्र | | डेक्कन. |
| ७ | जीवाजीवविचारविवरण C | ३००० | | | जेसलमेर. |
| ८ | द्रव्यपर्यायस्वरूप C | ६०० | | | जेसलमेर. |
| ९ | नानाविचारसंग्रह | पत्र २० | | | अ. १ |
| १० | निःशेषसिद्धांतविचार D | ३६७० | विमलसूरिशिष्य चंद्रकीर्ति | | नगीनदास. |

A डेक्कनकॉलेजमां ए ग्रंथनी प्रत सं. १४६१ मां लखायली मोजुद छे.

B आ ग्रंथ पीटर्सनना त्रीजा रिपोर्टमां अमदावादना पुस्तकोना आद्यंतना उतारा लेता त्यां नोंध्यो छे.

C.C आ बे ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्या छे अने ते तूटक छे एम जणाव्युं छे. अमारा धारवा मुजब पेलो ग्रंथ जीवविचारनुं ज विवरण होय तो होय माटे तेनी प्रत जोई नक्की करवुं जोइये छीये.

D एना बे खंड छे. पेला खंडमां श्लोक २००० छे अने बीजामां श्लोक १६७० छे. आ ग्रंथनी प्रत सं. १२१२ मां लखेली खंबातना नगीनदासशेठना भंडारमां मोजुद छे एना अपरनाम "सिद्धांतविचार" तथा 'सिद्धांतोद्धार' एवां छे. ( जुवो पेलो रिपोर्ट पेज ३२–३३ )

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | प्रवचनविचारसार A | | नयकुंजर B | | पा. १–३ को. |
| १२ | पंचसतत्यधिकार | पत्र ४६ | | | डेक्कन रिपोर्ट पेज ३०. |
| १३ | पंचास्तिप्रबोधसंबंध | | शुभशील | | डेक्कन. |
| १४ | विचाररत्नसंग्रह | १४००० | जयसोम | १६५७ | पीटर्सन रिपोर्ट ३ मां अमदावाद |
| १५ | विचाररत्नसार | पत्र २३ | | | अ. १ |
| १६ | विचाररत्नाकर | ९६१० | कीर्तिविजयगणि | | पा. २-३-४-५ को. |
| १७ | विचारसारसंग्रह | ७११३ | | | पा. ४ |
| १८ | विचारसारसंग्रह ( बीजो ) | पत्र १८ | | | अ. १ |
| १९ | विचारशतक | पत्र ४५ | समयसुंदर | | अ. १ |
| २० | विशेषशतक | पत्र ५७ | समयसुंदर | | अ. १ |
| २१ | विविधरत्नाकर | १८००० | | | कोडाय. |
| २२ | शास्त्रसारसमुद्धार C | १३०० | | | जेसलमेर. |
| २३ | श्रुतविचार D | | | | पा. ४ |

A आ ग्रंथमां जूदा जूदा आळावा संघरी नोंधेला छे.

B नयकुंजर उपाध्याय अढारमी सदीमां हता एम सांभळ्युं छे.

C जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ ग्रंथ "संस्कृतगद्य–तूटक" करीने नोंधेल छे. माटे ते शो ग्रंथ छे तेनी तपास करवी जोइये.

D आ श्रुतविचार प्राकृतमां छे एम पाटणनी टीपमां नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २४ | षट्कायस्थितिविचार A | २००० | | | जेसलमेर |
| २५ | सारसमुच्चय | पत्र ८ | | | डेक्कन पेज ६५ |
| २६ | सिद्धांतविचार | ७२२ | समयमाणिक्य | | पा. ४ |
| २७ | सिद्धांतविचारसंग्रह | पत्र१६५ | | | अ. १ |
| २८ | सिद्धांतहुंडी | पत्र १२१ | | | पा. ४ |

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ ग्रंथ नोंधेल छे, पण ते कोई ग्रंथनी वृत्ति छे के केम ते शक पडती बिना छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ४ थो.** | | | | |
| | **नाना प्रकरणो.** | | | | |
| १ | अल्पबहुत्वप्रकरण A | | | | पा. ३-४ जे. |
| | अवचूरि | १२० | | | पा. ३ |
| २ | आनुपूर्वीप्रकरण | ता. ८९ | | | पा. २ |
| ३ | कर्मसंवेधप्रकरण B | ४०० | राजहंसशिष्य देवचंद्र | | जेसलमेर. |
| ४ | कर्मसंवेधभंगप्रकरण | पत्र १० | | | अ. १ |
| ५ | क्षुल्लकभवावलीप्रकरण | १०० | धर्मशेखरगणि | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| ६ | गुणस्थानक्रमारोह | १३४ | रत्नशेखर | १४४७ | पा. ४ सुलभ्य |
| | वृत्ति | १२५० | स्वोपज्ञ | | पा. १-३-४ सुलभ्य |
| ७ | गांगेयप्रकरण | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | | | | अ. १ |
| ८ | चरणकरणमूलोत्तरगुणप्र. | ५५ | | | लीं. |
| ९ | चतुर्विंशतिजिनपूर्वभवसंख्या | पत्र १ | | | अ. १ |
| १० | जिनेश्वरनामप्रकरण | | | | डे. पेज २८६ |
| | वृत्ति | | | | डेक्कन पेज २८७ |

A हीरालाले एना कर्त्ता अभयदेवसूरि लख्या छे, माटे तपाशी नकी करवुं जोइये.

B हीरालाले आ ग्रंथ नोंध्यो छे, पण तेना नाममां तथा कर्त्तांना नाममां मजबूत संशय लागे छे माटे एनो निर्णय करवा फरीने ते पुस्तक नजरे जोवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | ज्ञानतरंगिणीप्रकरण | पत्र ४ | | | राधनपुर. मुं. |
| १२ | तत्त्वविचारप्रकरण A | १२५ | श्रुतसाधु | | जे. |
| १३ | तत्त्वार्थबोधप्रकरण | पत्र १२ | | | अ. १ |
| १४ | दूसमदंडिकाप्रकरण B | गा. ९६ | विमलप्रभ | | वृ. पा. ३-४ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| | दूसमदंडिका (बीजी) C | गा. ११२ | योगसारगणि | | वृ. |
| १५ | दूसमवुच्छेयदंडिका | गा. २०४ | | | वृ. |
| | दूसमवुच्छेयदंडिका(बीजी) | गा. १७३ | | | वृ. |
| १६ | देवोत्पत्तिस्वरूपप्रकरण | गा. ४३ | | | लींबडी. |

A आ ग्रंथ हीरालाले नोंध्यो छे. कर्त्ताना नाममां शक पडे छे माटे ते तपासवानी जरूर छे.

B दूसमदंडिकानुं बीजुं नाम दूसमगंडिका पण लागे छे केमके केटलीक टीपमां ते नाम नोंध्युं छे. वळी चंचळबाईना भंडारनी टीपमां तो तेनुं नाम " दूसमोद्धार " करीने पण लख्युं छे अने तेना कर्त्ता विमलप्रभ लख्या छे पण तेनी गा. ४७ जणावेली छे. वृहत्‌टिप्पनिकामां एनी गाथा ९२ आपी छे.

C वृहत्‌टिप्पानिकामां बे दूसमदंडिका अने बे दूसमविच्छेददंडिका नोंधीने नोंध्युं छे के "द्वितीयास्तु योगसारगणिकृताः " एटलुंज नहीं पण दरेकनी गाथाओ पण जूदी जूदी नोंधी छे ते परथी एम अटकळ बांधी शकाय छे के ते ग्रंथो डबल रचाया होवा जोइये. माटे आ बाबतसर विद्वान् मुनिओए ध्यान राखी शोध करवी जरूरनी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ | द्रव्यप्रकाशप्रकरण | | | | अ. १ |
| १८ | पदार्थस्थापनासंग्रह प्रकरण A | गा. ११९ | वर्द्धमानसूरि B शिष्य चक्रेश्वर | | लींबडी. |
| १९ | पुद्गलपरावर्त्तस्वरूप प्रकरण | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | पत्र २ | | | अ. १ |
| २० | पुद्गलभंगप्रकरण | | | | अ. १ |
| | अवचूरि C | पत्र ७ | नयविजय D | | अ. १ डेक्कन पेज २१५ |
| २१ | पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण | गा. १०५ | अभयदेव | | पा. २–३–४ सुलभ्य. |
| | अवचूरि | २६० | | | पा. ३–५ |
| | पंचनिर्ग्रंथीप्रकरण E (बीजुं) | | यशोविजय | | डेक्कन |
| २२ | पंचलिंगीप्रकरण F | गा. १०१ | जिनेश्वर | | पा. ४ लीं. |
| | वृत्ति | ६६०० | जिनपति | | पा. १–४ जेसल |
| | लघुवृत्ति | १३४८ | सर्वराज | | पा. ४ |

A आ ग्रंथ संग्रहणीना सरखो छे.

B आ चक्रेश्वरसूरिना माटे सं. ११८७ मां दश पुस्तक लखवामां आव्या छे. जुवो रिपोर्ट ५ मांनो पेज ५८.

C डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां एने "विवृत्ति" तरीके नोंधी छे.

D आ नयविजयगणी ते यशोविजयजी उपाध्यायना गुरु छे के केम ते प्रत जोयाथी जाणी शकाय तेम छे.

E डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां पेज ३० मां आ प्रकरण नोंधेल छे, पण कर्त्ताना नाममां शक रहे छे माटे तेनी प्रत नजरे तपासवानी जरूर छे.

F लींबडीनी टीपमां एनी गाथा ५२ नोंधी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | टिप्पन A | | जिनपाल B | | पा.१ अ. २ डे. |
| २३ | प्रवचनसारप्रकरण C | ३०० | | | जेसल. |
| २४ | बंधोदयप्रकरण | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | पत्र ५ | | | अ. १ |
| २५ | बंधहेतूदयत्रिभंगीप्रकरण | | हर्षकुल | | अ. १ डेकन. |
| | वृत्ति | ७०० | आनंदविजय D | | अ. १ डेक्कन. |
| २६ | भावप्रकरण | गा. ३० | विजयविमल | १६२३ | पा. ३ लीं. |
| | अवचूरि | पत्र ७ | स्वोपज्ञ | | पा. ३ लीं. |
| २७ | मोहनीयबंधप्रकरण | पत्र २ | | | अ. १ |
| २८ | मंडलप्रकरण | गा. ९९ | विनयकुशल | | पा. ३ |
| | वृत्ति | | ,, | १६५२ | पा. ३ |
| २९ | रत्नसंचय | | | | पा. ३ को. |
| ३० | विचारमंजरीप्रकरण | पत्र ७ | नगर्षि | | अ. २ राधणपुर |
| ३१ | विचाररसायनप्रकरण E | गा. ८७ | महेश्वरसूरि | १५७३ | नगीनदास. |
| | अवचूरि | | | | अ. १ |

A आ टिप्पन चंचळबाईनी टीपमां पत्र १५९ नु नोंध्युं छे, पण अमारा धारवा मुजब तेनी आदिमां कोई बीजो ग्रंथ हशे. अने प्रांतमां आ टिप्पन हशे.

B जिनपालगणिए सं. १२९४ मां चर्चरीनी वृत्ति रची छे.

C हीरालाले आ ग्रंथ तूटक तरीके नोंधेल छे, माटे ते तपाशी नक्की करवुं जोइये के ते कोणे रचेल छे.

D अमदावादना डेलानी टीपमां एना कर्त्ता वानरर्षि लख्या छे.

E डेलानी टीपमां एनुं नाम " विचारप्रकरण—महेश्वरसूरिकृत " एम करीनें नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | विचारसारप्रकरण | पत्र ५ | देवचंदजी | | अ. १ भाव. |
| | वृत्ति | पत्र ४२ | स्वोपज्ञ | | अ. १ |
| ३३ | श्रावकप्रतिमाप्रकरण | | | | भरुच. |
| | अवचूरि | पत्र ५ | | | भरुच. |
| ३४ | श्रावकवक्तव्यताप्रकरण | गा.१०३ | | | लींबडी. |
| ३५ | श्रावकव्रतभंगप्रकरण | | | | पा. ३ जेसल |
| | अवचूरि | २२० | | | पा ३ |
| ३६ | षट्द्रव्यप्रकरण | पत्र ८ | | | अ. १ |
| ३७ | समवसरणप्रकरण | १९५ | धर्मघोष | | पा. ३—४ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३—४ |
| ३८ | संवरद्वारप्रकरण | पत्र ८ | | | अ. १ |
| ३९ | साधुप्रतिमाप्रकरण A | | | | जेसलमेर. |
| ४० | सिद्धदंडिकाप्रकरण | | देवेंद्रसूरि | | भाव. अ. १. डे. |
| ४१ | सिद्धांतसारप्रकरण | १०० | प्रद्युम्नसूरि B | | जेसलमेर. |
| ४२ | सिद्धांतोद्धारप्रकरण | गा. १२३ | वर्द्धमानसूरिशिष्य महेश्वर | | लींबडी. |

A आ प्रकरण हंसविजयजीए करेली जेसलमेरनी टीपमां नोंध्युं छे.

B आ नाम हीरालाले नोंध्युं छे माटे ते तपाशी नक्की करवानुं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ५ मो.** | | | | |
| | नाना प्रकरणो–क्लास बीजो. | | | | |
| १ | अर्हत्प्रवचनव्याख्या A | | | | नगीनदास. |
| २ | आगमोद्धारगाथा | गा. ७१ | | | लींबडी. |
| ३ | कालचक्रविचार | गा. ८५ | | | लींबडी. जेसलमेर |
| ४ | गुणस्थानकविवरणगाथा | गा. १७ | | | खं. |
| ५ | चत्तारिअट्ठदसगाथाविवरण | पत्र ३ | देवेंद्रसूरि | | पा. ३ |
| ६ | जंबूद्वीपजीवागणितपद | पत्र ८ | | | पा. ३ |
| ७ | तत्त्वसारगाथा | | | | जेसलमेर बे. |
| ८ | तिरिनरयसूत्रगाथा | | | | पा. ३ |
| ९ | नरक्षेत्रविचार | पत्र १४ | | | पा. ४ |
| १० | पुद्गलपरावर्त्तगाथाविचार | गा. १० | | | खं. |
| ११ | पंचनिर्ग्रंथविचार | पत्र ९ | | | पा. २ |
| १२ | भूयस्कारादिविचार | पत्र २ | | | अ. १ |
| १३ | श्रावकभंगकादिविचारगाथादिवृत्ति B | ५५७ | विजयदेव | | वृ. |
| १४ | सम्मतगुणा | गा. ११ | | | खं. |
| १५ | सूक्ष्मविचारगाथा वृत्ति | पत्र ४ | | | डेक्कन. |
| १६ | स्कंधकविचार | पत्र ११ | | | पा. ४ |

A खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारमां ते ताडपत्रपर त्रूटक छे.

B आ वृत्ति बृहत्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण उपलब्ध थई नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ६ ठो.** | | | | |
| | **स्थानपदोपलक्षित ग्रंथो.** | | | | |
| १ | तीर्थंकरस्थानप्रकरण A | गा. १५० | जिनवल्लभ | | जेसलमेर |
| २ | षट्स्थानकप्रकरण | गा. १०२ | | | नवीनदास. |
| | वृत्ति | १६३८ | नवांगी वृत्तिकार अभयदेव | | पा. ४ |
| ३ | एकवीसठाणप्रकरण | गा. ६४ | सिद्धसेन | | पा. १-२-४ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ताड ५८ | | | पा. २ |
| ४ | विहरमान एकवीसठाण० | | शीलदेव | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| ५ | अट्ठावनठाणप्रकरण | गा. २०६ | | | ख. |
| ६ | सत्तरिसयठाणप्रकरण | गा. ३५५ | सोमतिलक | १३२७ B | पा. १-३-४ सुलभ्य. |

A हीरालाले नोंधेल छे, तेथी शक रहे छे के तेना नामना भूल होवी जोइये—केमके दोढसो गाथापरथी ते जिनवल्लभसूरिकृत सार्द्धशतक के जे कर्मग्रंथना पेटामां नोंधायुं छे ते होवुं जोइये—माटे ते संबंधे तपाश करवानी जरूर छे.

B खंभातनी टीपमां सं. १३८७ नोंध्युं छे, माटे प्रत तपाशी नक्की करवानुं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ७ मो** A | | | | |
| | **संख्यापदोपलक्षित प्रकरणो.** | | | | |
| | **विंशिका.** | | | | |
| १ | सिद्धसुखविंशिका B | | | | डेक्कन. |
| | **पंचविंशिका.** | | | | |
| १ | सम्यक्त्वपंचविंशतिका | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | | | | अ. १ |
| | **द्वात्रिंशिका.** | | | | |
| १ | जीवभेदद्वात्रिंशिका | | | | अ. १ |
| २ | लोकनालद्वात्रिंशिका | | | | सुलभ्य. |
| | अवचूरि | १७५ | धर्मनंदन | | पा. १ डेक्कन |
| | **षट्त्रिंशिका.** | | | | |
| १ | इरियावही षट्त्रिंशिका | | | | |
| | वृत्ति | १०३५ | जयसोम | १६४४ | पा. ४ |
| २ | इरियावही षट्त्रिंशिका | | धर्मसागर | | अ. १ डेक्कन. |
| | वृत्ति | ८०० | स्वोपज्ञ | | अ. १ डेक्कन. |

A आ वर्गमां प्रक्रियाने लगती वीसीओ, पचीसीओ–बत्रीसीओ–छत्रीसीओ–पंचाशिकाओ–अने सत्तारिओ एकत्रित करीने क्रमवार नोंधी छे.

B डेक्कनकॉलेजमां सिद्धसुखविंशिका पत्र १० नी नोंधी छे. तो ते सटीक होवी जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ | गुरुगुणषट्त्रिंशिका | | वज्रसेन A | | सुलभ्य. |
| | वृत्ति | १२९७ | रत्नशेखर | | पा. ३-४ भाव. |
| ४ | दानषट्त्रिंशिका | | | | पा. ३ |
| | वृत्ति B | | | | जेसलमेर |
| | अवचूरि | | विनयरत्न | | पा. ३ |
| ५ | निगोदषट्त्रिंशिका | | धर्मघोष | | वृ. पा. २-३ खं. |
| | वृत्ति | ६५३ | रत्नसिंह C | | वृ. पा. २-३ |
| ६ | परमाणुविचारषट्त्रिंशिका D | | धर्मघोष | | वृ. पा. २—३ |
| | वृत्ति | | रत्नसिंह | | वृ. पा. २—३ |
| ७ | पुद्गलषट्त्रिंशिका | | धर्मघोष | | वृ. पा. २—३ खं. |
| | वृत्ति | | रत्नसिंह | | वृ. पा. २—३ |

A वज्रसेनसूरि त्रण थया छे. पेला वज्रसेन ते वइरस्वामिना शिष्य हता. बीजा वज्रसेन ते विजयचंद्रसूरिना शिष्य हता अने त्रीजा वज्रसेन ते रत्नशेखरना गुरु हेमतिलकसूरिना गुरु हता. आ त्रीजा वज्रसेनसूरिने अलाउद्दीन बादशाहे कीमती पोषाक तथा फरमानो आप्यो हतो एम वेबरे नोंध करी छे. आ त्रणमांथी अमारा धारवा मुजब त्रीजा वज्रसेनसूरिए आ षट्त्रिंशिका रची होवी जोईये, केमके तेमना प्रशिष्ये ते ग्रंथपर टीका रची छे एम लागे छे.

B जेसलमेरनी टीपमां आ वृत्ति नोंधी छे पण कदाच ते अवचूरिज हशे एम लागे छे. छतां चोकस निर्णय करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C रत्नसिंहसूरि विनयचंद्रसूरिना शिष्य हता. विनयचंद्रसूरिए सं. १३२५ मां कल्पसूत्रनुं टिप्पन रच्युं छे. माटे रत्नसिंहसूरि सं. १३५० ना अरसामां होवा जोइये.

D एनुं बीजुं नाम खंडषट्त्रिंशिका छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | पौषधषट्त्रिंशिका | | | | पा. ४ |
| | वृत्ति | | जयसोम | १६४५ | पा. ४ |
| ९ | बंधषट्त्रिंशिका | | धर्मघोष | | वृ. पा. २ खं |
| | वृत्ति | | रत्नसिंह | | वृ. पा. २ |
| १० | भावषट्त्रिंशिकाA | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ११ | सिद्धांतषट्त्रिंशिका | | | | अ. १ |
| | वृत्ति | ७२७ | | | पा. ३ अ. १ |

A भावषट्त्रिंशिकानुं बीजु नाम रहस्यषट्त्रिंशिका छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या॰ नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | पंचाशिकाओ. | | | | |
| १ | त्रिषष्ठिशलाका पंचाशिका | | | | अ. १ |
| २ | पूजापंचाशिका ( सावचूरि) | पत्र १६ | | | अ. १ |
| ३ | विचारपंचाशिका(सावचूरि | पत्र ५ | विजयविमल | | डेक्कन |
| ४ | शतपंचाशिका | | | | भाव. |
| ५ | समवसरणपंचाशिका | | | | अ.२ |
| ६ | सिद्धपंचाशिका A | | देवेंद्रसूरि | | वृ. पा.३-४ डेक्कन |
| | वृत्ति | ७१० | स्वोपज्ञ | | वृ. |
| | अवचूरि | ३९८ | | | पा.३-४ |

A डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां सिद्धपंचाशिकाना कर्त्ता विद्यासागर जणाव्या छे. ( जुवो नं. ३२३ ) परंतु ते अमारा धारवा मुजब अवचूरिना कर्त्ता होवा जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **सत्तरिओ.** | | | | |
| १ | अंगुलसत्तरि | | मुनिचंद्र | | बृ. पा.३ |
| | अवचूरि | | | | पा.३ |
| २ | आगमोद्धारसत्तरि | | | | जेसलमेर |
| ३ | आवश्यकसत्तरि A | | मुनिचंद्र | | भाव. |
| | वृत्ति | १०४० | महेश्वर | | पा.४.भाव. |
| ४ | करणसत्तरि | | | | जेसल. |
| | वृत्ति B | ३००० | | | जेसल. |
| ५ | कालसत्तरि | | धर्मघोष | | पा.३-४ |
| ६ | गुरुगुणसत्तरि | | सोमचंद्र | | जेसलमेर |
| ७ | दर्शनसत्तरि C | | हरिभद्र | | बृ. पा. ३ |
| ८ | दानसत्तरि | | | | अ. २ |
| ९ | द्रव्यसत्तरि | | लावण्यवाचक | | अ. १ |
| | वृत्ति | पत्र २८ | स्वोपज्ञ | | अ. १ भरुच |
| १० | यात्रासत्तरि | | | | अ. १ |
| ११ | वनस्पतिसत्तरि | | मुनिचंद्र | | पा. ३ |

A एनुं बीजुं नाम "पाखीसत्तरि" छे.

B हीरालाले नोंधी छे तेथी तेनी श्लोकसंख्यापर शक रहे छे.

C बृहट्टिप्पनिकामां दर्शनसत्तरिनी गाथा १२० लखी छे. आ ग्रंथनुं अपरनाम सम्यक्त्व सप्ततिका छे अने ते नामे तेने औपदेशिक ग्रंथोमां टीका तथा अवचूरि साथे नोंधी छे इहां सत्तरिओनो क्लास होवाथी तेनुं फक्त मूलनुं नामज नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | विचारसत्तरि | | महेंद्रसूरि A | | पा. ३ भरुच |
| | वृत्तिB | ४३१६ | विनयकुशल | | डेक्कन. भरुच. |
| | अवचूरि | ५०० | | | पा. ३ |
| १३ | विनयसत्तरि | | | | अ. २ |
| १४ | सुयणासत्तरि C | | | | जेसल. |
| | वृत्ति | पत्र ७९ | | | जेसल. |
| १५ | सूक्ष्मार्थसत्तरि | | चक्रश्वरसूरि | | लींबडी. |
| | टिप्पन | | | | लींबडी. |

A महेंद्रसूरि हेमसूरिना शिष्य हता एम सोमप्रभसूरिए कुमारपालप्रतिबोधना प्रांते जणाव्युं छे. जुवो रि. ५ पेज ३९

B डेक्कनकॉलेजना लीस्टमां पेज १४७ मां विचारसत्तारिना कर्त्ता विनयकुशल लखेल छे ते भूल छे.

C जेसलमेरनी बे टीपमां आ नाम लखेल छे. माटे तेनुं संस्कृतरूप सुजन-स्वप्न-के सूचना करवुं ते अनिश्चित थई पडे छे, माटे ग्रंथ जोयाथी तेनो निर्णय थई शके तेम छे.

श्रीजैनश्वेतांबर कॉन्फरन्स ऑफिस
गिरगांव पोष्ट नं. ४ मुंबई.

न्यालचंद लक्ष्मीचंद सोनी.
ऑसिस्टंट सेक्रेटरी,

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ८ मो.** | | | | |
| | प्रक्रियाने लगता स्तवस्तोत्र. | | | | |
| | स्तव | | | | |
| १ | कायस्थितिस्तव A | | कुलमंडन | | वृ.पा. २. अ.१-२ |
| | वृत्ति | | रत्नसिंह | | पा. २ अ. २. |
| २ | चैत्यप्रतिकृतिस्तव (साव) | पत्र १० | देवेंद्रसूरि | | कोडाय. |
| ३ | देहस्थितिस्तव | गा. २४ | | | पा. २ खं. |
| | वृत्ति | | कुलमंडन | | पा. २. |
| ४ | पुद्गलपरावर्त्तस्तव B (साव) | का. ११ | | | डेक्कन. |
| ५ | भवस्थितिस्तव ( सावचूरि) | | | | पा. २ |
| ६ | योनिस्तव | | | | पा. २-३ |
| ७ | लब्धिस्तव ( सावचूरि) | | | | पा. २-३, अ. १ |
| ८ | लोकांतिकस्तव | | | | पा. २ |
| ९ | शाश्वतबिंबसंख्यास्तव (साव) | | देवेंद्रसूरि | | पा. ३ भाव. |
| १० | समवसरणस्तव | गा. २४ | | | लींबडी. |
| ११ | सम्यक्त्वस्वरूपस्तव(साव) | गा. २५ | देवेंद्रसूरि | | पा.२-३लीं.डे.भाव. |

A चंचलबाईना भंडारनी टीपमां कायस्थितिस्तवना कर्त्ता कुलमंडनसूरि लखेला छे.

B आ पुद्गलपरावर्त्तस्तव संस्कृतमां छे एम डेक्कनकॉलेजना लिस्टमां जणावेल छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **स्तोत्र** | | | | |
| | A | | | | |
| १ | दुःषमाकालश्रमणसंघस्तोत्र | पत्र ३ | विजयानंद धर्मकीर्ति | | अ. १ |
| २ | युगप्रधानस्तोत्र ( साव ) | पत्र १४ | | | अ. १ |
| ३ | सम्यक्त्वरहस्यस्तोत्र | पत्र ३ | सिद्धसूरि | | पा. ३ |

A आ स्तोत्रना प्रांते एवुं पद छे के ' सिरिविजयाणंदधम्मकित्तिपयं ' ए परथी एम लागे छे के विजयानंदसूरिनुं अपरनाम धर्मकीर्त्तिसूरि हशे.

## लीस्ट नंबर ५.

# जैन फिलॉसोफि.

# क्रियाविधिना ग्रंथो.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग १ लो.** | | | | |
| | **प्रकरण ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अज्ञातोंच्छप्रकरण A | | | | पा ४ |
| | वृत्ति | २१६ | आनंदविजय | | पा. ४ |
| २ | अभक्ष्यद्वात्रिंशिका | पत्र ३ | | | अ. १ |
| ३ | आचारदिनकर | १२५०० | जयानंदशिष्य वर्द्धमान B | | पा. २—३-४ |
| ४ | आचारप्रदीप | ४०६० | रत्नशेखर | १५१६ | पा. ३-४ |
| ५ | आचारविधि ( प्रा. ) | पत्र १७ | | | भाव. |
| | „ ( संस्कृत ) | | | | नगीनदास. |
| ६ | आचारोपदेश | पत्र ११ | चारित्रसुंदर | | पा. ३ |
| ७ | आलोचनारत्नाकर C | पत्र ४ | विजयगणि | | डेक्कन पेज २७ |
| ८ | आलोचनाविधान | गा. ८४ | | | डेक्कन. |

A आ प्रकरण पाटणमां छे, अने ते कोई आलावारूप छे के स्वतंत्र गाथाबद्ध छे ते प्रकरणनी प्रत नजरे तपासयाथी मालम पडे तेम छे.

B आ वर्द्धमानसूरि ते उद्योतनसूरिना शिष्य वर्द्धमानसूरि थएला छे ते नहि पण त्यारकेडे विक्रमसंवतनी चौदमी सदीमां ते नामना आचार्य थएला छे तेमणे आ आचारदिनकर रचेल छे. सदरहु ग्रंथना प्रांते चोकश संवत् आपेल छे, पण ते टीपमां नोंधायलुं नथी माटे जिज्ञासुजनोए ते ग्रंथनी प्रशस्ति जोई लेवी.

C डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां एनुं नाम " आलोकनरत्नाकरपंचमी " एवुं आपेल छे, पण अमारा अनुमानप्रमाणे ते ग्रंथनी पांचमी लहरी पूर्ण थई हशे ते परथी ते नाम साथे जोडी दीधी लागे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | इरियावही प्रकरण | पत्र १७ | | | डेकन. |
| १० | जीतसारसमुच्चय | पत्र ११ | | | अ. १ |
| ११ | दानविधिप्रकरण | गा. २५ | | | लींबडी. |
| १२ | धर्मविधि (पहेली) | | श्रीप्रभ A | | भाव. |
| | वृत्ति | ५५२० | उदयसिंह | १२८६ | वृ. भावनगर |
| | वृत्ति | ११९४२ | जयसिंह | | वृ. |
| | धर्मविधि ( बीजी ) B | ६९४० | नन्नसूरि C | | जेसल बे. |
| १३ | धर्मसंग्रह | १५६०८ | मानविजय | | सुलभ्य-छपाय छे. |
| १४ | धूमावलिका | २०० | जयभूषण D | | जेसल. |
| | वृत्ति E | २५० | समुद्राचार्य | | वृ. |
| १५ | पर्वपंजिका F | | शीलाचार्य | | वृ. |
| १६ | पूजाप्रकरण | १९ | उमास्वाति G | | पा. ४ |
| १७ | पौषधप्रकरण | | जयसोम | | भाव. |

A श्रीप्रभसूरिनी स्वोपज्ञटीका सं. १२५३ मां नाश पामी. श्रीप्रभसूरि उदयसिंहसूरिना दादागुरु हता एटले तेओ संवत् १२०० ना पछी थया होवा जोईये.

B जेसलमेरनी बे टीपमां आ ग्रंथ नोंधेल छे अने ते ताडपत्र उपर लखेल छे.

C बप्पभट्टिसूरिना चरित्रमां नोंध्युं छे के बप्पभट्टिसूरि सं. ८९५ मां दिवंगत थया तेमना बे शिष्य हता. एक नन्नसूरि अने बीजा गोविंदगणि. ते शिवाय सं. १३६८ मां बीजा नन्नसूरि पण थएला छे के जेओ कृष्णर्षिना शिष्य हता. माटे ए बेमांथी कोणे आ ग्रंथ रच्यो छे ते प्रशस्ति जोयाथी मालम पडे.

D हीरालाले आ ग्रंथ नोंध्यो छे, माटे तेना कर्त्ता वगेरेनो चोकस निर्णय करवा माटे प्रत जोवानी जरूर छे.

E वृत्तिमाटे बृहत्टिप्पनिकामां आ प्रमाणे उल्लेख छे:—" धूमावल्या।दिवृत्तिः कुसुमांजल्यादिवाच्या समुद्राचार्यकृता २५०" परंतु आ ग्रंथ हजुलगी उपलब्ध थयो नथी.

F बृहत्टिप्पनिकामां एनामाटे एवो उल्लेख छे के " श्रीशांतिवेतालीयपर्वपंजिका स्नपनविध्यादिवाच्या श्रीशीलाचार्यीया " आ ग्रंथ पण अमने उपलब्ध थयो नथी.

G कर्त्तानुं नाम प्रसिद्धिने अनुसरी आप्युं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | | जयसोम | | भाव. |
| १८ | पौषधविधिप्रकरण | २३३ | जिनवल्लभ | | पा. १-४-५ |
| | वृत्ति | ३५५५ | जिनचंद्र | १६१७ | पा. १-४-५ |
| १९ | प्रतिक्रमणक्रमविधि ‡ | ८११ | जयचंद्र | १५०६ | पा. ३—४ |
| २० | प्रतिष्ठाकल्पोः—* | | | | |
| | कल्प पहेलो(प्रतिष्ठाप० ) A | ११९२ | पादलिप्तसूरि H | | पा. ४ भाव. |
| | ,, बीजो (प्रतिष्ठाविधि ) B | पत्र १८ | तिलकाचार्य | | अ. १ |
| | ,, त्रीजो(प्रतिष्ठाविधि ) C | पत्र १३ | नरेश्वर | | अ. १ |
| | ,, चोथो (प्रतिष्ठाविधि) D | ४८० | गुणरत्न | | डेक्कन. |
| | ,, पांचमो E | ११००० | सकलचंद्र | | लीं. डेक्कन. |
| | ,, छठो F | ४९५ | | | पा. ३—४ |
| | ,, सातमो G | ४०० | | | लीं. |

‡ आ ग्रंथ जैनागमना लिस्टमां पेज ३२ मां नोंधायलो छे, छतां तेमां क्रियानी विधि बतावेली होवाथी आ स्थले पण तेनुं नाम नोंध्युं छे.

* प्रतिष्ठाकल्प अनेक छे, तेओमांना जे जे कल्पो टीपमां नोंधाया छे ते इहां नीचे टांक्या छे. वळी एवुं संभळाय छे के हरिभद्रसूरि तथा समुद्राचार्यना रचेल प्रतिष्ठाकल्प पण छे, पण ते क्यां छे ते अमारा जाणवामां नहि आव्याथी अमे तेमनां नाम इहां टांक्यां नथी. माटे जे मुनिमहाशयोने ते कल्पो क्यां छे तेनी खबर होय तेमणे अमने ते बाबत लखी जणाववी.

A आ प्रतिष्ठाकल्पने ' प्रतिष्ठापद्धति ' पण कहे छे अने ते संस्कृतमां छे.

B आ प्रतिष्ठाकल्पने ' बिंबध्वजदंडप्रतिष्ठाविधि ' एवा नामथी टीपमां नोंधवामां आव्यो छे.

C. D आ बे प्रतिष्ठाकल्पोने ' प्रतिष्ठाविधि ' ना नामथी ओळखावेल छे.

E. F. G आ त्रणेने ' प्रतिष्ठाकल्प ' एवा सादा नामथीज टीपोमां ओळखाव्या छे तेमांनो सातमो प्रतिष्ठाकल्प जरा मिश्रसंस्कृतमां लखायलो छे.

H पादलिप्तसूरिए शत्रुंजयकल्प तथा तरंगवतीकथा नामे ग्रंथ रचेल छे. तेओ क्यारे थया ते बाबतनी चोकस साल जाणवामां आवी नथी. परंतु तेओ श्रीधनपाल तथा श्रीहेमचंद्रसूरिथी घणा पहेला थएला छे तेमने प्राकृत भाषामां ' पालित्त ' तथा ' पालित्तय ' एवा नामे ओळखवामां आवे छे, अने पालिताणाना शहरनुं नाम तेमना नाम परथीज पडेलुं कहेवाय छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | कल्प आठमो (प्रतिष्ठाविधान) A | ३६० | | | डेक्कन. |
| | ,, नवमो (जिनप्रतिष्ठा) B | | | | वृ. पा. ३ |
| | ,, दशमो (बिंबप्रवेशविधि) C | २९२ | | | पा. ५ |
| २१ | प्रत्याख्यानविचारणा D | गा. २३७ | शालिसूरि | | डेक्कन. |
| २२ | मुक्तियुक्तियोगविधि | पत्र १८ | हर्षकुल | | अ. २ |
| २३ | यतिआहारषण्णवति | | | | अ. १ |
| २४ | यतिदिनचर्या | गा. ३९६ | देवसूरि | | पा. ३—४ |
| | वृत्ति | ३५०० | मतिसागर | | पा. ४. अ. २ भाव. |
| | वृत्ति | पत्र ५९ | भावदेव | | भाव. |
| २५ | विधिप्रपा | ३५७४ | जिनप्रभ | १३६३ | पा. १–३–४ |
| | ,, E | ३३०० | उदयंकर F | | रिपोर्ट ६ |

A आ आठमां कल्पने ' प्रतिष्ठाविधान ' ना नामथी ओळखावेल छे.

B नवमा कल्पने बृहट्टिप्पनिकामां ' जिनप्रतिष्ठा ' एटला उल्लेखथीज नोंधेल छे अने पाटणनी टीपमां ' जिनबिंबप्रतिष्ठाविधि ' एवा नामथी नोंधेल छे.

C दशमा कल्पने पाटणनी टीपमां ' बिंबप्रवेशविधि ' ना नामे नोंधेल छे ए कदाच प्रतिष्ठाकल्प नहि होय तोपण तेनो विभागरूप गणीने अमे इहां तेने प्रतिष्ठाकल्पना पेटामां गण्यो छे.

D आ ग्रंथ पूर्वे जैनागमना लिस्टमां पेज ३४ मां " प्रत्याख्यानविचारणामृत " एवा नामथी नोंधायल छे, छतां तेमां क्रियानुष्ठाननी विधि वर्णवेल होवाथी इहां पण नोंध्यो छे.

E. F आ ग्रंथनुं नाम रिपोर्टमां ' विधिप्रपाक ' एवुं आपेल छे. ते जैनाचार्यकृत छे के केम ते शक पडती बिना छे केमके तेना कर्त्तानुं नाम उदयंकर नोंध्युं छे ते नामना कोई जैनाचार्य थया जाणवामां आव्या नथी, माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २६ | विवेकविलास | १३८५ | जिनदत्त A | | सुलभ्य. |
| | वृत्ति | पत्र १९५ | भानुचंद्र | १६७१ | पा. ३ अ. १ |
| २७ | श्राद्धदिनकृत्य | गा. ३४४ | देवेंद्रसूरि | | सुलभ्य. |
| | वृत्ति | १२८२० | ,, | १४११ | वृ. पा. २-३-४ |
| | अवचूरि | | | | को. |
| २८ | श्राद्धविधि | | | | पा. ३-४ को. |
| | वृत्ति | ६७६१ | रत्नशेखर | १५०६ | सुलभ्य. |
| २९ | श्राद्धविधिविनिश्चय | | हर्षभूषण | | पा. ४ अ. २ |
| ३० | श्रावकधर्मप्रकरण | | | | पा. १ |
| | वृत्ति | १५१३१ | लक्ष्मीतिलक | १३१७ | पा. १ लीं. |
| ३१ | श्रावकधर्माधिकार B | १०० | गुणशील C | | जेसलमेर. |
| ३२ | श्रावकधर्मविचार D | | | | जेसलमेर. |
| ३३ | श्रावकविधि E | | धनपाळ | | डेक्कन पेज १७१ |
| | वृत्ति F | | संघचंद्र | | |
| | श्रावकविधि ( बीजी ) G | गा. २२ | | | लींबडी. |

A आ जिनदत्तसूरि ते वायडगच्छना छे, तेओ सं. १२७७मां वस्तुपालना वखतमां विद्यमान हता.

B. C मूलग्रंथ तथा कर्त्तानुं नाम हीरालाले नोंधेल होवाथी शक पडता लागे छे माटे तेनी प्रत तपाशवानी जरूर छे.

D आ प्रकरण पण हीरालालनाज नोंधमां छे, पण ते केटला श्लोकनुं छे वगेरे हकीकत नोंधी नथी माटे तेनी पण प्रत तपाशवानी जरूर छे.

E आ श्रावकविधि अने धर्मविधि ते एकज ग्रंथ छे के जूदाजूदा छे ते माटे प्रतो तपाशवी जोइये.

F आ वृत्ति पं. आनंदसागरजीना जोवामां आवेली छे एम तेमणे जणाव्याथी इहां नोंधी छे.

G आ बीजी श्रावकविधि गा.२२नी छे ते कदाच श्राद्धविधिनुं मूळज हशे, एम अमारुं अनुमान छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** | | | | |
| | **विधि ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अनुष्ठानविधि | १०४६ | | | पा. २ नगीनदास. |
| २ | अर्हद्भिषेकविधि* | १०० | वादिवेताळ | | जेसलमेर. |
| ३ | अष्टप्रकारपूजाविधि | | | | पा. २ |
| ४ | आराधनाविधि* | | | | जेसलमेर. |
| ५ | आलोचनापदसंग्रह A | | | | बृ. |
| ६ | ऊनोदरिकादितप | | | | डेक्कन. |
| ७ | उपधानविधि | ताड७१ | | | पा. २. |
| ८ | उपधानपौषधविशेषविधि | | चक्रेश्वरसूरि | | लींबडी. |
| ९ | उपधानस्वरूप B | | देवसूरि | | बृ. |
| १० | उपासकपाठ C | | | | डेक्कन. |
| ११ | उपासकप्रतिमाविवरण | | | | जामनगर. |
| १२ | जिनस्नात्रविधि * | ६० | वादिवेताळ | | जेसलमेर. |
| १३ | तपोयोगविधि टीका * | १००० | (त्रूटक) | | जेसलमेर. |
| १४ | दृष्टविधि D | पत्र ३ | | | जेसलमेर बे. |

* आ निशानीवाला ग्रंथो हीरालाले करेली टीपमांथी मळ्या छे तेथी तेमनी खरी खातरी माटे तेमनी प्रतो जोवानी जरूर छे.

A, B आ बे ग्रंथ बृहत्टिप्पनिकामां नोंधेला छे, पण ते उपलब्ध थया नथी.

C आनुं नाम उपासकपाठ छे के उपासकपथ छे ते इंग्रेजी स्पेलिंगपरथी नक्की थई शक्युं नथी माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

D दृष्टविधि ते शी बाबतनो ग्रंथ छे ते जणायुं नथी. कदाच ते ज्योतिषनो ग्रंथ होय तोपण होय माटे तेनी प्रत जोई नक्की करवानुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १५ | नंदिविधि ( प्राकृतपद्य )* | ५०० | ( त्रूटक ) | | जेसलमेर. |
| १६ | पल्योपमोपवासविधिA | | | १२६० | नगीनदास. |
| १७ | पूजाविधि * | ६०० | जिनप्रभ | | जेसलमेर. |
| १८ | पौषधविधि | | चक्रेश्वरसूरि | | लीं. |
| १९ | प्रत्याख्यानस्थानविवरण B | १५० | जिनप्रभ | | जेसलमेर बे. |
| २० | प्रत्याख्यानस्थानविधि * ( सटीक ) | १५०० | | | जेसलमेर. |
| २१ | मुखवस्त्रिकाप्रतिलेखनाधिकार | २४० | | | पा. ४. |
| २२ | मुद्राविधि | पत्र ४८ | | | पा. ३. |
| २३ | यतिप्रतिक्रमणविधि | | | | पा. २. |
| २४ | यतियोगविधान | | | | जेसलमेर बे. |
| २५ | वंदनस्थानविवरण | १५० | जिनप्रभ | | जेसलमेर बे. |
| २६ | शांतिपर्वविधि | २६९ | जिनप्रभ | | जेसलमेर. |
| २७ | श्रावकप्रतिक्रमणविधि | ताड८९ | | | पा २ |
| २८ | षडावश्यकविधि C | २३७५ | आंचलिक मही-सागर | १३९४ | पा. ४ |
| २९ | स्थापनाकल्पविधि | पत्र ४ | | | पा. ३ |

A आ ग्रंथ सं. १२६० मां ताडपत्रपर लखेलो खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे एम रिपोर्टमां नोंध्युं छे.

B अगाऊ जैनागमना लीस्टमां पेज ३४ मां प्रत्याख्यानस्थानविवरण श्लोक ७०० नुं जयचंद्रसूरिकृत नोंधेल छे ते अने आ ग्रंथ जूदा छे एम लागे छे.

C आ ग्रंथ पूर्वे जैनागम लीस्टमां पेज २४ मां नोंधायलो छे, छतां ते विधिदर्शक ग्रंथ होवाथी तेने इहा पण नोंध्यो छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो.** | | | | |
| | **सामाचारीना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अभयदेवसूरिकृतसामाचारी A | १५०० | नवांगीकार अभयदेव | | पा. ३ |
| २ | आचारविधिनाम्नीसामाचारी | १०५० | | | पा. ४ डेक्कन. |
| ३ | आंचलिकश्राद्धसामाचारी | पत्र ५३ | | | अ. १ |
| ४ | ओघसामाचारी B | १५०० | | | डेक्कन. |
| ५ | कुलमंडनसूरिकृतविचारामृत संग्रह C | २२०० | कुलमंडन | १४४३ | पा. १-३-४ सुलभ्य. |
| ६ | गच्छसामाचारी D | | | | जेसलमेर हंसविजय. |
| ७ | जिनचंद्रसूरिकृतसामाचारी E | ता.२८१ | जिनचंद्र | | पा. २ |
| ८ | जिनसूरिकृतसाधुसामाचा० F | १५१२ | जिनसूरि | | पा. २-५ |
| ९ | जिनवल्लभसूरिकृतप्रतिक्रमण सामाचारी G | गा.४० | जिनवल्लभ | | लीं. |

A एनुं अपरनाम साधुसामाचारी पण छे. ए ग्रंथ पूर्वे आचारविधिना नामे नोंधायो छे तेज होवो जोइये. छतां इहां सामाचारीना वर्गनो प्रक्रम होवाथी इहां पण तेनुं नाम नोंध्युं छे.

B ओघसामाचारी ते वखते ओघनिर्युक्तिना नाम फेरथी नोंधाई होय तोपण होय माटे तपास करवी जोइये.

C आ विचारामृतसंग्रहनामनी सामाचारी माटे वृहत्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" प्रवचनपाक्षिकादिपंचविंशत्यधिकारप्रतिबद्धा आलापकाः १४४३ वर्षे श्रीकुलमंडनसूरियाः "

D जेसलमेरनी हंसविजयजीए लखेली टीपमां गच्छसामाचारी एवुं मोघम नाम छे पण ते कया गच्छनी छे ते नक्की करवा माटे तेनी प्रत तपासवी जोइये.

E. F आ बे सामाचारीओ कदाच एक पण होय केमके तेमना कर्त्ताना नाममां लगभग मळतापणुं छे, माटे तेनी प्रतो तपासवी जोइये.

G आ सामाचारी फक्त चालीस गाथाना कुलक जेवी छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १० | तपासामाचारी A | ७०० | | | बृ. |
| ११ | तिलकाचार्यकृतपूनमिया सामाचारी B | २५०० | तिलकाचार्य | | राधन. जेसलमेर. |
| १२ | देवगुप्तसूरिकृतश्रावकसामाचारी | पत्र ५ | देवगुप्त | | बृ. अ. २ |
| | वृत्ति C | १२०० | देवगुप्त | | बृ. |
| १३ | देवप्रभमलधारीकृतसामाचारी D | | देवप्रभमलधारि | | बृ. |
| १४ | नरेश्वरसूरिकृत सामाचारी E | ४०४२ | नरेश्वरसूरि F | | पा. ५. लीं. |
| १५ | भावदेवसूरिकृतयतिसामाचारी | गा. १५४ | भावदेव | | खं. |
| | वृत्ति | पत्र ५० | मतिसागर * | | खं. |
| १६ | यशोविजयवाचककृतसामाचारी | | यशोविजय | | भाव. |
| | वृत्ति | पत्र ३२ | स्वोपज्ञ | | भाव. |

A बृहत्‌टिप्पनिकामां आ सामाचारी नोंधी छे पण अमारा जोवामां हजु नथी आवी, माटे जे कोई मुनि महाशय पासे ते होय तेमणे अमने तेनी हकीकत जणाववा कृपा करवी.

B जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले एनी श्लोकसंख्या २५०० नी नोंधी छे.

C देवगुप्तसूरिकृत श्रावकसामाचारिनी वृत्ति उपलब्ध थई नथी माटे ते पण जेमनापासे होय तेमणे अमने खबर आपवी.

D आ सामाचारी माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" सामाचारी १३६ अधिकारा मलधारि देवप्रभसूरिया "

E आ सामाचारीनुं अपरनाम सूरिवल्लभसामाचारी पण छे.

F पाटणनी टीपमां कुलप्रभशिष्य नरेश्वर लख्या छे त्यारे लींबडीनी टीपमां कुलप्रभशिष्य धनेश्वर सूरिए रची एवुं लख्युं छे, माटे ते नरेश्वरसूरिकृत छे के धनेश्वरसूरिकृत छे ते माटे पाटणनी प्रत तपासवी जोइये. तेमज पाटणमां एनी श्लोकसंख्या ४०४२ लखेल छे त्यारे लींबडीमां ३७०० छे छतां ग्रंथ तेनो तेज छे केमके लींबडीनी टीपमां पण तेनुं अपरनाम सूरिवल्लभ आपेल छे.

* पूर्वे यतिदिनचर्यानी वृत्ति मतिसागरकृत नोंधाई छे तो ते अने आ एकज लागे छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ | श्रावकसामाचारी A | ११७५ | | | पा. १-२-४-५ |
| १८ | श्रीचंद्रसूरिकृतसुबोधासामाचारी | १३११ | धनेश्वरशिष्य श्रीचंद्र | | वृ. पा. १ |
| १९ | सामाचारी | पत्र ११ | | | पा. ३ |
| २० | सामाचारी ( बीजी ) | २००० | | | पा. ५ |
| २१ | हरिप्रभसूरिकृतसाधुसामाचारी | ५२७ | हरिप्रभ B | | पा. ३-५ अ. १ |
| २२ | C हरिभद्रसूरिकृतश्रावकसामाचारी | १२०० | हरिभद्र | | जेसलमेर. |

A एनामाटे बृहत्‌टिप्पनिकामां आ प्रमाणे उल्लेख छेः—" सामाचारी सुबोधा सर्वानुष्ठानगोचरा धनेश्वरशिष्य श्रीचंद्रीया १४५०–१२२१ " आ प्रमाणे त्यां तेनी श्लोकसंख्या पण भिन्न भिन्न नोंधेली छे. तेथी अमे इहां पाटणनी टीपमां नोंधायली श्लोकसंख्या नोंधी छे.

B डेक्कनी टीपमां हरिप्रभना बदले हरिभद्रनाम लखेल छे.

C हीरालाले कर्त्तानुं नाम हरिभद्र लख्युं छे पण ते शक पडती विना छे कदाच ते द्वितीय हरिभद्र होय तो होय छतां चोकश निर्णय माटे प्रत तपाशी जोवानी जरूर रहे छे.

# खंडनमंडनना ग्रंथो.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | अंचलमतदलन | १००० | हर्षभूषण | १४८० | पा.३-४-५ |
| २ | अंचलमतस्थापन A | पत्र२५ | | | अ. २ |
| ३ | आचरणाशतक B | | | | वृ. |
| ४ | आचरणोपन्यास C | ४०० | | | A. S. |
| ५ | उपधाननिराकरणसंधि D | पत्र५ | | | अ. २ |
| ६ | औष्ट्रिकमतोत्सूत्रदीपिका | ७१६ | धर्मसागर | १६१७ | पा. ३-५. |
| ७ | औष्ट्रिकमतोत्सूत्रोद्घाटन कुळक | २२ | " | | पा. ४ |
| ८ | कालस्वरूपद्वात्रिंशिका E | | जिनदत्त F | | पा. १ जेसल. |
| | वृत्ति | | जिनपाल G | | पा. १ |

A आ ग्रंथ फक्त अमदावादना चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंधेल होवाथी तेने इहां नोंध्यो छे पण ते संबंधी ऐतिहासिक बिना मळी नथी.

B बृहत्टिप्पनिकामां "आचरणाशतकं चरणसहस्रोदधिसत्कं शतपदीपूर्वपक्षरूपं" आवो उल्लेख छे.

C आ ग्रंथ फक्त एसिआटिक सोसायटीमां नोंधायो छे, माटे ते दुर्लभ्य छे.

D आ ग्रंथ पण चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंध्यो छे ते शिवाय बीजे स्थळे उपलब्ध थयो नथी.

E जेसलमेरनी टीपमां एनुं नाम कालस्वरूपकुलक नोंध्युं छे.

F जिनदत्त नामना त्रण आचार्य थया जाणवामां आव्या छे:—

(१) जिनदत्तसूरि ते वायडगच्छीय जीवदेवसूरिना शिष्य हता. तेमणे विवेकविलास नामनो ग्रंथ रचेल छे, अने तेओ वस्तुपालनी वारे सं. १२७७ मां विद्यमान हता.

(२) जिनदत्तसूरि ते खरतर जिनवल्लभगणिना शिष्य अने जिनचंद्रसूरिना गुरु हता. ते ओनो जन्म सं. ११३२मां दीक्षा सं. ११४१ मां सूरिपद सं. ११६९ मां अने स्वर्गवास सं.१२११मां थयो हतो. एमणे संदेहदोलावलि प्रकरण विगेरे ग्रंथो रच्या छे.

(३) जिनदत्तसूरि ते देवसूरिकृत जीवानुशासनना शोधनार अने सप्तगृह नामनां स्थळे रेहनार हता तेओपण सं. ११६२ ना अरसामां थएला छे.

हवे आ कालद्वात्रिंशिका आ उपर जणावेल त्रण आचार्य मांहेला कया जिनदत्ताचार्ये रची छे ते बाबत विचार करतां एम मालम पडे छे के ते खरतर जिनदत्तसूरिएज रची होवी विशेष संभवित लागे छे. छतां चोकस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके तेम छे.

G आ जिनपालसूरि ते जिनपतिसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १२९३मां द्वादशकुलकनी टीका रची छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | कुपक्षकौशिकसहस्रकिरण A | १७८८२ | धर्मसागर | | पा. ३, ४–५ जे. |
| १० | कुमताहिविषजांगुली अपरनाम (हितोपदेश) | ५१८ | रत्नचंद्र | १६७७ | पा. ३, लींबडी. |
| ११ | केवलिप्रकरण B (ताड) | | | | P. 5. डे. |
| १२ | केवलिभुक्तिस्त्रीमुक्तिप्रकरण | ९०० | | | वृ. पा. २ |
| | „ संग्रहश्लोक | ६९ | | | वृ. पा. २ |
| १३ | खरतरमतनिरूपण शास्त्र-विधि C | पत्र ६७ | | | अ. २ |
| १४ | गणधरसार्धशतक | २८५ | जिनदत्त D | | पा. १–२. |
| | वृत्ति | ६००० | सुमतिगणि E | १२९५ | पा. १-३ अ. २जे.सु. |

A एनुं बीजुं नाम प्रवचनपरीक्षा छे.

B आ केवालिप्रकरण डेक्कनकॉलेजमां छे. ते संस्कृतमां रचायलुं छे अने ताडपत्रपर लखेलुं छे. माटे ते केवलिप्रकरण छे के केवलिभुक्तिस्त्रीमुक्ति नामनुं प्रकरण छे ते नक्की करवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C आ नाम शक पडतुं लागे छे अने ते अमदावादना चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंधेल छे, तो तेनुं खरूं नाम शुं छे अने ते कोणे रचेल छे ते बाबत नक्की करवा तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

D आ जिनदत्तसूरि माटे पाछळ पाने कालद्वात्रिंशिका उपरनी नोट जुओ.

E सुमतिगणि बे थया छे. पेला सुमतिवाचक ते कथारत्नकोशना करनार देवभद्रसूरिना गुरु हता. देवभद्रसूरिए ते ग्रंथ सं. ११५८ मां रचेल छे. वळी महावीरचरित्रना कर्ता गुणचंद्रगणिना गुरु पण तेज हता. गुणचंद्रगणिए वीरचरित्र सं. ११३९ मां रचेल छे. बीजा सुमतिगणिने माटे पाटण तथा जेसलमेरनी टीपोमां ते जिनपतिसूरिनां शिष्य हता एम नोंधेल छे. जिनपतिसूरि सं. १२७७ सुधी विद्यमान हता.

हवे आ वृत्ति रच्यानो संवत् १२९५ आपेल छे ते परथी आ वृत्ति बीजा सुमतिगणिएज रची छे एम चोक्कस निर्णय थाय छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | लघुवृत्ति | | सर्वराजगणि A | | पा. १ |
| १५ | गणधरवृढशतक B | | सोमचंद्र C | | अ. २ |
| १६ | गुरुतत्त्वप्रदीप D | २४५ | | | पा. १ |
| १७ | चर्चरी | | जिनदत्त | | पा. १ |
| | वृत्ति | ३३५ | जिनपाल | १२९४ | पा. १ को. |
| १८ | चर्चाग्रंथ E | १७०० | | | लींबडी. |
| १९ | चार्चिक F | ४८० | | | पा. ५ |
| २० | चेलप्रतिष्ठाप्रकरण G(ताड) | | | | P. 5 |
| २१ | तपोटमतकुट्टन | ११० | जिनप्रभ H | | पा. ३, जेसल. |

A एमणे पंचलिंगीनी लघुवृत्ति पण रची छे.

B आ ग्रंथ अमदावादना चंचलबाइना भंडारनी टीपमां नोंधेल होवाथी इहां नोंध्यो छे. पण वखते गणधरसार्द्धशतकनुं बीजुं नाम तो नहीं होय ते बाबत तेनी प्रत जोई नक्की करवुं जोईये.

C आ सोमचंद्रसूरि ते रत्नशेखरसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १५०४ मां कथामहोदधि नामे ग्रंथ रचेल छे.

D एनुं बीजुं नाम "उत्सूत्रकंदकुद्दाल" छे.

E आ ग्रंथ लींबडीना भंडारनी टीपमां नोंधायो छे पण ते संबंधी ऐतिहासिक बीना तेमज तेनुं खरूं नाम शुं छे ते जाणवामां आव्युं नथी. ते कोई खरतर आचार्ये रच्यो होवो जोइये.

F सदरहू ग्रंथनुं पण विशिष्टनाम जाणवामां आव्युं नथी.

G आ प्रकरण फक्त पिटर्सना पांचमां रिपोर्टमां नोंधेल छे माटे ते उतारवा योग्य छे.

H जिनप्रभसूरिए विक्रमसंवत् १३६४ मां साधुप्रतिक्रमणनी वृत्ति रची छे. ( जुवो पेज ३० ) जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले ते श्लोक ८०० नुं छे अने जिनप्रभशिष्य गुणप्रभसूरिए रच्युं छे एम नोंध्युं छे. परंतु अमारा जाणवा प्रमाणे तो जिनप्रभसूरिएज रचेल छे अने ते श्लोक ११० जेटलाज प्रमाणनुं छे. वखते गुणप्रभसूरिए तेनी प्रत लखावी होय तो होय ए बाबतनी खात्री करवा माटे जेसलमेरना भंडारमांनी तेनी प्रत नजरोनजर जोवानी अगत्य छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | द्वादशजल्प | पत्र ११ | हीरसूरि A | | अ. १ |
| २३ | दिगंबरखंडन B | १५८ | | | पा. ५ |
| २४ | द्विजवदनचपेटा C | | हेमचंद्र D | | वृ. पा. ३ |
| | " | पत्र ४ | हरिभद्र | | को. |
| २५ | द्विजवदनवज्रसूत्री | | (बौद्धाचार्यकृत) | | वृ. अ. २, पा.४ |
| २६ | धर्मपरीक्षा | १७३९ | अमितगति E दिगंबर | | वृ.पा.४. |

A आ हीरसूरि ते हरिविजयसूरि छे तेओ सं. १५८३ थी सं. १६२५ सुधीमां हता.

B आ नाम पण सामान्य लागे छे माटे तेनुं खरूं नाम शुं छे ते पाटणना भंडारमांनी तेनी प्रत जोई नक्की करवुं जोइये.

C द्विजवदनचपेटाने माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां " द्विजवदनचपेटा विप्रजात्यादिनिराकरणवाच्या " आ रीते उल्लेख छे.

D आ नाम पाटणनी टीपमां नोंधेल छे, कोडायनी टीपमां ते हरिभद्रसूरिए रचेल छे अने पत्र चारनी छे एम जणाव्युं छे. ए परथी एम जणाय छे के वखते ए बन्ने आचार्योए जूदी जूदी चपेटा रची हशे.

E आ अमितगति ते दिगंबर माधवसेनना शिष्य हता. भांडारकर रिपोर्ट १८८२–८३ मां पेज पिस्तालिसमां एमणे सुभाषितरत्नसंदोह नामे ग्रंथ सं. १०५० मां रचेल छे एम जणाव्युं छे. वृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे " धर्मपरीक्षा परसमयासंबंधतावाच्या दिगंबरामितगतिकृता " आवो उल्लेख छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २७ | धर्मपरीक्षा A | १८५० | जिनमंडन B | | पा. २ |
| २८ | धूर्ताख्यान(प्रा.) | ६०२ | हरिभद्रसूरि | | पा.४-५ |
| | निजतीर्थिककल्पितकुमत निरास C | | द्वि.हरिभद्र | | वृ.अ.१ |
| २९ | पर्वरत्नावली | ११४४ | जयसागर D | १४७८ | अ. २ |
| ३० | पर्वविचार | | दयावर्द्धनE | | A. S. |
| ३१ | पर्युषणस्थिति | २५८ | हर्षभूषण | १४८६ | पा.५ |
| ३२ | पर्युषणशतकप्रकरण | पत्र ७ | धर्मसागर | | भावनगर. |
| | वृत्ति | | ,, | | भाव जामनगर |
| ३३ | प्रश्नचिंतामणि | २६०० | वीरविजय | १८६८ | खं. |
| ३४ | प्रश्नोत्तरपंचाशिका | पत्र २० | | | अ. १ |
| ३५ | प्रश्नोत्तरसार्द्धशतक | पत्र ५७ | | | अ. १ |
| ३६ | प्रतिमाहुंडी | २००० | | | A. S. |
| ३७ | पूर्णिमागच्छीयविचार | पत्र ८० | | | A. S. |

A आ ग्रंथ खास उतारवा योग्य छे.

B जिनमंडनगणि सोमसुंदरसूरिना शिष्य हता. एमणे कुमारपालप्रबंध सं. १४९२ मां रचेल छे.

C आनुं बीजुं नाम तत्वबोधप्रकरण छे. बृहट्टिप्पनिकामां तेना माटे आवो उल्लेख छे:-"निजतीर्थिककल्पितकुमतनिरासापरनामक तत्त्वबोधप्रकरणं हरिभद्रीयं आंचलिकपौर्णमतछिद्रं ५०४०".

D आ जयसागर उपाध्याय ते खरतर जिनराजसूरिना शिष्य हता. एमणे सं.१४९५ मां संदेहदोलावली उपर विधिरत्नकरंडिका नामनी लघुटीका रची छे.

E दयावर्द्धनगणि विक्रमनी सोळमी सदीना अंतमां थएला छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३८ | बौद्धमीमांसादलन A | २००० | यशोदेव | | जेसलमेर. |
| ३९ | भविष्योत्तरोद्धार B | | | | बृ. |
| ४० | मिथ्यात्वमथनचर्चरीप्रकरण C | १३० | जिनवल्लभ D | | डे. पेज २०८ |
| ४१ | * वादिविचार (सं.) | | | | डे. पेज ३१ |
| ४२ | * वासौतिकप्रकरण E | ५०० | गुणरत्न F | | डेक्कन. |
| ४३ | * विचारश्रेणि | पत्र ७ | मेरुतुंग | | डेक्कन. |
| ४४ | विनयभुजंगमयूरी G | १२२ | | | पा. ५ |
| ४५ | विसंवादशतक H | | समयसुंदर | १६८५ | रीपोर्ट. ३. |

A आ ग्रंथ हीरालाले नोंध्यो छे ते जो एज नामे अने एज कर्त्ताए रचेलो होय तो ते खास उतारवा योग्य छे, पण अमने ते बाबत शक रहे छे, माटे जेसलमेरमां तेनी प्रतनी तपाशकरवानी जरूर छे.

B भविष्योत्तरोद्धारमाटे बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—"भविष्योत्तरोद्धारः परसमय बहुस्वरूपवाच्योजैनकृतः परसमयज्ञानाय " आ उल्लेख परथी जणाय छे के ते बहु उपयोगी ग्रंथ हशे पण तेनी प्रत हजुलगण क्यांपण उपलब्ध थई नथी.

C. D आ ग्रंथ अमारा धारवाप्रमाणे तो जिनदत्तसूरिकृत चर्चरीज होवी जोइये. छतां डेक्कनकॉ-लेजना रिपोर्टमां तेना कर्त्ता जिनवल्लभ जणाव्या छे माटे तेनी प्रत नजरे जोवानी जरूर छे.

E एनुं बीजुं नाम मुखवस्त्रिका प्रकरण छे.

F गुणरत्नसूरिए सं. १४६६ मां क्रियारत्नसमुच्चयनामे ग्रंथ रचेल छे.

G आ ग्रंथ धर्मसागर उपाध्यायना शिष्य पद्मसागरे विनयविजयजी उपाध्यायना उपर आक्षेपरूपे रचेल छे एम सांभळवामां आव्युं छे.

H विसंवादशतकमां सूत्रोमां परस्पर जे विरोध आवे छे ते बताव्यो छे.

* आ निशानीवाळा त्रणे ग्रंथ डेक्कनकॉलेजमां छे ते उतारवा योग्य छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४६ | शतपदी | ५४५० | महेंद्रसिंह | १२९४ | मू. पा. १-२-५ |
| ४७ | लघुशतपदी | १५७० | मेरुतुंग | | पा. ४. |
| ४८ | श्रावकप्रतिष्ठानिषेधविचार | गा. १२९ | चक्रेश्वर | | अ. २. |
| ४९ | षट्त्रिंशज्जल्पनिर्णय | | भावविजय | | भाव. को. डेक्कन. |
| ५० | षोडशकीवृत्ति A | १००० | धर्मसागर | | डेक्कन. पेज १४७. |
| ५१ | सचित्ताचित्तस्वरूपनिर्णयB | ६०० | | | जेसल. |
| ५२ | सर्वमतनिर्णयC | | | | जेसल. |
| ५३ | सेनप्रश्न | ४३८७ | शुभविजय | | पा. ५. खं. |
| ५४ | संघपट्टकD | | जिनवल्लभ | | पा. १. कोडाय. |
| | वृत्ति | ३६०० | जिनपति | | पा. १. को. डेक्कन. |
| | वृत्ति | १६०० | हर्षराज | | डेक्कन. |
| | लघुवृत्ति | ५०० | लक्ष्मीसेन | १३३३ | पा. ५ |
| | अवचूरि | १२२ | | | पा. ४ |

A ए वृत्तिनुं नाम गुरुतत्वप्रदीपिका छे.

B हीरालालनी टीपमां आ ग्रंथ नोंध्यो छे.

C आ ग्रंथ पण हीरालालेज नोंध्यो छे. जो नाम प्रमाणे ग्रंथ मोजुद होय तो ते खास उपयोगी छे—पण तेनुं तेवुं नाम हशे के नहि ते शक भरेल वात छे.

D संघपट्टकने लघुसंघपट्टक करीने लखेलुं घणी प्रतोमां जणाय छे, छतां बृहत्संघपट्टक हजुलगण क्यां होय एम जाणवामां नथी आव्युं तेथी एम लागे छे के लघुशब्द त्यां बृहत्नी अपेक्षा राख्याबगरज लागु पाडवामां आव्यो होवो जोइये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५५ | संदेहदोलावलि | १९८ | जिनदत्त | | पा.१ |
| | वृत्ति | ४७५० | प्रबोधचंद्रगणि | १३२० | पा.१-४-५.को. |
| | लघुवृत्ति | १५५० | जयसागर उपाध्याय | १४९५ | पा.१ कोडाय. |
| ५६ | संदेहविषौषधि A | १८१२ | | | पा.२-४ |
| ५७ | संदेहसमुच्चय | पत्र ६ | ज्ञानकलश | | पा.४ भ.१-२ |
| ५८ | स्त्रीनिर्वाणप्रकरण B | | | | P. 5 |
| ५९ | स्त्रीमोक्षविवाद | ताड २५ | | | नगीनदास. |
| ६० | हीरप्रश्न | १४०० | कीर्तिविजय | | पा.३, खं. |

A कल्पसूत्रनी वृत्तिनुं नाम पण संदेहविषौषधि छे, छतां पाटणनी टीपोना नोंध प्रमाणे आ ग्रंथ कोई जूदोज लागे छे, माटे अमे ते टीपोनां भरोसे ए ग्रंथने इहां नोंध्यो छे छतां तेनी प्रतो तपासी चोकश निर्णय करवानी खास जरुर छे.

B आ ग्रंथ अमारा धारवा प्रमाणे पूर्वे न्यायना लिस्टमां तेना बीजा वर्गमां जे " स्त्रीनिर्वाण सिद्धि ' नामे ग्रंथ नोंधेल छे तेज होवो जोइये.
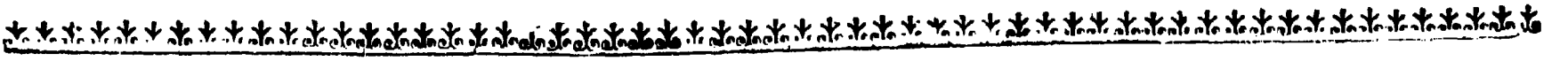
# लिस्ट नंबर ६.
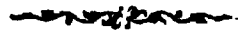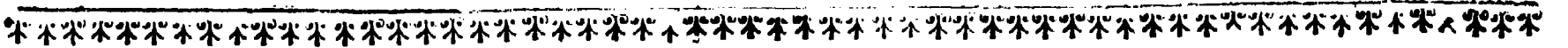
# जैन औपदेशिक.

| नं. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग १ लो.** | | | | |
| | **प्रकरण ग्रंथो.** | | | | |
| | **अ.** | | | | |
| १ | अंतरंगप्रबोध ( प्रा. ) A | | | | पा. ४. |
| २ | अंतरंगसंधि ( प्रा. ) | २०६ | रत्नप्रभ B | १३९२ | पा. २. डेक्कन. |

A आ अंतरंगप्रबोध प्राकृतमां रचायलो छे, पण ते उद्दृश्री भक्षित छे.

B रत्नप्रभ नामना पांच आचार्य थया जाणवामां आव्या छेः—

( १ ) रत्नप्रभसूरि–ते वादिदेवसूरिना शिष्य अने सं. १२३८ मां उपदेशमालानी दोघट्टी वृत्तिना करनार हता.

( २ ) रत्नप्रभसूरि–ते प्रद्युम्नसूरिना वंशमां देवानंदसूरि थया, तेमना बे शिष्य एक परमानंद अने बीजा रत्नप्रभसूरि थया. आ रत्नप्रभसूरि पण तेरमी सदीना आखरीमां होवा जोईये.

( ३ ) रत्नप्रभसूरि–ते यशोदेवसूरिना शिष्य मानदेव अने तेमना शिष्य ते रत्नप्रभसूरि थया. तेओ सं. १३०८ मां विद्यमान हता.

( ४ ) रत्नप्रभसूरि-ते आ अंतरंगसंधिना करनार छे, एम पिटर्सनना रिपोर्ट पांचमांमा जणाव्युं छे.

( ५ ) रत्नप्रभसूरि–ते नरचंद्रसूरिना शिष्य हता. एमणे बीबा गाममां भ्रातृ पंडित गुणभद्र तथा श्रावक. श्राविकाना सहाय्यथी सं. १४१८ मां धर्मविधिप्रकरण तथा तेनी वृत्ति लखावी हती. एटले अंतरंगसंधिना करनार रत्नप्रभसूरिना समयमां अने एमना समयमां थोडुंक अंतर रहे छे. ते परथी आ संधिना करनार आ पांचमां रत्नप्रभसूरि होय तो होय.

आ रीते आ पांच रत्नप्रभसूरिमांना कया रत्नप्रभसूरिए आ अंतरंगसंधि रच्यो छे, ते बाबत चोकस निर्णय थतो नथी. कारण के रिपोर्ट पांचमांना पेज १२७ मां आ ग्रंथनी प्रशस्ति लेतां प्रान्ते ' श्रीधर्मप्रभसूरि रत्नप्रभकृतिरियम् " एवी नोंध करेल छे. ते परथी आ रत्नप्रभसूरि धर्मप्रभसूरिना शिष्य हता के आ बे जणा मळीने आ संधि रचायलो छे, अथवा तो उपर जणावेला पांच आचार्यमांना कया आचार्ये ते रचेल छे ते बाबत शक रहे छे. माटे ए बाबतनो निर्णय तेओ कोई विशेष पुरावो मळ्या वगर थवो मुश्केल छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | आ. | | | | |
| ३ | आगमअष्टोत्तरी | | अभयदेव | | पा. ३-४ को. |
| | वृत्ति | पत्र १२ | चंद्रमुनि A | | अ. २ |
| ४ | आत्मनिंदाष्टक | | | | पा. ३ |
| ५ | आत्मप्रबोध | ६३०८ | जिनलाभ | १८८३ | लीं. को. सुलभ्य. |
| ६ | आत्मशिक्षा | पत्र १० | | | अ. १ |
| ७ | आत्मोपदेशमाला | पत्र १० | | | अ. २ |
| ८ | आदिनाथदेशना | १६३६ | | | खं. भाव. |
| | वृत्ति | पत्र ५१ | | | अ. १ |
| ९ | आराधना | गा. ८५ | अभयदेव | | नगीनदास, जेसल. |
| | ,, (बीजी) | | अजितदेव B | | पा. ३ |
| १० | आराधनापंचक | गा. ३२९ | | | नगीनदास. |
| ११ | आराधनासत्तरी | गा. ७० | कुलप्रभ C | | नगीनदास. |

A आ चंद्रमुनि ते श्रीचंद्रसूरि हशे अने तेओ अभयदेवसूरिना प्रशिष्य होवाथी पोताना दादागुरुना ग्रंथ उपर तेमणे आ वृत्ति रची होवी जोईये.

B पाटणनी टीपमां आ अजितदेव महेश्वरसूरिना शिष्य हता एम जणाव्युं छे. संवत् आपेल नथी.

C कुलप्रभसूरिने माटे जैनागम लिस्ट पेज २४ मां तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | इ. | | | | |
| १२ | इष्टोपदेश | ५१ | दिगं. विद्यानंद | | वृ. पा. ३. डेक्कन. |
| | उ. | | | | |
| १३ | उपदेशकल्पद्रुम A | | (अपूर्ण) | | नगीनदास. |
| १४ | उपदेशकंदलि गा. १२० | १५२ | आसड B | | पा.२.३.४.५सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ७५०० | बालचंद्र C | | वृ.पा.३.४-५सुलभ्य. |
| १५ | उपदेशचिंतामणि | गा. ४५० | | | पा. ३-४ अ. १ |
| | वृत्ति | १२०६४ | आंच.जयशेखर | १४३६ | वृ.पा.१-३-४सुलभ्य. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | पत्र २६० | मेरुतुंग | | अ. २ |
| | अवचूरि | ४३०५ | जयशेखर | १४३६ | पा. ३-४ अ. २ |
| | अवचूरि ( बीजी ) | ११६४ | | | लीं. |
| १६ | उपदेशतरंगिणी | ३३०० | रत्नमंदिर | | जेसलमेर. को. |
| १७ | उपदेशपद | गा.१०४० | हरिभद्र | | वृ. पा. २ को.डेक्कन. |

A आ उपदेशकल्पद्रुम खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे एम पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजामां नोंध्युं छे, पण त्यांपण ते अपूर्ण छे.

B आ आसडकविए विवेकमंजरी विक्रम संवत् १२४८ मां रची छे. तेओ भिल्लमाल कुलना कटुकराजना पुत्र हता.

C बालचंद्रकवि ते हरिभद्रसूरिना शिष्य हता. तेओने कविनी अटकथी विशेष ओळखवामां आवे छे माटे अमे पण तेमने तेज अटकथी ओळखाव्या छे. तेमणे आ वृत्ति रच्यानो संवत् चोकस जणावेल नथी. पण मूळकार आसडकवि सं. १२४८ मां विद्यमान हता, एटले आ वृत्ति संवत् १२७८ ना लगभगमां थई होवी जोईए. पिटर्सन रिपोर्ट पांचमांमा तेमनी वंशावळी आ रीते आपी छे:—

चंद्रगच्छमां पहेला प्रद्युम्नसूरि तेमना पाटे चंद्रप्रभसूरि तेमना पाटे धनेश्वरसूरि थया. धनेश्वरसूरिना चार शिष्य हता. वीरभद्र, देवसूरि, देवभद्र अने देवेंद्रसूरि. देवेंद्रसूरिना पाटे भद्रेश्वरसूरि थया. तेमना पाटे अभयदेवसूरि थया के जेओ आसडकविना गुरु हता. आसडकविना पाटे हरिभद्रसूरि अने हरिभद्रसूरिना पाटे आ बालचंद्रकवि थया छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | १४००० | मुनिचंद्र | ११७४ | बृ. पा. १-४ को. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | ६४१३ | वर्धमान | | जेसलमेर. |
| १८ | उपदेशप्रासाद | पत्र ३१ | | | भाव. डेक्कन. |
| | वृत्ति | १०००० | विजयलक्ष्मी A | | डेक्कन. |
| १९ | उपदेशमाला | गा.५४४ | धर्मदास B | | पा.१-२-३-५ सुलभ्य. |
| | वृत्ति ( प्राकृत ) C | | जयसिंह | ९१३ | बृ. |
| | वृत्ति ( हेयोपादेया ) | ९५०० | सिद्धर्षि | | बृ. पा. २-५ |
| | वृत्ति ( कर्णिका ) | १२२७४ | उदयप्रभ | १२९९ | बृ. पा. २ |
| | वृत्ति ( दोघट्टी ) | ११७६४ | रत्नप्रभ | १२३८ | बृ. पा.१-२-५ डेक्कन. |
| | वृत्ति | ७६०० | रामविजय | १७८१ | जेसल. लींबडी. |
| | विवरण | पत्र१२४ | सर्वानंद | | अ. २ |
| | लघुवृत्ति | ४१७० | सिद्धर्षि | | बृ. पा. १ भाव. |

A आ विजयलक्ष्मीसूरि ते पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजाना पेज २१३ मां जणावेला ढुंढकोत्पत्ति ग्रंथना करनार तेज ए छे के, कोई बीजा छे ते बाबत खरी खातरी आ वृत्तिनो प्रशस्तिलेख जोयाथीज थई शके तेम छे.

B आ धर्मदासगणि गृहस्थावासमां विजयविजयपुरना विजयसेन नामना राजा हता. तेमने वैराग्य थवाथी एमणे श्रीमहावीर स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी. तेमने उग्र तपोबलथी अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. एमनी धर्मदासगणि आ नामथी प्रसिद्धि छे. एमणे स्वपुत्र रणसिंहने प्रतिबोधवाने माटेज आ उपदेशमाला रची हती. एनुं आदिपद "नमिऊण जीणवरिंदे इंदनरिंदाच्चिए तिलोय गुरु" एवुं छे.

C आं वृत्ति फक्त बृहत्टिप्पनिकामां नोंधायली छे, पण ते हजुसुधी क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

बृहत्टिप्पनिकामां एना माटे "उपदेशमालावृत्तिः प्रा. कृष्णर्षिशिष्य जयसिंहसूरिकृता ९१३ वर्षे" आ रीते नोंध करी छे, श्लोकसंख्या आपी नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | अवचूरि | २००० | धर्मनंदन | | पा. ४ डेक्कन. भाव. |
| | अवचूरि | १५०० | जयशेखर | | पा. ४ |
| | अवचूरि | | अमरचंद्र | १५१८ | पीटर्सन रिपोर्ट ५ |
| | गाथाशतार्थ | पत्र २७ | | | अ. १ |
| | कथा | | जिनभद्र A | १२०४ | नगीनदास. |
| | उपदेशमाला B (बीजी) | गा. ५४२ | | | नगीनदास. |
| | उपदेशमाला (त्रीजी) | गा. ३० | पद्मसागर | | जेसलमेर. |
| २० | उपदेशमणिमाला | | | | पा. २ |
| २१ | उपदेशरत्नकोश | गा. ६२ | जिनेश्वर C | | पा. ३-४ भाव. |
| | वृत्ति | २५०० | देवभद्र D | | नगीनदास. |
| २२ | उपदेशरत्नमाला | गा. २५ | | | लीं. |
| २३ | उपदेशरत्नाकर | पत्र १२ | मुनिसुंदर | | पा. ३, को. भाव. |
| | वृत्ति | ७६७५ | स्वोपज्ञ | | पा. ३-४ को. भाव. |

A आ जिनभद्रसूरि शालिभद्रसूरिना शिष्य हता. तेमना माटे पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजाना पेज ८३ मां आ ग्रंथनी नोंध लेतां प्रांते "सालिभद्दसूरीण सिस्सेहिं ३ सिरिजिणभद्दमुणिंदेहिं" आ रीते नोंध्युं छे.

B आ उपदेशमालानी गाथाओ पण पहेली उपदेशमालाने मळतीज छे, पण तेनो आद्यंत तपासतां ते तद्दन जुदीज लागे छे. तेनुं आदिपद "सुयदेवयं च वंदे यासुपशाएण सिक्खियं नाणं" आवुं छे ते परथी आ उपदेशमाला तद्दन जुदीज ठरे छे.

C आ जिनेश्वरसूरि ते कया जिनेश्वरसूरि छे ते बाबत तेवो कोई विशेष पुरावो जाणवामां आव्यो नथी.

D आ देवभद्रसूरि संबंधी पण ऐतिहासिक बीना मळी शकती नथी. पण पं. आणंदसागरजी महाराजना जणाववा मुजब आ देवभद्रसूरि ते संग्रहणीनी वृत्तिना करनार मलधारि देवभद्रसूरि होवा जोईए.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २४ | उपदेशरसायन A | | जिनदत्त | | पा. १ डेक्कन पेज११४ |
| | वृत्ति | २७९० | जिनपाळ | | पा. १ |
| २५ | उपदेशरहस्य | | यशोविजय | | अ. १ को. |
| | वृत्ति | ३७०० | स्वोपज्ञ | | अ. १ को. |
| | उपदेशरहस्य B ( बीजां ) | ५०० | | | जेसलमेर. |
| २६ | उपदेशशतक C | | मेरुतुंग D | | डेक्कन पेज ३३ |
| | उपदेशशतक E (बीजुं) | | विमल | १७९३ | पा. ४-५ |
| | वृत्ति | पत्र ४८ | | | अ. २ |
| २७ | उपदेशसप्ततिका | २८०० F | सोमधर्म | १६०३ | पा. १-४ को. |
| २८ | उपदेशसप्तरी | | | | पा. ३ भाव. |
| | वृत्ति | ७२७५ | क्षेमराज | | पा. ३ भाव. |

A आ ग्रंथने केटलीक प्रतोमां उपदेश रसायनना नामे ओळखावेल छे, त्यारे केटलीक प्रतोमां तेनुं नाम उपदेशरसाळ आप्युं छे. परंतु तपास करतां तेनुं खरुं नाम उपदेशरसाळज छे.

B आ ग्रंथ हीरालाले नोंधेल होवाथी शक पडतो छे, माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

C एनुं अपरनाम "महापुरुषचरित्र" छे. ते संस्कृतमां रचायलुं छे एम डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां जणाव्युं छे ते परथी एम लागे छे के वखते ते टीका हशे. छतां चोकस निर्णय माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

D आ मेरुतुंगसूरि चंद्रप्रभसूरिना शिष्य हता. एमणे प्रबंधचिंतामणि संवत् १३६७ मां रच्यो छे.

E आ शतक आगळ शतकना वर्गमां नोंधवामां आवशे पण तेमां उपदेशनो विषय होवाथी इहां पण नोंध्युं छे.

F आ श्लोकसंख्या कोडायरनी टीपमां नोंधेल होवाथी इहां टांकी छे. पाटणनी टीपमां तेनी श्लोकसंख्या साथे थोडोक तफावत छे. ए बाबत तेनुं चोकस प्रमाण जे मुनिमहाशयने खबर होय तेमने ते अमोने लखी जणाववा कृपा करवी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो स. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २९ | उपदेशसंग्रह | पत्र ७ | | | अ. २ |
| ३० | उपदेशसार A ( गद्य ) | ताड३०६ | | | पा. २ भाव. भरुच. |
| | ,, B ( बीजो ) | पत्र ३३ | | | अ. १ |
| ३१ | उपमितिभवप्रपंचा ( कथा ) | १६०० | सिद्धर्षि | ९६२ | पा. २-३ |
| | ,, उद्धार C | २३२८ | देवसूरि D | | वृ. पा. २ |
| | ,, सारसमुच्चय | १४६० | वर्द्धमान | | वृ. नगीनदास. |
| | ,, सारोद्धार | ५७० | देवेंद्र E | १२८९ | वृ. पा. १-२-५ |
| | ,, सारोद्धार | पत्र ९३ | रत्नसूरि F | | राधनपूर. |

A, B. आ बन्ने ग्रंथ एकज छे के जुदा जुदा छे ते नक्की करवा माटे तेनी प्रतो जोवी जोईए.

C उपमितिभवप्रपंचोद्धार माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" उपमितभवप्रपंचोद्धारः सं. देवसूरिकृतः २३७० अनु. "

D देवसूरि नामना चार आचार्य थया जाणवामां आव्या छेः—

एक देवसूरि जीवानुशासनना करनार वीरचंद्रसूरिना शिष्य हता.

बीजा देवसूरि मुनिचंद्र अने मानदेवसूरिना शिष्य हता, ने त्रीजा देवसूरि ते धनेश्वरसूरिना चार शिष्य. वीरभद्र, देवसूरि, देवभद्र अने देवेंद्रसूरि एमांना बीजा अने चोथा देवसूरि ते विजयसिंहसूरि शिष्य अभयदेव तच्छिष्य श्रीचंद्र अने तेना शिष्य देवसूरि थया अने तेमणेज आ उद्धार रच्यो छे.

E आ देवेंद्रसूरि अमारा धारवा प्रमाणे धनेश्वरसूरिना उपर जणावेल चार शिष्यमांनाज होवा जोईए. छतां चोक्कस पुरावा माटे प्रत जोवी जोईए. एमणे चंद्रप्रभचरित्र संवत् १२६४ मां रचेल छे.

F आ नाम अपूर्ण छे माटे तेनुं खरुं नाम शुं छे ते नक्की करवा माटे राधनपुरना भंडारमांनी तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-ना सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **ऋ.** | | | | |
| ३२ | ऋषिमंडळसूत्र A | गा. २१० | धर्मघोष | | बृ. पा. ३-४ |
| | वृत्ति ( पेली ) | ७५९० | पद्ममंदिर | | अ. २. डेक्कन. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | १८००० | शुभवर्द्धन B | | पा. ३ |
| | वृत्ति ( त्रीजी ) | ४२०० | हर्षनंदन C | | डेक्कन. |
| | वृत्ति ( चोथी ) D | ४००० | आंच. भुवनतुंग | | लीं. |
| | वृत्ति ( पांचमी ) | प. ३६१ | खर. जिनसागर | | अ. १ |
| | वृत्ति ( छठी ) | प. १३५ | कीर्तिरत्न | | अ. २ |
| | अवचूरी | | | | पा. ३ |
| ३३ | ऋषिमंडळस्तव E | गा. २७१ | | | बृ. |
| | वृत्ति | ४६१४ | | | बृ. |
| ३४ | ऋषिमंडलस्तोत्र ( सं. ) F | ७० | मेरुतुंग | | बृ. |

A एना माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " भत्तिभरेतिऋषिमंडलसूत्र गा. २१० " आ रीते नोंध छे. एनुं अपरनाम महर्षिकुल पण छे.

B आ शुभवर्द्धनगणि ते सोमसुंदरसूरिना संतानमांना साधुविजयगणिना शिष्य हता, एटले तेओ विक्रमनी सोलमी सदीना मध्यमां थया होवा जोईए.

C आ हर्षनंदन उपाध्याय अढारमी सदीना शरुआतमां थया छे तेज होवा जोईए.

D आ वृत्ति फक्त लींबडीना भंडारनी टीपमां नोंधी छे, पण ते त्यां श्लोक ४००० सुधीनी एटले दशार्णभद्रनी कथा लगी छे. बाकीनो थोडांक भाग अपूर्ण छे.

E ऋषिमंडल स्तवने प्राकृतमां इसिमंडलस्तव एम कहेवाय छे. बृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे " इसिमंडलेत्यादि ऋषिमंडलस्तव गा. २७१ " आवो नोंध छे. एने महर्षिस्तव पण कहे छे. आ स्तव तेनी वृत्ति साथे बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंध्यो छे, पण हजुसुधी अमोने ते क्यां पण उपलब्ध थयो नथी माटे सदरहु ग्रंथनो तेनी वृत्ति साथे ज्यां होय त्यांथी पत्तो मेळववो जोईए.

F आ स्तोत्र संस्कृतमां रचायलुं छे अने तेनी ७० कारिकाओ छे. बृहत्‌टिप्पनिकामां तेना माटे " ऋषिमंडलस्तवः सं. मेरुतुंगसूरिकृतः कारिका ७० " आवो उल्लेख छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ए. | | | | |
| ३५ | एकोनत्रिंशत्भावना | | | | अ. १ को. |
| | क. | | | | |
| ३६ | कथानककोश | गा. ३० | जिनेश्वर | | लीं. |
| ३७ | कर्पूरप्रकरण | ३५० | हरिसाधु | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | १७६८ | | | पा. १-२ को. |
| | अवचूरि | १२६० | जिनसागर | १५५१ | पा. ४ |
| ३८ | कस्तूरीप्रकरण | का. १८२ | हेमविजय A | | पा. ३ खं. |
| | वृत्ति | पत्र २६ | | | भाव. |
| ३९ | कृष्णयुधिष्ठिरधर्मगोष्ठी B | ४६८ | | | डेक्कन पेज ११४ |
| ४० | कामघट C | | | | डेक्कन पेज ३३ |
| ४१ | क्षपकशिक्षाप्रकरण | पत्र ८ | | | अ. १ |

A आ हेमविजयगणि सेनसूरिनी वारे थएला छे.

B आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ११४ मां नोंधीने नोंध्युं छे के ते संस्कृत, प्राकृत अने गुर्जर भाषामां रचायलो छे. पण ते कोणे रचेल छे ते संबंधी कशी बीना जाणवामां आवी नथी, तेथी शक रहे छे के वखते ते अन्यमतिनो पण होई शके, माटे ए बाबतनी चोकस खातरी करवा माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर छे.

C सदरहु ग्रंथ पण डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां ते प्राकृत अने गुर्जर भाषामां रचायलो छे एम जणाव्युं छे. पण तेना नाम उपरथी शक पडे छे माटे तेनी पण प्रत जोवाथी निर्णय थई शके.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्या छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ग. | | | | |
| ४२ | गाथाकोश A | गा. ६४ | | | डेक्कन. पीटर्सन रि. ५ |
| ४३ | गुणमालाप्रकरण | | रामविजय | | पा. ५. अ. १ डेक्कन. |
| | वृत्ति | २५०० | ( स्वोपज्ञ ). | | पा. ५ अ. १ डेक्कन. |
| ४४ | गुरुतत्त्वव्यवस्था B | ४४८ | | | पा. ५ |
| ४५ | गुरुतत्त्वसिद्धि C | ३७४ | | | पा. ५ |
| ४६ | गौतमपृच्छा | गा. ६४ | | | पा. ३ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ५६०० | खर. श्रीतिलक | | वृ. पा. १-३ |
| | वृत्ति ( बीजी ) | ३८०० | मतिवर्धन | | पा. ३. डेक्कन. |
| ४७ | गौतमभाषित D ( प्रा. ) | का. ४२ | | | वृ. |
| | च. | | | | |
| ४८ | चतुरंगीभावनासंधि | गा. ७४ | | | डेक्कन. |
| ४९ | चारित्रमनोरथमाला | गा. ३६ | | | पा. १-४ |

A आ गाथाकोश ताडपत्रपर लखेल छे एम पिटर्सन रिपोर्ट पांचमामां जणाव्युं छे, तेज रिपोर्टना पेज १५१ मां तेना आद्यन्तनो उतारो लेतां प्रतिज्ञामां एनी गाथा ५६ जणावी छे; त्यारे प्रान्ते १५३ नो अंक लखेल छे. खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारमां ते ६४ गाथानो छे एम जणाव्युं छे. आ रीते तेनी ओछी वधु गाथाओ टांकवानुं कारण शुं छे, तेमज ते चोकस केटली गाथानो छे ते बाबतनी खातरी तेनी प्रत जोयां वगर थवी मुश्केल छे.

B, C. आ बन्ने ग्रंथ पाटणनी टीपमां नोंधेला छे. अने तेमनी श्लोकसंख्यामां तथा नाममां मळतापणुं होवाथी वखते एकज ग्रंथना बे नाम पण होय तो होय माटे तेनी खातरी करवा प्रत जोवानी जरूर छे.

D आ भाषितो बृहत्टिप्पनिकामां नोंधेला छे बाकी क्यां पण उपलब्ध थया नथी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ज. | | | | |
| ५० | जयंतीप्रश्नोत्तरसंग्रह | | मानतुंग | | वृ. डेक्कन. |
| | वृत्ति A | ६६०० | मलयप्रभ | १२६० | वृ. डेक्कन. |
| ५१ | जीवदयाप्रकरण | गा. ११७ | | | नगीनदास. |
| ५२ | जीवसंबोध | १०० | | | डेक्कन. |
| ५३ | जीवानुशासन | | देवसूरि B | | पा. ४ |
| | वृत्ति | २२०० | ( स्वोपज्ञ ) | ११६२ | पा. १–४ |
| ५४ | जीवोपदेशपंचाशिका | | | | पा. २ |
| ५५ | जीवोपालंभप्रकरण | गा. २५ | | | नगीनदास. |
| | ज्ञ. | | | | |
| ५६ | ज्ञानचतुर्विंशतिका ( सं. ) | | | | डेक्कनपेज ३४ |
| ५७ | ज्ञानदीपिका C | | ज्ञानविजय. | | डेक्कन. |
| ५८ | ज्ञानपंचाशिका D | ७५ | | | जेसल. |
| ५९ | ज्ञानादित्यप्रकरण E | गा. ८३ | हरिभद्र. | | पा. २ |

A आ वृत्ति माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब उल्लेख छे:—

" भगवती १२ श. उद्देशगतजयंतीप्रश्नोत्तरसंग्रहप्रकरणस्य मानतुंगीयस्य वृत्तिर्जयंतिचरित्रवाच्या प्रा. मु. १२६० वर्षे मालयप्रभी ६६०० " आ उपरथी आ वृत्ति फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे. तेथी ते उतारो करवा योग्य छे.

B आ देवसूरि वीरचंद्रसूरिना शिष्य हता एटली हकीकत जाणवामां आवी छे.

C ज्ञानदीपिका प्राकृतमां रचाएली छे अने ते टबा साथे छे.

D आ ज्ञानपंचाशिका जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधी छे, पण ते जैनाचार्यकृत छे के अन्यमतिनी करेली छे ते बाबत शक रहे छे माटे तेनी प्रत फरी तपासवी जोईए.

E आ प्रकरण हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंध्युं छे. परंतु तेमां उपदेशनो विषय होवाथी इहां पण नोंधवामां आव्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६० | ज्ञानांकुश A | का. २८ | | | वृ. अ. १ |
| | त. | | | | |
| ६१ | तत्त्वबिंदु B | ७१ | | | वृ. |
| ६२ | तीर्थमालाप्रकरण | पत्र ८ | | | अ. १ |
| | द. | | | | |
| ६३ | दर्शनमाला C ( सं. ) | ७०० | | | जेसल. |
| ६४ | दर्शनशुद्धिप्रकरण D | गा २२६ | चंद्रप्रभ | | वृ. लीं. |
| | वृत्ति | पत्र ८६ | विमलगणि E | ११८४ | पा. १ |
| | वृत्ति | ३८०० | देवभद्र F | | वृ. पा. १-२-४-५ लीं. |
| | अवचूरि | ६४० | | | डेक्कन. |
| ६५ | दशदृष्टांतगीता ( प्रा. ) | पत्र ४ | सोमविमल G | | डेक्कन. |

A आ ज्ञानांकुश कुलक जेवुं लागे छे छतां तेना नाम उपरथी ते ग्रंथ पण होई शके माटे हाल अमे तेने ग्रंथ धारीने इहां नोंध्यो छे.

B आ तत्त्वबिंदु सूक्तरूपे छे.

C आ नामज शक पडतुं लागे छे कारण के ते संबंधी कोई बीजो पुरावो जोवामां आवतो नथी अने ते जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे. तो ते शा बाबतनो ग्रंथ छे अने तेनुं खरू नाम शुं छे ते बाबतनी चोकस खातरी करवा माटे तेनी प्रत फरीथी तपासवानी जरूर छे.

D आ दर्शनशुद्धिनुं नाम संदेहविषौषधि छे. पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजाना पेज १४५ मां एनुं अपरनाम सम्यक्त्वप्रकरण छे एम जणावेल छे, सम्यक्त्व प्रकरणना करनार पण पौर्णमिक चंद्रप्रभसूरि होवाथी आ बन्ने ग्रंथो एकज छे के जुदा जुदा छे ते बाबत शक रहे छे. माटे हालमां अमे तेमना नाम नीचे नोट आपी जुदा जुदा नोंध्या छे. हमणा पंन्यासजी आणंदसागरजी महाराज तरफथी खबर मळी छे के, दर्शनशुद्धिना करनार पौर्णमिक चंद्रप्रभसूरि नथी पण चंद्रसूरि छे.

E आ विमलगणि धर्मघोषसूरिना शिष्य हता.

F आ देवभद्रसूरिनी वधु हकीकत जाणवा माटे आ वृत्तिनी प्रशस्ति जोवानी जरूर छे.

G आ सोमविमलसूरि हेमसोमसूरिना गुरु हता, तेओ तपगच्छना नायक तरीके सं. १६४६ मां विद्यमान हता.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याנो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६६ | दानप्रकाश | ८४० | कनककुशल | १६५६ | पा. ३-४ अ. १ |
| ६७ | दानप्रदीप | ६६६१ | चारित्ररत्न A | | पा. ४-५ |
| ६८ | दानोपदेशमाला B | | | | वृ. |
| | वृत्ति | पत्र ७१ | | | वृ. |
| ६९ | दृष्टांतमाला | | अरिमल्ल C | | पा. ३ |
| ७० | देवतत्त्वप्रकरण D | | | | पा. ३ |
| ७१ | द्वात्रिंशद्द्वात्रिंशिका | पत्र १४ | हेमचंद्र | | अ. १ |
| ७२ | द्वादशभावना ( सं. ) | ६८३ | | | पा. २ |
| | ध. | | | | |
| ७३ | धर्मकल्पद्रुम | ४८१४ | आगमिकउदयधर्म | | पा. ३. खं. अ. २ डेक्कन. |
| ७४ | धर्मतत्त्व E | | | | पा. ३ |
| | वृत्ति | | | | अ. १ |

A आ चारित्ररत्नगणि ते न्यायार्थमंजूषाना करनार हेमहंसगणिना विद्यागुरु तरीके ओळखावेल छे. एटले तेओ विक्रमनी सोळमी सदीनी शरूआतमां थएला छे.

B दानोपदेशमाला तेनी वृत्ति साथे बृहत्टिप्पनिकामां नोंधी छे, पण अमोने हजुसुधी ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

C आ अरिमल्ल ते कोण हता ते संबंधीनी हकीकत जाणवा माटे ग्रंथनी प्रशस्ति जोवानी जरूर छे.

D आ प्रकरण प्राकृतमां रचायलुं छे, पण ते संबंधी विशेष माहिती जाणवामां आवी नथी.

E आ धर्मतत्त्वप्रकरण तेना नाम उपरथी बहु सरस लागे छे, माटे पाटणना भंडारमांथी तथा अमदावादना डेलाना भंडारमांथी तेनी प्रतो मेळवी वृत्ति साथे तेनो उतारो करवानी जरूर छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७५ | धर्मबिंदु A | २७३ | हरिभद्र | | बृ. पा.१-३-५सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ३००० | मुनिचंद्र | | बृ.पा.१भाष.सुलभ्य. |
| ७६ | धर्मरत्न B | गा.१८१ | शांतिसूरि C | | पा. २ मुद्रित. |
| | वृत्ति D | ९६८२ | देवेंद्रसूरि | | बृ. पा. ३ मुद्रित. |
| | लघुवृत्ति | गा. १७१ | शांतिसूरि | | पा. २ |
| ७७ | धर्मरत्नकरंडक | ९५०० | वर्द्धमान | ११७२ | पा. ५. जेसल. |
| ७८ | धर्मविलास | १३३५ | खरतर मतिनंदन | | पा. ४-५ |
| ७९ | धर्मविशेष | गा. ८२ | | | डेक्कन ताड, लीं. |
| ८० | धर्मशिक्षा | का. ४४ | जिनवल्लभ | | लीं. |
| | वृत्ति | प. १२८ | सकलचंद्र | | अ. १-२ |
| ८१ | धर्मामृत | ४७६ | आशाधर E | | पा. ४ |
| | „ ( बीजुं ) | ६० | | | पा. ४ |

A आ धर्मबिंदु हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंध्यो छे, छतां ते उपदेशनो ग्रंथ होवाथी इहां पण नोंध्यो छे.

B एनुं आदिपद " नमिऊण सयलगुणगणरयणकुलहरं विमलकेवलं वीरम् " एवुं छे.

C थारापद्रगच्छना वादिवेताल शांतिसूरि थएला छे ते आ छे के पीपलिया गच्छना स्थापक तरीके ओळखायला शांतिसूरि ते छे ते बाबत चोकस निर्णय थतो नथी. माटे सुज्ञ मुनिमहाशयोने विनंति करवामां आवे छे के जेमणे ए संबंधिनी माहिती होय तेमणे ते अमने लखी जणाववा कृपा करवी.

D बृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे आवो उल्लेख छः—"धर्मरत्नवृत्तिः तपाश्रीदेवेंद्रिया श्राद्ध २१ गुणादिवाच्या ९७००—९६८२"

E आ आशाधर दिगंबर हशे एमणे तर्कामृत नामनो न्यायनो ग्रंथ रचेल छे. (जुओ आ पुस्तकना पेज ९० मां ) तेज आशाधर आ होवा जोईए. छतां चोकस खातरी माटे प्रत जोवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८२ | धर्मोपदेश | ८३३२ | यशोदेव | १३०५ | वृ. |
| | धर्मोपदेश A ( बीजो. ) | | | | |
| | लघुवृत्ति | ता. २२४ | कृष्णर्षिशिष्य जयसिंह. | ९१५ | वृ. पा. २. ली. |
| | धर्मोपदेश ( त्रीजो ) | प. ८५ | मेरुतुंग. | | डेक्कन पे. ११५ |
| | धर्मोपदेश ( चोथो. ) | ७०० | | | डेक्कन. |
| ८३ | धर्मोपदेशमाला B | गा. १०२ | जयसिंह | | पा. २-४ पीं. रि. ५ |
| | वृत्ति | ६६५० | जयसिंह C | | वृ. पा. २-५ |
| | वृत्ति | १३००० | विजयसिंह D | | वृ. पा. २ |
| | धर्मोपदेशमाला ( बीजी. ) E | गा. १०४ | यशोदेव | | वृ. पीटर्सन रि. १ पेज. २५-४७ |

A आ धर्मोपदेशप्रकरण इहां नोंध्युं छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

B आ धर्मोपदेशमालाना आद्यन्तना उतारा नीचे मुजब छेः—
आद्यमां " सिज्झउ मज्झ बि सुयदेवी तुज्झ भरणाउ सुंदरा ज्झत्ति। धम्मोवएसमाला विमलगुणा जय पडाइव्व।" आ गाथा आपीने प्रान्तमां " इयजयपायडकन्हमुणिसीस जयसिंहसूरिणा रइया। धम्मोवएस-माला कम्मक्खयमिच्छमाणेण।" आ उपरथी आ धर्मोपदेशमालाना करनार जयसिंहसूरि ते सं. ९१५ मां धर्मोपदेशनी लघुवृत्तिना करनार कृष्णर्षिशिष्य जयसिंहसूरिज छे. जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां एना कर्ता गोविंदगणि जणाव्या छे, पण ते बाबत तेवुं कोई प्रमाण न मळवाथी ए नाम तदन अप्रमाणिक गणि शकाय तेम छे.

C आ जयसिंहसूरि मूळकारज छे के हर्षपुरीय गच्छमां थएला छे ते छे ते बाबतनो चोकस निर्णय आ वृत्तिनो प्रशस्तिलेख जोया वगर थई शके तेम नथी.

D आ विजयसिंहसूरि मलधारी हेमचंद्रसूरिना शिष्य हता. एटले आ वृत्ति तेमणे विक्रमनी बारमी सदीना आखरीमां रची होवी जोईए.

E आ धर्मोपदेशमालानी आदिनी गाथा पण " सिज्झउ मज्झ वि " एवीज छे, पण तेना प्रान्तनी गाथा जयसिंहसूरिकृत धर्मोपदेशमालाथी तदन जुदी छे. ए बाबतनी खातरी करवी होयतो पिटर्सनना रिपोर्ट पहेलाना पेज २५ मां जुओ. शिवाय तेज रिपोर्टना पेज४७ मां कर्ताना नाम वगरनी एक त्रीजी पण धर्मोपदेशमाला नोंधेली छे. अने तेनी प्रांतनी गाथा उपर जणावेल बे धर्मोपदेशमाला करतां भिन्न छे, छतां ते जुदी जुदी छे के एकज छे ते बाबतनी खातरी करवा तेनी प्रतो परस्पर मेळवी जोवी जोईए.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | न. | | | | |
| ८४ | नरभवदृष्टांतोपनय | | नयविमल | | पा. १ |
| ८५ | नवकारप्रकरण | गा. २७ | | | लीं. नगीनदास. |
| ८६ | नवपदप्रकरण | गा. १४० | जिनचंद्र A | | पा. १-२-४ खं. |
| | वृत्ति (पेली) | २२१० | जिनचंद्र | १०७३ | वृ. पा. २ |
| | वृत्ति (बीजी) | २१३० | देवगुप्त B | १०७३ | वृ. |
| | वृत्ति (त्रीजी) | २६०० | कुलचंद्र | १०७३ | वृ. पा. २ |
| | वृत्ति (चोथी) | ९५०० | यशोदेव | ११६५ | वृ. पा. १-४-५ |
| | वृत्ति (पांचमी) C | ९००० | देवेंद्र | ११८२ | वृ. |
| ८७ | नवविधभावना | २२६ | | | पा. ४ |
| ८८ | नारीबोध (प्रा.) D | ३०० | | | जेसल. |
| ८९ | न्यायधर्मोपदेश | ७८३ | (अपूर्ण) | | डेक्कन. |
| | प. | | | | |
| ९० | पंचनमस्कारफल | गा. ११८ | जिनचंद्र | | लीं. जेसल. |

A आ जिनचंद्रसूरि उकेशगच्छना हता, एमनुं अपरनाम देवगुप्तसूरि छे. तेमनी वंशावळी आ रीते छे:—देवगुप्तसूरि तेमना शिष्य कक्कसूरि तेमना शिष्य सिद्धसूरि तेमना शिष्य देवगुप्तसूरि अने तेमना शिष्य यशोदेवसूरि थया.

B देवगुप्तसूरि ते कक्कसूरिशिष्य सिद्धसूरिना शिष्य छे.

C आ वृत्ति माटे बृहत्टिप्पनिकामां " अभिनवपदवृत्तिः ११८२ वर्षे सूत्रकारदेवेंद्रीया ९००० " आवी नोंध छे.

D आ ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यो छे तेथी शक रहे छे, माटे तेनी प्रत फरीथा तपासवानी जरूर छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९१ | पंचप्रमाणीपंचाशिका | | ककुदसूरि A | | पीटर्सन रि. ५ |
| ९२ | परिग्रहप्रमाण | गा. ८४ | धर्मघोष B | ११८६ | पा. २ पीटर्सन ५ |
| | परिग्रहप्रमाण C ( बीजुं ) | गा. ६४ | मानतुंग | | खं. नगीनदास |
| ९३ | पर्यंताराधना | गा. ८७ | सोमसूरि | | पा. ३-४ अ. १ |
| ९४ | पर्यंतोपदेश D | २४५ | जिनवल्लभ | | लींबडी. |
| ९५ | पुंडरीकस्तव | गा. ११८ | | | खं. नगीनदास. |
| ९६ | पुष्पमाला E | ६२५ | मलधारिहेमचंद्र | | वृ. सुलभ्य. |
| | वृत्ति | १३८६८ | स्वोपज्ञ | ११७५ | वृ. पा. १-२-३-५ |
| | वृत्ति | २००० | साधुसोम F | १५१२ | पा. ३-४ जेसल. डे. |
| | लघुवृत्ति | २३२० | | | भाव. |
| | अवचूरि G | १९०० | आंच. जयशेखर | १४६२ | पा. १ लीं. |

A आ ककुदसूरि ते उकेशगच्छना देवगुप्तसूरिना शिष्य कक्कसूरि थया छे तेज छे. एमनुं प्राकृतमां ककुयसूरि एवुं नाम हतुं. ककुयनुं संस्कृतरूप ककुद एवुं थाय छे. कक्क आ नाम अपभ्रंशथी थयुं होय एम लागे छे. छतां तेज नामथी तेमने वधु ओळखवामां आवे छे.

B आ धर्मघोषसूरि शीलभद्रसूरिना शिष्य हता, एमणे धवलश्रेष्ठिने माटेज आ परिग्रहप्रमाण रच्युं हतुं.

C एनुं बीजुं नाम "द्वादशव्रतनिरूपण" एवुं छे.

D आ पर्यंतोपदेश जूनी गुर्जर भाषामां रचाएलो छे.

E पुष्पमालाने उपदेशमाला पण कहे छे. एनी मूळनी गाथा ५०५ छे.

F डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां एना कर्ता सोमगणि नोंध्या छे पण अमारा धारवाप्रमाणे रिपोर्टकारे तेमनुं अरधुं नाम भूलथी साधुपद ते सोमगणिनुं विशेषण छे एम धारीने छोडी दीधुं लागे छे. छतां सोमगणिए कोई जूदी वृत्ति करी होय तो पण होय माटे डेक्कन कॉलेजमानी प्रत तपाशी जोवानी जरूर रहे छे.

G आ अवचूरि संक्षिप्तवृत्ति रूपे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९७ | पूजाप्रक्रम A | ताड १९ | | | पा. २ |
| ९८ | प्रतिलेखनाप्रकरण | | | | पा. ४ |
| ९९ | प्रबोधचिंतामणि | २०३२ | आंच. जयशेखर | १४६२ | पा. १-३-४ |
| १०० | प्रवचनमाताप्रकरण | पत्र १ | | | अ. १ |
| १०१ | प्रवज्याविधान | गा. २५ | परमानंदसूरि B | | वृ. पीटर्सन ५ |
| | वृत्ति | ४५०० | प्रद्युम्नसूरि | १३३८ | वृ. लीं. डेक्कन. |
| | वृत्ति C | २४८ | जिनप्रभ | | वृ. |
| १०२ | प्रश्नोत्तररत्नमाला | गा. २९ | विमलसूरि | | पा. १-२-३-४मुद्रित. |
| | वृत्ति | ताड ६८ | देवेंद्रसूरि | १४२९ | वृ. पा. २—३ |
| | वृत्ति | पत्र १९१ | मुनिभद्र | | अ. २ |
| | अवचूरि | ४९६ | | | पा. १-३-४-५ |
| | ब. | | | | |
| १०३ | बोधप्रदीपिका D | का. ५२ | | | वृ. |
| १०४ | बोधषट्त्रिंशिका | | | | डेक्कन पेज ३१ |
| | भ. | | | | |
| १०५ | भवभावना. | गा. ५३१ | मलधारिहेमचंद्र | ११७० | वृ. पा. १-२ लीं. सु. |

A आ पूजाप्रक्रम पाटणना बीजा नंबरना भंडारमां ताडपत्रपर लखेलो छे, पण ते बीजे स्थळे उपलब्ध थयो नथी.

B आ परमानंदसूरि माटे आ पुस्तकना पेज ८१ मां तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

C बृहत्टिप्पनिकामां आ वृत्ति माटे "पवजाविहाणवृत्तिः जैनप्रभी २४८" आवो नोंध छे. पण ते अमोने हजुसुधी उपलब्ध थई नथी.

D आ बोधप्रदीपिका सूक्तरूपे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | १२९९० | स्वोपज्ञ | ११७० | बृ. पा. १-२ सुलभ्य |
| | अवचूरि | ४३५ | | | पा. ४ |
| १०६ | भावना A | पत्र २० | अल्लु | | अ. १ |
| १०७ | भावनाद्वात्रिंशिका | | | | डेक्कन. |
| १०८ | भावनाप्रकरण B | ४९४ | | | डेकनताड |
| १०९ | भावनासंधि C | ७७ | देवसूरिशिष्य शिवदेव | | पा. ३ |
| | म. | | | | |
| ११० | मार्गतत्त्वप्रकरण | | | | पा. ३ |
| १११ | मूलशुद्धि D (स्थानप्रकरण) | गा.२१२ | प्रद्युम्नसूरि E | | बृ. पा. २-४-५ |
| | वृत्ति | १३००० | देवचंद्र | | बृ. पा. १-२-४-५ |
| ११२ | मृगापुत्रसंधि F | गा. ६० | | | पीटर्सन ५ |

A आ भावना कदाच गुजराथीमां रचायली होय तो होय. वळी कर्त्तानुं नाम पण विचित्र जेवुं लागे छे माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर रहे छे.

B आ प्रकरण डेक्कन कॉलेजमां ताडपत्रपर छे अने ते संस्कृतमां छे.

C आ भावनासंधि प्राकृतमां छे पण तेनी चोकस गाथा केटली छे ते जाणवामां आवी नथी.

D आ मूळशुद्धिनुं बीजुं नाम स्थानकप्रकरण छे. बृहत्टिप्पनिकामां एना माटे "ठाणावृत्ति-हेमसूरिगुरुदेवचंद्रीया तत्सूत्रं प्रद्युम्नसूरिकृतं १३००० " आवी नोंध छे.

E प्रद्युम्नसूरि माटे आ पुस्तकना पेज १२८ मां तेमना नाम उपरनी नोटमां जणावेला चोथा प्रद्युम्नसूरिनो इतिहास जुओ.

F आ संधि जूनी गुर्जरमां रचायलो छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | य. | | | | |
| ११३ | यतिशिक्षापंचाशिका (प्रा.) | | पृथ्वीचंद्र A | | डेक्कन. |
| ११४ | यदर्थमाला B | ११० | | | रिपोर्ट ५ |
| ११५ | योगशास्त्र C | १२०० | हेमसूरि | | वृ. पा. सुलभ्य. |
| | वृत्ति | १२००० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. सुलभ्य. |
| | अवचूरि | १५०० | | | पा. १-४ |
| | आंतरचैत्यवंदनवृत्ति | १०११ | स्वोपज्ञ | | पा. २ |
| | आंतरश्लोक | | | | पा. २ लीं. |
| | र. | | | | |
| ११६ | रत्नावली D | ४००० | | | जेसल. |
| ११७ | रूपकमाला | | पुण्यनंदन | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | ४०० | समयसुंदर | | डेक्कन. |
| | व. | | | | |
| ११८ | वर्धमानदेशना | ५५०० | शुभवर्धन | १५५२ | पा. ३—४ खं. |

A पृथ्वीचंद्रसूरि बे थया छे एक पृथ्वीचंद्रसूरि पर्युषणा कल्पटिप्पनना करनार अने देवसेनगणिना शिष्य हता. बीजा राजगच्छना पद्मचंद्रना वंशमां थएला अने प्रभानंदना गुरु हता. हवे आ बे पृथ्वीचंद्र सूरिमांना आ पृथ्वीचंद्रसूरि कया छे ते नक्की करवा माटे डेक्कन कॉलेजमांना तेनी प्रत जोवी जोईए.

B यदर्थमालानुं रिपोर्टमां जदर्थमाला एवुं नाम आप्युं छे. आ ग्रंथ वखते व्याकरण विषयनो पण होई शके माटे ते शी बाबतनो ग्रंथ छे तेनी खरी खातरी माटे प्रत जोवानी जरूर रहे छे.

C योगशास्त्रना बार प्रकाश छे. तेना प्रथमना चार प्रकाश ठेर ठेर मळे छे, बाकीना आठ प्रकाश थोडे ठेकाणे मळे छे.

D आ ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यो छे, अने तेना श्लोक ४००० नोंधीने ते त्रुटक छे एम जणाव्युं छे. पण तेना नाममां तथा श्लोकसंख्यामां शक रहे छे, तो तेनुं खरुं नाम शुं छे अने ते शा बाबतनो ग्रंथ छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत फरीथी तपासवी जोईए छीए.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वर्धमानदेशना ( बीजी ) | ४३०० | राजकीर्ति | | डेक्कन. |
| | वर्धमानदेशना ( त्रीजी ) | ३४०० | सर्वविजय | | पा. ४ |
| ११९ | विबुद्धप्रकरण A | पत्र ६३ | | | जेसल. |
| १२० | विवेकमंजरी B | गा.१४५ | आसड | १२४८ | पा. १-२-३ भाव. |
| | वृत्ति | ८००० | बालचंद्र C | १२७८ | पा. १-२-५ लीं. |
| | वृत्ति D ( बीजी ) | | अकलंक E | | वृ. |
| १२१ | विषयपंचाशिका | | | | पा. ४ |
| १२२ | वीतरागविज्ञप्ति | १८४८ | देवेंद्रसूरि | | खं. |
| १२३ | वीरचतुर्मासिकप्रकरण | | | | पा. ३ |
| | वृत्ति | पत्र ७ | | | पा. ३ |
| १२४ | वैराग्यकल्पलता | ६७५० | यशोविजय | | पा. ५. भा. खं. |
| | श. | | | | |
| १२५ | शांतसुधारसभावना | ३५७ | विनयविजय | | पा. ३ |

A आ प्रकरण तेना नाम उपरथी बहुज सरस लागे छे, अने ते जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधायुं छे.

B आसडे पोताना गुरु अभयदेवसूरिना वचनो सांभळी तेना अनुसारे आ विवेकमंजरी रची छे.

C आ वृत्ति करतां कनकप्रभशिष्य प्रद्युम्नसूरि बालचंद्रसूरिना मददगार हता.

D आ वृत्तिमाटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " माणुस्सखित्तेति विवेकमंजरी वृत्तिः १२३-वर्षेऽकलंकदेवीया " आवो नोंध छे. आ नोंधमां रचायाना संवतनो अंक नोंधता छेवटनो अंक भूलथी रह्यो गयो छे. एटले ते सं. १२२९ थी ते सं. १२४० ना अंदर रची होवी जोइये.

E आ अकलंकदेव अमारा धारवामुजब चैत्यवंदनादिसूत्रसाधुश्राद्धप्रतिक्रमण पदपर्यायमंजरीओना करनार तेज होवा जोईए. ( जुओ जैनागम लिस्ट पेज २८ मांनी तेमना नाम नीचेनी नोट ). छतां वखते दिगंबर अकलंकदेवे पण आ वृत्ति रची होय तो होय पण ते अनुपलब्ध होवाथी निर्णय थवो मुश्केल छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति A | ४५० | | | डेक्कन |
| १२६ | शीलप्रकाश | पत्र ९४ | पद्मसागर | | अ. २ |
| १२७ | शीलभावना | | | | वृ. |
| | वृत्ति | ९५७० | रविप्रभ | १२२९ | वृ. |
| १२८ | शीलसंधि | २२८ | जयशेखर शिष्य ईश्वरगणि B | | पा. ४ |
| १२९ | शीलोपदेशमाला | १४५ | जयकीर्ति C | | पा. ३-४ सुलभ्य |
| | वृत्ति | ६९४९ | विद्यातिलक | | पा. ३-४ अ. १ |
| | वृत्ति ( बीजी ) | ४०० | पुण्यकीर्ति | | डेक्कन. |
| | वृत्ति D( त्रीजी ) | | सोमतिलक | १२९४ | वृ. अ. २ |
| १३० | शृंगारवैराग्यतरंगिणी | | सोमप्रभ | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | | | | अ. १ को. |
| १३१ | श्राद्धगुणविवरण | २२२५ | जिनमंडन | १४८९ | पा. ३—४-५ |
| १३२ | श्रावकधर्मप्रकरण E | | हरिभद्र | | पा. २—५ |
| | वृत्ति | १५१३१ | अभयतिलक | १३७७ | पा. २—५ |

A डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां आ ग्रंथने वृत्ति तरीके नोंध्यो छे पण बन्नेना श्लोक मळता होवाथी आपण मूळज हशे एम मालम पडे छे. छतां चोकस निर्णय ग्रंथ जोये थई शके.

B जयशेखरसूरि बे थया छे. एक तपागच्छना नागपुरीय शाखामां थएला छे. तेओ हम्मिरना वखतमां एटले सं. १३०१ थी ते १३६५ सुधीमां विद्यमान हता. बीजा अंचलगच्छना जयशेखरसूरि थया, एमणे जैन कुमारसंभवकाव्य सं. १४३६ मां रच्युं छे. हवे आ ईश्वरगणि उपर जणावेला बे जयशेखरसूरिमांना कया जयशेखरसूरिना शिष्य हता ते जाणवा माटे आ प्रतनी प्रशस्ति तपासवी जोईए.

C जयकीर्त्तिसूरि जयसिंहसूरिना शिष्य हता, एटली हकीकत जाणवामां आवी छे.

D आ वृत्तिनुं नाम शीलतरंगिणी छे, बृहत्टिप्पनिकामां एना माटे "शीलोपदेशमालावृत्तिः १२९४ वर्षे रुद्रपल्लीयश्रीसोमतिलकीया" आवो नोंध छे.

E आ श्रावकधर्मप्रकरण विरहांक छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १३३ | श्रावकप्रबोध | पत्र ३६६ | शुभवर्द्धन | | डेक्कन. |
| १३४ | श्रावकलक्षणसप्तदशक A | १५५५ | | | पा. ४ |
| १३५ | श्रावकविचार B | | | | खं. नगीनदास |
| १३६ | श्रुतास्वादशिक्षा | गा. १६८ | सहजकुशल | | पा. ४ |
| | ष. | | | | |
| १३७ | षष्ठिशतक | गा. १६० | नेमिचंद्र श्रावक | | मुद्रित. |
| | वृत्ति C | | | | को. |
| | अवचूरि | २०० | | | पा. ४ को. |
| | स. | | | | |
| १३८ | सज्जनचित्तवल्लभ | | | | भा. को. |
| १३९ | सद्वृत्तपंचाशिका | का. ५२ | विमलाचार्य | | खं. |
| १४० | सम्यक्त्वकलिका D | ३० | | | जे. |
| १४१ | सम्यक्त्वपरीक्षा E | पत्र ३१४ | विमलसूरि | | डेक्कन पेज ३२ |
| १४२ | सम्यक्त्वप्रकरण | | चंद्रप्रभ F | | वृ. पा. २ |

A आ ग्रंथ संस्कृत प्राकृतमां रचायलो छे.

B आ श्रावकविचार खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे, त्यां पण ते अपूर्ण स्थितीमां छे.

C आ वृत्ति फक्त कोडायना भंडारमां छे.

D आ सम्यक्त्वकलिका हीरालाले नोंधी छे माटे शक पडती छे.

E आ ग्रंथ डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पेज ३२ मां पत्र ३१४ नो नोंध्यो छे पण बीजे कोई पण स्थळे उपलब्ध थयो नथी.

F आ सम्यक्त्व प्रकरणना करनार चंद्रप्रभसूरि ते पौर्णमिक चंद्रप्रभसूरि छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति A | ८००० | खर. श्रीतिलक | १२७७ | बृ. पा. ४ जेसल. |
| | वृत्ति B (बीजी) | १२००० | | | बृ. |
| १४३ | सम्यक्त्वप्रकाश | | | | डेक्कन पेज ११८ |
| १४४ | सम्यक्त्वरत्नमहोदधि | | | | पा. १ |
| १४५ | सम्यक्त्वसप्ततिका C | ८९ | हरिभद्र | | पा. ५ |
| | वृत्ति | ७७११ | संघतिलक D | १४२२ | पा. ३-४ जे. राधन. |
| | अवचूरि | ३५७ | शिवमंडन | | पा. ६ |
| १४६ | सम्यक्त्वालंकार E | पत्र ३३७ | विवेकसमुद्र | | जेसल. बे. |
| १४७ | सम्यक्त्वोद्धार F | | | | जेसल. |
| १४८ | संबोधप्रकरण G | २०५४ | हरिभद्र | | अ. १ डे. |

A आ वृत्ति माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " सम्यक्त्ववृत्तिः सूत्रकार चंद्रप्रभसूरिसंतानीयश्रीतिलकीया १२७७ वार्षिका ८००० " आवी रीते नोंध छे.

B सदरहु वृत्ति पण फक्त बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधेली छे, ते टिप्पनिकामां तेना माटे " सम्यक्त्व-वृत्तिः प्राकृतकथागर्भा १२००० " आवो नोंध छे, कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी. पण ते हजुसुधी अमोने कोइपण भंडारमां उपलब्ध थई नथी.

C एनुं अपरनाम " दर्शनसत्तरी " छे.

D आ संघतिलकाचार्य रुद्रपल्लीय गुणशेखरसूरिना शिष्य अने प्रश्नोत्तररत्नमालानी वृत्तिना करनार देवेंद्रसूरिना गुरु हता.

E आ ग्रंथ जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधेलो छे. पण त्यां सम्यक्त्वालंकारादि आवी रीते आदिपद जोडेल होवाथी बीजा कया कया ग्रंथो छे ते जाणवा माटे प्रत जोवानी जरूर रहे छे.

F आ सम्यक्त्वोद्धार जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यो छे, पण तेनी श्लोकसंख्या के कांइ हकीकत आपी नथी.

G एनुं बीजुं नाम " तत्वप्रकाशक " छे. आ ग्रंथ पूर्वे हरिभद्रसूरिना वर्गमां नोंध्यो छे, छतां ते उपदेशनो होवाथी पुनरपि इहां पण नोंधवामां आव्यो छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४९ | संबोधरसायनपंचाशिका | | नरचंद्र A | | लीं. अ. १ |
| १५० | संबोधसत्तरी | | जयशेखर | | पा. १—३ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | | | को. |
| १५१ | संयममंजरी | गा. ३५ | महेश्वरसूरि | | पा. ४ लीं. |
| | वृत्ति | ६३०० | हेमहंसशिष्य B | | डेक्कन. |
| १५२ | संवेगचूडामणि | गा. ५२ | | | डेक्कन. |
| १५३ | संवेगद्रुमकंदलि | का. ५२ | विमलाचार्य | | वृ. पा. १-५ |
| १५४ | संवेगद्रुममंजरी | पत्र ९. | संयमकवि C | | डेक्कन पेज ६४ |
| १५५ | संवेगमंजरी D | | देवभद्र | | डेक्कन. |
| १५६ | संवेगमाला | का. २५ | दिगं. ब्रह्म | | खं. नगीनदास. |
| १५७ | संवेगरंगशाला | १००५३ | अभयदेववृद्धभ्रातृजिनचंद्र. E | ११२५ | वृ. पा. ५ अ. १ डे. |
| १५८ | साधुतत्वप्रकरण F | | | | पा. ३ अ. २ |

A नरचंद्रसूरि बे थया छे. एक नरचंद्रसूरि मलधारि गच्छना देवप्रभसूरिना शिष्य हता. बीजा नरचंद्रसूरि रत्नप्रभसूरिना गुरु सं. १४१८ मां विद्यमान हता. पण आ नरचंद्रसूरि माटे लींबडीनी टीपमां तेओ कृष्णगच्छना हता, एम जणावेल होवाथी उपर जणावेल बे नरचंद्रसूरिथी जूदाज ठरे छे. पण तेमना संबंधे वधु इतिहास मळी शकतो नथी.

B आ हेमहंसशिष्य ते कोण हता ते जाणवा माटे डेक्कन कॉलेजमांनी वृत्तिनो प्रशस्ति लेख जोवो जोईए.

C सयमकवि वखते अन्यमति तो नहि होय माटे तेनी प्रत तपासवानी जरूर रहे छे.

D आ संवेगमंजरी प्राकृतमां रचायली छे.

E आ जिनचंद्रसूरि ते जिनेश्वरसूरिना शिष्य अने नवांगाभयदेवसूरिना वृद्धभ्रातृ थता हता. पिटर्सने पोताना पांचमा रिपोर्टमां तेओ अभयदेवसूरिना गुरु छे एम नोंधेल होवाथी तेना भरोसे अमे पण जैनागम लिस्ट पेज ६६ मां तेमना नाम नीचेनी नोटमां भूलथी तेमने नवांगाभयदेवना गुरु तरीके जणाव्या छे. पण आ ग्रंथनो प्रशस्ति लेख तपासतां तेओ अभयदेवसूरिना वडील सहोदरज छे एम चोकस निर्णय थाय छे.

F आ प्रकरण वखते हरिभद्रसूरिए रच्युं होय तो होय, पण तेनी खरी खातरी तेना प्रांतमां कंई उल्लेख होय तो थई शके. माटे तेनी प्रत जोवी जोईए.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | | | | म. १ |
| १५९ | सामान्यधर्मोपदेश | पत्र १० | | | म. १ |
| १६० | सिद्धांतरत्नावली | का. ३२ | हेमसूरिशिष्य | | डेक्कन. |
| १६१ | सिंदूरप्रकरण | का. ९८ | सोमप्रभ | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | पत्र १२७ | चारित्रवर्द्धन | | भाव. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | पत्र ४८ | हर्षकीर्ति | | पा. ३ |
| | वृत्ति ( त्रीजी ) | ६०० | खर. जिनतिलक | | लीं. |
| | अवचूरि | १५०० | | | लीं. |
| १६२ | सुजनसप्ततिका A | | | | पा. ३—४ |
| १६३ | सूक्तिद्वात्रिंशिका | | | | पीटर्सन ५ |
| | वृत्ति | १९८ | | | पीटर्सन ५ |
| | ह. | | | | |
| १६४ | हिताचरण ( प्रा. ) | | | | पा. ४ |

A आ सुजनसप्ततिका ते अमारा धारवा मुजब आ पुस्तकना पृष्ठ १४४ मां सुयणासत्तरीना नामे जणावेली तेज हशे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | १२४३२ | सकलचंद्र | १६३० | पा. ४—५ |
| १६५ | हितोपदेशमाला | गा. ५२६ | प्रभानंद | | वृ. रि. ६ |
| | वृत्ति A | ९५०० | परमानंद | १३०४ | वृ. जेसल. |
| १६६ | हितोपदेशामृत B (प्रा.) | ३१०० | परमानंद | | जेसल. |

A आ वृत्ति माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां "हितोपदेशमालावृत्तिःसूत्रकारप्रभानंदभ्रातृ पं. परमानंदीया १३०४ वर्षे ९५००" आवो नोंध छे.

B जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ ग्रंथ ताडपत्रपर लखेलो छे एम नोंध्युं छे. पण तेना कर्त्ताना नाममां शक रहे छे के वखते ते परमानंदसूरिकृत हितोपदेशमालानी वृत्ति तो नहि होय, माटे ते शुं छे तेनी चोकस खातरी करवा तेनी प्रत तपासवानी अगत्य छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** | | | | |
| | **कुलको.*** | | | | |
| | **अ.** | | | | |
| १ | अज्ञातोंच्छग्रहणकुलक | | | | अ. १ |
| | अवचूरि | | | | अ. १ |
| २ | अढारपापस्थानककुलक | पत्र ३ | | | संघात. |
| ३ | अनित्यकुलक A | गा. २२ | | | P. 5. |
| ४ | अनित्यताकुलक B | | | | डेक्कन. |
| ५ | अनर्थदंडपरिहारकुलक | | | | अ. २ |
| ६ | अभयकुलक | | | | राधनपूर. |
| ७ | अभव्यकुलक | | | | अ. १ |
| ८ | अवस्थाकुलक | ७५ | जिनदत्त | | जेसलमेर. |
| ९ | अन्यायच्छेदकुलक | | आनंदविजय | | अ. २ |

* पूर्वाचार्योए उपदेशपर नाना नाना कुलको अनेक रचेलां छे, पण हालमां अमीने जे जे उपलब्ध थयां छे ते ते अनुक्रमवार आ वर्गमां दाखल कर्यां छे. शिवाय मुनिचंद्रसूरिकृत कुलको, देवसूरिकृत कुलको तथा धर्मसूरिशिष्य रत्नसिंहसूरिकृत कुलकोने एकत्रित करी जुदां जुदां पण नोंध्यां छे.

A, B आ बन्ने कुलको अमारा समजवा प्रमाणे एकज हशे एम लागे छे, छतां चोकस निर्णय तेनी प्रतो जोयाथीज थई शके तेम छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याःनो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | आ. | | | | |
| १० | आत्मबोधकुलक A | | | | पिटर्सन रि॰ ५ |
| ११ | आत्मशुद्धिकुलक | | | | जेसलमेर. |
| १२ | आत्मसंबोधकुलक B | गा. २१ | | | पीटर्सन रिपोर्ट ५ |
| १३ | आत्महितकुलक | | | | अ. १ |
| १४ | आत्मानुशासन C (प्रा.) | | | | नगीनदास. |
| १५ | आराधनाकुलक | गा. ८६ | अभयदेव D | | पा. ३ नगीनदास. |
| | „ E (बीजुं) | १७ | | | पिटर्सन रि. ५ |
| १६ | आराधनाविधिकुलक | | | | पा. २ |
| | वृत्ति | ताड१२१ | | | पा. २ |
| १७ | आलोचनाकुलक F | | | | जेसलमेर. |
| | इ. | | | | |
| १८ | इरियावहीकुलक | पत्र २ | | | अ. १ |

A एना आद्यमां "संसारंमि असारे नत्थिसुहं वाहिवेयणापउरे" आवी रीते पिटर्सन रिपोर्ट पांचमांना पेज १११ मां नोंध करी छे.

B एनुं आदिपद "उवसग्गा कहं हुंता" एवुं छे.

C आ आत्मानुशासन प्राकृतमां रचायलुं खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे, पण ते त्यां अपूर्ण स्थितिमां छे.

D आ अभयदेवसूरि ते जिनेश्वरसूरि शिष्य नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरि छे.

E एनुं आदिपद "संघभंते" एवुं छे.

F आ कुलक जेसलमेरनी हंसविजयजी महाराजनी टीपमां नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | उ. | | | | |
| १९ | उत्तमपुरुषकुलक | गा. १४ | | | लींबडी. |
| २० | उत्साहकुलक A | २५ | | | जेसलमेर. |
| २१ | उपदेशकुलक | गा. २२ | देवेंद्रसूरि | | नगीनदास. |
| | उपदेशकुलक B (बीजुं) | ४० | जिनदत्त | | जेसलमेर. |
| २२ | उपदेशमणिमालाकुलक | | जिनेश्वर | | A. S. |
| | क. | | | | |
| २३ | कर्मविपाककुलक | | | | पा. ३ |
| २४ | कालस्वरूपकुलक | | जिनवल्लभ | | डेक्कन पेज २०८ |
| २५ | क्षान्तिकुलक | | रत्नसूरि C | | डेक्कन. |
| २६ | क्षामणाकुलक D | गा. ३६ | | | खं. पिटर्सन रि. ५ |
| | ग. | | | | |
| २७ | गुरुगुणषट्त्रिंशिकाकुलक | गा. ४ | वज्रसेन | | खंबात. |
| | दीपिका | पत्र २१ | रत्नशेखर E | | खंबात. |

A आ कुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे.

B सदरहु कुलक हीरालाले तेना कर्त्ताना नाम साथे नोंध्युं छे, पण कर्त्ताना नाममां शक रहे छे.

C आ नाम कांईक अपूर्ण लागे छे माटे तेनुं. पूर्ण नाम शुं छे ते नक्की करवा माटे डेक्कन कॉलेजमांनी तेनी प्रत जावी जोईए.

D एनुं आदिपद "जो कोई मए जीवो" एवुं छे.

E आ रत्नशेखरसूरि नागपुरीय शाखाना हेमतिलकसूरिना शिष्य अने वज्रसेनसूरिना प्रशिष्य हता. एमणे श्रीपालचरित्र प्राकृतमां सं. १४२८ मां रच्युं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २८ | गुर्वावलिकुलक | पत्र १ | | | अ. १ |
| २९ | गृहस्थधर्मप्रतिपत्तिकुलक | गा. ६० | | | नगीनदास. |
| | „ ( बीजुं ) A | गा. ४२ | | १२८७ | नगीनदास. |
| ३० | गौतमकुलक | | | | पा. ३ |
| | लघुवृत्ति | १२०० | ज्ञानतिलक | १६६० | भाव. जेसल. |
| | च. | | | | |
| ३१ | चतुर्गतिस्वरूपकुलक B | २० | | | जेसल. |
| ३२ | चिंताकुलक | गा. १२ | | | लींबडी. |
| ३३ | चोवीशप्रबंधनिबंधनकुलक | पत्र १५ | | | अ. १ |
| | छ. | | | | |
| ३४ | छोतीकुलक | पत्र ५ | | | जेसल. बे. |
| | ज. | | | | |
| ३५ | जीवकुलक | | नेमिचंद्र | | A. S. |
| ३६ | जीवानुशिष्टिकुलक | गा. २५ | | | नगीनदास. |
| ३७ | जीवोपदेशकुलक | | | | A. S. |
| ३८ | जीवस्थापनाकुलक | | | | पा. १ |
| ३९ | जीवसंख्याकुलक | | नेमिचंद्र | | भरुच. |

A एमां लखमसी श्रावके लीधेलां व्रतोनुं निरूपण छे.

B आ कुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | द. | | | | |
| ४० | दशश्रावकऋद्धिकुलक | | | | भाव. |
| ४१ | दानादिकुलक चार | १२० | देवेंद्रसूरि | | नगीनदास. |
| | वृत्ति | ५५०० | लाभकुशल. | | A. S. 5 |
| ४२ | दानादिकुलक चार | गा. ५० | अशोकमुनि A | | पा. ३—४ रि. 5 |
| | वृत्ति | १२०१६ | देवविजय | १६६६ | पा. ३ |
| | वृत्ति | पत्र ११५ | लाभकुशल | | भाव. |
| ४३ | दानमहिमाकुलक B | ४० | | | जेसल. |
| ४४ | दानशीलतपोभावनाकुलक | गा. २४ | | | P. 5. |
| ४५ | दिनकृत्यकुलक | गा. ५ | | | लींबडी. |
| ४६ | दीक्षाकुलक | | | | रिपोर्ट ६ |
| ४७ | देववंदनकुलक | गा. २८ | | | लींबडी. |
| ४८ | द्वादशकुलक C | | जिनवल्लभ | | पा. १ |
| | वृत्ति | ३३६३ | जिनपाल | १२९३ | पा. १-५ जेसल बे. |
| ४९ | द्वादशभावनाकुलक D | | | | पा. ४ |

A आ अशोकमुनि ते अमारा धारवा मुजब पिटर्सनना रिपोर्ट पांचमांना पेज ओगणत्रीशमां जणावेला अने सं. ११५४ मां ओघनिर्युक्ति सूत्रनी प्रत लखावनार उदयचंद्रगणिना गुरु अशोकचंद्र थया छे तेज होवा जोईए. ते शिवाय आ नामना बीजा कोई आचार्य थया जाणवामां आव्या नथी.

B आ कुलक हीरालाले नोंध्युं छे.

C, D. आ द्वादशकुलक अने द्वादश भावनाकुलक ते एकज छे के जुदां जुदां छे ते नक्की करवा माटे पाटणना भंडारमांनी तेनी प्रतो तपासवी जोईए.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५० | द्वादशव्रतकुलक A | २०० | | | जेसल. |
| ५१ | द्वादशांगीनामग्रंथमानकुलक | पत्र १ | | | अ. १ |
| | **ध.** | | | | |
| ५२ | धर्मकुलक | | | | जेसल. |
| ५३ | धर्माधर्मकुलक B | गा. १८ | जिनप्रभ | | पिटर्सन रि. ५ |
| ५४ | धर्मोपदेशामृतकुलक | | | | अ. १ |
| ५५ | धर्मभावनाकुलक | गा. ३० | जयघोष | | नगीनदास. |
| | **न.** | | | | |
| ५६ | नवकारफलकुलक | | | | जेसल. |
| ५७ | नवतत्वकुलक | ४२ | जयशेखर | | A. S. |
| ५८ | निशाविरामकुलक | | | | अ. १ |
| | **प.** | | | | |
| ५९ | पंचाचारकुलक | गा. ८ | | | नगीनदास. |
| ६० | पंडितमृत्युकुलक C | ५० | | | जेसल. |
| ६१ | परिभोगपरिहारकुलक D | २५ | | | जेसल. |

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ कुलक संस्कृत पद्यमां छे एम जणाव्युं छे. पण अमारा धारवा मुजब प्राये एमां कोईए लीधेला व्रतोनुं निरूपण हशे.

B एनुं आदिचरण " अहजण निसुणिजउ कन्नु धरिजउ धम्माधम्मविचारपुड्ड " एवुं छे.

C, D आ बन्ने कुलको जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यां छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६२ | पर्यंताराधनाकुलक | | | | A. S. |
| ६३ | पुण्यकुलक सटीक | ७५ | | | पा. ३-४ रि. ६ |
| ६४ | पुण्यपापकुलक | गा. १६ | जिनकीर्ति. | | लींबडी. |
| ६५ | पुण्यलाभकुलक | गा. १० | | | लींबडी. |
| ६६ | पूजादिदशाष्टक (सं.) A | | पद्मदेवशिष्य लक्ष्मचंद्र | | पिटर्सन रि. ५ |
| ६७ | प्रणिधानकुलक B | गा. ९० | देवेंद्रसूरि | | नगीनदास. |
| ६८ | प्रतिलेखनाकुलक | गा. १२५ | विजयविमल C | | पा. ३, डेक्कन. |
| | प्रतिलेखनाकुलक (बीजुं) | गा. ३६ | | | लींबडी. |
| ६९ | प्रत्याख्यानादिस्वरूपकुलक | | | | अ.२ |
| ७० | प्रमादपरिहारकुलक | गा. ३३ | | | खंबात. |
| ७१ | प्रमादस्थानप्रकरण | | | | भाव. |
| | भ. | | | | |
| ७२ | भवस्वरूपकुलक | २५ | | | जेसल. |
| ७३ | भावनाकुलकD | २५ | सोमदेव | | जेसल. |
| | भावनाकुलक (बीजुं) | गा.२०२ | | | खंबात. |

A एमां पूजाष्टक, बिंबाष्टक, गुर्वष्टक, उपदेशाष्टक, श्रावकाष्टक, धर्माष्टकद्वय, पापाष्टक, दानाष्टक, शीलाष्टक अने तपोष्टक आवी रीते दश अष्टको छे.

B एनुं अपरनाम "वृद्धचतुःशरण" छे. जैनागम लिस्ट पेज ६८ मां पयन्नाना नामें नोंधेलुं तेज ए छे.

C विजयविमलसूरिए भावप्रकरण सं. १६२३ मां रचेल छे.

D आ भावनाकुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे.

| नं | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७४ | भावविशुद्धिकुलक A | ३० | शिवदेवसूरि | | जेसल. |
| | म. | | | | |
| ७५ | मंगलकुलक B | का. १४ | धर्मसूरि | | पिटर्सन रि. ५ |
| ७६ | मनोनिग्रहभावनाकुलक | | | | A. S. |
| ७७ | महासतीकुलक | | | | पा. ४ |
| ७८ | मिथ्यात्वकुलक | ३० | | | पिटर्सन रि. ५ |
| ७९ | मिथ्यात्वपरिहारकुलक | गा. २६ | | | लींबडी. |
| ८० | मिथ्यादुष्कृतकुलक C | | | | जेसल. |
| ८१ | मुनिवंदनकुलक D | ४० | | | जेसल. |
| ८२ | मृगावतीकुलक | | | | डेक्कन. |
| | व. | | | | |
| ८३ | वंदनकुलक | | | | वृ. |
| | वृत्ति E | ४३७५ | जिनकुशलसूरि F | | वृ. |

A आ कुलक जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायलुं छे.

B मंगल कुलकने "मंगलाष्टक" आ सादा नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे. एना काव्य चौद जणाव्या छे ते प्रशस्तिना काव्यो साथे गणवाथी थाय छे.

C एनुं आदिपद "जो कोइय पाणिगणो" एवुं छे.

D सदरहू कुलक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे. पण शक रहे छे के वखते ते वृहत्-टिप्पनिकामां नोंधेलुं वंदनकुलक तो नहीं होय माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

E वृहत्टिप्पनिकामां आ वृत्ति माटे "वंदनकुलकवृत्तिः श्रीजिनकुशलसूरिकृता ४३७५" आवी रीते नोंध छे.

F आ जिनकुशलसूरि खरतर गच्छना जिनचंद्रसूरिना पाटे थएला छे. एमनाज उपदेशथी तेजपाल मंत्रिए "खरतरवसति" नामनुं चैत्य करावी तेमां शांतिनाथ महाराजना बिंबनी प्रतिष्ठा करावी हती. आ जिनकुशलसूरिने क्लॉटे खरतरगच्छमां पचासमे नंबरे नोंध्या छे. एटले तेओ विक्रम सं. १२७० ना अरसामां विद्यमान हता.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८४ | विचारकुलक | | | | राधनपूर. |
| ८५ | विधवाकुलक | गा. १० | | | लींबडी. |
| ८६ | विषयविनिग्रहकुलक A | | | | वृ. |
| | वृत्ति | १०००८ | मलचंद्र | १३३७ | वृ. |
| ८७ | वीरचरित्रकुलक | | जिनवल्लभ | | पा. ३ |
| ८८ | वैराग्यकुलक | | | | पा. ३ डेक्कन. |
| | ,, (बीजुं) | गा. २३ | | | खं. जेसल. |
| | श. | | | | |
| ८९ | शिवकुलक | | | | राधनपूर. |
| ९० | शीलकुलक | गा. २० | | | लींबडी. |
| ९१ | श्रावककुलक | | | | अ. १ |
| ९२ | श्रावकदिनकृत्यकुलक | | | | पा. ३ |
| | स. | | | | |
| ९३ | संघकुलक | | | | पा. ४, अ. १ |
| ९४ | संज्ञाकुलक | | | | अ. १ |
| ९५ | संविज्ञनियमकुलक | | | | भाव. |
| ९६ | संसारकुलक | | | | अ. १ |
| ९७ | संसारभावनाकुलक | | | | अ. १ |
| ९८ | संसारघोरस्वरूपकुलक B | २५ | | | जेसल. |

A आ कुलक वृहत्टिप्पनिकामां तेनी वृत्ति साथे नोंध्युं छे. ते टिप्पनिकामां तेना माटे " विषयविनिग्रहकुलकवृत्तिः १३३७ वर्षे मालचंद्री १०००८ " आवो नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

B सदरहू कुलक जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायुं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९९ | सम्यक्त्वकुलक | गा. ३५ | अमरचंद्र | | भाव. पि. रि.५ |
| १०० | समताकुलक * | ४० | | | जेसल. |
| १०१ | साधर्मीकुलक | गा. २६ | अभयदेव | | लींबडी. |
| १०२ | साधुधर्मपरिभावना | | | | पा. ४ |
| १०३ | साधुपरीक्षाकुलक * | ४० | | | जेसल. |
| १०४ | साधुयोग्यनियमकुलक | गा. ४७ | | | राधनपुर. |
| १०५ | साधुसामाचारीकुलक | गा. ४६ | सोमसूरि | | लींबडी. |
| १०६ | सामान्यगुणोपदेशकुलक | | | | A. S. 5. |
| १०७ | सिद्धिगतिकुलक * | ६० | | | जेसल. |
| १०८ | सुजनभावनाकुलक | | विजयसिंह | | A. S. |
| १०९ | सुलसाराधनाकुलक* | | | | जेसल. |
| ११० | स्वजीवानुशासनकुलक A | गा. २१ | | | पिटर्सन रि. ५ |
| १११ | स्थापनाकुलक | पत्र १ | | | अ. १ |
| | ह. | | | | |
| ११२ | हितोपदेशकुलक | | | | A. S. |
| | हितोपदेशकुलक ( बीजुं ) | | | | A. S. |

* आ निशाणीवाला कुलको हीरालाले करेली जेसलमेरनी टीपमां नोंधेलां छे.

A आ कुलक पिटर्सनना रिपोर्ट पांचमामां ताडपत्र उपर लखेलुं छे एम तेमां जणाव्युं छे. पनुं आदिपद "निसा विरामे" एवुं छे. ते उपरथी एम लागे छेके निसाविराम कुलकने आ एकज होवुं जोईये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **देवसूरिकृतकुलको*** | | | | |
| ११३ | प्रभातस्मरणकुलक | गा. ३३ | देवसूरि A | | लींबडी. |
| ११४ | मुनिचंद्रगुरुस्तुति | २५ | ,, | | लींबडी. |
| | ,, (प्रा.) | ५५ | ,, | | लींबडी. |
| ११५ | श्रावकधर्मकुलक (प्रा.) | ५७ | ,, | | लींबडी. |
| | **मुनिचंद्रसूरिकृतकुलको‡** | | | | |
| ११६ | अनुशासनांकुशकुलक | गा. २५ | मुनिचंद्र | | लींबडी. |
| ११७ | उपदेशामृतकुलक | गा. २५ | ,, | | लींबडी. |
| | ,, (बीजुं) | गा. ३२ | ,, | | लींबडी. |
| ११८ | उपदेशपंचाशिका | गा. ५० | ,, | | लींबडी. |
| ११९ | धर्मोपदेशकुलक | गा. २५ | ,, | | लींबडी. |
| | ,, (बीजुं) | | ,, | | लींबडी. |
| १२० | प्राभातिकस्तुति (सं.) | का. ९ | ,, | | लींबडी. |
| १२१ | मोक्षोपदेशपंचाशत् (सं.) | | ,, | | लींबडी. |
| १२२ | रत्नत्रयकुलक | गा. ३१ | ,, | | लींबडी. |
| १२३ | शोकहरउपदेशकुलक | गा. ३३ | ,, | | A. S. |

* आ मथाळा नीचे देवसूरिए रचेलां कुलको नोंधवामां आव्या छे.

A आ देवसूरि मुनिचंद्रसूरिना शिष्य हता, मुनिचंद्रसूरिए सं. ११४४ मां उपदेशपदनी टीका रची छे. एटले तेओ सिद्धराजना वखतमां हता.

‡ आ मथाळा नीचे मुनिचंद्रसूरिए रचेलां कुलकोने अनुक्रमवार नोंध्यां छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२४ | सम्यक्त्वोत्पादविधि | गा. २९ | मुनिचंद्र | | लींबडी. |
| १२५ | सामान्यगुणोपदेशकुलक | गा. २५ | ,, | | लींबडी. |
| १२६ | हितोपदेशकुलक | गा. २५ | ,, | | लींबडी. |
| | रत्नसिंहसूरिकृतकुलको§ | | | | |
| १२७ | आत्महितकुलक | गा. ३२ | रत्नसिंह A | १२४८ | लींबडी. |
| १२८ | आत्मानुशास्तिकुलक (सं.) | २५ | ,, | | लींबडी. |
| १२९ | आत्मानुशासनकुलक | गा. ५६ | ,, | | लींबडी. |
| १३० | उपदेशकुलक | गा. २६ | ,, | | लींबडी. |
| १३१ | गुर्वाराधनाकुलक | | ,, | | A. S. |
| १३२ | जिनेंद्रविज्ञप्तिकुलक | गा. ३० | ,, | | लींबडी. |
| १३३ | धर्माचार्यबहुमानकुलक | गा. ३४ | ,, | | लींबडी. |

§ आ मथाळा नीचे रत्नसिंहसूरिकृत कुलको एकत्र करी क्रमवार नोंध्यां छे.

A रत्नसिंह नामना त्रण आचार्य थया जाणवामां आव्या छे:—

एक रत्नसिंहसूरि सैद्धांतिक श्रीमुनिचंद्रसूरिना शिष्य अने सं. १३२५ मां कल्पनिरुक्तना करनार विनयचंद्रसूरिना गुरु हता एटले तेओ विक्रमनी चौदमी सदीमां थयेला छे.

बीजा रत्नसिंहसूरि जयतिलकसूरिना शिष्य अने उदयवल्लभसूरिना गुरु हता. तेमना प्रशिष्य लब्धिसागरसूरिए सं. १५५७ मां श्रीपालकथा रची छे. एटले तेमना दादा गुरु आ बीजा रत्नसिंहसूरि विक्रमनी सोळमी सदीना शरुआतमां थया होवा जोईए.

त्रीजा रत्नसिंहसूरि के जेमणे तपागच्छमां नायक तरीके पंकाता हेमसोमसूरिना वारे सं. १६७१ मां प्रद्युम्नचरित्र नामे महाकाव्य रचेल छे.

हवे आ कुलकोने करनार रत्नसिंहसूरि माटे लींबडीना भंडारनी टीपमां तेओ धर्मसूरिना शिष्य हता, अने तेमणे आ कुलको सं. १२४८ मां रच्यां छे, एम चोकस जणावेल होवाथी तेना अनुसारे तेमनो समय उपर जणावेल त्रण आचार्योना समयथी भिन्न होवाथी आ रत्नसिंहसूरि तदन जूदा ठरे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १३४ | परमसुखद्वात्रिंशिकाकुलक | | रत्नसिंह | | लींबडी. |
| १३५ | पर्यंताराधनाकुलक | गा. १६ | ,, | | लींबडी. |
| १३६ | मनोनिग्रहभावनाकुलक | गा. ४४ | ,, | | लींबडी. |
| १३७ | श्रावकवर्षाभिग्रहकुलक(गद्य) | | ,, | | लींबडी. |
| १३८ | संवेगामृतपद्धति ( प्रा. ) | गा. ११२ | ,, | | लींबडी. |
| १३९ | ,, ( सं. ) | ४३ | ,, | | लींबडी. |
| १४० | संवेगरंगमाला | गा. ५० | ,, | | लींबडी. |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो.** | | | | |
| | **शतको *** | | | | |
| १ | आत्मशिक्षाशतक. | १२५ | | | पा. ४. भाव. |
| २ | आदिनाथदेशनाशतक | | | | पा. ३ |
| ३ | आभाणशतक A | | | | पा. १ अ.१ |
| ४ | इंद्रियपराजयशतक | | | | पा. १-३ |
| ५ | उपदेशशतक B | १०९ | विजयविमल | १७९३ | पा. ४-५ |
| | वृत्ति | पत्र ४९ | | | अ. २ |
| | उपदेशशतक ( बीजुं ) | | मेरुतुंग | | डेक्कन. |
| ६ | ऋषभशतक | का. १२६ | हेमविजयगणि | १६५६ | खं. |
| ७ | कालशतक ( प्रां. ) | | मुनिचंद्र | | पा. ३ |
| ८ | कालविचारशतक | | | | डेक्कन पेज १७२ |
| ९ | त्रिविक्रमशत | पत्र ४ | | | अ. २ |
| १० | दृष्टांतशतक C | | | | वृ. पा. ३ |
| | दृष्टांतशतकD ( बीजुं ) | | तेजसिंह | | डेक्कन. |

* सोनी संख्याने शत कहेवाय छे अने शत जेमां छे ते शतक कहेवाय ते मुजब आ शतको सो श्लोकथी ग्रथित करेला होवाथी शतकना नामे ओळखाय छे.

A आ शतक स्तुतिरूपे छे.

B उपदेशशतक खास उपदेशनो ग्रंथ होवाथी पूर्वे औपदेशिक प्रकरणोना वर्गमां नोंध्युं छे छतां ते शतकना नामथी ओळखावेल होवाथी इहां पण नोंध्युं छे.

C, D. आ बन्ने दृष्टांतशतको एकज छे के जूदा जूदा छे ते माटे बन्नेना आद्यंत तपासवा जोईये.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | दृष्टांतशतक A ( त्रीजुं ) | | नरेंद्रसूरि | | रिपोर्ट ६ |
| | अवचूरी | | | | रिपोर्ट ६ |
| ११ | धनद्त्रिशती B | | धनदराज ( संघपति ) | | पा. १-५ |
| १२ | ध्यानशतक | | | | अ. १ |
| | वृत्ति | पत्र ३८ | | | अ. १ |
| १३ | नागराजशतक | | | | अ. १ |
| १४ | पद्मानंदशतक | | पद्मानंद | | पा. ५ भाव. |
| १५ | पर्वविंशतिशतक | | | | अ. २ |
| १६ | भर्तृहरिशतकत्रय | | भर्तृहरि | | मुद्रित. |
| | वृत्ति | २३०० | धनसार | | A. S. |
| | वृत्ति ( बीजी ) C | ५०० | जिनसमुद्र | | जेसल-बे. |
| १७ | भावशतक | १०१ | समयसुंदर | १६४१ | खंबात. |
| | भावशतक ( बीजुं ) | पत्र ८ | हेमवियज D | | डेक्कन. पेज. १११ |
| | भावशतक E (प्रा.)(त्रीजुं) | | | | जेसल. |

A आ त्रिजा दृष्टांत शतकने छट्टा रिपोर्टमां अवचूरि साथे नोंध्युं छे, पण कर्त्तांना नाम परथी शक रहे छे के बखते आ शतककार नरेंद्रसूरि ते कोइ दिगम्बराचार्य तो होय नहीं माटे तेना प्रांतनो प्रशस्ति लेख तपाशी जोवानी जरूर रहे छे.

B एमां धनदराज कविए रचेलां शृंगार, वैराग्य अने नीतिपर त्रण शतको छे, अने ते भर्तृहरिना शतको जेवा बहु सरस छे.

C आ वृत्ति जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधेली छे. पण अन्यस्थळे उपलब्ध थई नथी.

D डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां आ हेमविजयसूरिने दिगम्बरकृत ग्रंथोनी नोंध लेतां तेमने दिगम्बर तरीके जणाव्या छे, तो ते दिगम्बर हता के श्वेतांबरज छे ते बाबत निर्णय करवा डेक्कन कॉलेजमांनी प्रत मजरे तपासवी जोइये.

E आ भावशतक जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले ते प्राकृतमां छे एम जणाव्युं छे पण टीकाकारनुं नाम अन्यदर्शनी जेवुं लागे छे. माटे तेनी प्रत फरीथी तपासवानी जरूर छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | | मल्लनागकवि | | जेसल. |
| १८ | भावार्थशतक | | | | अ. १ |
| १९ | भावनाशतक | पत्र ४ | | | अ. २ |
| २० | मूर्खशतक | | | | डेक्कन. |
| २१ | योगशतक A | गा. १०१ | हरिभद्र | | नगीनदास |
| २२ | विचारशतक | | समयसुंदर | | अ. १ |
| २३ | विद्वच्छतक | | | | डेक्कन. |
| २४ | विनेयहितशतक | | | | अ. १ |
| | वृत्ति | पत्र ६० | | | अ. १ |
| २५ | विशेषशतक | | समयसुंदर | | अ. १ |
| २६ | विसंवादशतक B | | ,, | | A. H. |
| २७ | विहारशतक | | | | अ. १ |
| | वृत्ति | पत्र ११ | | | अ. १ |
| २८ | वैराग्यशतक | | | | पा. १-३ |
| | वृत्ति | पत्र १९ | गुणविनय C | | अ. १ |

A योगशतक पूर्वे हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंध्युं छे, छतां ते शतकना नामे ओळखातुं होवाथी इहां पण नोंध्युं छे.

B आ शतकमां सूत्रोमां जे परस्पर विरोध आवे छे ते देखाडेल होवाथी पूर्वे खंडन मंडनना ग्रंथोना वर्गमां दाखल थयुं छे.

C आ गुणविनयसूरि जयसोमसूरिना शिष्य हता. एमणे दमयंती कथानी टीका सं. १६४६ मां रची अने विचाररत्नसंग्रह सं. १६५७ मां रच्यो एटले एज समयना लगभगमां आ वृत्ति रची होवी जोइये.

| नं | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्या छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २९ | व्याख्यानविधिशतक | | | | कोडाय. |
| | वृत्ति | पत्र २१ | | | अ. १ |
| ३० | संदेहशतक A | पत्र ८ | | | अ. १ |
| ३१ | संवादशतक | | | | पा. ४-५ |
| ३२ | संवेगशतक B | पत्र ६ | | | अ. २ |
| ३३ | साधुगुणशतक | | | | अ. २ |
| ३४ | सोमशतक | पत्र ९ | | | डेक्कन. |
| | **जूदाजूदा विषयोमां नोंधायेला शतको. *** | | | | |
| १ | ऋषभशतक ‡ | | | | |
| २ | कुमारविहारशतक C | | | | |
| ३ | जिनशतक ‡ | | | | |
| ४ | नेमिशतक ‡ | | | | |
| ५ | प्रश्नषष्टिशतक D | | | | |

A आ संदेहशतक अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां पत्र आठनुं नोंध्युं छे ते परथी शक रहे छे के ते त्यां वृत्ति साथे तो नहीं होय माटे तेनी प्रत जोई नक्की करवुं जोइये.

B आ संवेगशतक ते कदाच वैराग्यशतकनुं बीजुं नाम होय तो पण होय माटे तेनी खरी खातरी तेनी प्रत जोया वगर थई शके तेम नथी.

* आ मथाळा नीचे नोंधेला शतको आगळ ते ते वर्गमां विशेष माहिती साथे नोंधवामां आवशे. इहां फक्त तेमना नाम मात्र दर्शाववामां आव्या छे.

‡ आ निशाणीवाळा शतको स्तुतिरूपमां रचाएलां होवाथी ते स्तुतिग्रंथोना वर्गमां दाखल करवामां आवनार छे.

C आ शतक काव्य रूपे रचेल होवाथी आगळ काव्यना वर्गमां नोंधवामां आवशे.

D सदरहू शतक निमित्तना ग्रंथोना वर्गमां विशेष हकीकत साथे नोंधवामां आवनार छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | वीतरागशतक ‡ | | | | |
| ७ | शृंगारशतक | | | | |
| ८ | षष्ठिशतक A | | | | |
| ९ | सर्वज्ञशतक B | | | | |
| १० | सूर्यशतक ‡ | | | | |

A आ शतकमां उपदेशनो विषय होवाथी पूर्वे औपदेशिकना प्रकरण ग्रंथोमां नोंधायुं छे.

B एमां सर्वज्ञना लक्षणनुं स्वरूप देखाड्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ४ थो. ❀** | | | | |
| १ | अनेक प्रबंध A ( गद्य ) | | | | अ. १ |
| २ | अभयदेवप्रबंध | पत्र ४ | | | पा. ३ |
| ३ | इतिहाससमुच्चय B | ९१८ | | | पा. ४ |
| ४ | उपदेशतरंगिणी | ३३०० | रत्नमंदिरगणि | | पा. १-४ |
| ५ | कीर्तिकल्लोलिनी | पत्र १३ | हेमविजय | | डेक्कन. पेज ६६ |
| ६ | कुमारपालचरित्र ( प्रा. ) | ९५० | हरिश्चंद्र C | | पा. २ |
| | कुमारपालचरित्र ( बीजुं ) | ६०३७ | जयसिंह | १३१३ | पा.४-५ भाव. रि. ३ |
| | कुमारपालचरित्र ( त्रीजुं ) | पत्र ३६ | चारित्रसुंदर | | अ. २ |
| ७ | कुमारपालप्रतिबोध (सं.) D | २५७५ | | | बृ. |
| | कुमारपालप्रतिबोध E | ८८०० | सोमप्रभ | १२४१ | पीटर्सन रि. ५ |

❀ आ वर्गमां अमारा जाणवामां आवेला इतिहासना ग्रंथोने एकत्र करी क्रमवार नोंध्या छे. इतिहासना ग्रंथो प्राये औपदेशिकनेज लगता होय छे, तेथी खास तेमने आ औपदेशिकना पेटामां दाखल करवामां आव्या छे.

A अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां सदरहू नाम टांकेल छे, तो तेमां कया कया प्रबंधो छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत नजरे जोवानी अवश्यकता छे.

B एमां स्वमतीय इतिहासिक विना छे के अन्यमति बाबतज छे ते बाबत शक रहे छे, माटे तेनी पण प्रत जोवी जोइये.

C आ हरिश्चंद्र ते अमारा धारवा मुबज धर्मशर्माभ्युदय महाकाव्यना करनार दिगम्बर हरिश्चंद्रसूरि होवा जोइये.

D एना माटे बृहत् टिप्पनिकामां " कुमारपालप्रतिबोधः संकृतः २५७५ " आवी नोंध छे. पण ते अमोने हजुसूधी क्यां पण उपलब्ध थयो नथी.

E बृहत् टिप्पनिकामां एना माटे नीचे मुजब नोंध छे.

" कुमारपालप्रतिबोधक बहुप्राकृत शतार्थिसोमप्रभसूरिभिः १२४१ वर्षे कृतः ८८०० "

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | कुमारपालप्रबंध | २४५६ | जिनमंडन | १४९१ | पा. २-३-४ डेकन. |
| ९ | कुमारदेवप्रबंध | पत्र १२ | | | अ. १ |
| १० | क्षमर्षिप्रबंध(सं.) | | | | डेकन पेज ३४१ |
| ११ | गुरुगुणरत्नाकरकाव्य A | पत्र १२ | | | डेकन. |
| १२ | गुर्वावली B | ७५८ | मुनिसुंदर | १४६६ | पा. ३-४ लींबडी. |
| | गुर्वावली ( बीजी ) | | धर्मसागर | १६४८ | पा. ३-४ |
| | वृत्ति | ६०६ | स्वोपज्ञ | | पा. ३-४ |
| | गुर्वावली ( त्रीजी ) | गा. ११ | | | लींबडी. |
| १३ | गुर्वावलीविशुद्धि C | ८५० | | | पा. ४ |
| १४ | गुरुस्तुति | का. १८ | | | पिटर्सन रि. ५ |
| १५ | चतुर्विंशतिप्रबंध D | ४००० | राजशेखर | १४०५ | वृ. पा. १-३-४- |
| १६ | चित्रोडमहावीरविहारप्रशस्ति | का.१०४ | चारित्ररत्न | १४९५ | खंबात. |
| १७ | जगडूप्रबंध | पत्र २ | | | लींबडी. |
| १८ | जयसिंहप्रबंध ( गद्य ) | पत्र ५ | | | अ. १ |
| १९ | जिनचंद्रचतुःसप्ततिका | गा. ७४ | जिनकुशल | | लींबडी. |
| २० | जिनप्रभप्रबंध | १४३ | | | पा. ४ |

A एनुं अपरनाम " सोमचरित्र " छे.

B एनुं बीजुं नाम " त्रिदशतरंगिणी " एवुं छे.

C आ गुर्वावलीविशुद्धि ते वखते धर्मसागरसूरि कृत गुर्वावलीनी वृत्ति तो नहि होय माटे तेनी प्रत फरिथी तपासवानी जरूर रहे छे.

D बृहत् टिप्पनिकामां एनामाटे " २४ प्रबंधः ८४ कथाश्चराजशेखरसूरिकृतः " आवो उल्लेख छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २१ | ब्राह्मणप्रबंध A | पत्र ८८ | रत्नमंडण B | | अ. २ जेसल. |
| २२ | देवर्द्धिकथा | पत्र २१ | | | अ. १ |
| २३ | नंदोपाख्यान C | पत्र १० | | | डेक्कन. |
| २४ | नाभिनंदनोद्धारप्रबंध | पत्र ६१ | | | अ. १ |
| २५ | पट्टावली | पत्र १२ | | १७१२ | पा. ४ |
| २६ | पट्टावली D | ४० | जिनदत्त | | जेसल. |
| २७ | पट्टावली सारोद्धार | ३८० | रविवर्द्धन | | डेक्कन. |
| २८ | पूर्वपुरुषप्रबंध ( गद्य ) | पत्र १० | | | अ. १ |
| २९ | पृथ्वीधरचरित्र | | रत्नमंडन | | डेक्कन. |
| ३० | पृथ्वीराजविजय सटीक E | | जोनराज | | डेक्कन. |
| ३१ | प्रबंधकोश | पत्र ५० | चंद्रशेखर F | | अ. २ डेक्कन. |

A एनुं अपरनाम " सुकृतसागर " एवुं छे.

B आ नाम अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी टीपमां नोंध्युं छे. जेसलमेरनी टीपमां हंसविजयजी महाराजे कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी. पण चंचलबाईना भंडारनी टीपमां तेना पत्र २७ नोंध्या छे, माटे ते एकज छे के जूदा जूदा छे ते बाबत नक्की करवा तेनी बन्ने प्रतो तपासवी जोइये.

C आ नंदोपाख्यान अमारा धारवा मुजब अन्यमतिए करेलुं होवुं जोइये.

D आ पट्टावली जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधी छे.

E आ ग्रंथ तेनी टीका साथे डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां नोंधायो छे, पण कर्त्ताना नाम उपरथी ते अन्यमतिकृत होय तेम विशेष संभवे छे.

F आ चंद्रशेखरसूरि विक्रमनी पंदरमी सदीमां थया होवा जोईये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३२ | प्रबंधचिंतामणि A | ५११५ | मेरुतुंग B | | बृ॰ पा. ४ |
| ३३ | प्रबंधपंचक C | ३०० | | | रिपोर्ट ६॰ |
| ३४ | प्रभावकचरित्र | ५७८० | प्रभाचंद्र | १३३४ | पा. ३-४ भाव. |
| ३५ | बप्पभट्टीचरित्र | ६६० | | | लीं॰ डेक्कन. |
| ३६ | बौद्धमतोत्पत्तिप्रकरण D | ४०० | | | जेसल. |
| ३७ | भोजप्रबंध | ३७०० | शुभशील | | लींबडी. |
| | भोजप्रबंध ( बीजो ) | २००० | बल्लाळ | | पा. ४ खंबात. |
| | भोजप्रबंध ( त्रीजो ) | ८५० | मेरुतुंग | | डेक्कन. |
| | भोजप्रबंध ( चोथो ) | | रत्नमंदिर | | अ॰ २ |
| | भोजप्रबंध ( पांचमो ) | | सत्यराजगणि | | अ॰ २ |

A बृहत्‌टिप्पनिकामां एने प्रबंधचूडामणिना नामे नोंध्युं छे. तेना माटे ते टिप्पनिकामां " प्रबंध चूडामणिर्मेरुतुंगसूरियः ३५०४ " आवो नोंध छे.

B आ मेरुतुंगसूरि ते चंद्रप्रभसूरिना शिष्य हता. पिटर्सन रिपोर्ट चोथामां तेमना माटे बुलरे एवी नोंध करी. छे के, तेमणे आ ग्रंथ वि. सं. १३६७ मां रच्यो छे एम तेमां जणाव्युं छे.

C एमां पांच पूर्वाचार्योना प्रबंधो छे. भद्रबाहूप्रबंध, जीवदेवप्रबंध, आर्यमंगुप्रबंध, आर्यखपुटप्रबंध अने पादलिप्तप्रबंध मळी पांच प्रबंधो छे.

D आ प्रकरण जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे तेथी शक पडतुं छे माटे तेनी प्रत नजरे तपासवानी जरूर छे. अने जो ते एज नामथी त्यां मळी आवे तो खास तेनी नकल उतरावी लेवी अगत्यनी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३८ | मंडपीयसंघप्रशस्ति | ३६ | | | पा. ५ |
| ३९ | मुंजराजादिप्रबंध A | पत्र १७ | मेरुतुंग | | पा. ३ |
| ४० | यवनपरिपाट्यनुक्रम | ७२० | दलपतिराय | | डेक्कन. |
| ४१ | रत्नश्रावकप्रबंध | पत्र ४ | | | अ. १ जेसल. |
| ४२ | राजतरंगिणी * | पत्र ३८६ | कल्हण | | डेक्कन. |
| | ,, * बीजी ) | पत्र ४७ | जोनराज | | डेक्कन. |
| | ,, * ( त्रीजी ) | पत्र ६५ | श्रीधर | | डेक्कन. |
| | ,, * संग्रह | पत्र १० | शाहइब्राम | | डेक्कन. |
| ४३ | राजावलीपताका | पत्र ४८ | प्राज्यभट्ट | | डेक्कन. |
| ४४ | लघुपोशालिकपट्टावली | ५०० | | | पा. ५ |
| ४५ | वस्तुपालचरित्र B | ७००० | वर्द्धमानसूरि | * | रिपोर्ट. ६ |
| | वस्तुपालचरित्र ( बीजुं ) | ४८३९ | जयचंद्र शिष्य जिनहर्ष | १४९७ | पा. ५. डेक्कन. |

A आ प्रबंध ते मेरुतुंगसूरिकृत प्रबंधचिंतामणिनो कटको होय तो पण होय माटे तेनी प्रत फरीथी तपासवी जोईये.

* आ निशाणीवाला पांचे ग्रंथ अन्यमतिकृत छे, पण ते खास इतिहासना होवाथी इहां दाखल कर्या छे.

B आ वस्तुपालचरित्र फक्त एसिआटिक सोसायटीना छठा रिपोर्टमां नोंध्युं छे, पण हजो सुधी अमोने ते कोईपण भंडारमां उपलब्ध थयुं नथी.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४६ | वस्तुपालप्रबंध | ७१० | राजशेखर | | पा. ४ |
| | „ (बीजो) | २७५ | | | पा. ५ |
| | वस्तुपालतेजपालप्रबंध(गद्य) | पत्र ६ | | | अ. १ |
| | „ (श्लोकबद्ध) | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ४७ | वस्तुपालप्रशस्ति | १४० | | | पा.१ जेसल. बे. |
| ४८ | विक्रमादित्यचरित्र A | पत्र ७५ | रामचंद्र | | डेक्कन. |
| ४९ | विक्रमप्रबंध | प. १३ | | | डेक्कन. |
| | विक्रमादित्यप्रबंध | | विद्यापतिभट्ट | | अ. २. |
| ५० | विमलचरित्र B | पत्र ४२ | | | अ. १ |
| ५१ | विमलप्रासादप्रबंध | १५० | | | पा.४–५ |
| ५२ | विविधतीर्थकल्प | | जिनप्रभ | | पा. १ डेक्कन. |
| ५३ | बृहत्पोशालिकपट्टावली | | | | पा. ५ |
| | टीका | ६८७ | धनरत्नसूरिशिष्यहर्षकुल | | पा. ५ |
| ५४ | शालिवाहनचरित्र | १८०० | शुभशील | १५४० | पा. ५ |
| ५५ | सद्गुरुपद्धति (ताड) | गा. २६ | | | पीटर्सन रि. ५ |

A आ चरित्र फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे.

B विमलचरित्र अमदावादना डेलाना भंडारमां छे. अन्य स्थळे क्वचितज मळी शके छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५६ | समयमातृका A, | पत्र ४७ | क्षेमेंद्र | | डेक्कन. |
| ५७ | सोल्लकप्रबंध B | | | | डेक्कन. |
| ५८ | स्तंभनपार्श्वप्रबंध | पत्र ९३ | मेरुतुंग | १४०० | पा. ३ |
| ५९ | हरिभद्रकथा | पत्र ४८ | | | डेक्कन |
| ६० | हरिभद्रप्रबंध | पत्र १२ | | | अ. २ |
| ६१ | हरिवंश C | पत्र२३७ | | | डेक्कन. |

A, B आ बन्ने ग्रंथो डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां नोंधेला छे, पण तेमांनी चोक्कस माहिती जाणवा माटे डेक्कन कॉलेजमांनी तेनी प्रतो तपासी जोवानी जरूर छे.

C सदरहू ग्रंथ पण डेक्कन कॉलेजमांज छे. पण ते अमारा धारवा मुजब कोई दिगम्बर आचार्ये रच्यो होवो जोईये. छतां चोक्कस निर्णय माटे तेनी पण प्रत जोवी जोईये.

# चरित्रना ग्रंथो.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.*** | | | | |
| | अ. | | | | |
| १ | अतिमुक्तचरित्र A | ६५० | | | रिपोर्ट ६, जेसल |
| २ | अंबडचरित्र B ( सं. ) | १२६० | मुनिरत्न C | | पा. ३-४-५ खं. |
| ३ | अभयकुमारचरित्र | ९००० | चंद्रतिलक D | | पा. ५ जेसल. |
| | " E ( बीजुं ) | ४००० | | | जेसल. |
| ४ | अमरतेजचरित्र(श्लोकबद्ध ) | | | | भरुच. |
| ५ | अमरसेनवयरसेनचरित्र | | खर. मतिनंदन | | पा. ४ |

* आ वर्गमां जैनाचार्योए संस्कृत प्राकृतमां रचेला तमाम चरित्रना ग्रंथो अनुक्रमवार नोंध्या छे. क्लॉस बीजामां तीर्थंकरचरित्रो नोंधवामां आवशे.

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले सदरहू चरित्र सं. १४२८ मां रचाएलुं छे एम जणाव्युं छे. पण ते शक भरेलुं लागे छे कारण के एसियाटिक सोसायटीना रिपोर्ट छठामां आ चरित्र नोंध्यु छे पण त्यां ते संबंधी कशो उल्लेख जोवामां आवतो नथी. अमारा अनुमान मुजब आ चरित्र रचायानो समय प्राचीन होवो जोईये.

B एमां अंबडक्षत्रिय तथा तेनी बत्रीश पुत्रिओनी उत्पत्ति केम थई ते वात छे.

C मुनिरत्नसूरि ते समुद्रघोषसूरिना शिष्य अने जिनसिंहसूरिना गुरु हता. तेमनी वंशावळी आ रीते छे:—कोटिकगणनी वज्रशाखाना चंद्रगच्छमां पहेला चंद्रप्रभसूरि थया के जेओ पूर्णिमा गच्छना स्थापक हता. तेमना पाटे धर्मघोषसूरि थया. धर्मघोषना पाटे समुद्रघोषसूरि थया. तेमना त्रण शिष्य सूरप्रभ, मुनिरत्न अने तिलकचंद्र आ त्रणमांना बीजा मुनिरत्नसूरिए आ चरित्र रच्युं छे. शिवाय भावी तीर्थंकर श्री अममस्वामिनुं चरित्र जगद्देव प्रधान के जेने हेमचंद्राचार्ये " बालकवि " नुं बिरुद आप्युं हतुं तेनी विनंतिथि वि. सं. १२५२ मां एमणेज रच्युं छे.

D आ चंद्रतिलक उपाध्याय क्यारे थया छे ते संबंधी चोक्कस माहिती मळी नथी.

E आ चरित्रने हीरालाले महाकाव्य तरीके नोंध्युं छे, कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी तेथी शक रहे छे के वखते चंद्रतिलककृत तेज तो आ होय नहीं माटे तेनी प्रत तपासवी जोईए.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | आ. | | | | |
| ६ | आरामशोभचरित्र(श्लोकबद्ध) | पत्र २२ | खर. जिनहर्ष | | राधनपुर |
| | उ. | | | | |
| ७ | उत्तमचरित्र | २७५ | | | पा.३-४ डेक्कन. |
| ८ | उत्तमकुमारचरित्र | ३३० | चारुचंद्रीय | | अ. २ डेक्कन. |
| ९ | उदायनराजचरित्र( श्लोकबद्ध ) | पत्र ४१ | | | अ. १ |
| | ऋ. | | | | |
| १० | ऋषिदत्ताचरित्र A ( प्रा. ) | १५५० | गुणपाल | १२६४ १२८८ | वृ. डेक्कन पेज १६४ |
| | ए. | | | | |
| ११ | एकादशगणधरचरित्र B | ६५०० | देवमत्युपाध्याय | | वृ. |
| | क. | | | | |
| १२ | कनकरथचरित्र | पत्र ६७ | | | अ. १ |
| १३ | कनकावतीचरित्र C | पत्र ३५ | जिनसूरि | | डेक्कन पेज ३६ |

A आ चरित्र फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे, वृहत्टिप्पनिकाकारे नोंध्युं छे पण तेने उपलब्ध थयुं नथी. डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां संवतमां विकल्प जणावेल होवाथी अमे पण बन्ने अंकोथी रचना समय दर्शाव्यो छे.

B आ चरित्र वृहत्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. बाकी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी. एना माटे ते टिप्पनिकामां " ११ गणधरच. सं. खरतरदेवमत्युपाध्यायीयं ६५०० " आवो नोंध छे. एमां श्रीमहावीरस्वामिना गणधरोना चरित्र छे.

C आ कनकावती चरित्र प्राकृत तथा संस्कृत भाषामां रचायलुं छे. एम डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां जणाव्युं छे, पण कर्त्तानुं नाम अपूर्ण लागे छे माटे तेमनुं पुरुं नाम शुं छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत तपांशी जोवानी जरूर रहे छे.

| नं | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४ | कलावतीचरित्र (श्लोकबद्ध) | पत्र ८ | | | अ. १ |
| | " A ( बीजुं ) | ताड ८४ | | | पा. २ |
| १५ | कुर्मापुत्रचरित्र ( सं. ) | २५०० | | | जेसल. |
| १६ | कुवलयमाला ( प्रा. ) | १०००० | उद्योतनसूरि B | ८३५ | बृ. डेक्कन |
| | कुवलयमाला C ( सं. ) | ३८९४ | रत्नप्रभ | | बृ. |
| १७ | कृतपुण्यचरित्र | १६५० | पूर्णभद्र | १२८५ | जेसल. |
| १८ | कृष्णचरित्र D ( प्रा. ) | १४०० | | | डेक्कन. |
| | ग. | | | | |
| १९ | गुणवर्मचरित्र | १९४८ | आंच. माणिक्य सुंदर | | पा. ४-५-६ डे. |
| २० | गुणसुंदरीचरित्र | पत्र १२ | | | जेसल. |

A आ चरित्र पाटणना भंडार नंबर बीजामां ताडपत्रपर लखेलुं छे, पण ते कोणे रचेलुं छे ते तपासवानी अगत्य छे.

B आ उद्योतनसूरि ते प्रथम देवसूरिना शिष्य नेमिचंद्रसूरिना शिष्य हता. आ उद्योतनसूरिनी छठ्ठी पेढ़ेडीए देवसूरिना शिष्य उद्योतनसूरि विक्रमनी बारमी सदीनी शरुआतमां थया, ते परथी तेमनी पहेली पेढ़ेडीए थएला उद्योतनसूरि विक्रमनी नवमी सदीनी शरुआतमां विद्यमान हता. अने तेमणेज आ चरित्र रच्युं छे एम चोकस निर्णय थाय छे. आ उपरथी सदरहू चरित्र बहुज प्राचीन होवा साथे तेनी रचना पण रम्य होवी जोइये. तेनी खरी खात्री माटे डेक्कन कॉलेजमांनी प्रत नजरे तपासवी जोइये.

C आ संस्कृत कुवलयमाला बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण अमोने हजी सुधी क्यां पण उपलब्ध थइ नथी.

D डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां आ चरित्र नोंध्युं छे पण ते स्वमतिकृत छे के अन्यमतिकृत छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत जोवानी जरूर छे. पंन्यास श्री आणंदसागरजी जणावे छे के आ चरित्र तेमना धारवा मुजब श्राद्धदिनकरमांथी उद्धरेलुं होय एम संभव छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | अ. | | | | |
| २१ | जंबूस्वामीचरित्र A | गा.१६४४ | | | बृ. |
| | " B ( बीजुं ) ( प्रा. ) | २६०० | पं. सागरदत्त | १०७६ | बृ. |
| | टिप्पन | ११०० | | | बृ. |
| | जंबूस्वामीचरित्र (त्रीजुं) प्रा. | पत्र ५३ | भुवनकीर्त्ति C | | राधनपूर. |
| | " D ( चोथुं ) ( प्रा.) | ७५० | पद्मसुंदर | | पा. ३-४ सं. |
| | " ( पांचमुं ) ( सं.) | पत्र १४ | | | पा. ३ |
| | " ( छठ्ठुं ) ( गद्य ) | ८९७ | | | पा. ५ भाव. |
| | " ( सातमुं ) | पत्र ११ | सकलहर्ष | | पा. १—४. |
| | " ( आठमुं ) | १३०० | मानसिंह | | डेक्कन. |
| | " ( नवमुं ) | पत्र ५० | | | अ. १ |

A सदरहु चरित्रने माटे बृहट्टिप्पनिकामां " जंबूस्वामीचरित्रं प्रा. ८१ वर्षे गा. १६४४ " आवो नोंध छे. आ नोंधमां रच्यानो संवत् नोंधतां अंतनो एक अंक लखता रही गयो लागे छे अने तेम होय तो आ चरित्र वि. सं. ८१० ना लगभगमां रच्युं होय तेम विशेष संभवित छे, पण ते क्यां पण जोवामां आव्युं नथी.

B आ चरित्र तेना टिप्पन साथे बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. तेना माटे त्यां आ रीते नोंध छे. " जंबूस्वामि च. प्रा. संख्यादिबंधे १०७६ वर्षे पं. सागरदत्तेन कृतं २६०० तस्य टिप्पनं ११०० "

C भुवनकीर्तिसूरि ते सकलचंद्रना शिष्य हता. वेबरे पोताना नोंधमां सकलचंद्र सं. १५२० मां हता एम जणाव्युं छे. ते उपरथी तेमना शिष्य भुवनकीर्तिए आ चरित्र विक्रमनी सोळमी सदीना मध्यमां रच्युं होवुं जोइये. भुवनकीर्तिसूरि दिगम्बर तथा श्वेताम्बर बन्ने आम्नायमां थएला छे, तो आ चरित्रना करनार भुवनकीर्तिसूरि ते कोण हता ते बाबत तेनी प्रत नजरे तपासवाथी निर्णय थइ शके.

D आ चरित्र कथानकरूपे छे भांडारकरे तेने " जंबूअध्ययन " तरीके नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | जयानंदचरित्र | ६७५ | मुनिसुंदर | | पा. ५ अ. १ |
| | " ( बीजुं ) ( गद्य ) | पत्र २१३ | पद्मविजय A | | अ. १ |
| | त. | | | | |
| २३ | त्रिभुवनसिंहचरित्र ( गद्य ) | ६८४ | | | पा. ३ अ. १ |
| २४ | त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र B | २४००० | हेमचंद्र | | सुलभ्य. छपाय छे. |
| | " C ( बीजुं ) | | | | जेसल-बे. |
| | द. | | | | |
| २५ | दमयंतीचरित्र | ताड १२६ | | | पा. २ |
| २६ | दमयंतीप्रबंध ( गद्य ) | पत्र ५० | | | अ. १ |
| | " ( श्लोकबद्ध ) | पत्र २१ | | | अ. १ |
| २७ | दशश्रावकचरित्र | २००० | | | पा. ३ जेसल. |
| | " ( प्रा. ) | ८०० | शुभवर्द्धन | १५४६ | पा. ३ खं. |
| २८ | दृढप्रहारिचरित्र D | ३०० | ( त्रु. ) | | जेसल. |
| २९ | देवकीचरित्र ( प्रा. ) | गा. १०१ | | | नगीनदास. |

A पद्मविजयसूरि माटे यशोविजयजी उपाध्याये रचेला ज्ञानबिंदु प्रकरणना प्रान्ते प्रशस्तिमां तेओ यशोविजयजीना गुरुभाई हता एम जणाव्युं छे.

B एमां त्रेसठ शलाका पुरुषोना चरित्रो छे. हेमचंद्राचार्यजीए एनी रचना गंभीर आशय साथे घणाज सुगम काव्योमां करी छे.

C आ बीजुं त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां ते संस्कृत गद्यमां रचायलुं अने मलधार गच्छना आचार्ये करेलुं ताडपत्र पर लखेलुं छे एम जणाव्युं छे.

D आ चरित्र हीरालाले नोंध्युं छे अने ते त्रुटक छे एम जणाव्युं छे, पण अमारा धारवा मुजब आ दृढप्रहारिनी कथा उद्धरेली होवी जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्याॱनो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ध. | | | | |
| ३० | धन्नाचरित्र | १३०० | जिनकीर्ति A | | पा. ४-५-६ लीं. सुलभ्य. |
| | धन्यशालिचरित्र B | १४६० | पूर्णभद्र C | १२८५ | बृ. जेसल-बे. |
| | धन्यचरित्र ( गद्य ) | ९००० | ज्ञानसागर | | भाव. |
| | धन्यचरित्र | १००० | दिगं. गुणभद्र | | लीं. खं. |
| ३१ | धम्मिलचरित्र ( श्लोकबद्ध ) | ३५०० | आंच.जयशेखर | १४६२ | लीं. खं. |
| | धम्मिलचरित्र ( सं. ) | ४७८ | | | पा. ४, लीं. |
| | न. | | | | |
| ३२ | नरब्रह्मचरित्र ( सं. ) | पत्र ९२ | | | अ. १ |
| ३३ | नरवर्मचरित्र * | ५०० | मुनिसुंदर | | जेसल. |
| ३४ | नवनंदचरित्र * | १००० | | | जेसल. |
| ३५ | नागकुमारचरित्र | ५०० | रत्नयोगींद्र D | | नगीनदास. |
| ३६ | नागदत्तचरित्र * ( प्रा. ) | १००० | | | जेसल. |

A आ जिनकीर्तिसूरि ते सोमसुंदरसूरिना पांच शिष्यमांना एक हता. एमणे पोताना नवकारस्तव उपर सं. १४९४ मां टीका रची छे. वेबरे आ चरित्र रच्यानो चोकस संवत् १४९७ आप्यो छे. शिवाय चंपकश्रेष्ठिकथा, श्रीपालगोपालकथा तथा दानकल्पद्रुम विगेरेना करनार पण आज जिनकीर्तिसूरि छे.

B आ चरित्र माटे बृहत्टिप्पनिकामां " धन्यशालिभद्रचरित्रं पूर्णभद्रगणिना १२८५ वर्षे कृतं श्लोक १४६० " आवो नोंध छे.

C हीरालाले करेली टीपमां आ चरित्रना कर्त्ता देवगुप्तशिष्य भद्रगुप्त रुद्रपल्लीय छे एम नोंधीने ते रच्यानो संवत् १४२८ नोंध्यो छे. पण आ बिना तदन शक पडती लागे छे. कारण के बृहत् टिप्पनिकामां एना कर्त्ता पूर्णभद्र नोंध्या छे, अने हंसविजयजी महाराजनी टीपमां पण तेज नाम आपेल छे. माटे एना कर्त्ता पूर्णभद्रज ठरे छे.

* आ निशाणीवाळा त्रणे चरित्रो जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्या छे तेथी तेमना नाममां तथा कर्त्ताना नाममां शक रहे छे, माटे तेनी प्रतो फरीथी नजरे जोवानी जरूर रहे छे.

D आ रत्नयोगींद्र अमारा धारवा मुजब कोइ दिगंबर होवा जोइये, छतां ते कोण हता तथा आ चरित्र तेमणे क्यारे रच्युं छे ते बाबतनो निर्णय खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारमांनी तेनी प्रत नजरे जोया वगर थवो मुश्केल छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | प. | | | | |
| ३७ | पद्मचरित्र A ( प्रा. ) | १०००० | विमलसूरि | ६० | बृ. पा. १-२-३-४ |
| | ,, ( सं. ) | २२०० | देवविजय | | अ. १ डेक्कन. |
| ३८ | पद्मावतीचरित्र ( प्रा. ) | पत्र १४४ | | | डेक्कन पेज ३७ |
| ३९ | पांडवचरित्र ( सं. ) | ९८८४ | मल. देवप्रभ B | | बृ. सुलभ्य. |
| | ,, बीजुं ( गद्य ) | ९५०० | देवविजय | १६६० | पा. ३ |
| | ,, उद्धार | पत्र ३३ | जयानंद | | राधनपूर. |
| ४० | पुंडरीकचरित्र | ३३०० | कमलप्रभ | १३७२ | बृ. पा. ४-५ |
| ४१ | पूर्वर्षिचरित्र | ५७७४ | प्रद्युम्न | १३०४ | पा. ४ |
| ४२ | पृथ्वीचंद्रचरित्र C (प्रा.) | ७५०० | शांतिसूरि | ११६१ | बृ. पा. १-४ |

A एनुं अपरनाम रामचरित्र छे. एने जैन रामायण पण कहेवामां आवे छे. आ चरित्र गाथाबद्ध होवा साथे वैराग्यरसथी पूरित छे. नादिल वंशना विमलाचार्ये महावीरस्वामिना निर्वाणथी ५३० मे वर्षे एटले विक्रम सं. ६० मां आ चरित्रनी रचना करी. तेथी आ चरित्र अत्यंत प्राचीन समयमां थएलुं छे. एम चोकस साबीत थाय छे. कारण के देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमणे विक्रम सं० ५२३ मां सूत्रो पुस्तकारूढ कर्या तो ते समयथी पण ४६३ वर्ष पहेलां आ चरित्र रचायलुं छे. पण दिलगिरी छे के आवां प्राचीन चरित्र तेनी गेर संभाळ अने ज्ञाननी ओछासने लीधे क्वचितज जोवामां आवे छे.

B आ मलधारि देवप्रभसूरि कोना शिष्य हता ते बाबत चोकस निर्णय थतो नथी. कारण के पिटर्सन रिपोर्ट चोथामां तेमनी वंशावळी आ रीते आपी छेः—कोटीकगणनी मध्यमशाखा, श्रीप्रश्नवाहनकुल, हर्षपुरीयगच्छमां ( १ ) अभयदेवसूरि थया तेमना पाटे हेमसूरि के जेओ सिद्धराजना समकालीन हता. तेमना पाटे विजयसिंहसूरि तेमना पाटे चंद्रसूरि तेमना पाटे मुनिचंद्रसूरि थया. आ मुनिचंद्रसूरिना शिष्य ते आ पांडवचरित्रना करनार देवप्रभसूरि छे एम जणाव्युं छे. पण रिपोर्ट त्रीजाना पेज २७५ मां न्यायकंदलिनी प्रशस्तिमां आ देवप्रभसूरि मुनिचंद्रसूरिना “क्रमिक” हता एम जणाव्युं छे. ते उपरथी तेओ मुनिचंद्रसूरिना धर्मसहोदर हता अगर तेमना पाटे थएला हता ते बाबत शक रहे छे. वळी एज रिपोर्टना पेज १३२ मां पांडवचरित्रना प्रांते प्रशस्तिमां आ देवप्रभसूरि देवानंदना शिष्य हता आवी नोंध करेली छे. माटे आ देवप्रभसूरि कोना शिष्य हता ते बाबत चोकस पुरावो जे मुनि महाशयना जाणवामां होय तेमने ते अमोने लखी मोकलवा कृपा करवी. एवी अमारी तेमने नम्र प्रार्थना छे.

C एना माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां “पृथ्वीचंद्रचरित्रं प्रा. मु. गाथादिमयं ११६१ वर्षे शांतिसूरिभिः कृतं ७५०० आवो नोंध छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | टिप्पनक A | ११०० | कनकचंद्र | १२२६ | बृ. |
| | संकेत (विषमपद व्याख्या) B | ५९५ | रत्नप्रभ | | बृ. |
| | पृथ्वीचंद्रचरित्र (बीजुं) | २८७४ | | | पा. ४ जेसल. |
| | ,, (त्रीजुं) गद्य | पत्र २०२ | रूपविजय | | अ. १ |
| | ,, (चोथुं) | ९९८ | माणिक्यसुंदर | | पा. ३ |
| | ,, (पांचमुं) | पत्र १५५ | लब्धिसागर | | अ. १ |
| | ,, (छठ्ठुं) | पत्र २१ | | | अ. २ भरूच |
| ४३ | प्रत्येकबुद्धचरित्र (प्रा.) | ६०५० | श्रीतिलक | १२६१ | बृ. पा. १-४ सुलभ्य |
| ४४ | प्रबोधिचरित्र (प्रा.) | ३०० | | | जेसल. |
| ४५ | प्रद्युम्नचरित्र | | रत्नसिंह C | १७६१ | अ. १ लीं. पी. दि. ५ |
| | ,, (बीजुं) | ७००२ | रविसागर | १२०७ | पा. ४ |
| | ,, (प्रा.) (त्रीजुं) | पत्र ६० | | | पा. ४ |
| | ,, (सं.) (चोथुं) | | सोमकीर्ति | | अ. १-२ भाव. |

A, B आ बन्ने ग्रंथो बृहत्टिप्पनिकामां नोंध्या छे, पण अमोने क्यां पण उपलब्ध थया नथी.

C अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां कर्त्तानुं नाम रत्नचंद्र आप्युं छे, माटे त्यांनी प्रत तपासी जोवानी जरूर छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | प्रद्युम्नचरित्र ( पांचमुं ) | पत्र १०७ | महसेन A | | अ. २. |
| ४६ | प्रभावतीचरित्र B | २२०० | | | जेसल. |
| | ब. | | | | |
| ४७ | बाहुबलिचरित्र C ( सं. ) | ५०० | | | जेसल. |
| | भ. | | | | |
| ४८ | भरतचरित्र D ( प्रा. ) | | | | डेक्कन. |
| ४९ | भरताष्टक | पत्र ४८ | | | अ. १ |
| ५० | भविष्यदत्ताख्यान | २००० | महेश्वरसूरि | | लीं. |
| ५१ | भव्यकुटुंबचरित्र | | | | पा. ४ |
| ५२ | भुवनभानुचरित्र ( गद्य ) | १८५० | इंद्रहंस | १५५४ | पा. ४ लीं. खं. |
| ५३ | भुवनसुंदरीचरित्र E | १०३५० | विजयसिंह | ९७५ | बृ. नगीनदास भाव. |

A महसेन आ नाम फक्त अनुयोगद्वारचूर्णिना प्रांते जोवामां आव्युं छे ते शिवाय बीजा कोइ महसेनाचार्य थया जाणवामां आव्या नथी. पण कदाच अनुयोगद्वारना चूर्णिकार महसेनगणि एटले जिनदासगणि महत्तर जो आ चरित्रना करनार होय तो ते विशेष संभवे तेम छे. कारण के जिनदास गणिना गुरुनुं नाम पण प्रद्युम्नक्षमाश्रमणज हतुं. तो ते मुजब आ चरित्र तेमना शिष्ये रच्युं होवुं जोइये. जिनदासगणि याकिनीसूनु हरिभद्रसूरिथी पण अगाऊ थइ गएला छे माटे आ चरित्र तेमणेज रच्युं छे के बीजा कोइ महसेन नामना आचार्ये रच्युं छे ते बाबत चोकस खात्री करवा चंचलबाईना भंडारमांनी एनी प्रत नजरे तपासवानी आवश्यकता छे. पं. आणंदसागरजी महाराज जणावे छे के प्राये आ ग्रंथ दिगंबरकृत होय तेम तेना कर्त्ताना नाम उपरथी जणाय छे. वळी भावनगरना विद्याप्रसारक वर्गे छपाव्युं पण छे एम तेमनी स्मृतीमां छे.

B, C आ चरित्रो जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यां छे तेथी शक पडता छे.

D आ भरतचरित्र फक्त डेक्कन कॉलेजमां छे, माटे उतारवा योग्य छे.

E एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छेः—

"भुवनसुंदरी च. प्रा. गाथाबद्धं नइनकुलीयश्रीविजयसिंहाचार्यैः ९७५ वर्षे कृतं गा. ८९११"

| नं | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | म. | | | | |
| ५४ | मुनिपतिचरित्र ( प्रा. ) | गा. ६४४ | ( द्वि. ) हरिभद्र | ११७२ | पा. ३-४ |
| | „ ( सं. ) | ३२०० | जंबूनाग | १००५ | बृ. पा. ४ खं. के. |
| ५५ | मनोरमाचरित्र A ( प्रा. ) | १५००० | वर्द्धमान | ११४० | बृ. |
| ५६ | मलयसुंदरीचरित्र ( प्रा. ) | २४३० | आगमिक जयतिलक | | पा ४-६ भाव. सुलभ्य |
| | „ ( प्रा. ) | गा. १२९६ | | | र्ली. |
| ५७ | महानरेंद्रकेवलिचरित्र | पत्र ३१ | | | अ. २ |
| ५८ | महापुरुषचरित्र B ( प्रा. ) | ११४८० | शीलाचार्य | ९२५ | बृ. पा. ४ जे.-बे. |
| | „ C ( प्रा. ) बीजुं | गा ८७९० | आम्रसूरि | | बृ. |
| | „ ( सं. ) त्रीजु | २३३६ | मेरुतुंग | | पा. ४-५ अ. १ |
| ५९ | महीपालचरित्र | २७०० | वीरदेवगणि D | | बृ. पा. ३-४ |
| | „ गा. ५९९ | ८९५ | चारित्रसुंदर | | पा. ५ खं. |

A सदरहू चरित्रने माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " मनोरमाचरित्रं प्रा. मु. गाथामयं च ११४० वर्षे श्रीअभयदेवसूरिशिष्यवर्द्धमानसूरीयं १५००० " आवो नोंध छे. पण ते अमोने हजी सुधी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

B एना माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां " महापुरुषचरित्रं प्रा. मु. शलाकापुरुषवृत्तवाच्यं ९२५ वर्षे शीलाचार्यैः कृतं १०००० " आवो नोंध छे.

C आ बीजुं महापुरुषचरित्र फक्त बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंध्युं छे, बाकी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी. तेना माटे ते टिप्पनिकामां आवो नोंध छे. " महापुरुषचरित्रं प्रा. ६३ शलाकापुरुषवृत्तवाच्यं आम्रकृतं गा. ८७९० श्लोक १००५० " पण अमारा धारवा मुजब आ बन्ने एकज हशे.

D आ वीरदेवगणिए मलधारि अभयदेवसूरिने मंत्रविद्या शिखवाडी हती. अभयदेवसूरिने मलधारि आ बिरुद गुजरातना कर्णराजाए आप्युं हतुं. कर्णराजा सं. ११२० थी ११५० सुधी हतो. ते उपरथी आ वीरदेवगणि अभयदेवसूरिना समकालिन हता. एम चोकस निर्णय थाय छे.

| कूटी | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६० | मृगध्वजचरित्र | गा. ८३ | पद्मकुमार | | लीं. |
| ६१ | मृगापुत्रचरित्र (प्रा.) | ५० | | | पा. ४ |
| ६२ | मृगावतीचरित्र | २५०० | मल. देवप्रभ | | पा. ४ अ. १-२ डे. |
| | य. | | | | |
| ६३ | यशोधरचरित्र | ३७० | हेमकुंजर | | पा. ४ |
| | ,, (बीजुं) | | वादिराज A | | पिटर्सन रि. ५ |
| | ,, (त्रीजुं) | ६०० | माणिक्यसूरिB | | अ. २ डेक्कन. |
| | ,, (चोथुं) | ३५० | देवसूरि | | डेक्कन. |
| | ,, (पांचमुं) | १३५० | क्षमाकल्याण | | लीं. डेक्कन. |
| | ,, (छठ्ठुं) | पत्र ३५ | सोमकीर्ति | | डेक्कन. |
| | ,, (सातमुं) | ८६० | (दिगं)सकलकीर्ति | | पा. ४. |
| ६४ | युगप्रधानचरित्र C | ६००० | | | जेसल. |
| | र. | | | | |
| ६५ | रत्नचूडचरित्र | पत्र ५३ | राजवर्द्धन | | अ. २ |
| ६६ | रसमंजरीचरित्र | पत्र २१५ | माणिक्यचंद्रD | | अ. २ |

A आ वादिराज दिगम्बराचार्य हता. एमनो रचेलो बीजो ग्रंथ श्रीपार्श्वनाथकाकुत्स्थ चरित्र छे.

B आ माणिक्यसूरि ते खरतर जिनहंससूरिना शिष्य अने गुणरत्नसूरिना गुरु हता. पिटर्सने तेमने खरतरगच्छनी पट्टावलीमां ६० में नंबरे नोंध्या छे.

C आ चरित्र जेसलमेरनी टीपमां हंसविजयजी महाराजे नोंध्युं छे. एमां श्रुतकेवलि स्थूलिभद्र पर्यंत युगप्रधानोना चरित्रो संस्कृत प्राकृतमां रचायला छे, एम तेमां जणाव्युं छे.

D माणिक्यचंद्रसूरि ते राजगच्छना प्रद्युम्नसूरिथी नवमे पाटे थएला सागरचंद्रसूरिना शिष्य हता. एमणे सं. १२७६ मां दीव बंदरमां रही श्रीपार्श्वनाथचरित्र रच्युं छे. शिवाय काव्यप्रकाशसंकेत तथा कुबेरपुराण पण तेमणेज रचेलां छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६७ | राजहंसचरित्र ( श्लोकबद्ध ) | पत्र २७ | | | अ. १ |
| ६८ | रामचरित्र ( गद्य ) | ५००० | दयाविजयगणि | १६५२ | पा. ३. अ. १. |
| | ,, ( बीजुं ) | | विजयसेन A | | डेक्कन. |
| ६९ | रूपसेनचरित्र | २६७० | रविसागर | १६३६ | पा. ३-४-५. |
| | ,, ( बीजुं ) | ११८५ | जिनसूरि | | पा. ४ खं. डे. |
| ७० | रोहणीचरित्र B ( प्रा. ) | १००३ | | | नगीनदास. |
| | ल. | | | | |
| ७१ | ललितांगनरेश्वरचरित्र | पत्र ३४ | | | डेक्कन. |
| | व. | | | | |
| ७२ | वज्रचरित्र ( प्रा. ) | ताड १६ | | | पा. २ नगीनदास. |
| ७३ | वरदत्तचरित्र C ( गद्य ) | ३००० | | | जेसल. |

A आ विजयसेनसूरि नागेंद्रगच्छना कलिकालगौतम हरिभद्रसूरिना शिष्य हता. आ विजयसेनसूरिए आसडे करेली विवेकमंजरीने शुद्ध करवामां तेमने मदत करी छे. एटले तेओ सं. १२६० ना लगभगमां विद्यमान हता.

B आ चरित्र फक्त खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारमां छे, बाकी क्यां पण उपलब्ध थवुं नथी. माटे ते उतारो करवा लायक छे.

C आ चरित्र संस्कृत गद्यमां छे एम हीरालाले नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७४ | वसुदेवहिंड A ( प्र. खंड ) | १७००० | संघदास | | बृ. पा. १-४-६अ. १ |
| | „ B ( द्वि. खंड) | ११००० | धर्मसेन | | बृ. पा. १-४-६ अ. १ |
| ७५ | विक्रमचरित्र | ६०२० | रामचंद्र | १४९० | पा. ३ ख. |
| | „ | ५३०० | देवमूर्ति | १४९६ | डेक्कन. |
| ७६ | विजयचंद्रकेवलिचारित्र | १०५० | वीरदेव | ११८७ | बृ. पा. ३-५ |
| | „ (बीजुं) | पत्र ६० | आमसूरि C | | राधनपुर. |

A, B वसुदेवहिंडि माटे बृहत्टिप्पनिकामां " वसुदेवहिंडि प्रथमखंडं संघदासवाचककृतं ११००० वसु. द्वितीयखंडं अपराचार्यकृतं ६६०० वसु. मध्यमखंडं संग्रहणीकं ९००० आ रीते नोंध छे. " आ नोंधमां द्वितीयखंड पछी मध्यमखंड नोंधेल होवाथी आ नोंधमां नोंध्या शिवायना बीजा खंडो होय तेम संभव थाय छे. पण ते बृहत्टिप्पनिकाकारने पण उपलब्ध थया नथी एम मालम पडे छे. बृहत्-टिप्पनिकाकारे द्वितीयखंड पछी मध्यमखंड नोंध्युं छे, त्यारे पाटण, अमदावाद आदिनी टीपोमां प्रथमखंड, मध्यमखंड अने द्वितीयखंड आवी रीते मध्यमखंडने प्रथमखंड साथे नोंध्युं छे. पिटर्सने वसुदेवहिंडिनी नोंध लेतां पोताना त्रीजा रिपोर्टना पेज १९६ मां तेना प्रथमखंड, द्वितीयखंड अने तृतीयखंड एम त्रण खंडो जणाव्या छे. द्वितीयखंडने शरुआतमां द्वितीयखंड तरीके नोंधीने प्रांतमां मध्यमखंडना नामे ओळखावी प्रथम तथा द्वितीयखंडनी श्लोकसंख्या १७८०० जणावी छे. तेमज तृतीयखंडना प्रारंभमां तृतीयखंड तरीके नोंधी प्रांतमां मध्यमखंडनुं नाम आप्युं छे. श्लोकसंख्या नोंधी नथी.

आ रीते जुदा जुदा नोंधो उपरथी वसुदेवहिंडिना चोकस खंड तथा तेनी श्लोकसंख्या माटे जबर शक रहे छे. अमारा धारवा मुजब एना एकोत्तेर लंभको छे. तेमांथी चुमालीस लंभकोमां प्रथमखंड अने द्वितीयखंड ( मध्यमखंड ) समाप्त थाय छे. आ बन्ने श्लोक १७००० प्रमाणना छे. आ प्रथम अने मध्यमखंडने प्रथमखंड तरीकेज मानीए तो मानी शकाय तेम छे. पिटर्सने जेनी तृतीयखंड तरीके मान्यता करी छे ते तृतीयखंड नहि पण श्लोक ११००० वाळुं धर्मसेनगणि महत्तरे रचेलुं द्वितीयखंड होवुं जोइये. अने जो तेमज होय तो अमदावादना डेलाना भंडारमां बन्ने खंडो मोजुद छे तो त्यांनी प्रत नजरे तपासी जोयाथी चोकस खुलासो थइ शके तेम छे. छतां आ बाबत सुज्ञ मुनिवर्ग महाशयोने विनंति करवामां आवे छे के जे महाशय पासे आ संपूर्ण ग्रंथ मोजुद होय अगर जेमने आ संबंधी चोकस माहिती जाणवामां आवी होय तेओश्रीए ते अमोने लखी जणाववा कृपा करवी एवी अमारी तेमने नम्र प्रार्थना छे.

C आ नाम शक पडतुं लागे छे, कारण के आ नामना कोइ आचार्य थया जाणवामां आव्या नथी. वखते महापुरुषचरित्रना करनार आम्रसूरिए आ चरित्र रच्युं होय तो होय, छतां चोकस निर्णय राधनपुरना भंडारमांनी तेनी प्रत जोया वगर थई शके तेम नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७७ | विनयंधर चरित्र (प्रा.) | | | | पा. २. |
| ७८ | विंशतिस्थानचरित्र | २८०० | जिनहर्ष | १५०२ | पा. २-४. |
| | श. | | | | |
| ७९ | शांबचरित्र A (स.) | १०७० | | | वृ. |
| ८० | शालिचारित्र | १२२४ | धर्मकुमार | १३३४ | वृ. पा. १-३ |
| | अवचूरि | पत्र ११ | | | खंबात. |
| ८१ | शालिचरित्र (प्रा.) | गा. १७९ | | | नगीनदास. |
| | ,, | पत्र ३० | विनयसागर | | अ. १ |
| | ,, | पत्र २४ | प्रभाचंद्र | | अ. २ |
| | ,, | पत्र २० | सोमप्रभ | | अ. २ |
| ८२ | शालिवाहनचरित्र B | १८०० | शुभशील | १५४० | पा. ५ |
| ८३ | श्रावकचारित्र | | | | जेसल-बे. |
| ८४ | श्रीचंद्रकेवलिचरित्रC(प्रा.) | ता. ८७ | | | पा. २. |
| | ,, (स.) | ३२९६ | | | पा. ३-४ ५. |
| | ,, | ३७०० | शीलसिंह | | डेक्कन. |
| | ,, प्रशस्ति | | शीलसिंह | | डेक्कन. |
| ८५ | श्रीधरचरित्र | १६८५ | माणिक्यसुंदर | १४६३ | पा. ४. |

A बृहत्टिप्पनिकामां आ चरित्र नोंध्युं छे पण अमोने उपलब्ध थयुं नथी.

B आ चरित्र पूर्वे ऐतिहासिक ग्रंथोना वर्गमां नोंधायुं छे. छतां आ चरित्रनो वर्ग होवाथी इहां पण नोंध्युं छे.

C आ चरित्र फक्त पाटणना भंडार नंबर बीजामां ते प्राकृतमां रचायलुं छे एम जणाव्युं छे, बाकी क्यां पण जोवामां आव्युं नथी माटे ते उतारो करवा योग्य छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८६ | श्रीपार्श्व१०गणधर चरित्रोA | ४३५० | | | बृ. |
| ८७ | श्रीपालचरित्र (प्रा.) | १३४१ | रत्नशेखर | १४२८ | पा. १-२भा. मुलक्ष्य. |
| | टीका | ४५०० | क्षमाकल्याण | १५५४ | डेकन. |
| | श्रीपालचरित्र (स.) | | सत्यराजगणि | | पा. ३ जेसल-वे. |
| | ,, (श्लोकबद्ध) | पत्र ५१ | सोमकीर्ति | | अ. १ |
| | ,, | १५५० | क्षमाकल्याण | | नागोर. * |
| | ,, | २००० | पंडित राइधु B | | रिपोर्ट ६ |
| | ,, | पत्र २४ | सोमचंद्र C | | अ. १ |
| | ,, (गद्य) | ११०० | जयकार्ति | | डेकन. |
| | ,, (गद्य) | पत्र ५३ | ज्ञानविमल | | अ. १ |
| ८८ | श्रेणिकचरित्र (गद्य) D | १००० | धर्मवर्द्धन | | डेकन. |

A सदरहू चरित्र बृहत् टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. एना माटे ते टिप्पनिकामां "श्रीपार्श्व १० गणधरचरित्राणि प्रा. मु. ४३५०" आवो नोंध छे.

* आ चरित्र नागोरना भंडारनी टीपमां नोंध्युं छे. पण तेनी श्लोकसंख्या उपरथी शक रहे छे. कारण के टीका सहित एना श्लोक. ४५०० छे, अने टीकाकार क्षमाकल्याण छे. नागोरनी टीपमां १५५० नो आंक नोंध्यो छे ते मूळ ग्रंथना हिसाबे लख्यो होवो जोइये, अने मूळकार रत्नशेखरसूरि होवा जोइये एम विशेष संभव छे.

B आ राइधु पंडित अन्यमति होय तेम लागे छे, अने तेमने आ चरित्र रच्युं छे.

C सोमचंद्रसूरिए गुरुगुणसत्तरि रची छे.

D आ श्रेणिकचरित्र फक्त डेकन कॉलेजना रिपोर्टमां नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ष. | | | | |
| ८९ | षट्पुरुषचरित्र | ६८८ | क्षेमंकर A | | पा. ४-५ |
| | स. | | | | |
| ९० | सगरचक्रिचरित्र B | ७०० | | | जेसल. |
| ९१ | सनत्कुमारचरित्र ( प्रा. ) | ८१२७ | श्रीचंद्र | १२१४ | पा. ३-५ |
| | ,, C ( महाकाव्य ) | २२०३ | जिनपतिशिष्य | | जेसल-बे. |
| ९२ | संजमाख्यान | | | | जेसल-बे. |
| ९३ | सप्तक्षेत्री D | ७२०० | गुणाकर | ११७८ | बृ. |
| ९४ | समरादित्यचरित्र ( प्रा. ) | १०००० | हरिभद्रसूरि | | बृ. पा. ४-५ डे. |
| | टिप्पन | | मतिवर्द्धन | | डेक्कन. |
| | समरादित्यचरित्र | ५८७४E | प्रद्युम्नसूरि | १३२४ | बृ. पा.४-५सं. |

A क्षेमंकर ते कोण हता अने तेमणे आ चरित्र क्यारे रच्युं छे ते बाबत चोकस खातरी करवा माटे तेनी प्रत फरीथी जोवी जोइये.

B आ चरित्र हीरालालना नोंधमां छे माटे शक पडतुं छे.

C आ चरित्र महाकाव्यना नामे ओळखाय छे. तेने आगळ काव्यना वर्गमां नोंधवामां आवशे. छतां इहां चरित्रनो वर्ग होवाथी चरित्रना नामे पण नोंध्युं छे. जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां आ चरित्र नोंध्युं छे, पण कर्त्तानुं नाम जिनपतिशिष्य एवुं संदिग्धज आप्युं छे. तो जिनपतिशिष्य ते कोण जिनेश्वरसूरि हता के कोई बीजा आचार्य हता ते बाबत चोकस निर्णय तेनी प्रत नजरे जोया वगर थइ शके तेम नथी.

D एना माटे बृहत्टिप्पनिकामां "सप्तक्षेत्री नामकं ११७८ वर्षे गुणाकरीयं ७२००," आवो नोंध छे. पण ते अमोने हजी सुधी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी. पं. आणंदसागरजीना जाणवा मुजब आ सप्तक्षेत्री ते दर्शनशुद्धि नामना प्रकरणनी वृत्ति हशे एम तेओ जणावे छे.

E आ श्लोकसंख्या पाटण तथा खंबातनी टीपोमां नोंधेली होवाथी तेना भरोंसे अमे इहां टांकी छे. बृहत्टिप्पनिकामां एना श्लोक ४८७४ जणाव्या छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | समरादित्यचरित्र A | पत्र २८१ | धर्मरत्नसूरि | | अ. २ |
| | „ B | पत्र २०१ | गुणरत्नसूरि | | अ. २ |
| ९५ | सिद्धसेनचरित्र C | ता. १०४ | माणिक्यचंद्र | | पा. २ |
| ९६ | सीताचरित्र (प्रा.) | ३१०० | | | बृ. पा. ५. |
| | „ D प्रा. (बीजुं) | ३४०० | | | बृ. |
| | „ (त्रीजुं) | गा. ४६५ | भुवनतुंग | | डेक्कन. |
| ९७ | सुग्रीवचरित्र E (प्रा.) | ६०० | | | जेसल. |
| ९८ | सुदर्शनाचरित्र (प्रा.) | १८८७ | मल. देवप्रभ | | बृ. |
| | „ (बीजुं) | ४८५२ | देवेंद्रसूरि | | पा. २–५ |
| ९९ | सुनक्षत्रचरित्र | | | | जेसल–बे. |
| १०० | सुबाहुचरित्र | गा. २२८ | | | जेसल. नगीनदास. |
| १०१ | सुभद्राचरित्र F | १५०० | (बृ.) | | जेसल. |

A, B आ बन्ने चरित्रो अमारा धारवा मुजब एकज हशे. कारण के आ चरित्रना करनार बन्ने आचार्यो एकज वखतमां हता. तो तेमने बे जणा मळीने आ चरित्र रच्युं होय तेम विशेष संभवित छे. छतां ते एकज छे के भिन्न छे ते बाबत चोकस निर्णय करवा बन्नेनी प्रतो तपासवानी जरूर रहे छे.

C आ सिद्धसेनचरित्र फक्त पाटणना बीजा भंडारमां छे.

D एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "सीताचरित्रं धर्माधर्मशास्त्रगतं प्राकृतं ३४००" आवो नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

E आ चरित्र जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे, अने ते कागळ उपर लखेलुं छे एम जणाव्युं छे. पण आ नामज शक पडतुं लागे छे तेथी आ चरित्र त्यां छे के नहीं ते बाबत खातरी करवा माटे तेनी प्रत नजरे तपासी जोवानी अगत्य छे.

F सदरहु चरित्र पण हीरालाले करेली टीपमां नोंधायलुं छे तेथी तेना माटे शक राखवो पडे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याना सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १०२ | सुमित्रचरित्र (लोकबद्ध) | पत्र १६ | | | अ. १ |
| १०३ | सुरसुंदरीचरित्र (प्रा.) | पत्र ७६ | | | अ. १ |
| १०४ | सुलसाचरित्र (सं.) | ७२४ | जयतिलक | | पा. ३-४. |
| १०५ | सुव्रतऋषिचरित्र | गा. ५९ | | | खं. |
| १०६ | स्थूलिभद्रचरित्र A | ६८४ | जयानंद | | वृ. पा. ३-४ |
| | स्थूलिभद्रचरित्र(शीलप्रकाश) | ३१०० | धर्मसागर शिष्य पद्मसागर | १६३४ | लीं. |
| | ह. | | | | |
| १०७ | हंसराजवत्सराजचरित्र (गद्य) | १०५० | राजकीर्तिवाचक | | डेक्कन. |
| १०८ | हरिबलचरित्र B (प्रा.) | | | | पा. ३ |
| १०९ | हरिवंशचरित्रC (स.) | ९००० | | | वृ. |
| | ,, D (सं.) | ९००० | बंदिककवि | | वृ. |
| ११० | हरिविक्रमचरित्र | ५३१० | आगमिक जयतिलक | | वृ. पा.४-५खं.सुलभ्य |

A एना माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां "स्थूलिभद्रचरित्रं तपाजयानंदसूरिकृतं श्लोक ६८४" आवो नोंध छे.

B आ चरित्र अमारा धारवा मुजब अपभ्रंशमां रचायलुं होवुं जोइये.

C, D आ बन्ने चरित्रो माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां जुदा जुदा नोंध नीचे मुजब छे:—

"हरिवंशचरित्रं सं. नेम्यादिबहुवृत्तवाच्यं आद्यंतर श्लोक ९०००। हरिवंशचरित्रं सं. बंदिककविकृतं पुराणभाषानिबद्धं नेम्यादिवृत्तवाच्यं ९०००" आ बन्ने चरित्रोनी श्लोकसंख्या विगेरे मळतीज छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थया नथी.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **तीर्थंकरचरित्रो *** | | | | |
| | **क्लॉस बीजो.** | | | | |
| १ | (१)आदिनाथचरित्र A(प्रा.) | ११००० | वर्द्धमानसूरि B | ११६० | बृ. पा. १-२-४-५ |
| | (२) ,, (प्रा.) | पत्र ३३ | | | अ. १ |
| | (३) ,, (प्रा.) | पत्र ७६ | अमरचंद्र | | अ. १ |
| | (४) ,, | | विनयचद्र | | अ. १ |
| २ | (१)अजितनाथचारित्र ‡(प्रा.) | | | | बृ. |
| | (२) ,, ‡(सं.) | | | | बृ. |
| ३ | (१)संभवनाथचरित्र‡(सं.) | | | | बृ. |
| | (२) ,, ‡ (स.) | | | | बृ. |
| ४ | (१)अभिनदनस्वामीच.प्रा.‡ | | | | बृ. |
| | (२) ,, ‡ (सं.) | | | | बृ. |

* एमां श्रीऋषभदेवथी ते महावीरस्वामि सुधीना चोवीस तीर्थंकरोना चरित्रो एकत्र करी क्रमनुं उल्लंघन थवाना भयथी तेमने अकारादि क्रमथी नहीं नोंधतां जेम जेम एक पछी एक तीर्थंकरो थया छे तेम तेम क्रमवार तेमना चरित्रो नोंध्यां छे.

A आदिनाथ चरित्रने ऋषभदेवचरित्र पण कहे छे.

B आ वर्द्धमानसूरि ते शालिभद्रसूरिना शिष्य अने चक्रेश्वरसूरिना गुरु हता. तेमणे आ ऋषभनाथ चरित्र गुर्जर भूपति जयसिंहना राज्यमां रचेलुं छे.

‡ आ निशाणीवाळा चरित्रो फक्त बृहत्टिप्पनिकामां नोंधाया छे, पण दिलगीर थवा जेवुं छे के बृहत्टिप्पनिकाकारने पण ते उपलब्ध थया नथी. ते उपरथी एम मालम पडे छे के ए घणा वखत उपर गुम थया होवा जोइये, एम छे छतां आ चरित्रमांना जे जे पण मळी शके तेम होय अगर जेमनी पासे एवा चरित्रो मोजुद होय ते मुनिमहाशयोने अमारी नम्र प्रार्थना पूर्वक विनंती ए छे के तेओश्रीए ते ते चरित्रोना नाम ठाम साथेनी हकीकत अमारा उपर लखी मोकलवा कृपा करवी.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ | (१)सुमतिनाथचरित्र A (प्रा.) | ९८२१ | विजयसिंहशिष्य सोमप्रभ | | वृ. पा.३-४ली. अ.१ |
| | (२) ,,* (सं.) | | | | वृ. |
| ६ | पद्मप्रभस्वामीचरित्र B (प्रा.) | ८४०० | देवसूरि | १२२४ | वृ. पा. २ |
| ७ | (१) सुपार्श्वनाथचरित्र (प्रा.) | गा८७०० | लक्ष्मणगणि | ११९९ | वृ. पा. ३-४ राधण. |
| | (२) ,,* (सं.) | | | | वृ. |
| ८ | (१) चंद्रप्रभस्वामीचरित्र (प्रा.) | | | | पा. ४ |
| | वृत्ति | १३१५ | साधुसोम | | पा. ४ |
| | (२) चंद्रप्रभस्वामीचरित्र (प्रा.) | ६४०० | यशोदेव | | वृ. जेसल-बे. |
| | (३) ,, C (प्रा.) | ८०३२ | हरिभद्र | | वृ. पा. २ |
| | (४) ,, (सं. प्रा.) | ५३२५ | देवेंद्रसूरि | १२६४ | वृ. पा ४ |
| | (५) ,, (सं.) | ६१४१ | सर्वानंद | १३०२ | वृ. पा. ४ |
| | (६) ,, D | पत्र ९९ | आंचलिक | | जामनगर. |
| | ,, विषमपदवृत्ति | | जिनपतिशिष्य जिनेश्वर | | पा. ६ |

A एना माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां " सुमतिचरित्रं प्राकृतमुख्यं सोमप्रभीयं कुमारपालराज्ये कृतं ९६२१ " आवो नोंध छे.

* आ निशाणीओ माटे पाछळ पाने श्रीअजितनाथचरित्र उपरनी नोट जुओ.

B आ चरित्र वृहत्‌टिप्पनिकाकारने उपलब्ध थयुं नथी.

C एना माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां " चंद्रप्रभचरित्रं प्रा. श्रीकुमारपालराज्ये हारिभद्रं ८०३२ " आवो नोंध छे.

D आ चंद्रप्रभस्वामीचरित्र जामनगरनी हरजी पाठशाळानी टीपमां नोंध्युं छे, अने ते कोइ अंचलगच्छना आचार्ये रचेलुं छे एम तेमां जणाव्युं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | (१) सुविधिनाथचरित्र * (प्रा.) | | | | वृ. |
| | (२) ,, * (सं.) | | | | वृ. |
| १० | (१) शीतलनाथचरित्र * (प्रा.) | | | | वृ. |
| | (२) ,, * (सं.) | | | | वृ. |
| ११ | (१) श्रेयांसनाथचरित्र (प्रा.) | ११००० | भद्रेश्वरशिष्य अजितसिंह A | | वृ. पा. २ |
| | (२) ,, * (प्रा.) | गा६५८४ | हरिभद्र B | | वृ. |
| | (३) ,, · (सं.) | ५१२४ | मानतुंग | १३३२ | वृ. पा. २ खं. |
| १२ | (१) वासुपूज्यस्वामीचरित्र C (प्रा.) | ८००० | चंद्रप्रभ | | वृ. पा. २ |
| | (२) ,, D (सं.) | पत्र ९४ | वर्द्धमान | १२९९ | वृ. भाव. |
| | (३) ,, | २२०० | | | A. S. |
| १३ | (१) विमलनाथचरित्र*(प्रा.) | | | | वृ. |
| | (२) ,, * (सं.) | | | | वृ. |
| | (३) ,, * | ५६५० | ज्ञानसागर | १५१२ | पा. ४. भाव. |

* आ निशानीओ माटे तीर्थंकर चरित्रोनी शरुआतमां अजितनाथचरित्र उपर आपेली नोट जुओ.

A बृहत्‌टिप्पनिकामां एना कर्त्ता देवभद्रसूरि जणाव्या छे. पण पाटणनी टीपमा आ नाम आपेल होवाथी तेज नाम दाखल कर्युं छे. छतां आ चरित्र आ बे आचार्यमांथी कया आचार्ये रच्युं छे ते बाबत चोकस खात्री करवा पाटणना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासवानी जरूर रहे छे.

B बृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे " श्रेयांसच. प्रा. जयसिंहदेवराज्ये हरिभद्राचार्यकृतं गा. ६५८४ " आवो नोंध छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

C आ चरित्र हेमचंद्राचार्यादिए शोध्युं छे.

D बृहत्‌टिप्पनिकाकारे आ चरित्र रचायानो संवत् ११९९ आप्यो छे. पण भावनगरनी टीपमां सं. १२९९ नो आंक नोंधेलो होवाथी ते संवत् इहां नोंध्युं छे. अमारा धारवा मुजब सं. ११६० मां ऋषभदेवचरित्रना करनार वर्धमानसूरिज जो आ चरित्रना करनार होय तो बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधेलो संवत् बराबर होवो जोइये. छतां चोकस निर्णय भावनगरना भंडारमांनी प्रतना प्रान्तनो प्रशस्ति लेख तपासवाथीज थइ शके.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४ | (१) अनंतनाथचरित्र A (प्रा.) | गा. १२००० | नेमिचंद्र | १२१६ | वृ. |
| | (२) ,, * (सं.) | | | | वृ. |
| १५ | (१) धर्मनाथचरित्र * (प्रा.) | | | | वृ. |
| | (२) ,, B (सं.) | | धर्मचंद्र C | | वृ. |
| १६ | (१) शांतिनाथचरित्र (प्रा.) | १२१०० | हेमसूरिगुरु देवचंद्र | ११६० | वृ. पा. २-४-५. |
| | (२) ,, (प्रा.) | ५५७४ | माणिक्यचंद्र | | वृ. पा. २-४ |
| | (३) ,, (प्रा.) | ४८५५ | मुनिदेव | १३२२ | वृ. पा. १-४ लीं. सु. |
| | (४) ,, (सं.) | ४९२८ | पौ. अजितप्रभ | १३१७ | वृ. पा. ३-४-५ लीं. |
| | (५) ,, (सं.) | ६२७२ | मुनिभद्र | १४१० | वृ.पा. ४ खं. भाव. |
| | (६) ,, (सं.) | पत्र १६३ | देवानंद शिष्य कनकप्रभ | | पा. २ |
| | (७) ,, (गद्य) | ६५०० | भावचंद्र | | अ. २ जेसल. |
| | (८) ,, (गद्य) | २७०० | आंच.उदयसागर | | खंबात. |

A एना माटे बृहत्टिप्पनिकामां "अनन्तच. प्राकृतगाथाबद्धं १२१६ वर्षे श्रीनेमिचंद्रसूरीयं गा. १२०००" आवो नोंध छे, पण ते अमोने हजी सुधी उपलब्ध थयुं नथी.

* आ निशाणीओ माटे तीर्थंकर चरित्रोनी शरुआतमां अजितनाथ चरित्र उपर आपेली नोट जुओ.

B सदरहू चरित्र पण तेना कर्त्ताना नाम साथे फक्त बृहत्टिप्पनिकामां नोंधेलुं छे.

C आ धर्मचंद्रगणिए जयंतीचरित्रनी टीकाना प्रशस्ति लेखमां मूळकार मानतुंगसूरिने पोताना गुरु तरीके जणाव्या छे, तेज ए होवा जोइये. छतां तेज धर्मचंद्रगणिए आ चरित्र रच्युं छे के कोई बीजा आचार्ये रचेल छे ते बाबत चोकस माहिती जे मुनिमहाशयना जाणवामां होय तेमणे ते अमोने लखी जणाववा कृपा करवी एवी अमारी तेमने नम्र सूचना छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १७ | (१) कुंथुनाथचरित्र * (प्रा.) | | | | बृ. |
| | (२) „ (सं.) | ५५५५ | विबुधप्रभ A | | बृ. खंबात. |
| १८ | (१) अरनाथचरित्र * (प्रा.) | | | | बृ. |
| | (२) „ * (सं.) | | | | बृ. |
| १९ | (१) मल्लिनाथचरित्र प्रा. B | ५५५५ | जिनेश्वर | ११७५ | बृ. |
| | (२) „ (प्रा.) C | ९००० | हरिभद्र | | बृ. |
| | (३) „ D (प्रा.) | ५०० | भुवनतुंग | | जेसल. |
| | (४) „ (सं.) | ४२५० | विनयचंद्र | | बृ. पा. ५ खंबात. |
| २० | (१) मुनिसुव्रतस्वामी चरित्र (प्रा.) | गा. १०९९४ | श्रीचंद्र | ११९३ | बृ पा. ४-५. |
| | (२) „ E | ४५५२ | विनयचंद्र | | बृ. अ. १ |
| | (३) „ | ५५५५ | पद्मप्रभसूरि | १२९४ | पा. १-५ जेसल. |

* आ निशाणीओ माटे तीर्थंकर चरित्रोनी शरूआतमां अजितनाथचरित्र उपरनी नोट जुओ.

A आ नाम बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंध्युं छे. लींबडीनी टीपमां विबुधप्रभशिष्य पद्मप्रभसूरिए आ चरित्र रच्युं छे एम जणाव्युं छे, माटे लींबडीना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासी जोवाथी चोकस खुलासो थई शके.

B, C बृहत्‌टिप्पनिकामां आ बन्ने चरित्रो माटे जुदा जुदा नोंधो नीचे मुजब छे:—

" मल्लिच. प्रा. ११७५ वर्षे जैनेश्वरं ५५५५ " मल्लिच. " बहुप्राकृतं हरिभद्रीयं कुमारपालराज्येकृतं गाथाकाव्यमयं ९००० " पण दिलगिरीनी वात छे के एमांनुं एक पण चरित्र क्यां पण जोवामां आवतुं नथी.

D आ चरित्र जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायुं छे, तेथी कर्त्तानां नाममां शक रहे छे. माटे तेनी प्रत फरीथी तपासी जोवानी जरूर छे.

E एमां नवभवनो वृतांत होवा साथे ते घणी कथाओथी भरपूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (४) „ A (सं.) | पत्र६२ | पौ. मुनिरत्न | | वृ. अ. १ नगीनदास. |
| २१ | (१) नमिनाथचरित्र *(प्रा.) | | | | वृ. |
| | (२) „ * (सं.) | | | | वृ. |
| २२ | (१) नेमिनाथचरित्र B(प्रा.) | ५१०० | मल. हेमचंद्र | | वृ. जेसल-बे. नगीनदास |
| | (२) „ C (प्रा.) | १२६०० | रत्नप्रभ | १२३३ | वृ. पा. २ |
| | (३) „ (प्रा.) | ८०३२ | हरिभद्र | १२१६ | वृ. जेसल-बे. |
| | (४) „ | ३५०० | तिलकाचार्य | | R. 6. |
| | (५) „ (सं.) | २१०० | उदयप्रभ | | पा. ४ |
| | (६) „ (सं.) | ५२७५ | गुणविजय | १६६८ | पा. २-३ जेसल. |
| | (७) „ (सं.) | २६७ | विक्रम | | पा. ३ |

A एना माटे बृहत्टिप्पनिकामां "मुनिसुव्रतच. सं. पौर्णमिकमुनिरत्नसूरिकृतं २० स्थानककथाकलितं ५१८५" आवो नोंध छे.

B, C आ बन्ने चरित्रो माटे बृहत्टिप्पनिकामां अनुक्रमे आवा नोंध छे:—

"नेमिच. प्रा. भवभावनावृत्यन्तर्गतमन्तरंगावक्तव्यतामिश्रं ५१०२" "नेमिचरित्रं प्राकृत गद्यपद्यमयं १२३३ वर्षे देवसूरिशिष्य रत्नप्रभीयं १२६००" छतां मलधारी हेमचंद्रसूरिकृत नेमिनाथचरित्र ते भवभावनानो भाग तो नहीं होय माटे तेनी प्रत तपासी जोवानी आवश्यकता छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २३ | (१) पार्श्वनाथचरित्र (प्रा.) | ९००० | देवभद्र A | ११६५ | बृ. पा. २ जेसल. |

A देवभद्र नामना आठ आचार्य थया जाणवामां आव्या छे:—

(१) देवभद्रसूरि–भोजराजाना वखतमां थएला छे.

(२) देवभद्रसूरि–ते नवांगी टीकाकार अभयदेवसूरिना शिष्य प्रसन्नचंद्रसूरिना शिष्य हता.

(३) देवभद्रसूरि–तेओ धनेश्वरसूरिना चार शिष्य वीरभद्र, देवसूरि, देवभद्र अने देवेंद्रसूरि एमांना त्रीजा.

(४) देवभद्रसूरि–ते चंद्रगच्छना भद्रेश्वरसूरिना शिष्य अने प्रवचनसारोद्धारनी टीकाना करनार सिद्धसेनसूरिना गुरु हता. सिद्धसेनसूरिए ते टीका सं. १२४२ मां रची छे.

(५) देवभद्रसूरि–ते रुद्रपल्लीयगच्छना अभयदेवसूरिना शिष्य हता. तेओ सं. १२९२ मां थएला छे. पिटर्सने तेमणे तपा देवभद्रगणिना नामथी ओळखाव्या छे.

(६) देवभद्रसूरि–ते चैत्रगच्छमां थएला छे. तेमना गुरुनुं नाम भुवनेंद्रसूरि हतुं, अने तेओ जगच्चंद्रसूरिना गुरु थता हता.

(७) देवभद्रसूरि–ते पिप्पलियागच्छना विजयसिंहसूरिना शिष्य अने धर्मघोषसूरिना गुरु हता.

(८) देवभद्रसूरि–ते मलधारी श्रीचंद्रसूरिना शिष्य हता.

आ रीते उपर जणाव्या मुजब आठ देवभद्रसूरिमांना कया देवभद्रसूरिए आ चरित्र रच्युं छे ते बाबत तपास करतां एम मालम पडे छे के ते बीजा देवभद्रसूरि के जेओ प्रसन्नचंद्रना शिष्य हता, तेमणेज आ चरित्र रच्युं छे. बृहत्टिप्पनिकामां आ देवभद्रसूरिने नवांगीकार अभयदेवना प्रथम शिष्य तरीके जणाव्या छे. पण पिटर्सन रिपोर्ट त्रीजाना पेज ६६ मां आ चरित्रनी नोंध लेतां प्रशस्ति लेखना प्रांते "इतिश्री प्रसन्नचंद्रसूरिपादसेवक श्रीदेवभद्राचार्यविरचितं पार्श्वचरित्रं" आवो उल्लेख छे. वळी एज प्रशस्ति लेखमां आ देवभद्रसूरि सुमतिवाचकने पोताना गुरु तरीके जणावे छे, पण अमारा धारवा मुजब सुमतिवाचक कांतो देवभद्रसूरिना वृद्ध सहोदर होवा जोइये, अगर विद्यागुरु होय तो पण होय ते मुजब आ देवभद्रसूरि नवांगीकार अभयदेवसूरिना शिष्य कोइ पण रीते संभवी शके तेम नथी. ते उपरथी टिप्पनिकाकारे सखत भूल खाधी लागे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | (२) „ A (प्रा) | गा२५६४ | | | पा. २ |
| | (३) „ (सं.) | ६४०० | भावदेव | B १४१२ | वृ. सुलभ्य. |
| | (४) „ (सं.) | ५२७८ | माणिक्यचंद्र | १२७७ | वृ. नगीनदास. |
| | (५) „ (सं.) | ताड३४५ | सर्वानंद | | वृ. पा. २. |
| | (६) „ (गद्यबद्ध) | ५५०० | उदयवीर | | पा. ३ म. १ रि. ६ |
| | (७) „ (सं.) | ३९८५ | वियनचंद्र रविप्रभशिष्य | | पा.४–५ |
| | (८) „ (सं.) | ३१०७ | हेमविजय | १६३२ | पा. ४ |
| | (९) „ (सं.) | १०२४ | पद्मसुंदर | ११३९ | रि. ६. |
| २४ | (१) महावीरस्वामीचरित्र | १२०२५ | गुणचंद्रगणि | | वृ. पा. १-५ |
| | (२) „ (प्रा.) | १८१० | नेमिचंद्र | ११३९ | वृ. |
| | (३) „ (प्रा.) | ४१०० | | | वृ. पा. ५ |
| | (४) „ (प्रा.) | ३००० | | | जेसल. नगीनदास. |
| | (५) „ (अपभ्रंश) | | जिनेश्वरसूरिशिष्य | | नगीनदास. |
| | (६) „ | | असग (दिगंबर) | | पिटर्सन रि. ४ |

A एना माटे बृहत्टिप्पनिकामां "पार्श्वचरित्रं प्रा. दशभाववाच्यं. गा. २५६४" आवो नोंध छे.

B आ संवत् कांइक भूल भरेलो लागे छे. आ चरित्रना कर्त्ता भावदेवसूरि कालिकाचार्यना संतानमां थएला छे. बृहत्टिप्पनिकामां तेनो रच्यानो सं. १२१४ जणाव्यो छे, त्यारे बीजी टीपोमां १४१२ नो आंक नोंध्यो छे. तो आ भिन्नभिन्न समयमांथी चोकस संवत् कयो छे ते बाबत कोइ तेवो विशेष पुरावो मळ्या वगर निर्णय थवो मुश्केल छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **शेष चरित्रो.** † | | | | |
| १ | अममस्वामीचरित्र A | १२००० | मुनिरत्न B | १२५२ | वृ. नगीनदास. |
| २ | चतुर्विंशतिजिनचरित्र * | ७०० | (श्रु.) | | जेसल. |

† चोवीस तीर्थकरोना चरित्र ग्रंथो गत पेजमां समाप्त थया छे. बाकी रहेला आ बे चरित्र ग्रंथोने ते खास तीर्थकरोनांज चरित्रो होवाथी आ वर्गमां दाखल कर्या छे.

A आ चरित्र ते आवती चोवीसीमां थनार तीर्थकर श्री अममस्वामीनुं चरित्र छे.

B आ मुनिरत्नसूरिने माटे गत पृष्ठ २२१ मां अंबडचरित्र उपर तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

* त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र पहेलां सामान्य चरित्रोमां नोंधायुं छे तेथी अत्रे नोंध्युं नथी.

# कथाना ग्रंथो.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वर्ग ६ ठ्ठो.* | | | | |
| १ | अघटकथा | ८३१ | | | पा. ४ डेक्कन. |
| २ | अन्धंकारिभट्टिकाकथा | | | | पा. ३ |
| ३ | अन्तरङ्गकथा (प्रा.) | | | | लींबडी. |
| ४ | अंजनासुंदरीकथा A(प्रा.) | ५०० | | | जेसल. |
| ५ | अनंगसिंहादिकथा | पत्र १२ | | | पा. ३ |
| ६ | अनंतकीर्तिकथा (प्रा.) | पत्र १३ | | | अ. १-२ |
| ७ | अंबुसराजकथा | पत्र ४ | | | अ. २ |
| ८ | अभयसिंहकथा | १३८ | | | खंबात. |
| ९ | अवंतीसुकमालसंधि | | | | पा. २ |
| १० | अष्टप्रकारपूजाकथा | १०६० | | | बृ. पा.३-४ |

* आ वर्गमां पूर्वाचार्योए संस्कृत तथा प्राकृत भाषामां रचेली तमाम कथाओने एकत्र करी अनुक्रमवार नोंधवामां आवी छे. आगळ क्लॉस बीजामां तिथिना नामथी ओळखाती कथाओ नोंधवामां आवशे. अने क्लॉस त्रीजामां संग्रह कथाओ नोंधवामां आवनार छे.

A आ कथा जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधाइ छे, अने ते सं. १४७७ मां जिनचंद्रसूरिनी शिष्यणी समृद्धि महत्तराए जेसलमेरमां रची छे एम तेमां जणाव्युं छे. पण कर्त्ताना नाम बाबत शक राखवो पडे छे. आ बाबतनो चोकस निर्णय जेसलमेरनी तेनी प्रत नजरे जोया वगर थवो मुश्केल छे. छतां सुज्ञ मुनिवर्ग महाशयोने अमारी नम्र प्रार्थना ए छे के जेओ पासे आ कथा मोजूद होय तेओश्रीए आ संबंधी चोकस माहिती अमोने लखी जणाववा कृपा करवी.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | आरामनंदनकथा | ५६१ | | | पा. ६ |
| १२ | आरामशोभाकथा | २८१ | मलयहंस A | | पा. ४·६ लीं. |
| १३ | आरामसुतकथा (सं.) | ६०३ | | | लींबडी. |
| १४ | आर्द्रकुमारकथा (प्रा.) | १६५ | | | पा. ४ |
| | ,, (गद्य) | पत्र ८ | | | अ. १ |
| १५ | आर्याषाढकथानक (श्लोकबद्ध) | पत्र १९ | | | अ. १ |
| १६ | आवश्यककथा | १००० | | | पा. ४ |
| १७ | इलाचीपुत्रकथा B | | | | पा. २ |
| १८ | उत्तमकुमारकथा | २५० | | | लींबडी. |
| १९ | उदयसुंदरीकथा | | सोढ्ढलकवि C | | पा. १ |
| २० | उदायनराजकथा | पत्र १४ | | | खंबात. |
| २१ | उपसर्गहरप्रभावकथा | | जिनसूरि | | पा. ३ |
| २२ | ऋषिदत्ताकथा | २८२७ | | | पा. ४ |
| | ,, बीजी (सं.) | ४५७ | | | पा. ४ लीं. खं. |
| २३ | कनकरथकथा | पत्र ५ | | | खंबात. |
| २४ | कंचनश्रेष्ठयादिकथा | पत्र ११ | | | पा. २ |

A मलयहंसगणि विक्रमनी सोळमी सदीना आखरीमां हता एम सांभळ्युं छे.

B आ इलाचीपुत्रकथा प्राकृतमां रचाएली पाटणना भंडार नंबर बीजामां ताडपत्र उपर लखेली मोजुद छे.

C आ सोढलकवि अन्यधर्मि छे एम पाटणनी टीपमां जणाव्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २५ | कर्मसारकथा | पत्र १३ | | | अ. २ |
| | ,, (बीजी) | १४५० | | | पा.४ |
| २६ | कलावतीकथा (श्लोकबद्ध) | पत्र ११ | | | अ. १ |
| २७ | कालिकाचार्यकथा | का. ६८ | | | लींबडी. |
| | ,, (प्रा) | | | | पा. १ नगीनदास. |
| | ,, वृत्ति | १७० | | | नगीनदास. |
| | कालिकाचार्यकथा (प्रा.) | ११५ | विनयचंद्र | | पा. १ लीं. |
| | ,, (प्रा.) | ३६० | | | पा. २ |
| | ,, (प्रा.) | गा.१०० | भावदेव | | पा. ३-४, लीं. सु. |
| | ,, (प्रा.) | गा.११९ | जयानंदसूरि | | लींबडी. |
| | ,, A (प्रा.) | | | | नगीनदास. |
| | ,, (प्रा.) | गा. ५५ | धर्मप्रभ | | लींबडी. |
| | ,, (प्रा.) | गा.१०७ | देवकल्लोल B | १५६६ | खंबात. |
| | ,, (प्रा.) | गा.१२० | | | खंबात. |
| | ,, (प्रा.) | ३६९ | | | खंबात. |
| | ,, (सं.) | | कीर्तिचंद्र | | पा. १ डे. |

A आ कथा पिटर्सने खंबातना शेठ नगीनदासना भंडारनी नोंध लेतां पोताना बीजा रिपोर्टना पेज १७ मां नोंधी छे. एना मंगलाचरणमां "इयपडिणिऊ कहतित्थउन्नई जयउ कालगायरियम् । विज्जाणंद रिसीणिय देविंदोघम्मकित्तिधरो ॥" आवी गाथा छे.

B आ देवकल्लोलसूरि उपकेश गच्छना हता.

| नंबर | नाम. | श्लोक | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | ,, (प्रा.) | गा., ५२ | महेश्वर A | | नवीनदास. |
| | ,, (सं.) | | समयसुंदर | | पा. ३ |
| २८ | कुंतलदेवीकथा (श्लोकबद्ध) | पत्र ८ | | | अ. १ |
| २९ | कुरुचंद्रकथा (सं.) | पत्र ३ | | | पा. ३ |
| ३० | कूर्मापुत्रचरित्र | पत्र ४३ | विद्यारत्न | | भावनगर |
| | कूर्मापुत्रकथा (प्रा.) | गा.१९२ | जिनमाणिक्य | | पा. २-३-४ |
| | ,, (प्रा.) | गा.१९९ | अनंतहंस | | पा. ३ खं. |
| ३१ | कुलध्वजकथा | | | | पा. ३. |
| ३२ | कुवलयमालाकथा B | १३००० | उद्योतनसूरि | ८३५ | वृ डे.कांतिविजयजी |
| | ,, C (सं.) | ३८९४ | रत्नप्रभ (परमानंद शिष्य) | १४८७ | वृ. खं. |
| | कुवलयमाला D | पत्र ७९ | | | अ. १ |

A आ महेश्वरसूरि ते कोना शिष्य हता ते बाबत कंइ चोकस पुरावो मळी शकतो नथी पण ते प्राचीन वखतमां थएला होवा जोइये. तेमना माटे पिटर्सनना बीजा रिपोर्टना पेज २९ मां सदरहू कथानी नोंध लेतां प्रान्ते "इति श्रीपल्लीलगच्छे महेश्वरसूरिभिर्विरचिते कालिकाचार्यकथा समाप्ता आवो" उल्लेख छे. संवत्‌मां १३६५ नो अंक नोंध्यो छे पण अमारा धारवा मुजब ते प्रत लख्यानो होवो जोईए. आ बाबत संयममंजरीमां पण विशेष खुलासो जोवामां आवतो नथी. तो आ संबंधी तेवो कोई चोकस पुरावो मळ्या वगर निर्णय थवो मुश्केल छे.

B, C आ बन्ने कथाओ पूर्वे चरित्रना वर्गमां विशेष हकीकत साथे नोंधी छे. ते कथाना नामथी पण ओळखाती होवाथी इहां पण नोंधी छे.

D रत्नप्रभसूरिकृत कुवलयमाला कथा अने आ एकज हशे एम अनुमान थाय छे, छतां चोकस निर्णय माटे अमदावादमांनी तेनी प्रत जोवानी जरूर छे.

| क्र. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | कुवलयमाला A | | इंद्रसूरि | | पिटर्सन रि. ५ |
| ३३ | कुसुमसारकथा B | १७०० | नेमिचंद्र | १०९९ | बृ. |
| ३४ | कृतकर्मकथा | ४९७ | | | पा. ४ |
| ३५ | खापरियाकथा | पत्र ४ | | | पा. ३ |
| ३६ | गगनधूलिकाकथा | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ३७ | गंडूरायकथा | पत्र १८ | | | डेक्कन. |
| ३८ | गांधारकथा | पत्र २२ | | | अ. २ |
| ३९ | गुर्जरब्राह्मणकथा | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ४० | चतुर्विधधर्मविषयेकथा | पत्र ३० | | | पा. ४ |
| ४१ | चंद्रोदयकथा | पत्र ५ | | | पा. २ |
| ४२ | चंद्रलेखाकथा | | | | पा. २-३ |
| | ,, | गा.२८६ | | | लींबडी. |
| ४३ | चंपकश्रेष्ठिकथा | ३५५ | | | पा. ३-४ |
| | ,, (बीजी) | | जयसोम | | अ. २ |
| | ,, (त्रीजी) | | विमलगणि | | अ. २ |

A आ कथाने पिटर्सन रिपोर्ट पांचमाना पेज ७३ मां शांतिनाथ चरित्रनी नोंध लेतां प्रान्त लेखमां महाकुवलयमालकथाना नामथी ओळखावीने ते पहेला हरिभद्रसूरि पछी थएला इंद्रसूरीए रची छे एम तेमां जणाव्युं छे. पण ते हाल क्यां पण उपलब्ध थती नथी आवा प्राचीन ग्रंथो तेना शोधखोलना अभावे नष्ट थाय ते अत्यन्त खेदजनक छे. आवा प्राचीन ग्रंथो ज्यां होय त्यांथी पत्तो मेळवी तेनो पुनरुद्धार करवो शोधक सुजनोने घटे छे. हमणा पं. आणंदसागरजीए जणाव्युं छे के एनी प्रत पालिताणाना शेठ अंबालालना भंडारमां मोजुद छे.

B आ कथा फक्त बृहत्टिप्पनिकामां नोंधाई छे, तेना माटे त्यां " कुसुमसारकथा नेमिचंद्राचार्यैः १०९९ वर्षे कृता गा. १७०० " आवो नोंध छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४४ | चंपकमालाकथा | ९०० | भावविजय | | रिपोर्ट ६. |
| ४५ | चंपकमालादिकथाषट्क | पत्र १८ | | | पा. ३ |
| ४६ | चामरहारीकथा | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ४७ | चामरसेनवरसेनकथा | | | | पा. ४ |
| ४८ | जंबूस्वामीकथा A (प्रा.) | | | | जेसल. |
| ४९ | जयविजयकथा | ५०० | | | डेक्कन. |
| ५० | जयसुंदरीकथा B (प्रा.) | | | | बृ. |
| ५१ | जिनदत्तकथा C | १२०० | | | बृ. जेसल. |
| | जिनदत्ताख्यान D (प्रा.) | | | | पिटर्सन रि. ५ |
| | जिनदत्तकथासमुच्चय | पत्र१०३ | भद्राचार्य E | | डे. पेज ११५ |

A एमां जंबूस्वामीना पांच भवनो वृतान्त छे.

B आ कथा बृहत्‌टिप्पनिकारे नोंधी छे, पण तेने उपलब्ध थई नथी.

C जेसलमेरनी हंसविजयजी महाराजनी टीपमां एना कर्ता सुमतिसूरि जणाव्या छे.

D पिटर्सने आ ग्रंथनी नोंध लेतां पोताना रिपोर्ट पांचमांना पेज ६३ मां प्रान्त लेखनो " तउ–काऊण महातवं आराहिऊण मरणयालं गओ सुरलोयं तउ पारंपरेण निव्वाणं ति जिणयत्तो " आवी रीते नोंध करीने सदरहू कथानी प्रत चित्रकूटमां सं. ११८६ मां लखावेली छे एम तेमां जणाव्युं छे.

E भद्राचार्य नामना बे आचार्य थयेला जाणवामां आव्या छेः—

(१) भद्रेश्वरसूरि–ते मुनिचंद्रसूरिना शिष्य देवसूरिना पाटे थएला अने जयसिंहदेव राजाना वखतमां थएला छे.

(२) भद्रेश्वरसूरि–ते चंद्रगच्छना धनेश्वरसूरिना च्यार शिष्यमांना चोथा देवेंद्रसूरिना शिष्य अने आसड कविना गुरु अभयदेवसूरिना गुरु हता. एटले तेओ विक्रमनी तेरमी सदीना शरुआतमां विद्यमान हता. ते उपरथी आ बन्ने आचार्यो समकालिन थएला छे एम चोकस पुरावाथी सिद्ध थाय छे. हवे आ बे आचार्यमांथी कया आचार्ये आ ग्रंथ रच्यो छे ते बाबत तपास करतां तेओ कोई पुरावो मळी शकतो नथी; अमारा धारवा मुजब ते देवेंद्रसूरिना शिष्य बीजा भद्रेश्वरसूरिए रच्यो होवो जोइये. छतां चोकस निर्णय माटे डेक्कन कॉलेजमांनी प्रतनो प्रशस्ति लेख जोवानी जरूर रहे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५२ | थावच्चापुत्रकथा ( श्लोकबद्ध ) | पत्र ११ | | | अ. १. |
| ५३ | दानादिकथा | ११५० | शुभशील | | A. S. |
| | दानचतुष्टयकथा | | विजयचंद्र | | डेक्कन. |
| ५४ | दृढप्रहारिकथा | | | | पा. २ |
| ५५ | देवकुमारकथा | पत्र ६ | | | अ. १ |
| | „ (बीजी) | ५२७ | | | पा. ४-५ |
| ५६ | द्वादशभावनाकथा | ७२० | | | पा. ४ |
| ५७ | द्वादशव्रतकथा | २१९९ | | | पा. २-३-४-५ |
| | „ ( बीजी ) | ताड२०० | चारित्रकीर्ति A | | पा. ३-४ |
| | धनदत्तकथा | ता.१५४ | अमरचंद्र | | पा. २ |
| ८ | धनपतिकथा | पत्र ५ | | | पा. ३-४-५. |
| [illegible] | धन्नाकथा | ४३० | दयावर्द्धन | १४६३ | पा. ४ खं. |
| ६० | धन्नाकाकदीकथा | पत्र ४ | | | अ. १ |
| ६१ | धर्मदत्तकथा ( श्लोकबद्ध ) | पत्र २४ | | | अ. १ |
| ६२ | „ ( गद्य ) | पत्र १० | | | अ. १ |
| | „ ( सं. ) | पत्र १७ | माणिक्यसुंदर. | | डेक्कन. |
| | „ | ३३० | | | पा. ३-४ रि. ६ |
| ६३ | धर्मपरीक्षाकथा | ९०० | (दिगं.) रामचंद्र | | A. S. |

A आ चारित्रकीर्तिसूरि क्यारे थया छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६४ | धर्ममाहात्म्यकथा | १५८ | | | पा. ४ |
| ६५ | धम्मिलकथा | २०५ | | | पा. ३-४ |
| ६६ | धन्यसुंदरीकथा A (प्रा.) | पत्र११५ | | | पा. २ |
| ६७ | धूर्तचरित्रकथा B | पत्र १९ | | | अ. २. |
| ६८ | नंदयतिकथा | ६०० | | | रि. ६ |
| ६९ | नंदोपाख्यान | २५० | | | A. S. |
| ७० | नमस्कारदृष्टांत | ३२९ | | | पा. ४ |
| ७१ | नर्मदासुंदरीकथा C | १७०० | | | बृ. |
| | „ (बीजी) | गा.२४९ | | | लींबडी. |
| | „(श्लोकबद्ध) (त्रीजी) | पत्र ८ | | | अ. १ |
| ७२ | नरदेवकथा (प्रा.) | ४३० | | | पा. ४ मगीनदास |
| ७३ | नरवर्मकथा | ८०० | विनयप्रभ | १४१२ | पा १-४ |
| ७४ | नलकथा | | | | पा. २ |
| ७५ | नागश्रीकथा | पत्र १८ | ब्रह्मनेमिदत्त D | | अ. २ |
| ७६ | नाभाककथा | ४२१ | | | पा. ४ भाव. |

A एनुं खरुं नाम धन्यसुंदरीकथा एवुं हशे ए बाबत तपास करी नक्की करवुं जोइये.

B आ धूर्तचरित्र कथा ते वखते हरिभद्रसूरि रचित धूर्ताख्यान होय तो होय तेनी खरी खात्री अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी ते प्रत जोयाथी थइ शके तेम छे.

C सदरहू कथा फकत बृहट्टिप्पनिकामां नोंधाई छे. बाकी क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

D आ दिगम्बर आचार्य मल्लिभूषणसूरिना शिष्य हता. एमणे धन्यकुमारचरित्र तथा सुदर्शनाचरित्र रच्युं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७७ | पद्मलोचनाकथा | पत्र ४ | | | अ. १ |
| ७८ | पद्मश्रीकथा (प्रा.) | ३१८ | | | पा. ४ |
| ७९ | पंचाख्यान A | ४६०० | | | वृ. |
| | ,, सारोद्धार | ३७०० | धनरत्नसूरि | | पा. ४ भाव. |
| ८० | पुण्यधनकथा (सं.) (श्लोकबद्ध) | ६०१ | | | खं. |
| ८१ | पुण्यपापकथा | पत्र ६ | | | अ. १ |
| ८२ | पुण्यसारकथा | १३११ | शुभशील | | पा. ४-६ पि. रि. ४ |
| | ,, | ५४८ | | | पा. ४ |
| | ,, | ३५० | विवेकसमुद्र B | | खं. |
| ८३ | पुन्नडकथा | पत्र २ | | | पा. ३ |
| ८४ | पुण्यवतीकथा | ताड ५५ | | | पा. २ |
| ८५ | पूजाष्टककथा (प्रा.) | १०८६ | | | वृ. पा. ३-४ |
| | ,, C (सं.) | | | | वृ. |
| ८६ | पृथ्वीचंद्रकथा (प्रा.) | १३२ | | | पा. ४ |
| | ,, (सं.) | १७९ | | | पा. ४ |
| ८७ | प्रत्येकबुद्धचतुष्टयकथा | पत्र२१५ | तिलकाचार्य | | डेक्कन. |
| ८८ | प्रत्येकबुद्धकथा (प्रा.) | ११३८ | | | पा. ६ जेसल. |

A एना माटे वृहत्टिप्पनिकामां " पंचाख्यानकं पूर्णभद्राचार्यैः १२५५ वर्षे शोधितं ४६०० " आवो नोंध छे.

B आ विवेकसमुद्रगणि तपागच्छीय सोमसुंदरसूरिना शिष्य हता. तेओ विक्रमनी सोळमी सदीनी शरुआतमां विद्यमान हता.

C आ कथा वृहत्टिप्पनिकामां नोंधी छे पण टिप्पनिकाकारने पण ते उपलब्ध थई नथी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | प्रत्येकबुद्धकथा | ६०० | | | खं. |
| | ,, | ३५० | | | A. S. |
| ८९ | प्रभावतीकथा | १९९ | | | पा. ४ |
| ९० | प्रियंकरकथा | १४०० | | | पा. ४-६. |
| ९१ | बलभद्रकथा | पत्र २६ | | | अ. १ |
| ९२ | बलिनरेंद्रकथा | | | | पा. ३ |
| ९३ | ब्रह्मदत्ताकथा (प्रा.) | पत्र १३ | | | अ. १ |
| ९४ | ब्रह्मदत्तादिकथा | १७१६ | | | पा. ४ |
| ९५ | भद्रबाहुकथा | ११२ | | | पा. ४ |
| ९६ | भरटकद्वात्रिंशिकाकथा | ४२५ | | | पा. ३ |
| ९७ | भरतनटादिकथाओ | | | | पा. ३ |
| ९८ | भरतेश्वरबाहुबलिवृत्ति | १०२८२ | शुभशील | १५९ | पा. ४ |
| ९९ | भविष्यदत्ताख्यान A | २००० | महेंद्रसूरि | | जेसल.लीं.नगीनदास |
| १०० | मत्स्योदरकथा | पत्र ५ | | | पा. ३ |
| १०१ | मदनावलिकथा | पत्र ११ | | | अ. २ |
| १०२ | मदनरेखाकथा (गद्य) | पत्र २६ | | | पा. ३, अ. १ |
| १०३ | मंगलकलशकथा | | | | पा. ३. |

A आ कथा पंचमीमाहात्म्य उपर रचेली छे ते पूर्वे चरित्रना वर्गमां नोंधाई छे, छतां कथाना नामथी विशेष ओळखाती होवाथी इहांपण नोंधी छे. जेसलमेरनी हीरालाले करेली पोतानी टीपमां तथा लींबडीनी टीपमां एना कर्त्ता महेश्वरसूरि लख्या छे. खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारमां महेंद्रसूरिनुं नाम आपीने सदरहू प्रत लख्यानो संवत् १२१४ नोंधेलो छे. हालमां पं. श्री आणंदसागरजी जणावे छे के आ शिवाय बीजी एक धनपालकृत पण छे पण ते अमोने उपलब्ध थई नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १०४ | मंग्वाचार्यकथा | पत्र १० | | | अ. २ |
| १०५ | मंत्रिदासीकथा (श्लोकबद्ध) | पत्र ७ | | | पा. ३, अ. १ |
| १०६ | मनोवेगकथा ( गद्य ) | पत्र १० | | | अ. १ |
| १०७ | मलयंश्रीकृष्णकथा A | पत्र १२ | (श्लोकबद्ध) | | अ. १ |
| १०८ | मलयसुंदरीकथा | ८१२ | माणिक्यसुंदर | | पा. ४, A. S. |
| | „ ( बीजी ) (गद्य) | १२०० | | | खंबात. |
| | „ ( त्रीजी ) | | धर्मचंद्र B | | अ. २ |
| १०९ | महाशालकथा | पत्र ८ | | | अ. २ |
| ११० | महीपालकथा | २२०० | वीरदेवगणि | | A. S. 5 |
| १११ | मित्रचतुष्ककथा | १४६० | मुनिसुंदर | १४८४ | पा. ४-५ |
| ११२ | मुंजकथा | | | | पा. ३ |
| ११३ | मूळदेवकथा (श्लोकबद्ध) | पत्र ७ | | | अ. १ |
| ११४ | मूळदेवादिकथा (प्रा.सं.) | २८०० | | | A. S. |
| ११५ | मृगांककुमारकथा | पत्र ५ | | | अ. २ |
| ११६ | मृगांकादिकथासप्तक | | | | पा. ३ |

A आ कथा अन्यमतिकृत होय तेम लागे छे. छतां तेनो चोक्कस निर्णय ग्रंथ जोयाथी थई शके त्यांसूधी अमे तेने इहां नोंधी छे.

B धर्मचंद्रगणि ते धर्मदेवगणिना शिष्य अने धर्मरत्नसूरिना गुरु हता, तेओ पिप्पलगच्छीय शांतिसूरिना वंशमां थएला छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११७ | मृगसुंदरीकथा | | | | पा. २ |
| | " | पत्र ५ | | | अ. १ |
| ११८ | मेघनादकथा ( गद्य ) | ७६० | सोममंडन | | पा. ४, अ. १-२ |
| ११९ | मोदकादिकथा | पत्र ६ | | | पा. ३ |
| १२० | यवराजर्षिकथा | पत्र ३ | | | पा. ३, अ. १ |
| १२१ | यशोभद्रसूरिकृतचरित्रादि कथा A | १७०० | | | A S. |
| १२२ | रणशूरकथा B | | | | पा. २ |
| १२३ | रतिसुंदरीकथा | | | | नगीनदास. |
| १२४ | रत्नचूडकथा | ३५०० | नेमिचंद्र C | | वृ.पा.३-४नगीनदास |
| | " D (बीजी) | ३००० | जिनवल्लभ | | जेसल. |
| | " (त्रीजी) | ५०० | ज्ञानसागर | | रिपोर्ट ६. |
| १२५ | रत्नपालकथा | पत्र १९ | | | अ. २. |
| १२६ | रत्नशेखरकथा ( प्रा. ) | ८०० | जिनहर्ष | | पा. १-३, खंबात. |
| | " ( गद्यपद्य ) | ४३० | दयावर्द्धन | १४६३ | लींबडी, खंबात. |
| १२७ | राजसिंहरत्नवतीकथा(गद्य) | पत्र १७ | | | पा. ४, अ. १ |
| १२८ | राजहंसकथा | ३७७ | | | पा. ४ |

A एमां कोनी कोनी कथाओ छे ते जाणवा माटे डेक्कन कॉलेजमांनी प्रत तपासवी जोईये.

B आ नानकडी कथा छे.

C बृहत्‌टिप्पनिकामां कर्तानुं नाम "नेमप्रभाचार्य" एवुं नोंधेल छे.

D आ बीजी रत्नचूडकथा जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधेल होवाथी तेना माटे शक राखवो पडे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२९ | रोहककथा | १५० | | | पा. ४ |
| १३० | रोहगुप्तकथा | | | | पा. ४ |
| १३१ | रोहिणीकथा | २०० | कनककुशल | | पा. ४ डे. |
| १३२ | रौहिणेयकथा | ५५० | देवमूर्ति A | | रि. ६ |
| १३३ | ललितांगकथा | पत्र १३ | | | अ. २ |
| १३४ | लीलावतीकथा | १३३१ | | | पा. २ |
| | ,, B | गा १४३८ | | | वृ. |
| १३५ | लोकापवादकथा(श्लोकबद्ध) | पत्र ९ | | | अ. १ |
| १३६ | वज्रस्वामीकथा | पत्र ७ | (श्लोकबद्ध) | | अ. १ |
| १३७ | वज्रायुधकथा ( सं. ) | पत्र १९ | | | डेक्कन. |
| १३८ | वत्सराजकथा ( प्रा. ) | ४२५ | | | पा. ४ |
| | ,, ( सं. ) | ४०० | सर्वसुंदर | | पा. ६, अ. २ |
| १३९ | वंकचूलकथा | | | | पा. २ |
| १४० | वरसेनकथा | पत्र १६ | (श्लोकबद्ध) | | अ. १ |
| १४१ | वसुराजादिप्रकीर्णकथा | | (त्रुटक.) | | पा. २ |
| १४२ | वसुभूतिकथा | ३०० | | | पा. ४ |
| १४३ | विक्रमचरित्र | | इंद्रसूरि | | पिटर्सन रि. ५ |

A आ देवमूर्तिसूरि ते विक्रम सं. १४९६ मां विक्रमचरित्रना करनार छे तेज छे.

B आ कथा बृहत्टिप्पनिकामां नोंधी छे तेना माटे त्यां " लीलावतीकथा भूषणभट्टसुतकृताद्यरसाश्रितेच परसमयगता गा. १४३९ " आवो नोंध छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४४ | विक्रमनृपकथा | ता. २३४ | | | पा. २ |
| | ” | २२५ | (श्लोकबद्ध) | | खंभात. |
| १४५ | विक्रमपंचदंडप्रबंध | ४०० | पूर्णचंद्र | | पा. ४ |
| १४६ | विजयचंद्रकेवलिकथा (प्रा.) | गाथा. ३९१० | चंद्रप्रभमहत्तर A | ११२७ | पा. ३-४ ली. |
| १४७ | विद्यासागरश्रेष्ठिकथा | २५० | गुणाकर B | | डेकन. |
| १४८ | विश्वसेनकुमारकथा (प्रा.) | ३५३३ | | | पा. २ |
| १४९ | वीरभद्रकथा ( श्लोकबद्ध ) | पत्र ५ | | | अ. १ |
| १५० | वीरसेनकथा | २४३ | | | पा. ४-६ |
| १५१ | वीरांगदकथा | पत्र ८ | हरिभद्र C | | अ. २ |
| १५२ | वैश्रवणकथा | पत्र २ | | | पा. ४ |
| १५३ | शत्रुंजयकल्पकथा | ११८७५ | शुभशील | १५१८ | पा. ४ |
| १५४ | शंखकलावतीकथा ( प्रा. ) | ३७२ | | | पा. ४ |
| १५५ | शांतिमतीकथा | पत्र ४ | | | अ. १ |
| १५६ | शामदेवश्यामदेवकथा | पत्र ७ | | | अ. १ |

A आ चंद्रप्रभसूरि ते धर्मघोषसूरिना गुरु हता. धर्मघोषसूरिना शिष्य चक्रेश्वरसूरि तच्छिष्य शिवप्रभसूरि अने तेमना शिष्य श्रीतिलकसूरि थया, के जेमणे दशवैकालिक टीका विगेरे ग्रंथो रच्या छे. आ चंद्रप्रभसूरिने तेमनी विद्वत्ताना बळथी बे त्रण युगप्रधान, महत्तर वादीभसिंह, एवी महान् अटकोथी ओळखवामां आवता हता.

B गुणाकरसूरि बे थया छे. एक गुणाकरसूरि आम्रदेवसूरिना संघाते जयसिंह राजाना वखतमां थएला छे. एमणे सप्तक्षेत्री नामक प्रकरण सं. ११७८ मां रच्युं छे. ( जुओ आ पुस्तकनो पेज २३५ ) बीजा गुणाकरसूरिए नागार्जुनसूरिकृत योगरत्नमालानी वृत्ति सं. १२९६ मां रची छे. आ रीते आ बे आचार्यमांथी आ कथाना करनार कोण छे ते बाबतनो निर्णय ग्रंथ जोये थई शके.

C आ हरिभद्रसूरि याकिनीसूनु छे के अन्य छे ते जाणवा माटे तेनी प्रत नजरे जोवी जोइये.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १५७ | शीलकथा | पत्र २५ | | | खंबात. |
| १५८ | शीलवतीकथा ( प्रा. ) | ८३५ | | | पा. ४ |
| | ,, ( सं. ) | ९८८ | शुभशील | | पा. ४ |
| १५९ | शुकराजकथा | | माणिक्यसुंदर | | पा. ३ |
| | ,, ( गद्य ) | ५०० | | | पा. ४ अ. २ |
| १६० | शुकसंवादकथा (श्लोकबद्ध) | पत्र ६ | | | अ. १ |
| १६१ | श्रीपालकथा | ५७५ | लब्धिसागर | १५५७ | नगीनदास. |
| | ,, उद्धार ( प्रा. ) | पत्र १५ | | | पा. ३ |
| १६२ | श्रीमतीकथा | पत्र ५ | | | अ. १. |
| १६३ | श्रेणिककथा | १३५० | | | खंबात. |
| १६४ | श्रीषेणकुमारादिकथा | पत्र ४ | | | पा. ३ |
| १६५ | सत्त्वयवत्सकथा | ९०० | हर्षवर्द्धन | | पा. ४ |
| १६६ | संकाशकथा (श्लोकबद्ध) | १७१ | | | खंबात. |
| १६७ | संगमविप्रकथा | | | | अ. २ |
| १६८ | सर्वांगसुंदरीकथा (प्रा.) A | २६७५ | | | बृ. |
| १६९ | सवनकथा | पत्र ११३ | विजयचंद्रसूरि | | पा. २ |
| १७० | सहस्रमल्लचौरकथा ( प्रा. ) | पत्र १४ | | | अ. १ |

A बृहत्‌टिप्पनिकारे एना संबंधी कांई विशेष हकीकत नोंधी नथी. अने ते अमोने क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १७१ | सांबप्रद्युम्नप्रबंध A | पत्र २९ | सुंदरसूरि | | डेक्कन. |
| १७२ | सांबप्रद्युम्नादिकथा B | | | | पा. ३ |
| १७३ | सिद्धदत्तकथा | पत्र ३ | | | अ. २ |
| | ,, ( सं. गद्य ) | | मुनिसुंदरशिष्य | | खंबात. |
| १७४ | सिद्धसेनदिवाकरकथा(प्रा.) | पत्र २९ | | | पा. २ |
| १७५ | सिंहासनद्वात्रिंशिकाकथा | ६२६६ | देवमूर्ति | १४९६ | पा.१-४ जेसल. |
| १७६ | सिंहासनद्वात्रिंशिकाकथा | ११०० | क्षेमंकर C | | पा. १-३ डेक्कन. |
| १७७ | सुकोशलाख्यान | गा. १०४ | | | लीं. नगीनदास. |
| १७८ | सुगुणकुमारकथानक | १५० | | | डेक्कन. |
| १७९ | सुंदरनृपकथा ( श्लोकबद्ध ) | १६८ | | | खं. |
| १८० | सुंदरराजकथा | पत्र १३ | | | अ. २ |
| १८१ | सुरप्रियकथा | पत्र ५ | | | अ. १ |
| १८२ | सुरसुंदरनृपकथा ( प्रा. ) | पत्र २६ | | | अ. १ |
| १८३ | सुरसुंदरीकथा D ( प्रा. ) | ४६०० | धनेश्वर | E ११९५ | बृ. पा. ५ |
| १८४ | सुव्रतकथा ( प्रा. ) | २२२ | | | खं. |

A.B आ बन्ने ग्रंथो एकज छे के जूदा जूदा आचार्योए रचेला छे तेनी चोकस माहिती मेळववा माटे तेनी प्रतो तपासवी जोईये.

C आ क्षेमंकरगणि श्वेताम्बराचार्य हता. षट्पुरुषचरित्र पण एमणेज रचेलुं छे.

D आ कथा माटे बृहत्टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छे:—
" सुरसुंदरीकथा १६ परिच्छेदा धनेश्वरमुनिकृता सं. १०९५ वर्षे गा. ४०००"

E बृहत्टिप्पनिकामां आ कथा रचायानो सं. १०९५ नोंध्यो छे पण पाटणनी टीपमां तेनी रचनानो चोकस सं. ११९५ बताव्यो छे. ए बाबत तपास करतां एम माळम पडे छे के बृहत्टिप्पनिकारे संवत्नो अंक नोंधतां भूल खाधी होवी जोईये अगर लेखकनो दोष पण संभवी शके.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १८५ | सुव्रतऋषिकथा ( प्रा. ) | २५७ | | | खं. |
| | „ ( प्रा. ) | २०९ | | | पा. ४–६ |
| १८६ | सुसढकथा A ( प्रा. ) | ५१७ | देवेंद्रसूरि | | पा. ३–४ खं. |
| | „ ( प्रा. ) | गा. ३५० | | | खं. |
| १८७ | सुसमाकथा (प्रा.) | पत्र ११ | देवेंद्रसूरि | | डेक्कन पेज ४९ |
| १८८ | सोमश्रीकथा (प्रा ) | पत्र ३३ | | | अ. १ |
| १८९ | सोमभीमादिकथा | पत्र ५ | | | पा. ३ |
| १९० | सौभाग्यसुंदरीकथा | ६७४ | | | वृ. पा. ४ |
| १९१ | स्नात्रपंचाशिकाकथा | १३०० | उदयसागर | १८०४ | भाव. |
| | „ | | शुभशील | | नगीनदास. |
| १९२ | हंसकथा | पत्र ४ | | | पा. ३ |
| १९३ | हरिबलकथा | १२५ | | | पा. ४ |
| १९४ | हरिबलादिकथा | ९०० | | | पा. ४ |
| १९५ | हरिवाहनकथा B | ३२० | | | डेक्कन. |
| १९६ | हरिषेणकथा | ४३० | | | खं. |
| १९७ | हरिश्चंद्रकथानक ( प्रा. ) | पत्र २७ | | | डे. पेज ५१ |
| १९८ | हुताशिनीकथा | | जिनसुंदर | | पा. ३ डेक्कन. |
| | „ | | भावप्रभ | १७९२ | पा. ३ |

A सदरहू कथा देवेंद्रसूरिए छेदग्रंथमांथी उद्धरेली छे.

B आ कथा स्वमति कृत छे के अन्यमतिए करेली छे ते जाणवामां आव्युं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | क्लास २ जो.* | | | | |
| | **तिथि कथाओ.** | | | | |
| १ | अक्षयतृतीयाकथा | | | | अ. १ |
| २ | अट्ठाईव्याख्या | | | | अ. १ |
| ३ | चातुर्मासिकपर्वकथा | | | | अ. १ |
| ४ | ज्ञानपंचमीकथा | ता. २१२ | सौंदर्यगणि A | | पा. २ |
| | „ (सं.) बीजी | १५० | कनककुशल | १६५५ | पा. २ लीं. |
| | „ (त्रीजी) | | | | अ. १ |
| ५ | पर्युषणाअट्ठाईव्याख्या (गद्य) | पत्र ६ | भावप्रभ | | अ. १ |
| ६ | पौषदशमीकथा | | | | अ. १ |
| ७ | मेरुत्रयोदशीकथा | | | | अ. १ |
| ८ | मौनएकादशीकथा (प्रा.) | | | | अ. १ |
| | „ महात्म्य (सं.) | २०० | रविसागर | १६५४ | पा. ४-५ लीं. |
| | „ (सं.) | १२० | सौभाग्यनंदि | १५१६ | पा. ४ लीं. |
| ९ | रजपर्वकथा | | | | अ. १ |
| १० | रोहिणीकथा | | | | अ. १ |

* आ क्लासमां तिथिओना नामथी ओळखाती कथाओ जे जे अमोने मळी छे तेते अकारादि अनुक्रमवार इहां नोंधी छे.

A आ नाम शक पडतुं लागे छे कारणके आ नामना कोई आचार्य थया जाणवामां आव्या नथी. तो सौंदर्यगणि ते कोण हता अने ते क्यारे थएला छे ते बाबतनी चोकस माहिती जाणवा माटे पाटणना भंडारमांनी प्रत नजरे तपासवानी अगत्य छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | क्लास ३ जो.* | | | | |
| | संग्रहकथाओ. | | | | |
| १ | अडतालीशकथा A | पत्र ३३ | | | लीं. |
| २ | अन्तर्कथासंग्रह | पत्र ३७ | | | अ. २ |
| ३ | अष्टप्रवचनमाताकथा B | ८०० | | | जेसल. |
| ४ | आख्यानमणिकोश | | नेमिचंद्र | | वृ. नगीनदास. |
| | वृत्ति | १४००० | आम्रदेव | ११९० | वृ. नगीनदास. |
| ५ | आठनानीकथाओ C | ४५० | | | लीं. |
| ६ | आनंदसुंदर D | ३३०० | सर्वविजय | | खं. |
| ७ | उपदेशरहस्य E ( सं. ) | ४६९ | | | पा. ६ |
| ८ | कथानुक्रमणिका | पत्र २ | | | लीं. |
| ९ | कथोद्धार | १२०० | धर्मशेखर | | रि. ६ |

* जूदी जूदी कथाओनो एकत्र संग्रह करीने रचना करेली होवाथी तेने खास करीने सामान्य कथामां नहीं नोंधतां संग्रहकथाना नामथी आ त्रीजा क्लासमां जूदीज नोंधी छे.

A एमां जूदी जूदी अडतालीश कथाओ छे अने ते साधारण संस्कृतमां छे.

B सदरहू कथा जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधी छे.

C एमां पापबुद्धी, प्रज्ञाकर, नागदत्त, सुमनगोपाळ, जिनसुंदरी, शाळ, जिनदत्त अने धृष्टक एवी रीते आठ नानी नानी कथाओ छे.

D एमां आनंदादि दशश्रावकोनी कथा छे.

E नानी नानी कथाओ छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १० | कथाकोश | गा. २३९ | जिनेश्वर | ११०८ | वृ. |
| | ,, वृत्ति (प्रा.) | ६००० | | | वृ. पा. ४ |
| | कथाकोश (बीजो) | | शुभशील | १५०९ | पि. रिपोर्ट ४ |
| | कथानककोश (त्रीजो) | ४१४० | | | पा. २ |
| ११ | कथाग्रंथ A | ता. ३०६ | | | पा. ५ |
| १२ | कथाप्रबंध | पत्र ३० | | | पा. ४ |
| १३ | कथामहोदधि | १८०० | सोमचंद्र | १५०४ | पा. ३, डे. |
| १४ | कथारत्नकोश B | ११००० | देवभद्र | ११५८ | वृ. नगीनदास. |
| १५ | कथारत्नाकर | ६४३५ | हेमविजयगणि | | अ. २, मुंबई |
| | कथारत्नाकरोद्धार C | ५५०० | उत्तमर्षि D | | डेक्कन. |
| १६ | कथारत्नसागर E | ता. ३८४ | मल. नरचंद्रसूरि | | वृ. पा. २–५ |
| | कथारत्नसागर | २०९१ | | | खं. |
| १७ | कथावली F | २३८०० | भद्रेश्वरसूरि | | वृ. पा. २ |

A सदरहू ग्रंथनी पाटणना भंडार नंबर पांचमामां अपूर्व तरीके नोंध करी छे. छतां तेमां कई कई कथाओ छे ते नकी करवा तेनी प्रत फरीथी तपासवी जोईये.

B वृहत्‌टिप्पनिकामां एना माटे " कथारत्नकोशः सम्यक्त्वादि ५० अधिकारः ११५८ वर्षे देवभद्रसूरीयः १२३०० " आवो नोंध छे.

C एनुं बीजुं नाम " धर्मकथारत्नाकरोद्धार " एवुं पण छे.

D आ उत्तमर्षि क्यारे थया छे ते बाबत कांइ हकीकत मळी शकी नथी, पण तेमना नाम उपरथी तेओ बहुज प्राचीन वखतमा थएला होवा जोइए एम अटकल करी शकाय छे.

E एमां पंदर कथाओ छे.

F एना माटे वृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छेः—

" कथावली प्रथमपरिच्छेदः प्रा. मु. २४ जिन १२ चक्रयादि हरिभद्रसूरिपर्यंत सत्पुरुषचरित्र वाच्योभाद्रेश्वरः २३८०० " पण ते अमोने क्यां पण उपलब्ध थई नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १८ | कथासंग्रह | १६५३ | | | पा. ३ |
| | „ ( बीजो ) | १४०० | | | पा. ४ |
| | „ ( त्रीजो ) | १२५५ | | | पा. ४ |
| | „ ( चोथो ) | ३५०० | आनंदसुंदर | | पा. ४ |
| १९ | कथासंचय | पत्र १८ | | | अ. २ |
| २० | कल्पमंजरीकथाकोश | २९० | आग.जयतिलक | | पा. ४ |
| २१ | गंडयस्सकहा (प्रा.) | १५ | | | जेसल. |
| २२ | तरंगलोला | | नेमिचंद्रशिष्य यशःसेन A | | भाव. अ. २ |
| २३ | त्रिषष्ठिमहापुरुषगुणालंकार | ७१०० | पुष्पदन्त B | | डेक्कन |
| २४ | दृष्टांतरत्नाकर | पत्र २८ | | | अ. २ |
| २५ | द्वादशभावनाविषयेकथा | ८७५ | | | खं. |
| २६ | धर्माख्यानककोश (प्रा.) | | | | वृ. |
| | वृत्ति (प्रा.) | | | | वृ. |
| २७ | धर्मपरीक्षाकथा | १५०० | पद्मसागर | | रि. ६ |
| २८ | पार्श्वचरित्रसंबद्धदशदृष्टांत कथा | ९५७ | रत्नप्रभ | | पा. ६ |

A अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी टीपमां एना कर्ता नेमिचंद्रसूरि छे एम जणाव्युं छे. पण भावनगरनी टीप उपरथी प्राये आ ग्रंथ दिगंबर यशः सेनसूरिएज रच्यो होवो जोईये.

B आ पुष्पदन्ताचार्य ते योनिप्राभृतना करनार धरसेनाचार्यना वखतमां थएला छे. एटले तेओ विक्रमनी बीजी सदीना मध्यमां विद्यमान हता. डेक्कन कॉलेजना लीस्टमां एमनुं नाम पुष्पदत्त एवुं नोंध्युं छे पण ते भूलथी नोंधायुं छे एम पुरावा उपरथी सिद्ध थाय छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २९ | भक्तामरमहात्म्य | १७०० | शुभशील | | रि. ६ |
| ३० | भद्रनंदिकुमारकथा A | १५० | | | जेसल. |
| ३१ | मंगलमालाकथा (प्रा.) | ताड३२६ | | | जेसल. बे. |
| ३२ | मित्रानंदामरदत्तकथा (प्रा.) | ७०० | | | खं. |
| ३३ | रामायण | ५००० | देवविजयगणि | | डेक्कन. |
| ३४ | लघुत्रिषष्ठिचरित्र | ५००० | मेघविजय | | डेक्कन. |
| ३५ | विविधकथा ( सं. ) | ७०० | ( गद्य ) | | खं. |
| ३६ | शीलोपदेशमालाकथा | २९९१ | | | लीं. |
| ३७ | सम्यक्त्वकौमुदी | २८५७ | जिनहर्ष | १४५७ | पा. ४ |
| | „ ( बीजी ) | १५०० | जयचंद्र | | पा. १-४-५-सुलभ्य. |
| | „ ( त्रीजी ) | पत्र ५९ | गुणाकरसूरि | | खं. |
| | „ ( चोथी ) | १४६२ | धर्मकीर्ति | १४६२ | लीं. |
| ३८ | सातव्यसनकथासमुच्चय | १८०० | दि.सकलकीर्ति B | | डेक्कन. |
| | „ | ५३० | „ | | लीं. |
| ३९ | सुकृतसागर C | १६०० | रत्नमंडनगणि | | डेक्कन. |
| ४० | स्मरनरेंद्रादिकथा | पत्र १२८ | | | अ. २ |
| ४१ | हास्यकथा | १७५० | ( जैन ) | | रि. ६ |
| ४२ | रहस्वकथासंग्रह | १००० | मल.श्रीतिलक शिष्य | १४१२ | खं. |

A आ कथा जेसलमेरनी टीपमां हीरालालना नोंधमां छे.

B अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां एना कर्ता सोमकीर्ति जणाव्या छे.

C आ ग्रंथ एसिऑटिक सोसायटीना रिपोर्टमां कर्त्तांना नाम साथे नोंधेल छे.
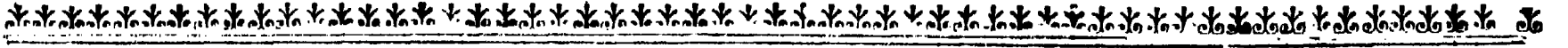
# लीस्ट नंबर ७.

# जैन माहात्म्य.
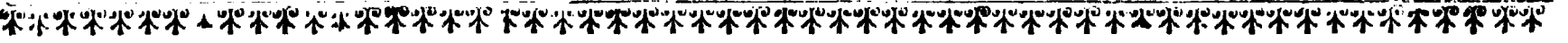
| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वर्ग १ लो. | | | | |
| | **माहात्म्यना ग्रंथो.*** | | | | |
| १ | गिरनारकल्प | पत्र २ | | | अ. १ |
| २ | दीपालिकाकल्प | ३१८ | | १३२५ | पा. ४ |
| | „ (बीजो) | ५१३ | जिनसुंदर | १४८३ | पा.१.३ प्रो. मणि † |
| | „ (त्रीजो) A | ताड | सर्वानंद | | पि. रि. ५ |
| | „ प्रा. (चोथो) | | कनककुशल | | अ. १ |
| | „ प्रा. (पांचमो) | ४२५ | जिनप्रभ | १३८७ | पा. ४ भाव. |
| | „ अवचूरि | | | | भाव. |
| | दीपालिकाकल्प B (छट्ठो) | २७५ | विनयचंद्र | १३८५ | वृ पा. ३ |
| ३ | रावणऋद्धिस्वरूप | १२३ | | | पा ४ |
| ४ | वैभारगिरिकल्प | पत्र ३ | | | राधण. |

* एमां तीर्थ, पर्व आदिना महात्मना वर्णनना ग्रंथोने एकत्रित करी तेमने क्रमवार नोंध्या छे उपरांत स्तोतना ग्रंथो पण महात्म्यने लगता होवाथी तेमनो पण आज वर्गमां समावेश करवामां आव्यो छे.

† प्रोफेसर मणिलाल नभुभाई पोतानुं लीस्ट के जेमां सन १८८२ मां पाटणना बारभंडारना पुस्तकोनी हकीकत साथे नोंध करी छे तेमां आ ग्रंथ रचायानो सं. १४५३ जणावे छे.

A पिटर्सन रिपोर्ट पांचमांना पेज ५४ मां आ कल्पनी नोंध करी छे. त्यां एनी प्रान्त गाथानुं उत्तरार्ध "तत्प्रावर्ततपर्वसर्वजगति भातृद्वितीयाभिधम्" आवी रीते आपीने छेवटमां इत्याचार्य श्रीसर्वानंदविरचितो दीपोत्सवकल्पः समाप्तः एवी नोंध करी छे.

B एने लघुदीपालिका कल्पना नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-मो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ | शत्रुंजयकल्प | गा.४७ | धर्मघोष | | पा. ३. ४. |
| | वृत्ति | १२५०० | शुभशील | १५१८ | पा. ५ |
| | शत्रुंजयकल्प A | | पालित्तयसूरि | | बृ. |
| ६ | शत्रुंजयादित्रेसठतीर्थकल्प B | ३५०३ | जिनप्रभसूरि | १३८५ | बृ. |
| ७ | शत्रुंजयमाहात्म्य C | १००२४ | धनेश्वरसूरि | | पा. ३. ४. लीं. |
| | „ (गद्य) | पत्र २९८ | हंसराज | | भरूच. |
| ८ | शत्रुंजयषोडशोद्धारवर्णन | पत्र१६ | | | भाव. |
| ९ | संमेतशिखरमाहात्म्य | २००० | दि.दीक्षितदेवदत्त D | | A. S. |
| १० | सिद्धचक्रस्तव | १२३७ | | | पा. ४ |
| ११ | स्वामिवात्सल्यमाहात्म्य E | २००० | | | जेसल. |

A सदरहू कल्पो भद्रबाहुस्वामीए रच्या वज्रस्वामीए उधृत कर्या अने पादलिप्त सूरिए संक्षिप्त कर्या छे.

B एना माटे बृहत्टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छे:—

"शत्रुंजयादि ६३ तीर्थकल्पाः सं. प्रा. १३८५ वर्षादौ जिनप्रभसूरिकृताः प्रसिद्ध तीर्थेतिवाच्याः ३५०३"

C एना छ सर्ग छे. लींबडीनी टीपमां तेना श्लोक बार हजार छे एम जणाव्युं छे.

D आ दिगंबर दीक्षित देवदत्ताचार्य क्यारे थएला छे ते संबंधी कंइ वधु हकीकत मळी नथी.

E सदरहू ग्रंथ जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधेल होवाथी तेना माटे शक रहे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** | | | | |
| | **स्तुति-स्तोत्रो.** | | | | |
| १ | अजितशांतिस्तव | गा. ३८ | नंदिषेण | | बृ. पा. १-३ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ७४० | जिनप्रभ | १३६५ | बृ.पा. १ सुलभ्य. |
| | वृत्ति A ( बीजी ) | | | | बृ. |
| | अवचूरि | ३२० | | | पा. ३ A. S. |
| | अजितशांतिस्तव ( बीजो ) | | जयशेखर | | A S. |
| | अजितशांतिस्तवB (त्रीजो) | ३९ | शांतिचंद्र | १६५१ | नगीनदास. |
| २ | अष्टोत्तरीस्तोत्र | गा. ११२ | आंच. महेंद्रप्रभ | | लींबडी, |
| ३ | अतिशय पंचाशिकास्तोत्र | | | | भाव. |
| ४ | अनेकैः स्तुति C | | ( अपूर्ण ) | | खंबात. |
| ५ | अयोगान्ययोगव्यवच्छेदद्वात्रिंशिका D | | हेमाचार्य | | पा. ४ कोडाय. |

A आ वृत्ति बृहट्टिप्पनिकामां नोंधी छे, पण त्यां कर्त्तानुं नाम आप्युं नथी.

B आ अजितशांतिस्तवनुं आदिपद ' सकलार्थसिद्धिसाधनहरिचंदनचारुचरणपरिचरणे ' एवुं छे.

C आ स्तुति खंबातनी टीपमांथी मळी छे, तेनी रचना उपरथी ते यशोविजयजी उपाध्याए रची होय तेम विशेष संभव थइ शके तेम छे.

D आ बे बत्रीशीओ जूदी जूदी छे. तेमां स्याद्वादमंजरीनुं मूळ अन्ययोगव्यवच्छेदिका बत्रीशी छे अने बीजी अयोगव्यवच्छेद बत्रीशी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६ | अरनाथस्तव | | | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | | वल्लभगणि | | डेक्कन. |
| ७ | अर्हत्स्तव ( सं. गद्य ) | | सिद्धसेन | | A. H. |
| ८ | अर्हत्सहस्रनामसमुच्चय | पत्र ६ | | | अ. २ |
| | वृत्ति | पत्र ५७ | | | अ. २ |
| ९ | अर्हत्सहस्रनामस्तोत्र | पत्र ८ | देवविजयगणि | | अ. २ |
| १० | अष्टादशस्तोत्र | २२० | सोमसुंदर | | पा. ४ |
| | अवचूरि | पत्र ४ | सोमदेव | १४९७ | पा. ४ प्रो. मणिलाल |
| ११ | अष्टपंचाशत्स्तुति | | | | पा. ३-५ |
| | वृत्ति | २८०० | सोमतिलक | | पा. ३-५ |
| १२ | अष्टप्रवचनमाला A ( प्रा. ) | पत्र ६ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १३ | आदिजिनादिस्तोत्र | | जयकेसरी | | पा. ३ |
| | आदिजिनस्तुति | गा. ५१ | | | नगीनदास. |
| | आदिदेवस्तवन (मंत्रजंत्र-कलित ) | | | | A. S. |
| | वृत्ति | २०० | | | A. S. |
| | आदिनाथजगन्नाथस्तुति | | | | अ. १ |
| १४ | आनंदलहरी | | | | पा. ४ |
| | वृत्ति | १४०० | नरसिंह B | | पा. ४. |

A आ स्तोत्रनुं नाम ' अष्टप्रवचन माता ' एवुं होय तो हाय. प्रोफेसर मणिभाइए पोताना लीस्टमां अष्टप्रवचनमालाना नामथी तेनी नोंध करेली होवाथी तेज नामे तेने इहां नोंध्युं छे.

B आ नाम अन्यधर्मी जेवुं लागे छे ते उपरथी मूळना कर्ता पण अन्यमतिज विशेष संभवी शके. छतां नरसिंह ते कोण हता ते बाबत चोकस निर्णय आ वृत्तिनो प्रशस्ति लेख तपासवाथीज थई शके.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १५ | उपसर्गहरस्तोत्र | | भद्रबाहुस्वामी | | वृ. पा. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | जिनप्रभ | | वृ. पा. २-३ |
| | वृत्ति (बीजी) | | जयसागर | | A. S. |
| | वृत्ति (त्रीजी) | | पार्श्वदेव | १६९७ | पि. रि. ४ |
| | लघुवृत्ति | ८५० | | | A. S. |
| | उपसर्गहरस्तोत्र | १००० | सद्गुरु A | | डे. पेज ६. |
| १६ | उल्लासिक्रम | | | | रि. ६ |
| | वृत्ति | | धर्मतिलक | | रि. ६ |
| १७ | ऋषभशतक | | हेमविजय | | अ. २ |
| १८ | ऋषभस्तव | | | | |
| | अवचूरि | १९४ | खर. विजय-तिलक | | पा. ४ |
| | ऋषभस्तव (बीजो) | ४० | | | लींबडी. |
| | अवचूरि | ३०० | चंद्रधर्म | | पा. ५. |
| | ऋषभस्तुति | ८८ | जिनसेन | | A. S. |
| | ऋषभस्तोत्र B | ३० | जिनवल्लभ | | जेसल. |
| १९ | ऋषिमंडलस्तव C | गा. २७१ | | | वृ. |
| | „ (सं.) D | ७० | मेरुतुंग | | वृ. |
| | „ (सं.) | ९८ | गौतम | | लीं. डेक्कन पेज. २७३ |

A आ नाम कंइक विचित्र लागे छे, डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां पण तेना संबंधे कशो खुलासो जणाव्यो नथी. अमारा अनुमान प्रमाणे प्राये आ कोई अन्यदर्शनी होवा जोइये.

B आ ऋषभस्तोत्र जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे.

C.D एना माटे पाछळ थाने एकसो पंचोत्तेरमां तेमना नाम नीचेनी नोट जुओ.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २० | एकीभावस्तोत्र | | | | A. S. |
| | वृत्ति | २४० | वादिराज | | A. S. |
| २१ | कर्मस्तवन (प्रा.) | ४२ | | | पा. ४ |
| २२ | कल्याणमंदिरस्तोत्र | | सिद्धसेन | | पा. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | ५२५ | हर्षकीर्ति | १६६८ | पा. १ |
| | वृत्ति | | माणिक्यचंद्र | | पा. ३ |
| | वृत्ति | | जिनविजय | १७१० | पा. ३ |
| | वृत्ति | | उपकेशगच्छीय देवतिलक | | पा. ३ जे. |
| | वृत्ति | ५५० | गुणसागर | | पा. ५ |
| | अवचूरि | ४८० | गुणसेन A | | पा. १-३ अ. २ डे. |
| | कल्याणमंदिरस्तोत्र (बीजुं) | | भावप्रभ | १७९१ | भाव. |
| | वृत्ति | २०६२ | स्वोपज्ञ | | पा. ३-४. भाव. |
| | कल्याणमंदिरछायास्तवन | | | | A. S. |
| | कल्याणमंदिर B (अभिनव) | | | | अ. १ |
| २३ | कल्याणिकस्तव | | | | पा. ३ |
| २४ | क्रियाकलापस्तुति | | | | पा. ४ |
| | वृत्ति | पत्र ५ | प्रभाचंद्र | | पा. ४ |

A आ नाम पाटणनी टीपोमांथी मळ्युं छे तेना भरोंसे अमे इहां नोंध्युं छे. अमदावादना चंचलबाईना भंडारनी टीपमां तथा डेक्कन कॉलेजना रिपोर्टमां कर्त्तांना नाममां गुणरत्नसूरिनुंज नाम आप्युं छे. आ बे आचार्यमांथी कया आचार्ये आ अवचूरि रची छे ते बाबत तेवो पुरावो मळ्या वगर निर्णय थवो मुश्केल छे.

B एने अभिनव कल्याणमंदिरस्तोत्रना नामे वधु ओळखवामां आवे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २५ | क्रियागुप्तस्तोत्र A | ५० | आंच.जयशेखर | | जेसल. |
| २६ | कुरुकुल्लादेवीस्तव | | | | A. S. |
| २७ | गणधरस्तवन (प्रा.) | पत्र ७ | | | प्रो. मणिलाल. |
| २८ | गुरुपादुकास्तोत्र | ६ | | | लींबडी. |
| २९ | गुरुपारतंत्र्यस्तव | | जिनदत्त | | पा. १-३. |
| | वृत्ति | | जयसागर | १३६८ | पा. १-५ A. S. |
| ३० | गुरुयमककाव्याष्टक (सं.) | पत्र १ | | | प्रो. मणिलाल. |
| ३१ | गौडीपार्श्वस्तोत्र B | का. १०८ | यशोविजय | | सं. |
| ३२ | गौतमस्तोत्र | | | | पा. ३ |
| ३३ | चउक्कसाय | | | | अ. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | | | अ. १ |
| ३४ | चतुर्विंशतिजिनस्तव C | | मल. देवप्रभ | | वृ. |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तवन (प्रा.) | १५५ | जिनवल्लभ | | पा. ५ जेसल. |
| | चतुर्विंशतिजिनपूर्वभवोत्कीतनसंबद्धस्तवन | का. २७ | रत्नसागरगणि | | खंभात. |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तुति | २०२ | बप्पभट्टि | | वृ. पा. ३-४ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |

A आ स्तोत्र जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधायलुं छे. अने पं. आणंद सागरजी जणावे छे के आ नामनुं स्तोत्र तेमना जोवामां आवेलुं छे.

B आ स्तोत्र पूर्वे यशोविजयजीकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंधेलुं छे छतां आ स्तोत्रनो वर्ग होवाथी खास करीने इहां पण नोंध्युं छे.

C सदरहू स्तव बृहत्‌टिप्पनिकामां नोंधेल छे बाकी क्यांपण उपलब्ध थयुं नथी. तेना माटे त्यां " २४ जिनस्तवाः २४।८।८ गाथा श्रवनादि ३९ वाच्या " एवो नोंध छे. एमां अनुक्रमे दरेके दरेक स्तवनी आठ आठ गाथाओ छे. ते मुजब एनी कुलगाथाओ १९२ होवी जोईये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | चतुर्विंशतिजिनस्तुति | पत्र २ | धर्मघोष | | पा. ३ |
| | „ A | | समंतभद्र | | बृ. पा. ३ |
| | वृत्ति B | १५४१ | दि. प्रभाचंद्र | | बृ. |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तुति | | सिद्धांतसागर | १५४१ | पा. ४ |
| | „ | | जिनेश्वर | | पा. ४ जेसल. |
| | अवचूरि | पत्र २ | | | पा. ४ |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तुति | ५११ | जिनविजयशिष्यपद्मविजय | | पा. ४ |
| | अवचूरि | | | | पा. ४ |
| | चतुर्विंशतिस्तुति | | सोमदेव | | A. S. |
| | वृत्ति | ८० | | | A. S. |
| | चतुर्विंशतिस्तुति | का. २७ | सोमप्रभ | | खं. |
| | „ | पत्र १२ | मेरुविजय | | अ. १ |
| | अवचूरि | | स्वोपज्ञ | | अ. १ |
| | चतुर्विंशतिस्तुति | | हेमविजय | | अ. १ |
| | अवचूरि | | स्वोपज्ञ | | अ. १ |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र | | जिनप्रभ | | पा. ३ |
| | वृत्ति | ५०१ | कनककुशल | १६५२ | पा. ३-५ |

A, B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " समंतभद्रकृतस्वयंभुवाभूतहितेनभूतले समंजसभित्यादि २४ जिनस्तवाः २४ वृत्ति दिगंबर प्रभाचंद्रीया १५४१ " आवो नोंध छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र | ५७५ | मुनिसुंदर | | पा. ३-५ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३-५ |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र | | नरचंद्र | | पिटर्सन रि. ५ |
| | ,, (गुप्तक्रिय) A | | सागरचंद्र | | A. S |
| | वृत्ति | २०० | | | A. S. |
| | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र | | विलमविजय | | नगीनदास. |
| | चतुर्विंशतिकास्तोत्र | ५९ | भूपाल तथा पद्मनंदि | | पा. ५ |
| ३५ | चतुःषष्टियोगिनीस्तुति | ६० | | | A. S. |
| ३६ | चित्रस्तोत्र | | देवसुंदर शिष्य साधुराज | | पा. ५ |
| | वृत्ति | २०८ | | | पा. ५ |
| ३७ | चित्रस्तोत्र (बीजुं) | | | | पा. ५ |
| | वृत्ति | ८८ | | | पा. ५ |
| ३८ | चित्रबद्धपार्श्वस्तोत्र | पत्र २ | | | भाव. |
| ३९ | चिंतामणि | ११ | | | ली. |
| ४० | चिंतामण्यष्टक | पत्र ६ | | | प्रो. मणिलाल. |
| ४१ | जनेनयेनस्तुति | | | | वृ. |
| | वृत्ति | | | | वृ. |

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले क्रियागुप्त एवा अचोकस नामथी जेनी नोंध करी छे अने तेज नामथी आ वर्गनी शरुआतमां जेने अमे नोंध्युं छे तेज आ स्तोत्र नहि होय? ते बाबतनी खरी खात्री जेसलमेरना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासवाथी थई शके.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४२ | जयतिहुयणस्तोत्र | ३० | अभयदेव | | वृ. पा. १ |
| | वृत्ति | २५१ | | | पा. १ |
| ४३ | जयपयडपयावस्तोत्र | गा. १७ | | | डॉ. |
| ४४ | जिनकल्याणिकस्तोत्र | १०३ | सोमसुंदर | | पा. ४ |
| ४५ | जिंनपतिस्तोत्र | | विल्हणकवि | | पि. रिपोर्ट ५. |
| ४६ | जिनभवस्तोत्र | | सोमसुंदर | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| ४७ | जिनराजस्तव ( प्रा. ) | ४३ | जिनप्रभाचार्य | | पा. ४ |
| ४८ | जिनविंशति A | ३० | | | जेसल. |
| ४९ | जिनशतक | १०० | जंबूमुनि | | वृ. पा. ४ सुलभ्य. |
| | पंजिका | १५५० | शांबसाधु | १०२५ | वृ. पा. १ सुलभ्य. |
| ५० | जिनस्तुति B ( सं. ) | २५ | चंद्रगुप्त | | नगीनदास. |
| | " | | सोमप्रभ | | पा. ३ भाव. |
| | " | | जयाभिनंदि | | A. S. |
| ५१ | जिनसहस्रनामस्तोत्र | | आसधर | | पा. ३ |
| | " | | जिनसेन | | A. S. |
| | वृत्ति | ३००० | | | A. S. |

A आ जिनविंशति जेसलमेरनी टीपमां हीरालालना नोंधमां छे.

B एनुं आदिपद " संसारसिन्धूत्तमजाणवंतं " एवुं छे. पिटर्सन रिपोर्ट पेहेलाना पेज ९४ मां एनी नोंध लेतां प्रान्तमां " इति वर्णमान नामा माथुरंकपितृमातृकीर्त्तनाजिनपाः । श्रीचंद्रगुप्तसूरिभिरभिष्टुताः शिवसुखं दद्युः " आवो उल्लेख कर्यो छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ५२ | जिनेश्वरस्तोत्र | २७ | | | नगीनदास. |
| ५३ | जिनस्तोत्र | | | | पा. ३, |
| | अवचूरि | | हर्षवर्द्धन | | पा. ३ |
| ५४ | जीरावल्लिस्तव | | | | A. S. |
| | जीरावल्लिस्तवन | का. ४५ | आंच. महेंद्रप्रभु | | लीं. |
| | जीरावल्लिस्तोत्र | | | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| ५५ | जैनधर्मवरस्तोत्र | | भावप्रभ | १७९१ | पि. रि. ५ |
| | वृत्ति | | भावप्रभ | १७९१ | पि. रि. ५ |
| ५६ | तिजयपहुत्त | गा. १४ | | | पा. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | हर्षकीर्ति | | पा. १-२ |
| ५७ | तीर्थस्तव ( यमकबद्ध ) | | सोमप्रभ | | पा. १. |
| ५८ | तीर्थमालास्तवन ( प्रा. ) | गा. १११ | | | पा. ४ नगीनदास. |
| ५९ | तीर्थमालास्तोत्र | | चंद्रसूरि | | A. S. |
| ६० | देवागमस्तोत्रA | ११५ | दिगं. समंतभद्र | | पि. रिपोर्ट ४ |
| ६१ | देवाःप्रभोस्तोत्र | | जयानंद | | पा. ३ |
| | अवचूरि | २०० | वानरर्षि | | पा. ३ A. S. |
| ६२ | द्व्यक्षरनेमिस्तव | ५० | जिनप्रभ | | जेसल. |

A आ देवागमस्तोत्र ते गंधहस्तिमहाभाष्यनुं मूळ छे अने तेनी ११५ कारिकाओ छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याnो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ६३ | द्वात्रिंशद् द्वात्रिंशिका (ताड) A | ८३० | सिद्धसेन | | डेक्कन पेज १६७ |
| ६४ | द्विवर्णरत्नमालिका | | पुण्यरत्न | | पा. ३ |
| | वृत्ति | पत्र ११ | रामर्षि | | पा. ३ |
| ६५ | धनपाल पंचाशिका | | धनपाल | | वृ. |
| | वृत्ति | ११०० | देवभद्र शिष्य प्रभानंद | | वृ. पा.२-३-४-५ |
| | वृत्ति ( संक्षिप्त ) | | | | वृ. |
| | अवचूरि | | धर्मशेखरोपाध्याय | | पा. ३ |
| | अवचूरि ( बीजी ) | ३३६ | नेमिचंद्र | | पा. ४ |
| ६६ | धरणोरगेंद्रस्तव | ताड | | | पि. रि. ५ |
| | वृत्ति | | | | पि. रि. ५ |
| ६७ | नंदिस्तुतिव्याख्या | पत्र ३ | गुणसौभाग्य | | पा. ५ |
| ६८ | नमस्कार द्वात्रिंशिका B | | (जैन) | | डेक्कन. |
| ६९ | नमस्कारस्तव ( प्रा. ) | | जिनकीर्ति | | A S. |
| | वृत्ति | २५० | " | | A. S. |
| ७० | नवग्रहस्तोत्र | ११ | भद्रबाहु | | नगीनदास मुद्रित. |
| ७१ | नमिउण | २५ | | | पा. ३ पि. रि. ५ मुद्रित. |
| | " | गा. २४ | | | लीं. जेसल. |

A सदरहू बत्रीशीमांनी वीस बत्रीशी मळे छे. डेक्कन कॉलेजमां जो बत्रीशे बत्रीशी संपूर्ण होय तो त्यांथी तेनो उतारो करावी लेवानी अत्यंत अगत्य छे. हमणां तपास करतां मालम पडयुं छे के डेक्कनमां पण वीशज बत्रीशी छे.

B आ नमस्कार द्वात्रिंशिका डेक्कन कॉलेजना लीस्टमां नोंधेली छे. अने तेमां ते कोई जैनाचार्यें करेली छे एम जणाव्युं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७२ | नमिरसुरस्तव | | | | पा. ४ |
| ७३ | नाभेयजिनस्तुति | | विश्वसेन A | | A. S. |
| ७४ | नाभेयस्तोत्र | गा. २५ | | | लींबडी. |
| ७५ | निरंजनपरमात्मत्रिंशतिका | | | | A. S |
| ७६ | नेमिस्तोत्र | गा. १४ | | | लींबडी, |
| | ,, | १५ | जिनवल्लभ | | जेसल. |
| ७७ | नेमिचरित्रस्तोत्र ( प्रा. ) | ११४ | | | पा. ६ |
| ७८ | नेमिस्तवन | २४ | विजयसिंह | | पा. ४ |
| ७९ | नेमिगद्यावली | | | | पा. २ |
| ८० | नेमिशतक | ११८ | | | पा. ५ अ. २ |
| ८१ | नमोस्तु वर्धमानायस्तुति | | | | अ. १ मुद्रित. |
| ८२ | पठितसिद्धसारस्वतस्तोत्र | ११ | | | नगीनदास. |
| ८३ | पंचजिनस्तव ( षड्भाषा ) | ८० | जिनकीर्ति | | पा. ३ |
| ८४ | पंचपरमेष्ठिस्तव | | जिनकीर्ति | १४९४ | पा. ३ |
| | वृत्ति | | ,, | १४९४ | पा. ३ |
| ८५ | पंचपरमेष्ठिस्तव | | जिनप्रभ | | A. S. |
| | ,, B | १०० | अभयदेव | | जेसल. |

A आ कोई दिगंबर आचार्य होवा जोईये एम तेमना नाम उपरथी जणाय छे.

B आ पंचपरमेष्ठिस्तव जेसलमेरनी हीरालाले करेली टीपमां नोंधेलो होवाथी तेना कर्त्ताना नाममां शक रहे छे. कदाच ते जिनप्रभसूरिकृत तेज ए होय तो पण होय.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८६ | पंचपरमेष्ठिस्तोत्र | | | | A. S. |
| ८७ | पंचत्रिंशदतिशायस्तव | ६० | | | जेसल. |
| ८८ | पंचमीस्तोत्र | | | | A. S. |
| ८९ | परमेष्ठिस्तव ( प्रा. ) | ४२ | | | पा. ४ |
| ९० | परमानंदस्तोत्र | का. ८ | हर्षमुनि | | लीं. |
| ९१ | पद्मावत्यष्टक | | | | A. S. |
| ९२ | पद्मावतीस्तोत्र | | | | पा. १ भाव. |
| | ,, | | पृथ्वीभूषण | | A. S. |
| ९३ | पद्मावतीसहस्रनाम | | | | पा. १ |
| ९४ | प्राकृतवीरस्तुति ( प्रा. ) | | | | भाव. |
| ९५ | पार्श्वनाथाष्टक | | इंद्रनंदि | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | | श्रुतकीर्ति | | डेक्कन. |
| ९६ | पार्श्वस्तोत्र | पत्र १ | | | पा. १ |
| | ,, | गा. १४ | जिनवल्लभ | | लीं. |
| | ,, | १२५ | पार्श्वदेव | | जेसल. |
| | पार्श्वनाथस्तोत्र | | महेंद्रसूरि | | A. S. |
| ९७ | पार्श्वनाथादिस्तोत्र | | | | पा. ३ |
| ९८ | पार्श्वस्तव | का. ९ | पद्मप्रभ | | नगीनदास. |
| | वृत्ति | १०० | मुनिशेखर | | नगीनदास |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९९ | पार्श्वस्तवन ( सटीक ) | पत्र १ | माणिक्यसुंदर | | पा. ४ |
| | पार्श्वस्तवन | | जिनभद्र | | पा. ४ |
| १०० | पार्श्वनामावली | ११३ | आंच. कल्याणसागर | | पा. ४ |
| १०१ | पार्श्वभक्तप्रसादप्रशस्ति | १५० | | | रि. ६ |
| १०२ | पुद्गलपरावर्त्तविचारस्तव | पत्र १ | | | पा. १ |
| १०३ | पूंडरीकस्तव ( प्रा. ) A | गा. ११८ | | | नगीनदास. |
| १०४ | प्रणम्यस्तोत्र B ( प्रा. ) | | | | प्रो. मणिलाल. |
| १०५ | प्रभावकस्तोत्र C | | | | जेसल. |
| | वृत्ति D | ७०० | | | जेसल. |
| १०६ | फलवर्द्धिपार्श्वस्तवन | | क्षमारत्नोपाध्याय | | A. S. |
| | ,, विज्ञप्ति | | दयासागर | | A. S. |
| १०७ | बटुकभैरवस्तोत्र | | | | पा. १ |
| १०८ | बप्पहट्टिस्तुति E | ९६ | | | वृ. सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ७३५ | सहदेव | | वृ. पि. रि. ५ |

A एनुं आदिपद " आरभे सुनियत्ता " एवुं छे.

B आ स्तोत्र प्रणम्य आ पदथी शरु थयेलुं होवाथी तेवा नामथीज ओळखाववामां आव्युं छे. पण ते अमोने हजीसूधी उपलब्ध थयुं नथी.

C आ नाम शक पडतुं लागे छे कारण के हीरालाले तेनी सामान्य नामथीज नोंध करी होय तेम जणाय छे. तो तेनुं खरुं नाम शुं छे ते जाणवा माटे ते प्रत फरीथी तपासवानी जरूर छे.

D एनुं नाम " मंत्रमहाभाष्य " एवुं छे.

E एना माटे वृहत्टिप्पनिकामां " नमेंद्रमौलि इत्यादि बप्पहट्टिस्तुतिः ९६ वृत्तिः सहदेवकृता ७३५ " आवो नोंध छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १०९ | बालभारतीयस्तुति | | | | A. S. |
| ११० | भक्तामरस्तोत्र | ४४ | मानतुंग | | पा. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | १५७२ | गुणाकर | १४५६ | बृ. पा. १ सुलभ्य. |
| | ,, | ४०० | अमरप्रभ | | लीं. नगीनदास. |
| | ,, | | रत्नचंद्र | | पा. ३ |
| | ,, | | कनककुशल | १६५२ | पि. रि. ५ |
| | ,, | | गुणसुंदर | | पा. ३ |
| | ,, | ४०० | शांतिसूरि खंडिलगच्छीय | | नगीनदास. |
| | ,, | | पद्मविजय | | अ. १ |
| | ,, | | देवसुंदर | | अ. २ |
| | (अभिनव) भक्तामर A | | | | अ. १ |
| १११ | भक्तामरछायास्तवन | | | | A.S. |
| ११२ | भयहरस्तव | | स्थूलिभद्र | | डे. पेज १३४ |
| | वृत्ति | | ,, | | डे. पेज १३४ |
| ११३ | भयहरस्तोत्र B | गा. २२ | मानतुंग | | पा. १–२ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | | जिनप्रभ | १३६५ | पा. १–३ A. S. |
| | वृत्ति | १६० | | | बृ. |

A अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां एनुं नाम अभिनव भक्तामर एवुं लख्युं छे.

B आ स्तोत्र नमिऊणना नामथी विशेष ओळखाय छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११४ | भयहरस्तोत्र | | जिनसिंह | | डे. पे. ३४. |
| | वृत्ति | | | | डे. पे. ३४. |
| ११५ | भरतक्षेत्रीयाजिनस्तुति | १६० | | | पा. ५ |
| ११६ | भवानीसंहस्रनाम | २०५ | | | पा. ४ |
| ११७ | भारती १०८ नाम स्तवन | | | | पा. ३ |
| ११८ | भूपालचतुर्विंशतिका | | दिगंबर | | A. S. |
| ११९ | मंगळार्दाश्वरस्तोत्र A | का. १४ | धर्मसूरि | | लीं. |
| १२० | मंत्रस्तव | | | | A. S. |
| | वृत्ति | | | | A. S. |
| १२१ | मंत्रबीजकोश | | | | A. S. |
| १२२ | महायमकमयपार्श्वस्तोत्र B | ४० | पद्मप्रभ | | जेसल. |
| १२३ | महादेवद्वात्रिंशिका | | | | पा. ३ |
| १२४ | महादेवस्तोत्र | | | | भाव. |
| १२५ | महावीरस्तोत्र | | पार्श्वचंद्र C | | पा. ५ |
| | वृत्ति | ९३ | भावप्रभ | | पा. ५ |

A आ नाम कांइक शक पडतुं लागे छे कारणके तपास करतां एम मालम पडे छे के पिटर्सन रिपोर्ट पांचमामां जणावेलुं अने आ पुस्तकमां कुलकोना वर्गमां नोंधेलुं नामे मंगलकुलक तेज ए होवुं जोईये. ( जुओ आ पुस्तकना पेज २०२ मां )

B सदरहू स्तोत्र जेसलमेरनी हीरालालनी करेली टीपमां नोंधेलुं होवाथी शक पडतुं छे.

C आ पार्श्वचंद्र ते कोण हता ते जाणवा माटे तेनी प्रत तपासी नक्की करवुं जोईये.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२६ | महावीरस्तोत्र ( अपभ्रंश ) | गा. ३० | | | नगीनदास. |
| १२७ | महावीरस्तुति | | जिनपति | | A. S. |
| | ,, | | जिनेश्वर | | A. S. |
| १२८ | महावीरचरित्र | गा. ४४ | जिनवल्लभ | | लीं. |
| १२९ | महीम्नस्तोत्र | | | | भाव. |
| | ,, | | जयचंद्रशिष्य सत्यशेखर | | पा. ५ |
| | अवचूरि | | | | पा. ५ |
| १३० | महेश्वरीसहस्रनाम | | | | पा. १ |
| १३१ | यमकस्तुति A | | धर्मघोष | | A. H. |
| | वृत्ति | | सोमतिलक | | A. H. |
| १३२ | यमकस्तुति | | | | पा. २ |
| | वृत्ति | ताड ५७ | सोमप्रभ | | पा. २-५ |
| १३३ | यशोभद्रसूरिकृतस्तुति B | | | | लीं. |
| १३४ | युगादिस्तव | | | | पा. १ |
| १३५ | युगादिदेवस्तोत्र | | | | A. S. |
| | वृत्ति ( मंत्रयंत्रगर्भित ) | २०० | | | A. S. |
| १३६ | युगादिदेवस्तुति | | सोमसुंदर | | A S. |

A एनुं आदिपद ' जयवृषभ ' एवुं छे.

B एनुं अपर नाम ' कुसुमावली ' छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १३७ | युष्मदस्मदस्तव | | सोमसुंदर | | A. S. |
| १३८ | रत्नकोश A | ११५० | मुनिसुंदर | | पा. ६ |
| १३९ | रत्नाकरपंचविंशतिका | | | | पा. ३ |
| | वृत्ति | १३०८ | वाघजी | | अ. १ नगीनदास. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | | | | कोडाय. |
| १४० | राणपुरस्तवन ( सं. ) | पत्र ४ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १४१ | लघुस्तव | | राजमुकुट B | | डेक्कन. |
| | भाष्य | | | | डेक्कन. |
| १४२ | लघुस्तोत्र | | | | जेसल. |
| | वृत्ति | ४७४ | सोमतिलक | | जेसल. |
| १४३ | लघुअजितशांति C | का. १७ | जिनवल्लभ | | वृ. पा. १ जेसल. |
| | वृत्ति | ३२० | धर्मतिलक D | | पा. १ अ. २. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | | जयसोमशिष्य गुणविजय | | पा. ५ |
| १४४ | लघुअजितशांतिस्तव E | | वीरगणी | | नगीनदास. |

A एमां अनेक स्तोत्रोनो संग्रह करवामां आव्यो छे.

B आ राजमुकुट ते कोई अन्यमति आचार्य होवा जोईये एम तेमना नाम उपरथी जणाय छे.

C एनुं अपर नाम " उल्लासिक्कमनख्खनिग्गयपहा दंडछलेणांगिणं " एवुं छे.

D धर्मतिलक सूरिनी वंशावळी आ रीते छः—

पहेला विजयसेनसूरि तच्छिष्य धर्मदेव तच्छिष्य धर्मचंद्र तच्छिष्य धर्मरत्न अने तेना शिष्य ते आ धर्मतिलकसूरि छे. अमदावादना चंचलबाईनी टीपमां कर्त्ताना नाममां धर्मतिलकसूरिना गुरु धर्मरत्ननुं नाम आप्युं छे. तेथी चंचलबाईना भंडारमांनी प्रत तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

E एनुं प्रथम चरण " गभ्भअवयारि मंगलकरा " एवुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४५ | लघुशांति | | मानदेव | | पा. ३ मुद्रित. |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ A. S. |
| १४६ | वर्द्धमानद्वात्रिंशिका | | सिद्धसेन | | पा. १-३ |
| | वृत्ति | पत्र ९ | | | पा. ५ भाव. |
| | अवचूरि | २०३ | आंच.उदयसागर | | पा. ५ |
| १४७ | वर्द्धमानषट्त्रिंशिका | | | | पा. ३ |
| १४८ | वरकाणापार्श्वविज्ञप्ति | | नयवर्द्धन | | A. S. |
| १४९ | विचारसारस्तवन | २२ | माणिक्यसुंदर | | पा. ४ |
| १५० | विज्ञप्तित्रिवेणी | १०१२ | भोजश्रावक | | पा. १ |
| १५१ | विहरमानजिनस्तोत्र ( प्रा. ) | ३२५ | लब्धिसागर | | पा. ३ |
| १५२ | विहारशतक A | | रामचंद्रगणि | | पा. ३-४ कोडाय.डे. |
| १५३ | विल्हणपंचाशिका | | विल्हण | | A. S. |
| १५४ | विविधस्तव | | | | A. S. |
| १५५ | विशाललोचन | | | | अ. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | | | अ. १ मुद्रित. |
| १५६ | विषापहारस्तोत्र | का. ४० | दिगं. धनंजय | | लीं. A. S. |
| | टिप्पन | | | | लीं. |

**A** आ शतक पूर्वे पेज २१० मां शतकोना वर्गमां नोंधवामां आव्युं छे, पण त्यां भूलथी कर्तानुं नाम नोंधतां रही गयुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १५७ | वीतरागस्तोत्र | ४७४ | हेमाचार्य | | पा. १ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | २१२५ | प्रभानंद A | | वृ. पा. २-४-५. |
| | पंजिका | पत्र१८ | नंदिसागर | | अ. २ |
| | अवचूरि B | १४०० | प्रभानंद | | पा. १-३ |
| | अवचूरि (बीजी) | | विशाळराज | | पा. ३ |
| | अवचूरि (त्रीजी) | ६२५ | सोमोदयगणि | | खं. |
| | अवचूरि (चोथी) | ७०० | महेंद्रशिष्य मेघराज | १५१० | लीं. |
| १५८ | वीतरागस्तुति | | | | A. S. |
| १५९ | वीतरागनमस्कारस्तव | | | | A. S. |
| १६० | वीतरागशतक | | | | अ. २ |
| | वृत्ति | पत्र ३८ | | | अ. २ |
| १६१ | वीरचरित्रस्तव (प्रा.) | | जिनवल्लभ | | A. S. |
| | वृत्ति | ८०० | समयसुंदर | | A. S. |
| १६२ | वीरस्तव C | | धनपाल | | वृ. |

A आ प्रभानंदसूरि ते रुद्रपल्लीय देवभद्रसूरिना शिष्य अने चंद्रसूरि तथा विमलसूरिना गुरु हता.

B आ अवचूरि ते वखते प्रभानंदसूरिकृत वृत्तिज तो नहि होय ते माटे पाटणना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

C आ वीरस्तव तेनी वृत्तिसाथे बृहट्टिप्पनिकामां नोंध्यो छे, तेना माटे ते टिप्पनिकामां आवी रीते नोंध छे " निम्मलनहेवि इति वीरस्तवस्य पं. धनपालकृतस्य वृत्तिः सूराचार्यकृता २२५ "

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याॱनो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | २२५ | सूराचार्य A | | बृ. |
| | वीरस्तव | | | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| | वीरस्तवन (प्रा.) | | | | पा. ३ भाव. |
| | वृत्ति | पत्र२ | | | भाव. |
| | वीरस्तवन | ४० | विमलहर्षशिष्य मुनिविमळ | | जेसल. |
| १६३ | वीरजिनादिस्तोत्र | | कल्याणविजय | | पा. ३ |
| १६४ | वीरस्तोत्र | १५ | जिनवल्लभ | | जेसल. |
| १६५ | वीसविहरमाणस्तवन | | मेरुनंदन | | A. S. |
| १६६ | बृहच्छांति | | शांतिसूरि | | पा. २ मुद्रित. |
| | वृत्ति | पत्र५७ | हर्षकीर्ति | | डेक्कन. |
| | अवचूरि | | | | अ. २ |
| १६७ | वैरुटयास्तोत्र | गा. ३० | आर्यनंदिल | | A. H |

A सूराचार्य ते देल्ल महत्तरना गुरु हता. देल्ल महत्तरना शिष्य दुर्गस्वामि अने दुर्गस्वामिना शिष्य उपमित भवप्रपंचादिना करनार सिद्धर्षिसूरि थया. प्रभावक चरित्रमां निर्वृत्ति गच्छना सूराचार्यने गर्गर्षिना शिक्षागुरु तरीके जणाव्या छे, अने तेओ भीम अने भोजराजाना वखतमां हता एम तेमां जणाव्युं छे. ते मुजब आ सूराचार्य आशरे विक्रमनी नवमी सदीनी शरुआतमां थया होय तेम मानी शकाय छे. हवे जो तेज आ सूराचार्य होय तो सं० १२२९ मां पायलच्छि नाममालाना करनार धनपाल अने आ सूराचार्यना वखतमां थयेला धनपाल जुदाज ठरी शके, अगर तेरमी सदीना वचगाळे कोई बीजा सूराचार्य थया होय तो तेमपण होय. आरीते चौकस पुरावाना अभावे बन्ने कर्त्ताओ माटे शक राखवो पडे छे. अमारा धारवा मुजब वीरस्तवना करनार धनपाल पहेला सूराचार्यना समयमांज थयला होवा जोईये. छतां आ संबंधमां सुज्ञ मुनिवर्य महाशयोने अमारी नम्र विनंती छे के जेओश्रीने आ बाबतनी चोकस माहिती जाणवामां आवी होय तेओए ते अमारा उपर लखी मोकलवा कृपा करवी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १६८ | शत्रुंजयचैत्यपरिपाटी | | | | A. S. |
| १६९ | शत्रुंजयमाहात्म्यस्तवन A | | | | A. S. |
| १७० | शंखेश्वरपार्श्वस्तव | | | | A. S. |
| | „ B | का. ११२ | यशोविजय | | खं. |
| १७१ | शांतिकर | गा. १३ | मुनिसुंदर | | पा. २ लीं. A. S. |
| | अवचूरि | | | | रि. ६ |
| १७२ | शांतिस्तोत्र C | ३५ | जिनवल्लभ | | जेसल. |
| १७३ | शांतिनाथचरित्र | गा. ३३ | जिनवल्लभ | | लीं. |
| १७४ | शांतियमकस्तव | | | | पा. १ |
| १७५ | शारदास्तव | | | | A. S. |
| १७६ | शाश्वताजिनस्तव (प्रा.) | २४ | देवेंद्रमुनि | | पा. ३-४. |
| | अवचूरि | | | | पा. ३-४. |
| १७७ | शाश्वताजिनस्तुति (प्रा.) | गा. ३४ | सिद्धसेन | | नगीमदास. |
| १७८ | शोभनस्तुति | | शोभन | | पा. ३-४ मुद्रित. |
| | वृत्ति | २३५० | जयविजय | | पा. ३ |
| | वृत्ति (बीजी) | २२०० | सिद्धचंद्रगणि | | रि. ६ |
| | वृत्ति (त्रीजी) | १००० | धनपाल | | बृ. पा. ३. ४. |

A आ स्तवन सारावली पयन्नामांथी उद्धृत करेलु छे एम एसीऑटिक सोसायटीना रिपोर्टमां जणाव्युं छे.

B आ स्तव यशोविजयजी उपाध्यायकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंधायेलुं छे.

C आ स्तोत्र हीरालालना नोंधमांथी मळयुं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति (चोथी) | पत्र ५८ | देवचंद्र | | अ. १ |
| | वृत्ति (पांचमी) | पत्र ६८ | सौभाग्यसूरि | | अ. १ |
| | वृत्ति (छट्ठी) | | भानुचंद्र | | अ. १ |
| | अवचूरि | ४९५ | धर्मचंद्रशिष्य राजमुनि | ११५१ | पा. ३-४-५. |
| १७९ | श्रीमत्तीर्थकराणांस्तवन | का. ७ | | | नगीनदास. |
| १८० | श्रीनेमिःपंचरूपादिस्तुति | | | | अ. १ मुद्रित. |
| | वृत्ति | | | | अ. १ मुद्रित. |
| १८१ | श्रेयःश्रियांस्तवन A | पत्र २ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १८२ | षट्भाषागर्भितवीरस्तोत्र | | | | पा. ३ |
| १८३ | षण्णवतिजिनस्तोत्र B | ५० | ज्ञानविलास | | जेसल. |
| १८४ | सकलार्हत् | | | | पा. ३ मुद्रित. |
| १८५ | सत्सूक्त (सं.) | पत्र ८ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १८६ | सत्तावीशभवस्तवन (प्रा.) | पत्र ६ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १८७ | सनत्कुमारचक्रवर्तिस्तवन (प्रा.) | पत्र १७ | | | प्रो. मणिलाल. |
| १८८ | सप्तशतिजिनस्तोत्र (प्रा.) | | | | लीं. A. S. |
| १८९ | संसारदावानलस्तुति | का. ४ | | | लीं. मुद्रित. |
| १९० | समवसरणस्तोत्र | १०० | दिगं. विष्णुसेन | | A. S. |

A आ स्तोत्र "श्रेयः श्रियां" एवा पदथी शरु थएल होवाथी तेज नामथी ओळखाय छे एम प्रो० मणिलाल नभुभाइए पोताना लिस्टमां जणाव्युं छे.

B. सदरहू स्तोत्र जेसलमेरनी टीपमां हीरालालना नोंधमां होवाथी तेना संबंधमां शक राखवो पडे छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १९१ | समीनपार्श्वस्तोत्र | ९ | यशोविजय | | खं. |
| १९२ | सर्वजिनस्तुति | | | | A. S. |
| १९३ | सर्वज्ञस्तव | | | | A. S. |
| १९४ | सर्वज्ञस्तोत्र A | ४० | सोमतिलक | | जेसल. |
| १९५ | सर्वतीर्थावलिस्तवन B | १२५ | विनयप्रभ | | जेसल. |
| १९६ | सरस्वतीस्तव (महामंत्रगर्भित) | | | | A. S. |
| १९७ | सरस्वतीस्तोत्र | १३ | बप्पभट्टिसूरि | | नगीनदास. |
| १९८ | साधारणजिनस्तव | | सोमप्रभ | | पा. ३ |
| | अवचूरि | | | | पा. ३ |
| १९९ | साधारणजिनस्तव | | जयानंद | | A. S. |
| | अवचूरि | २५० | | | A. S. |
| २०० | सार्वज्ञाष्टक | | | | पा. १ |
| २०१ | सारस्वतोद्धारस्तोत्र | | नंदिरत्नशिष्य | | नगीनदास. |
| २०२ | सिद्धचक्रस्तवन (प्रा.) | पत्र १ | | | पा. ४ |
| २०३ | सिद्धांतस्तव | | जिनप्रभ | | डेक्कन. |
| | अवचूरि | | सोमोदय C | | डेक्कन |
| | ,, | | विशालराजशिष्य | | लीं. |

A. B आ बन्ने स्तोत्रो पण जेसलमेरनी हीरालाले करेली नोंधमांज छे.

C लींबडीना भंडारनी टीपमां सिद्धांतस्तवनी अवचूरि आदिगुप्तना शिष्ये करेली छे जणाव्युं छे. पण ते टीप करनारे सखत भूल खाधी छे. एम प्रशस्ति लेख उपरथी मालम पडे छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २०४ | सिद्धिप्रियस्तोत्र | | ( दिगंबर ) | | A. S. |
| २०५ | सीमंधरस्तुति | पत्र १ | मुनिसुंदर | | डे. पेज ६६ जेसल. |
| | अवचूरी | | | | डेक्कन. |
| २०६ | सुपार्श्वनाथस्तोत्र ( सं. ) | पत्र ५ | | | प्रो. मणिलाल. |
| २०७ | सूरिमंत्रगर्भित लब्धिस्तोत्र | पत्र ५ | | | पा. ४ खं. |
| २०८ | सेनसूरीकृतस्तोत्र | ४७ | | | खं. |
| २०९ | स्तवनकोश | पत्र ४ | विजयसेन | | पा. १. |
| २१० | स्तोत्रकोश | पत्र २४ | विजयपालसूरि शिष्यजगमालगणि | १६५१ | पा. ३. |
| २११ | स्तोत्रमाला | पत्र १४ | | | A. S. |
| २१२ | स्तोत्रविधिपंचविंशति | ३४०० | तेजसिंह | | A. S. |

## लीस्ट नंबर ८.

# जैन भाषासाहित्य.

# जैन भाषासाहित्य.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या वो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **व्याकरणना ग्रंथो.** | | | | |
| | **वर्ग १ लो.*** | | | | |
| १ | जैनेन्द्रव्याकरण | ७०० A | | | जेसल. A. S. |
| | जैनीव्याकरण B | पत्र ७८ | | | अ. १ |
| २ | प्रेमलाभव्याकरण | २२२३ | आंच. प्रेमलाभ | १२८१ | जेसल. |
| ३ | बालबोधव्याकरण | | | | |
| | मूळ (अष्टाध्यायी) | २७५ | मेरुतुंग | १३०४ | पा. ४ जे. अ. २ |
| | वृत्ति C | ४८० | ,, | | पा. ३-४ |
| | वृत्ति | ५७९ | ,, | | पा. ३ |
| | चतुष्काटिप्पन | २११८ | ,, | | पा. ३-४ |

* आ वर्गमां जैनाचार्योए करेला जे अमारा जाणवामां आव्या छे ते तमाम व्याकरणना ग्रंथो अनुक्रमवार नोंध्या छे. एना बीजा क्लासमां परमतना व्याकरण ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेला व्याख्या-ग्रंथो नोंधवामां आवशे, अने त्रीजा क्लासमां व्याकरणना परचूरण ग्रंथो नोंधवामां आवशे.

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ व्याकरण ४५०० नुं छे एम जणाव्युं छे. ते वखते दिगंबरो जेने जैनेंद्र कहे छे ते हशे.

B आ नाम सामान्य छे तेनुं खरुं नाम शुं छे तथा ते कोणे रचेलुं छे ते नक्की करवा माटे अमदावादना डेलाना भंडारनी प्रत नजरे तपासी जोवानी जरूर छे. पं. आणंदसागरजी जणावे छे के प्राये ते न्यासनो भाग हशे.

C आ वृत्ति छ पाद सुधीनी छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | कृद्वृत्तिटिप्पन | ७६७ | मेरुतुंग | | पा. ४ |
| | आख्यातवृत्तिढुंढिका A | १७३४ | ,, | | पा. ४-५ |
| | प्राकृतवृत्ति | २२९ | ,, | | पा. ३ |
| ४ | बालशिक्षाव्याकरण B | १८५० | संग्रामसिंह | | जेसल-बे. |
| | बालशिक्षाव्याकरण(बीजुं)C | | भक्तिलाभ | | जेसल. |
| ५ | बुद्धिसागरव्याकरण | ७००० | बुद्धिसागर D | | पा. १ जेसल. |
| ६ | भोजव्याकरण | २००० | आंच. विनय-सागर | | लीं. |
| ७ | मुष्टिव्याकरण | | मलयगिरि | | बृ. |
| | वृत्ति E | ४३०० | ,, | | पा. १-५ डे. |
| | ,, विषमपदविवरण | पत्र २८ | | | अ. १ |
| ८ | शब्दभूषणव्याकरण | ३०० | दानविजयोपाध्याय | | डे. पेज २७७ |
| ९ | शब्दार्णव F | | सहजकीर्ति | | A. S. डेक्कन. |
| १० | सिद्धसारस्वत G | | देवानंद | | |

A आठ पादसुदी संपूर्ण छे.

B आ व्याकरण जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधायेलुं छे, पण हीरालाले पोताना नोंधमां एना कर्ता विजयसिंहसूरि छे एम जणावीने ग्रंथ रचायानी साल १३३६ नी नोंधी छे. तेथी शक राखवो पडे छे.

C आ बीजुं बालशिक्षा व्याकरण हीरालालना नोंधमांथीज मळी आव्युं छे.

D आ बुद्धिसागरसूरि ते वर्धमानसूरिना शिष्य जिनेश्वरसूरिना गुरुबंधु हता. एटले तेओ विक्रमनी अग्यारमी सदीनी आखरमां विद्यमान हता. बुद्धिसागरसूरिए सदरहू व्याकरण अन्यमतिओना आक्षेपथीज रच्युं छे. अने तेनी रचना तेमणे जावालीपुरमां करी छे.

E डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां आ वृत्तिने ‘ शब्दानुशासनवृत्ति ’ एवा सादा नामथीज नोंधी छे. अने ते त्यां त्रुटक छे.

F डेक्कनकॉलेजना रिपोर्टमां एनी श्लोकसंख्या१३००नोंधीने तेनुं नाम ‘सिद्धशब्दार्णव’ एवुं नोंध्युंछे.

G सिद्धसारस्वत व्याकरण कनकप्रभना गुरु देवानंदसूरिए रच्युं हतुं एम आपणे सांभळिए छीए पण ते अमोने अत्यारसुधी क्यांइपण उपलब्ध थयुं नथी. पं० आणंदसागरजी जणावे छे के देवानंदसूरिए व्याकरण रच्युं नहि होय अने वखते सरस्वतीनो मंत्र सिद्ध कर्यो हशे तेथी तेम कहेवातुं हशे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | संख्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | हैमव्याकरण. * | | | | |
| | मूळ ( सूत्रो ) | ११०० | हेमाचार्य | | वृ. |
| | उणादि | २०० | ,, | | वृ. पा. १-४ लीं. |
| | लिंगानुशासन | ३०० | ,, | | वृ. पा. १-४ लीं. |
| | हैमवृहत्वृत्ति A | १८००० | ,, | | वृ. मुद्रित. |
| | ,, वृहन्न्यास B | ८४००० | ,, | | पा. १-४ राधण. |
| | ,, लघुन्यास C | ५३००० | रामचंद्रगणि | | वृ. |
| | ,, लघुन्यास | ९००० | धर्मघोष | | वृ. पा. १-५ डे. |
| | ,, परिभाष्यवृत्ति | ४००० | | | वृ. |
| | ,, न्यासोद्धार D | | कनकप्रभ | | वृ. मुद्रित |
| | ,, कक्षापट्ट (वृहत्वृत्ति-विषमपदव्याख्या ) | ४८१८ | | | वृ. पा. ६ |
| | ,, दशपादविशेष | पत्र ३१ | | | पा. ३ |
| | ,, दशपादविशेषार्थ | पत्र ९ | | | पा. १ |

* एने सिद्धहेम, सिद्धहेमशब्दानुशासन, हैमव्याकरण एवा नामोथी ओळखवामां आवे छे.

A आ वृत्तिनी श्लोकसंख्या चतुष्क, आख्यात, तद्धित तथा कृदंतनी , मळी १८००० थाय छे.

B आ न्यास पाद १-३-४-५-६-७-८-१२ तथा २७ नो छे. तेनी ग्रंथसंख्या वृहट्टिप्पनिकामां आपी नथी अने ते हालमां क्यांइपण अखंड मळी शकतो नथी. पाटणनी टीपमां पत्र १५६ नो छे अने राधणपुरमां पत्र १३२ नो छे पण राधणपुरमांनो न्यास वृहत् छे के लघुन्यास छे ते तपासी नक्की करवानुं छे. आ स्थळे जणावेली श्लोकसंख्या दंतकथाथी लखी छे.

C एनुं अपरनाम ' शब्दमहार्णव ' एवुं छे.

D आ अठावीस पादनो लघुन्यास छे.

| ताड. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | हैमबृहद्वृत्ति ( ढुंढिका )A | | | | बृ. |
| | ,, ढुंढिका ( बृहत् ) B | ८००० | सौभाग्यसागर | १५९१ | पा. ३ डे. |
| | ,, ढुंढिका ( लघु ) | २३००C | | | भाव.अ. २ |
| | ,, ,, वृत्ति | पत्र २१४ | उदयसौभाग्य | | भाव. |
| | ,, बृहद्वृत्तिसारोद्धार | पत्र ४१ | | | पा १ |
| | ,, लघुवृत्ति | | स्वोपज्ञ | | पा. १. |
| | ,, लघुवृत्ति | ६००० | काकलकायस्थ | | बृ पा. १-२ खं |
| | हैमलघुवृत्ति ढुंढिका D | ३२०० | मुनिशेखर | | बृ. पा. १-३ |
| | ,, ,, अवचूरि E | २२१३ | | | बृ. |
| | ,, ,, अवचूरि | पत्र ६५ | धनचंद्र | | पा. १-२-४-५ |
| | ,, प्राकृतव्याकरण F | | हेमाचार्य | | बृ. पा. १ |
| | ,, प्राकृतपादवृत्ति | २४८५ | स्वोपज्ञ | | बृ. |
| | ,, दीपिका | १५०० | (द्वि. ) हरिभद्र | | बृ. पा. १ |
| | ,, ,, अवचूरि | ७३८ | हरिप्रभसूरि | | पा. १ |

A आ ढुंढिका चतुष्क, आख्यात अने कृद् उपर छे.

B आ लघुवृत्ति चतुष्क, आख्यात, कृद् अने तद्धित उपर छे. पाटणनी टीपोमां एनी श्लोकसंख्या ५००० नी आपी छे.

C एनुं अपर नाम "व्युत्पत्तिदीपिका" एवुं छे. डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां एना कर्ता उदयसौभाग्य जणाव्या छे, अने भावनगरनां टीपमां लघुढंढिकानी वृत्तिने करनारना नाममां तेमनी नोंध करी छे, ते उपरथी एम मालम पडे छे के भावनगरमां जणावेली लघुढुंढिकावृत्ति अने आ ग्रंथ एकज हशे, छतां चोकस खात्री माटे तेमनी प्रतो तपासवी जोइये.

अमदावादना चंचलबाईनी टीपमां हर्षकुलकृत लघुढुंढिका पत्र ११३ नी छे एम जणाव्युं छे.

D ढुंढिकाने दीपिका पण कहेवाय छे.

E आ अवचूरि चतुष्क वृत्तिना उपर करेली छे.

F आ प्राकृत व्याकरण ते सिद्धहेम शब्दानुशासननो आठमो अध्याय छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | हैमचतुर्थपादवृत्ति | | हृदयसौभाग्य | १५९१ | पा. १ |
| | ,, उदाहरणवृत्ति | पत्र ६ | | | पा. १ |
| | ,, दोधकार्थ | पत्र १२ | | | पा. १ |
| | प्राकृतरूपसिद्धि A | १५०० | मल. नरचंद्र | | वृ. पा. २-४ A. S. |
| | दीपिका | | | | डेक्कन. |
| | हैमव्याकरणदीपिका | ६७५० | जिनसागर | | डेक्कन. |
| | ,, उणादिवृत्ति B | ३२५० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. १-४ लीं. मुद्रित. |
| | ,, ,, लघुवृत्ति | | ,, | | पा. १ |
| | ,, लिंगानुशासनवृत्तिC | ३६८४ | ,, | | वृ. लीं. मुद्रित. |
| | ,, वृत्ति (बीजी) | १२११ | जयानंद | | पा. १-४ |
| | ,, अवचूरि | १०७५ | रत्नशेखर | | अ. १ |
| | ,, दुर्गपदप्रबोध | १९५० | ज्ञानविमलशिष्यवल्लभ | १६६१ | पा. ५ |
| | हैमधातुपारायण | ५६०० | हेमचंद्र | | वृ. सुलभ्य. |
| | ,, धातुपाठ (स्वरवर्णानुक्रम १६) | ७६० | पुण्यसुंदर | | A. S. |
| | ,, धातुपाठ | ३२५ | | | पा. ३ |
| | ,, धातुवृत्ति | पत्र ३७६ | | | भाव. |
| | ,, क्रियारत्नसमुच्चय (सबीजक) | ५७७८ | गुणरत्न | १४६६ | पा. १-२-३-४ मु. |

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " प्राकृतरूपसिद्धिर्हैमप्राकृतवृहद्वृत्त्यवचूरिरूपा मलधारि पं० नरचंद्रकृता प्राकृतप्रबोधवाच्या १६०० " आवी नोंध छे.

B C उणादिनुं मूळ तथा लिंगानुशासननुं मूळ प्रथम नोंधेलुं होवाथी इहां नोंध्युं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | हैमसमासतद्धितसारप्रकरण | | | | वृ. |
| | ,, समासप्रकरणतथाकृत्प्रत्यय | पत्र ५ | | | पा. ४ |
| | ,, विभ्रमसूत्र | २१ | गुणचंद्र | | वृ. पा. ४ |
| | वृत्ति | १९६ | जिनप्रभ | | पा. ३ |
| | अवचूरि | ६०० | गुणचंद्र | | वृ. पा. ३-४ खं. |
| | ,, कारकसमुच्चय A | | श्रीप्रभसूरि | | वृ. |
| | वृत्ति B | | ,, | १२८० | वृ. |
| | हैमन्याय | पत्र ३ | | | पा. ३ |
| | हैमव्याकरणस्यन्याय | ६८ | | | पा. ४ |
| | ,, न्यायवृत्ति | १७५ | | | वृ. पा. ४ |
| | ,, लघुन्यायप्रशस्तिअवचूरि | पत्र ३७ | उदयचंद्र | | अ. २ |
| | न्यायमंजूषान्यास | ३१४५ | हेमहंस | १५१५ | पा.१-३-४ भाव.को. |
| | ,, बलाबलसूत्र | | हेमचंद्र | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | पत्र १८ | स्वोपज्ञ | | डेक्कन. |

A एना त्रण अधिकार छे. अने प्राथमिक शिखनारने शीखवा योग्य छे.

B आ वृत्ति बे अधिकार उपर छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | हैमकौमुदी A | पत्र ८७ | मेघविजय | १७५८ | भाव. A. H |
| | ,, प्रक्रिया (वृहद्) | ३५०० | | | भाव. |
| | ,, प्रक्रिया | पत्र ७५ | महेंद्रसुतवीरसी | | अ. १ |
| | ,, लघुप्रक्रिया | २५०० | विनयविजय | B १७१७ | पा. ३ खं. रि. १ |
| | ,, लघुचांद्र | ७०० | | | भाव. |
| | हैमशब्दसंचय | ४२६ | अमरचंद्र | | पा.३-४ |
| | हैमप्रक्रियाशब्दसमुच्चय | १५०० | | | खं. |

A एनुं बीजुं नाम 'चंद्रप्रभा' एवुं छे. भावनगरनी टीपमां एने चंद्रिका एवा नामथी ओळखावी छे.

B आ संवत्‌नो अंक पाटणनी टीप उपरथी इहां नोंध्यो छे. पण खंबातनी टीपमां सदरहू प्रक्रिया सं. १७०१ मां रचाई छे एम जणाव्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | क्लास २ जो. | | | | |
| | परमतना व्याकरण ग्रंथो उपर जैनाचार्योए करेला व्याख्या ग्रंथो. | | | | |
| १ | कलापव्याकरण A | | कलापकमुनि | | वृ. |
| | ,, चतुष्काख्यातकृद्वृत्ति | १००० | दुर्गसिंह | | वृ. |
| | ,, दौर्गसिंहीवृत्ति B | ४००० | पृथ्वीचंद्रसूरि | | जेसल. |
| | ,, ,, C | ८००० | राजशेखरशिष्यमुनिशेखर | | जेसल. |
| | कौमारसारसमुच्चय D | ३१०० | | | वृ. |
| | ,, उणादिवृत्ति E | | | | वृ. |
| | ,, आख्यातवृत्ति | ५८०४ | मोक्षेश्वर F | | पा. १ |
| | ,, आख्यातकृद्वृत्ति | ४६०५ | | | पा. जेसल. |
| | ,, आख्यातकृद्विवरण G | | | | वृ. |

A एनुं अपरनाम ' कातंत्र ' एवुं छे.

B आ वृत्ति जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधी छे अने ते त्रुटक छे एम जणाव्युं छे.

C आ वृत्ति ते कदाच बृहट्टिप्पनिकामां जणावेलुं कातंत्रकृद्वृत्ति टिप्पन होय तो होय, छतां आ वृत्ति हीरालालना नोंधमां होवाथी तेना कर्त्ताना नाम माटे शक रहे छे. आ बाबतनी खरी खात्री जेसलमेरमांनी प्रत नजरे तपासी जोवाथी थइ शके.

D बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे नीचे मुजब नोंध छे:—

" उक्तिकं वृत्तित्रयोद्धारसूत्रं कौमारसारसमुचयः श्लोकरूपोवृत्तित्रयोद्धारसंग्रहात्मकः ३१०० "

E आ वृत्ति पांच पादनी छे.

F आ नाम कोइ दिगंबर आचार्यनुं होय तेम संभव छे.

G एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां "प्रमेयरत्नभांडागारे विशेषविवरणं कलापकाख्यातकृद्विषयं" आवी नोंध छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | कलापनाम्नाख्यातवृत्ति A | ६२५ | | | वृ. |
| | ,, आख्यातावचूरि | पत्र ३६ | | | वृ. |
| | ,, कृद्वृत्तिटिप्पन | ८००० | | | वृ. |
| | कातंत्रदीपिका | ४००० | वीरसिंहोपाध्यायशिष्यगौतम | | जेसल-बे. |
| | ,, विभ्रमवृत्ति B | ५०० | जिनप्रभ | | जेसल. |
| | ,, संभ्रम | ता.२२५ | | | जेसल-बे. |
| | कांतत्रदुर्गपदप्रबोध | ३१६१ | प्रबोधमूर्तिगणि | | जेसल-बे. |
| | कातंत्रोत्तर C | ७०० | विजयानंद | | वृ. जेसल. |
| २ | सारस्वत वृत्ति D | ७५०० | चंद्रकीर्ति | | पा. ३ |
| | ,, (बीजी) | १५७५ | सहजकीर्ति | | A. S. |
| | ,, (त्रीजी) E | पत्र४१७ | नयसुंदर | | अ. १ |
| | ,, (चौथी) | २१५० | भानुचंद्र | | पा. ५ |
| | ,, (पांचमी) F | १३०० | दयारत्न | | अजमेर. |
| | ,, ढुंढिका | ४५०० | मेघरत्न | | रि. ६ |
| | ,, सारदीपिकावृत्ति | २२०० | यतीश G | | भांडारकर. |
| | सारस्वतमंडण | ३५०० | मंडण H | | जे. नगीनदास. |

A आ वृत्ति लक्षण तथा केटलाक पद्यसंग्रह रूपे छे.

B जिनप्रभसूरिकृत आ वृत्ति हीरालाले नोंधी छे.

C एनुं अपरनाम 'विजयानंद' एवुं छे अने ते समास सुधी छे. वृहट्टिप्पनिकाकारे तेनुं अपरनाम विद्यानंद एवुं नोंध्युं छे ते भूल छे.

D एने चंद्रकीर्तिना नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे.

E आ वृत्तिनुं बीजुं नाम 'रूपरत्नमाला' एवुं छे.

F आ वृत्ति 'न्यायरत्नावली' एवा नामे प्रसिद्ध छे.

G आ यतीश ते कोण हता ते बाबत कंइ खुलासो जाणवामां आव्यो नथी.

H पिटर्सने खंभातना शेठ नगीनदासना भंडारनी टीप लेतां पोताना रिपोर्टमां कर्त्तानुं नाम नोंधतां भूल खाधी छे. पण जेसलमेरनी टीपमां सारस्वत मंडणना करनार बाहडसुत मंडण लख्युं छे ते बराबर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | क्लास ३ जो. | | | | |
| | व्याकरणना परचूरण ग्रंथो. | | | | |
| १ | अंतर्गणदीपिका | पत्र ४२ | | | अ. १ |
| २ | अन्वयदीपिका | | देवदत्त | | अ. २ |
| ३ | अनिट्कारिकाविवरण | १०० | क्षमामाणिक्य | | A. S. |
| | " | | हर्षकीर्ति | १६६३ | लीं. |
| ४ | उक्तिक | २०० | जिनचंद्र A | | जेसल. |
| | " | ४१५ | सोमप्रभ | | बृ. पा. ४ |
| | " B | ५५० | कुलमंडन | १४५० | पा. ४ लीं. |
| ५ | उक्तिरत्नाकर | ६२५ | साधुसुंदर | | A. S. |
| ६ | उक्तिप्रत्यय | पत्र ३ | धीरसुंदर | | अ. २ |
| ७ | कविकल्पद्रुमवृत्ति | १७५४ | | | भाव. |
| | अवचूरि | | विजयविमल | | पा. ३ |
| ८ | कासिकान्यास | पत्र ५१ | जिनेंद्रबुद्धि | | डे. पेज ८९ |
| ९ | क्रियाकलाप | पत्र ४६ | गुणसमुद्र | | अ. २ |
| | " (बीजो) | पत्र ५१ | जिनदेव | | अ. २ |
| | " (त्रीजो) | पत्र ७ | विजयानंद | | अ. २ |

A आ नाम हीरालाले नोंध्युं छे.

B आ उक्तिकनुं आखुं नाम "मुग्धावबोध औक्तिक" एवुं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १० | गणरत्नमहोदधि | | वर्द्धमान | ११९७ | वृ. A. S. |
| | वृत्ति | ४२०० | ,, | | A. S. |
| ११ | त्यादिसमुच्चय | | | | वृ. |
| १२ | धातुतरंगिणी A | २००० | हर्षकीर्ति | | पा.२अ.१-२. डेक्कन |
| १३ | धातुमंजरी | १२०० | सिद्धिचंद्र | | लीं. |
| १४ | धातुरत्नाकर | २१०० | खर.साधुसुंदर | १६८० | पा. १-४-५ |
| १५ | पदव्यवस्था ( कारिका ) | | विमलकीर्ति | | A. S. |
| | वृत्ति | ३३०० | उदयकीर्ति | | A. S. |
| १६ | पाठगणसंग्रहगणविवेक | पत्र १८ | नंदिरत्नगणि | | अ. २ |
| १७ | प्राकृतव्याकरण | १२०० | समंतभद्र | | A. S. |
| | चतुष्कव्यवहार | पत्र ९३ | धनप्रभ | | पा. ३ |
| १८ | प्राकृतयुक्ति | पत्र ९. | देवसुंदर | | अ. २ |
| १९ | मिश्रलिंगनिर्णय | पत्र ११ | कल्याणसूरि | | अ. १ |
| २० | वाक्यप्रकाश | १६० | उदयधर्म | १५०७ | लीं. डेक्कन. |
| | वृत्ति | ७३३ | हर्षकुल | | पा. ४-५ लीं. भाव. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | पत्र ११ | रत्नसूरि | | अ. २ |
| | वृत्ति ( त्रीजी ) | पत्र ३११ | | | अ. २ |

A अमदावादनी बन्ने टीपमां एने धातुपाठविवरण एवा सादा नामथीज नोंधी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २१ | विभक्तिविचार | ३५० | खर. जिनपति | | जेसल. |
| २२ | शब्दरत्नाकर | १००० | साधुसुंदर | | A. S. |
| | ,, | १२०० | | | डॉ. |
| २३ | शब्दरूपावली | ४३५ | | | पा. ४ |
| २४ | शब्दसंख्या | पत्र१०२ | विनयभूषण A | | अ. १ |
| २५ | सिद्धांतचंद्रिका | ६५० | ज्ञानतिलक | | रि ६ |
| | ,, | | सदानंदि B | | अ. १ |
| २६ | सिद्धांतरत्न | ८०० | जिनचंद्र | | A. S. |
| २७ | स्यादिशब्ददीपिका | १०५० | जयानंदसूरि | | डॉ. |
| २८ | स्यादिसमुच्चय | | अमरचंद्र | | वृ. पा. ३-४-५ |

A आ विनयभूषण सूरि तेमना नाम उपरथी कोई दिगंबर आचार्य होय तेम लागे छे.

B अमदावादनी टीपमांथी आ सदानंदि जैन हता एटली हकीकत जाणवामां आवी छे. बाकी तेमना माटे कोई विशेष पुरावो मळी शक्यो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो. *** | | | | |
| | **शब्दकोशना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अनेकार्थनाममाला (सशेष) | १८२६ | हेमचंद्रसूरि | | वृ. पा. १सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ६०३० | स्वोपज्ञ | | पा. ४ |
| | वृत्ति A (बीजी) | १०६६० | हेमसूरि शिष्य महेंद्रसूरि | | वृ. पा. १-३ |
| | वृत्ति (त्रीजी) | २००० | सिद्धिचद्र | | पा. ५ |
| | अनेकार्थत्तिलक | ९०० | महीप B | | जे. डेक्कन. |
| | अनेकार्थध्वनिमंजरी | २६० | | | पा. ३-४. A. S. |
| | अनेकार्थमंजरी | १४० | | | डेक्कन. |
| | अनेकार्थरत्नकोश | पत्र १५ | अंचलगच्छीय | | अ. १ |
| २ | अपवर्गनामामाला | २१५ | | | खं. |
| ३ | अभिधानचिंतामणिनाममाला ‡ | १५९१ | हेमाचार्य | | वृ. पा. १-२ मुद्रित. |
| | वृत्ति | १०००० | स्वोपज्ञ | | वृ. पा. ३-४ |

*आ वर्गमां जैनाचार्योए रचेला शब्दकोशना ग्रंथोने एकत्रित करी अनुक्रमवार नोंधवामां आव्या छे.

A सोमप्रभाचार्यकृत कुमारपाल प्रतिबोधने प्रथम वेळाए सांभळनार आ महेंद्रसूरि छे, एटले तेओ विक्रम सं० १२४१ मां विद्यमान हता.

‡ देशीनाममाला, शेषनाममाला, निघंटुशेष अने शिलोंछ आ चारे नाममालाओ आ नाममालाने लगती होवाथी अने अकारादि अनुक्रमथी नोंधतां ते छुटी थई जवाना भयथी खास करीने अभिधान-चिंतामणिना पेटा भागमां दाखल करी छे.

B आ वृत्तिनुं नाम "व्युत्पत्तिरत्नाकर" एवुं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति (बीजी) A | १८००० | देवसागर | | A. S. |
| | सारोद्धार | १०००० | खर. श्रीवल्लभ | १६६७ | पा. ३-४ |
| | अवचूरि | ४५०० | | | पा. ३-४ |
| | (१) देशीनाममाला | ८५० | हेमाचार्य | | वृ. पा. ४ |
| | वृत्ति (रत्नावली) | ३५०० | ” | | वृ. पा. १-२ सुलभ्य. |
| | उद्धार | १२०० | विमल | | पा. ४ |
| | (२) शेषनाममाला | २२५ | हेमाचार्य | | पा. ३-४ |
| | वृत्ति | पत्र ३३ | | | अ. २ |
| | (३) निघंटुशेष | | हेमचंद्र | | पि. रि. ५ मुद्रित |
| | (४) शिलोंछनाममाला | पत्र ४ | | | पा. ४ मुद्रित |
| | वृत्ति | १३०० | श्रीवल्लभ | १६५४ | पा. ४-५ |
| ४ | उणादिनाममाला | ८१८ | शुभशील | | पा. ५ |
| | एकाक्षरीनाममाला | १३२ | | | A. S. |
| | ” | पत्र ३ | सुधाकलशमुनि | | अ. १ |
| ५ | औषधीनाममाला | पत्र ४ | | | अ. १ |
| ६ | गुजराती संस्कृत कोश B | पत्र ९ | | | डेक्कन |
| ७ | द्व्यक्षरनाममाला | पत्र ५ | | | अ. १ |

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले आ कोशना करनार सोमपुत्र महीपाल छे एम जणाव्युं छे.

B आ कोश डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां नोंधायो छे अने तेमां आदिमां कारक विचार छे एम जणाव्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | धनंजयनाममाला A | ३२० | धनंजय | | पा. ३ |
| ९ | पद्मकोश | पत्र ९ | | | जेसल-बे. |
| १० | पंचवर्गपरिहारनाममाला | १५८ B | खर. जिनभद्र | | खं. जेसल. |
| ११ | पंचवर्गसंग्रहनाममाला | ७०० | शुभशील | | रि. ६ |
| १२ | पायलच्छीनाममाला | ३६० | धनपाल | | पा. ३ A. S. |
| १३ | पारसीनाममाला C | ६०० | सलक्षमंत्रि | १४२२ | खं. |
| १४ | बीजनिघंटु | २०० | | | डेक्कन. |
| १५ | भानुचंद्रकृतनाममाला | पत्र ११३ | भानुचंद्र | | अ. १ |
| १६ | मनोरथनाममाला | पत्र ४५ | | | जेसल-बे. |
| १७ | मातृकानिघंट | ८० | महीदास | | डेक्कन. |
| १८ | मिश्रलिंगकोश | पत्र ९ | कल्याणसागरD | | पा. ३ |
| १९ | मुग्धमेधाकरालंकार वृत्ति | पत्र ९ | | | अ. १ |
| २० | रत्नमालाअनेकार्थ | पत्र ४१ | | | अ. २ |
| २१ | रत्नकोशव्याख्या | ५०० | | ११७६ | लीं. |
| | रससार | पत्र ६९ | गोविंदाचार्य | | अ. २ |

A एने निघंटनाममाला पण कहे छे.

B जेसलमेरनी टीपमां एना श्लोक ४०० छे एम जणाव्युं छे.

C एनुं अपरनाम "शब्दविलास" एवुं छे.

D आ कल्याणसागरसूरि देवमूर्तिसूरिना शिष्य हता. देवमूर्तिसूरिए विक्रमचरित्र सं. १४९६मां रच्युं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | रुद्रटालंकार वृत्ति | ३९५० | नमिकवि | | पा. १ मुद्रित. |
| २३ | टिप्पन A | ताड४६ | श्वेताम्बरभिक्षु | | जेसल. |
| २४ | रूपकमंजरी B | १०० | रूपचंद्र | | डेक्कन. जेसल-बे. |
| २५ | लिंगभेदनाममाला | | महेश्वर | | A. S. |
| | वृत्ति | | | | A. S. |
| २६ | लोकसंव्यवहार | | रविगुप्त C | | नगीनदास. |
| २७ | वक्रोक्ति पंचाशिका | | रत्नाकर | | A. S. |
| २८ | वस्तुकोश | पत्र८० | | | डेक्कन. |
| २९ | वस्तुविज्ञान रत्नकोश | पत्र १२ | | | पा. ३-५ A. S. |
| ३० | वाग्भट्टालंकार D | | वाग्भट्ट | | वृ. |
| | वृत्ति | २९५६ | ज्ञानप्रमोद | १६२१ | पा. ४ अ. १ प्रो. मणि |
| | वृत्ति | १४०० | जिनवर्द्धन | | A. S. |
| | वृत्ति | १२०० | राजहंसोपाध्याय | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | पत्र १८ | कुमुदचंद्र | | अ. १ |
| | वृत्ति | पत्र१८ | वर्धमानसूरि | | अ. १ |
| | अवचूरि | १३०० | सिंहदेव | | पा. १-३-४ |

A आ टिप्पन जेसलमेरनी टीपमां नोंधायलुं होवाथी इहां नोंध्युं छे पण ते टीपमां ग्रंथ रचनारनुं नाम श्वेताम्बर भिक्षु एवुं संदिग्धज आपेलुं छे, माटे श्वेताम्बरभिक्षु कोण हता अने ते क्यारे थएला छे ते जाणवा माटे ते प्रत फरीथी तपासवी जोइये.

B आ रूपकमंजरी नाममाला गोपाळना पुत्र रूपचंदे अकबरना वखतमां सं० १६४४मां रची छे.

C चंद्रप्रभविजय नामक काव्यनो ग्रंथ पण आ रविगुप्ताचार्ये रच्यो हतो.

D एना छ अध्याय छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | विश्वकोश | ३००० | महेश्वर | | A. S. |
| ३२ | विश्वलोचनकोश | | दिगंबर | | पि. रि. ५ |
| ३३ | शब्दभेदनाममाळा | | | | |
| | वृत्ति | ३८०० | ज्ञानविमल | १६५४ | पा. ३ A. S. |
| ३४ | शब्दरत्नाकर | १००० | सुंदरगणि A | | A. S. |
| ३५ | शब्दसंदोहसंग्रह | ता.४७९ | | | पा. २ |
| ३६ | शारदीनाममाला | ४५० | हर्षकीर्ति B | | रि. ६ |
| ३७ | शेषनाममाला | पत्र ४१ | साधुकीर्ति | | डेक्कन. |
| ३८ | शृंगारमंडन | | मंडनमंत्रि | | पा. १ |
| ३९ | संगीतमंडन | | ,, | | पा. १ |

A आ नाम एशिआटिक सोसायटीना रिपोर्टमांथी मळ्युं छे पण सुंदरगणि ते कोण हता ते संबंधी कशी हकीकत मळी शकती नथी.

B आ हर्षकीर्तिसूरि तपागच्छमां थएला छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो.** | | | | |
| | **अलंकारना ग्रंथो.** * | | | | |
| १ | अर्थालंकारवर्णन | पत्र ३९ | नरेंद्रप्रभ A | | अ. २ |
| २ | अलंकारचूडामणि वृत्ति B ( काव्यानुशासन ) | २८०० | हेमाचार्य | | बृ. पा. १-३ कीं. मु. |
| | ,, वृत्तिविवेक | ४००० | ,, | | बृ. |
| ३ | अलंकारतिलक C | ११५२ | वाग्भट्ट | | डेक्कन. |
| ४ | अलंकारदर्पण ( प्रा. ) | १५० | | | जेसल-बे. |
| ५ | अलंकारमहोदधि | पत्र १३ | मल. नरेंद्रप्रभ | | अ. १ |
| | वृत्ति | ४५०० | ,, | | पा. ३ |
| ६ | अलंकारमंडन | | मंडन मंत्रि D | | पा. १ |
| ७ | अलंकारशेखर | १००० | माणिक्यचंद्र E ( देव ) | | A. S. ५ |

*जैनाचार्योए रचेला अलंकारना तमाम ग्रंथोने एकत्रित करी अकारादि अनुक्रमवार आ वर्गमां दाखल कर्या छे.

A आ नरेंद्रप्रभसूरि मलधारि नरचंद्रसूरिना शिष्य हता. नरचंद्रसूरि विक्रमनी तेरमी सदीना वचगाळे थएला छे एटले नरेंद्रप्रभसूरि तेरमी सदीना आखरमां थएला होवा जोइये. एमणे रचेला बीजा ग्रंथ अलंकारमहोदधि तथा काकुस्थकेली छे.

B एना माटे बृहत्‌टिप्पनिकामां नीचे मुजब नोंध छेः—

"काव्यानुशासननामालंकारचूडामणिवृत्तिः श्रीहेमसूरीया ८ अध्याया २८०० | ४२००"

C आ अलंकारतिलक ते काव्यालंकारनी अलंकारतिलका नाम्नी वृत्ति तो नथी; ते माटे डेक्कन कॉलेजमांनी प्रत नजरे तपासी जोवानी जरूर छे.

D आ मंडनमंत्रिए व्याकरण, काव्य, अलंकार तथा संगीत ए चारे विषय उपर एक एक ग्रंथ रच्यो छे.

E आ कर्त्तांना नामना छेडे देव एवुं पद जोडेलुं होवाथी प्राये आ आचार्य दिगंबर होय तेम विशेष संभव थाय छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | अलंकारसंग्रह | ता. ३०६ | | | पा. २ |
| ९ | अलंकारग्रंथ | पत्र ५ | भावदेव | | अ. २ |
| १० | उद्भटालंकारसारसंग्रह | ता. १४२ | | | जेसल. |
| ११ | कंदर्पचूडामणि | १८०० | वीरभद्र A | | डेक्कन. |
| १२ | कर्णालंकारमंजरी | ७० | त्रिमल्ल | | A. S. |
| १३ | कविशिक्षा | | विनयचंद्र B | | पा. २ |
| १४ | कविशिक्षा ( बीजी ) | ३०० | जयमंगलाचार्य | | नगीनदास. |
| १५ | कवितामदपरिहारवृत्ति | पत्र १० | | | भाव. |
| १६ | काव्यानुशासन | १८०० | वाग्भट्ट | | अ. २ A. S. |
| | वृत्ति | | वाग्भट्ट | | A. S. |
| १७ | काव्यालंकार वृत्ति C | २१७४ | वाग्भट्ट | | पा. २-५ |
| १८ | काव्याम्नाय | पत्र २० | अमरचंद्र | | वृ. |
| १९ | काव्यकल्पलता D | ५०० | | | पा. ४ |

A आ वीरभद्र वाघेलाना वंशमां थएला छे. अने तेमणे आ ग्रंथ सं० १६३३ मां रच्यो छे, एम पिटर्सने पोताना रिपोर्टमां नोंध करी छे.

B आ विनयचंद्रसूरि बप्पभट्टिसूरिना शिष्य हता, तेओ विक्रमनी नवमी सदीना आखरमां विद्यमान हता. सदरहू ग्रंथ पाटणना भंडार नंबर बीजामां ताडपत्र उपर लखेलो मोजूद छे माटे तेनी नकल करावी लेवानी जरूर छे.

C आ वृत्ति " अलंकारतिलका " एवा नामथी ओळखवामां आवे छे.

D एनुं नाम " कविशिक्षा " एवुं छे. अरिसिंह तथा अमरचंद्र ए बन्ने सहाध्यायी होवा उपरांत परस्पर मित्र हता. तेथी आ ग्रंथ बन्ने जणाए मळीने कर्यो हतो.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | वृत्ति | ३३५७ | अमरचंद्रकवि A | | वृ. पा. १-२ सुलभ्य |
| | परिमल | ११२२ | ,, | | वृ. पा. ३-४ |
| | विवेक B | १०००० | विबुधमंदिरगणि | | जेसल. बे |
| २० | काव्यप्रकाशसंकेत | ३२४४ | माणिक्यचंद्र | C १२६६ | वृ. पा. १-२ जेसल. |
| २१ | काव्यमीमांसा D | १४०० | राजशेखर | | पा. १ जेसल. |
| २२ | काव्यलक्षण | २५०० | | | जेसल-बे. |
| २३ | नाट्यदर्पणसूत्र | पत्र ८ | रामचंद्र-गुणचंद्र | | पा. ३ |
| २४ | प्रकांतालंकार वृत्ति | ता. ३०५ | जिनहर्षशिष्य | | पा १. |
| २५ | भावछत्रीशी | | जिनहंस | | भाव. |
| २६ | भावशतक | | नागराज | | पा. ४ |

A आ अमरचंद्रसूरि विक्रमनी तेरमी सदीना आखरमां थएला छे कारण के, तेमना गुरु वायड-गच्छीय जिनदत्तसूरि मंत्रि वस्तुपालना वखतमां संवत् १२७७ मां विद्यमान हता. शिवाय परमानंद-काव्यना करनार पण एज अमरचंद्रसूरि छे.

B आ ग्रंथनुं नाम जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधायुं छे पण कर्तानुं नाम फकत हीरालालनी टीपमां नोंधेलुं होवाथी ते बाबत चोकस निर्णय करवानी जरूर रहे छे.

C केटलीक टीपोमां आ संकेत रचायानो संवत् १२१६ जणाव्यो छे पण ते टीप करनाराओनी भूलथी नोंधायो छे एम मालम पडे छे. कारण के आ माणिक्यचंद्रसूरि सागरचंद्रसूरिना शिष्य हता अने एमणे पार्श्वनाथचरित्र सं० १२७६ मां रच्युं छे, ते मुजब आ संकेतनो रचनाकाल पण आ समय दरम्यान ज होवो जोइये ते उपरथी १२१६ नो संवत् तद्दन भूल भरेलो छे. एम चोकस निर्णय थाय छे. छतां पंन्यास आणंदसागरजीना जणवावा मुजब वादिदेवसूरिजीना शिष्य माणिक्यचंद्रसूरि थया छे अने तेमणे जो आ संकेत रच्यो होय तो सं. १२१६ नो रचनाकाल संभवी शके, कारण के वादि-देवसूरि सं. १२२६ सुधी विद्यमान हता.

D एनुं अपरनाम ' कविरहस्य ' एवुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ४ थो. *** | | | | |
| | **छंदःशास्त्रना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अजितशांतिछंदोविवरण | पत्र ३ | | | पा. ४ |
| २ | क्षेपक विज्जाहला | १७०० | | | पा. ४ |
| ३ | गाथारत्नकोश A | ७३ | | | सू. |
| ४ | गाथारत्नाकर | | ( अपूर्ण ) | | पा. ४ |
| ५ | गाथालक्षण ( प्रा. ) | १५० | | | पा. १-४ |
| ६ | छंदः कोश ( प्रा. ) | गा.१०० | रत्नशेखर | | अ. २ A. S. |
| | वृत्ति | ५७५ | चंद्रकीर्ति | | A. S. |
| ७ | छंदोनुशासन | २२५ | हेमचंद्राचार्य | | पा. ४ अ. २ |
| | वृत्ति B | २९९९ | स्वोपज्ञ | | पा. १-२-४-५ अ २ |
| | पर्याय | १८३३ | | | पा. ४ |
| ८ | छंदोरत्नावळी | | अमरचंद्रकवि | | पा. १ |
| ९ | छंदरूपक | पत्र ७ | | | अ. २ |

* आ वर्गमां छंदना जे जे ग्रंथो अमारा जाणवामां आव्या छे ते ते अकारादि अनुक्रमवार नोंध्या छे.

A एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " गाथारत्नकोशः गाथालक्षणादिवाच्यः ७३ " आवो नोंध छे.

B एनुं नाम " छंदश्चूडामणि " एवुं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १० | छंदःशेखर | ताड ८ | जयशेखर | | जेसल-बे. |
| ११ | जयदेवछंदःशास्त्रवृत्ति A | | वर्द्धमान | | जेसल-बे. |
| | टिप्पन | | श्रीचंद्र | | बृ. |
| १२ | नंदिताढ्य | ११६ | रत्नचंद्र B | | पा. ४ जेसल-बे. |
| | वृत्ति | ४२१ | ” | | पा. ४ जेसल-बे. |
| १३ | पिंगलसारोद्धार | ५५९ | | | पा. ४ |
| १४ | वृत्तरत्नाकरवृत्ति | ११०० | सोमचंद्र | १३२९ | पा. ३-४ A. S. |
| १५ | ” | | समयसुंदर | | अ. १ |
| १६ | श्रुतबोधवृत्ति | ३०० | हर्षकीर्ति C | | भाव. |
| १७ | ” | | हंसराज | | लीं. A. S. |
| १८ | संगीतसहपिंगल | | | | लीं. |

A आ वृत्ति जेसलमेरनी बन्ने टीपोमां नोंधायेली छे बाकी क्यां पण ऊपलब्ध थई नथी माटे ते उतारो करवा योग्य छे.

B आ रत्नचंद्रगणि मांडव्यपुरगच्छना देवाचार्यना शिष्य हता. तेओए १०८ प्रकरणो रच्यां हतां, तेथी तेमने प्रकरणरत्नकारी एवुं बिरुद आपवामां आव्युं हतुं.

C आ हर्षकीर्ति ते स्वमति छे के अन्यमति छे ते बाबतनो चोकस निर्णय भावनगरना प्रतनो प्रशस्ति लेख तपासवाथी थई शके.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ५ मो.*** | | | | |
| | **काव्यना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | ऋषभोल्लासकाव्य | पत्र ८ | | | अ. १ |
| २ | कविगुह्यकाव्य A | | रविधर्म | | जेसल. |
| | वृत्ति | | " | | जेसल. |
| ३ | कुमारविहारप्रशस्तिकाव्य | ८७ | हेमशिष्यवर्धमान | | A. S. |
| ४ | गुरुगुणरत्नाकरकाव्य B | ८०० | सोमचारित्रगणि | | डेक्कन. |
| ५ | चंद्रदूत काव्य | का. २३ | जंबुकवि C | | पा. १ जे. A. H. |
| ६ | चंद्रलेखाविजयप्रकरण | २२०० | हेमसूरिगुरुदेवचंद्र | | जेसल-बे. |
| ७ | चंपूमंडन(द्रौपदीकथामय) | | मंडनकवि D | | पा. १. |

* आ वर्गमां श्वेतांबर ने दिगंबर जैनाचार्योए रचेला काव्यना ग्रंथो अक्षरानुक्रमवार नोंध्या छे, उपरांत आ वर्गना क्लास बीजामां अन्यमतिए करेला काव्य ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेली व्याख्यावाळा ग्रंथो नोंध्या छे.

A आ काव्य तेनी टीका साथे जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यु छे.

B एनुं अपरनाम "सोमचरित्र" एवुं छे.

C जेसलमेरनी टीपमां हंसविजयजी महाराजे आ काव्यना करनार जंबूनाग कवि जणाव्या छे. त्यारे हीरालाले एना कर्ता चंद्रकीर्ति नोंध्या छे, ते चोकस भूल छे, पण हीरालाले आवा खोटा नाम शा कारणथी लख्या हशे ते कल्पनातीत थइ पडयुं छे.

D आ मंडनकवि स्वमति छे के कोइ अन्य छे ते बाबत कोइ चोकस पुरावो जाणवामां आव्यो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | जयंतकाव्य | २२२० | अभयदेवसूरि A | १२७८ | पा. १-४-५ मुद्रित. |
| ९ | जैनकुमारसंभव | १२२६ | जयशेखर | | पा. ४-५ मुद्रित. |
| | वृत्ति | पत्र ५२ | धर्मशेखर | | डेक्कन. |
| १० | जैन मेघदूत | ४१८ | मेरुतुंग | | K. K. |
| | वृत्ति | | | | K. K. |
| ११ | तिलकमंजरी | ८७१३ | धनपालकवि | | पा.१-५ मुद्रित. |
| | टिप्पनक | १०५० | शांत्याचार्य B (पूर्णतल्लीय) | | वृ. पा. ५ |
| | „ सारोद्धार | १२२३ | (लघु) धनपाल | | वृ. पा. १-३ |
| १२ | त्रिषष्ठिशलाकापुरुषचरित्र काव्य C | ३४००० | हेमचंद्र | | सुलभ्य. मुद्रित. |
| १३ | द्याश्रय (सं.) | २८२८ | हेमाचार्य | | पा. १-२-३-४ |
| | वृत्ति D | १७५७४ | अभयतिलक | १३३२ | वृ. पा. १-२-४ |

A आ अभयदेवसूरिने केटलीक टीपोमां प्रभाचंद्रना शिष्य जणाव्या छे त्यारे पिटर्सने पोताना चोथा रिपोर्टमां तेओ विजयचंद्र सूरिना शिष्य हता एम जणाव्युं छे. प्रशस्ति उपरथी तपास करतां पण चोकस पुरावो मळी शकतो नथी. अमारा धारवा मुजब आ अभय देवसूरि सं. १२०४ मां रुद्रपल्लीय खरतर शाखाना स्थापक रत्नशेखर सूरिना त्रीजे पाटे थएला होवा जोइये अगर रत्नशेखर सूरिना त्रीजा शिष्य होय तो तेम पण होय.

B वृहत् टिप्पनिकामां आ शांत्याचार्य कोइ सांख्याचार्य हता एम जणाव्युं छे.

C त्रिषष्ठिशलकापुरुषचरित्र एक लघु छे ते बीकानेर जोवामां आव्युं छे. मागधीमां पण आ नामनुं चरित्र छे. तथा एक चोपनशलाकापुरुषचरित्र मुनिराजश्री हंसविजयजी पासे छे. एम भावनगरना शेठ कुंवरजीभाई जणावे छे.

D आ वृत्ति अठ्ठावीस पादवाळी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | द्याश्रय (प्रा.) | १५०० | हेमाचार्य | | भाव. मुद्रित. |
| | वृत्ति | पत्र ८१ | ,, A | | A. H.राधण. |
| | वृत्ति (बीजी) | ४२३० | खर. पूर्णकलश | १३०७ | वृ. मुद्रित. |
| १४ | द्विसंधान (राघवपांडवीय) | | धनंजय (दिगं.) | | पा. १-३ |
| १५ | धर्माभ्युदय काव्य B | ५०४० | उदयप्रभ | | वृ. पा. २-३ |
| १६ | धर्मशर्माभ्युदय | | दिगं. हरिचंद्र | | पा. २-४ मुद्रित. |
| १७ | नरनारायणानंदकाव्य | १६०० | मंत्रि. वस्तुपाल | | वृ. पा. ४ डेक्कन. |
| १८ | नलायन महाकाव्य | ४७२४ | माणिक्यसूरी | | kot. |
| १९ | नलोदयकाव्य | २५० | रविदेव | | डेक्कन. |
| २० | नाभेयनेमिद्विसंधान | | हेमचंद्र | | पा. १ |
| २१ | नेमिदुत | का. १३६ | सांगणसुत विक्रम | | लीं. |
| २२ | नेमिनिर्वाण (सर्ग १५) | १४०० | वाग्भट | | वृ. पा. १ मुद्रित. |
| २३ | नेमिचरित्र महाकाव्य C | | सूराचार्य | १०९० | वृ. |
| | टिप्पनक | १४०० | | | वृ. |
| २४ | पद्मानंदकाव्य | १८१९ | अमरचंद्रकवि | | वृ. पा. १ सुलभ्य. |
| | वृत्ति | ६२८१ | | | पा. ४ |

A राधणपुरनी टीपमां आ वृत्ति जिनेश्वरशिष्य लक्ष्मीतिलके करी छे एम नोंध्युं छे माटे राधणपुरना भंडारमानी प्रत तपाशी नक्की करवुं जोइये.

B आ धर्माभ्युदयकाव्य वस्तुपालचरित्र वाच्य छे.

C सदरहू चरित्र तेना टिप्पन साथे बृहत् टिप्पनिकामां नोंधुं छे पण हजी सुधी अमोने ते क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २५ | पाणिनीयद्याश्रय काव्य | १८० | विजयरत्न शिष्य | | A. S. |
| २६ | बालभारत ( चंपू ) | ६७७४ | अमरचंद्र | | वृ. पा. ४-५ मुद्रित. |
| | „ ( अंक २ ) | ५०० | राजशेखर | | A. S. |
| २७ | भावनामृतमहाकाव्य A | १४०० | | | रि ६ |
| २८ | मनोदूत B | ३०० | | | पा. ५ |
| २९ | मेघदूत | | ( मंत्रि ) विक्रम | | अजमेर. |
| ३० | यशस्तिलक( चंपू ) C | | सोमदेव (दिगं) | १०१६ | A. S. मुद्रित. |
| | पंजिका | | श्रीदेव | | A. S. |
| ३१ | यशोधर काव्य | | दिगं.माणिक्यसूरि | | पा. ३ |
| ३२ | राघवपांडवीय | | दिगं. नेमिचंद्र | | डेक्कन. मुद्रित. |
| ३३ | रायमल्लाभ्युदय | | दिगं. पद्मसुंदर | १६१५ | मुद्रित. |
| ३४ | लीलावतीसारकथा | ५००० | ( जैन ) | | जेसल. |
| ३५ | वस्तुपालकाव्य D | १६०० | बालचंद्र | | पा. १ |
| ३६ | वासवदत्ता | पत्र १२ | सुबंधुकवि | | भाव. मुद्रित. |
| | वृत्ति | ३२०० | सिद्धिचंद्र | | A. S. |

A, B आ बन्ने काव्यो जैनाचार्ये रच्यां छे के ते कोइ अन्यमतिनांज करेलां छे ते बाबतनी खात्री तेनी प्रतो नजरे जोवाथी थई शके.

C एनुं अपरनाम " यशोधरकाव्य " छे. आ काव्य श्रुतसागरसूरिकृत टीका सहित बे भागमां छपायेल छे.

D एनुं बीजुं नाम " वसंतविलास " एवुं छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३७ | विक्रमांकाभ्युदय | २५०० | बिल्हण | | बृ. पा. १ जेसल. |
| ३८ | विजयप्रशस्तिकाव्य | ३०४० | वल्लभगणि | | पा. ४ डे. प्रो. मणि. |
| | वृत्ति | १०००० | गुणविजय | १६८८ | पा. ४ |
| ३९ | बिल्हणचरित्र | १५० | बिल्हण | | A. S. |
| ४० | शशांकसंकीर्तन A | ताड१६६ | | | पा. २ |
| ४१ | शालिचरित्रकाव्य | १२२४ | पं. धर्मकुमार | १३३४ | बृ. मुद्रित. |
| ४२ | शीलदूतकाव्य | | सुंदरगणि | | डेक्कन. सुलभ्य, |
| ४३ | सुकृतसंकीर्तन काव्य | ९७६ | अरिसिंह | | पा. ५ डेक्कन. |
| ४४ | सुवृत्ततिलक B | ३०० | क्षेमेंद्र | | A. S. |
| ४५ | सोमसौभाग्य | १२३० | प्रतिष्ठासोम | १५५४ | पा. ४-५ मुद्रित. |
| ४६ | हरिविक्रमकाव्य | | आग. जयतिलक | | पा. ४-५ मुद्रित. |
| | वृत्ति | १२०९३ | स्वोपज्ञ | १४३६ | पा. ४-५ |
| ४७ | हीरविलासकाव्य | पत्र १३ | | | अ. १ |
| ४८ | हीरसौभाग्यकाव्य | २३३ | पद्मसागरगणि | | पा. ३-४, मुद्रित. |
| | वृत्ति | ९७४५ | देवविमल | | पा. ५A.S मुद्रित. |

A सदरहू ग्रंथ फक्त पाटणना भंडार नंबर बीजामां नोंधेलो छे बाकी क्यां पण उपलब्ध थयो नथी माटे तेना कर्ता कोण छे तेनी खात्री करी नकल उतारी लेवानी जरूर छे.

B आ क्षेमेंद्र ते कोण हता ते बाबतनो चोकस निर्णय एसियाटिक सोसायटीना संग्रहमांनी प्रत नजरे तपासवाथी थइ शके.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याना सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **क्लास बीजो** | | | | |
| | **अन्यमतीए करेला काव्य ग्रंथो उपर जैनाचार्योए रचेला व्याख्यावाळा ग्रंथो.** | | | | |
| १ | कादंबरी टीका | | सिद्धिचंद्र | | डे. मुद्रित. |
| २ | कादंबरी दर्पण | | मंडण मंत्रि | | पा. १ |
| ३ | किरातार्जुनवृत्ति | ७५०० | विनयसुंदर | | भांडारकर. |
| ४ | किरातार्जुनीयदीपिका | पत्र २०२ | धर्मविजय | | अ. १ |
| ५ | कुमारसंभववृत्ति | पत्र ८० | विजयगणि | | अ. २ |
| ६ | खंडप्रशस्ति वृत्ति | पत्र ४६ | विजयगणि A | | डेक्कन |
| | ,, वृत्ति | पत्र ४१ | गुणविजय | | अ. २ |
| | ,, वृत्ति (त्रीजी) | पत्र २१ | | | पा. ४ |
| ७ | घटखर्परवृत्ति | | शांतिसूरि | | जेसल. |
| ८ | दमयंती चंपू वृत्ति | १००० | प्रबोधमाणिक्य | | पा. १-२-३-४ |
| | ,, चंपू वृत्ति | ८८०० | गुणविजयगणि | | पा. ३ A. S. |
| | टिप्पन | १९०० | चंडपाल | | वृ. पा. १- जेसल. |

A आ नाम कांइक अपूर्ण लागे छे. तेनुं खरुं नाम शुं छे ते जाणवा माटे डेक्कनकॉलेजवाळी प्रत नजरे तपासवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | नलोदय टीका | १४०० | आदित्यसूरि | | खं. |
| १० | भट्टिकाव्य टीका | | जयमंगलाचार्य | | डे. मुद्रित. |
| ११ | माघकाव्यवृत्ति | १०००० | वल्लभदेव A | | वृ. पा. २-३ A. S. |
| | वृत्ति | | चारित्रवर्द्धन | | डेक्कन. |
| १२ | मेघदूतवृत्ति | ११५० | क्षेमहंस B | | A. S. |
| | ,, बालावबोध वृत्ति | १४४४ | महीमेरु | | पा. ४ |
| | ,, भाष्य | पत्र ३९ | | | अ. २ |
| | ,, अवचूरि | १५०० | सुमतिविजय | | A. S. |
| १३ | रघुवंशवृत्ति | | गुणविजय | | भाव.अ. २ |
| | ,, वृत्ति ( बीजी ) | | सुमतिविजय | | A. S. |
| | ,, वृत्ति ( त्रीजी ) | | धर्ममेरु | | खं. |
| | ,, वृत्ति ( चोथी ) | पत्र १४५ | समयसुंदर | | अ. १ |
| १४ | राक्षसकाव्यवृत्ति | | शांतिसूरि | | जेसल. |
| १५ | विषमकाव्यवृत्ति C | पत्र ७ | | | वृ. पा. ४ |
| १६ | वृंदावनटीका | | शांतिसूरि | | जेसल-बे. |
| १७ | शिवभद्रटीका | | ,, | | जेसल-बे. |
| १८ | शिशुपालवधटीका | | चारित्रवर्धन | | डेक्कन. |

A, B आ निशाणीवाळा बन्ने आचार्यो माटे तेमना नाम उपरथी शक रहे छे.

C एक विषमकाव्यवृत्ति श्लोक ६७७४ नी जणावी छे. पण ते क्यां पण उपलब्ध थई नथी. पाटणमां पत्र सातनी जणावी छे एमां पण कर्तानुं नाम विगेरे विशेष माहिती आपेली जणाती नथी. तो ते कोणे रचेली छे तथा ते संबंधे विशेष हकीकत शुं छे ते जाणवा माटे पाटणना भंडारमांनी प्रत फरीथी तपासवानी अगत्य छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ६ ट्ठो.** | | | | |
| | **नाटकना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अनर्घ्यराघव A | ३३५५ | जिनहर्ष | | पा. ४ |
| | ,, टिप्पन | २४५० | नरचंद्रसूरि | | वृ. पा. १ जेसल-बे. |
| | ,, टिप्पन | ७५०० | देवप्रभसूरि | | वृ. |
| २ | कर्पूरचरित्र ( सं. ) | पत्र २८ | वत्सराज | | अ. १ प्रो. मणि. |
| ३ | कर्पूरमंजरी टीका | १३८९ | राजशेखर | | पा. ४ मुद्रित. |
| | ,, लघुटीका B | | प्रेमराज | | पा. १ डेकन. |
| ४ | करुणावज्रायुधनाटक | ४८० | बालचंद्र | | अ. २ |
| ५ | कुमुदचंद्रनाटक | ५३५ | यशश्चंद्रगणि | | पा. १ लीं. डे. मुद्रित. |
| ६ | कौमुदीनाटक | | रामचंद्रगणि | | पा. १ |
| ७ | चंद्रलेखाविजयनाटक | | | | वृ पा. १ |
| ८ | ज्ञानचंद्रोयनाटक | ७४६ | पद्मसुंदर | | पा. ५ |
| ९ | ज्ञानसूर्योदयनाटक | ८०० | दिगं. वादिचंद्र | | A. S. |
| १० | धर्माभ्युदनाटक | | मेघप्रभ | | पि. रि. ५ |
| ११ | नलविलासनाटक | | रामचंद्र | | वृ. |

A अनर्घ्यराघवने मुरारि नाटक एवा नामथी विशेष ओळखवामां आवे छे.

B डेक्कन कॉलेजना लीस्टमां एनी भाष्य तरीके नोंध करी छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | नागानंदनाटक | | हर्षदेव | | पा. १ |
| १३ | निर्भयभीमनाटक | १९६ | रामचंद्रगणि | | पा. १-४ खं. |
| १४ | प्रबंधरौहिणेय | ९६१ | " | | वृ. पा. १-४ |
| १५ | प्रबोधचंद्रोदयवृत्ति | ता. ५६ | रत्नशेखर | | पा. २ |
| | " वृत्ति (बीजी) | २९६२ | कामदास A | | डेक्कन. |
| १६ | मानमुद्राभंजननाटक B | १८०० | देवचंद्रगणि | | वृ. |
| १७ | मोहपराजयनाटक C | १७०० | यशःपालमंत्रि | | वृ. नगीनदास. |
| १८ | रघुविलापनाटक D | पत्र ११८ | रामचंद्र | | पि. रि. ५ डे. |
| १९ | रत्नावलीनाटिका | ९०० | हर्षदेव | | वृ. पा. १-४ मुद्रित. |
| २० | रत्नावलिस्थप्राकृत व्याख्या | ३०० | | | A. S. |
| २१ | रंभामंजरी | | नयचंद्र | | A. S. मुद्रित. |
| | टिप्पन | ५०० | " | | A. S. |
| २२ | राजीमतीनाटक | २६४ | यशश्चंद्र | | पा. ४ |

A आ कामदास ते कोण हता ते जाणवा माटे डेक्कन कॉलेजनी प्रत नजरे तपासी जोवानी जरूर रहे छे.

B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " मानमुद्राभंजननाटकं सनत्कुमारचक्रिविलासवतीसंबंधप्रतिबद्धं देवचंद्रगणिकृतं १८००" आवो नोंध छे पण ते अमोने अत्यार सुधी क्यां पण उपलब्ध थयुं नथी.

C बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " मोहपराजयनाटकं सं. यशःपालकृतं श्रीकुमारपालनृपप्रतिबद्ध प्रायोतरंगवाच्यं १३२० " आवो नोंध छे.

D सदरहू नाटकनो ग्रंथ डेक्कन कॉलेजना संग्रहालयमां छे तेनी सादा कागळ उपर नकल करेली छे, अने जोके त्यां पण तेनो प्रांतनो थोडोक भाग अपूर्ण छे छतां ते जरूर नकल कराववा लायक छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २३ | रामनाटक | | | | जेसल. |
| २४ | राघवाभ्युदयनाटक (अं.१०) | | रामचंद्र | | बृ. |
| २५ | वनमाला नाटिका | | पं. अमरचंद A | | बृ. |
| २६ | विद्धशालभंजिकानाटक | १००० | राजशेखर | | डेक्कन. |
| २७ | श्रीपालनाटकगत रसवती वर्णन | ३५० | धर्मसुंदर B | १५३१ | खं. |
| २८ | हम्मीरमर्दन | ९०० | जयसिंहसूरि C | | पा. १ जेसल. |

A आ अमरचंद वखते अन्यमति होय तो पण होय.

B आ धर्मसुंदरसूरिनुं अपरनाम सिद्धसूरि एवुं हतुं.

C जेसलमेरनी टीपमां हम्मीरमर्दन नाटकना कर्ता हीरालाले नरचंद्रसूरि छे एम जणाव्युं छे पण ते सप्रमाण मानवाने तेवो पुरावो मळवो मुश्केल छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ७ मो.*** | | | | |
| | **नीतिना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अर्हन्नीति | १४०० | हेमाचार्य A | | पा. ५ मुद्रित. |
| २ | चतुर्वर्गसंग्रह | पत्र १५ | क्षेमेंद्र B | | A. S. |
| ३ | चारुचर्याशतक | १०० | ,, | | A. S. |
| ४ | जिनसंहिता | ४०० | दिगं. (अपूर्ण) | | A. S. |
| ५ | नीतिकल्पतरु | ११० | क्षेमेंद्र C | | डेक्कन. |
| ६ | नीतिवाक्यामृत D | ९५ | सोमदेवसूरि | | पा. १-२ डे. |
| ७ | नीतिसार | १३० | इंद्रनंदि | | A. S. |
| ८ | प्रस्तावरत्नाकर | १७५ | हरीदास D | | भांडारकर. |
| ९ | रत्नकोश | २५० | | | जेसल-बे. |
| १० | राजनीति (प्रा.) | ४५० | देवीदास E | | डेक्कन. |

* आ वर्गमा नीतिने लगता ग्रंथो अकारादि अनुक्रमवार नोंध्या छे. आपणा पूर्वाचार्योए रचेला ग्रंथो पैकी नीतिना ग्रंथो बहुत थोडा गण्या गांठ्यांज मळी आव्या छे.

A अर्हन्नीतिमां जणावेली केटलीक वातोना लखाण उपरथी कर्ता माटे शंका रहे छे.

B, C आ बन्ने क्षेमेंद्र स्व छे के अन्य छे तेना माटे शक राखवो पडे छे.

D, E हरीदास तथा देवीदास ते कोई दिगंबर हता के अन्य हता तेना माटे पण संशय राखवो पडे छे.

| अंक. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ८ मो.** | | | | |
| | **सुभाषितना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अन्योक्तिमुक्तावली | ६४० | हंसविजय | | कोडाय. |
| २ | गाथाकोश | ३८४ | मुनिचंद्र | | A. H. |
| | गाथाकोश A (बीजो) | गा. ७२ | | | लीं. |
| | ,, उद्धार | ३३१ | | | पा. ४ |
| ३ | गाथासप्तशती | | शातवाहन B | | बृ. |
| | वृत्ति | | आजड C | | वृ. |
| | वृत्ति (बीजी) | | जल्हणदेव D | | वृ. |
| | वृत्ति (त्रीजी) | ३१०० | प्रेमराज E | | डे. |
| | वृत्ति (चोथी) | ३५०० | भुवनपाल F | | ड. |
| ४ | गाथारत्नकोश G | ७०० | | | खं. |
| ५ | दानादि प्रकरण H | पत्र ३४ | सूराचार्य | | वृ. |
| ६ | पुराणहुंडी | ३०० | | | पा. ३ लीं. |

A एमां कलिकालनुं स्वरूप छे.

B C, D, E, F आ पांचे कर्ताओना नाम अन्यमति जेवा लागे छे. ते बाबतनी चोकस खात्री तेनी प्रतो नजरे जोयाथी थई शके.

G जुदा जुदा अडतालीश विषयोपर गाथामां रचायलो छे.

H एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " दानादिप्रकरणं सं. सूराचार्यकृतं सप्तावसरं काव्यादिबंधं पत्र ३४ " आवो नोंध छे. पण ते अमोने हजी सुधी क्यां पण उपलब्ध थयो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ७ | प्रस्ताविक श्लोक | ७०० | | | A. S. |
| ८ | भव्यकुमुदचंद्रिका टीका | ३६०० | ( दिगं. ) | | A. S. |
| ९ | मौक्तिक | पत्र ६ | | | पा. ३. |
| १० | रत्नकोश A | गा. ४२१ | | | खं. |
| ११ | रसालय ( प्रा. ) | पत्र ९ | | | पा. ३ |
| १२ | रसाउलो ( प्रा. ) | पत्र ११ | मुनिचंद्र | | राधणपुर. |
| १३ | विज्ञाहलवृत्ति | | रत्नदेव | १३९३ | भांडारकर. |
| १४ | विद्यालय ( प्रा. ) | ३३०० | | | पा. १-३-४-५ |
| | वृत्ति | पत्र ८० | धर्मचंद्र | | अ. १ |
| | उद्धार | | | | पा. ४ |
| १५ | सद्भाषितावली | ४८० | ( दिगं. ) | | A. S. |
| १६ | साहित्यश्लोक B ( प्रा. ) | गा. १७६ | | | पि. रि. ५ |
| १७ | सुभाषित (प्रा.) | गा. ४० | | | नगीनदास |
| १८ | सुभाषितार्णव | १२०० | दिगं. | | A. S. |
| १९ | सुभाषितसार उद्धार | ३३१ | | | पा. ४ |
| २० | सुभाषितसमुद्र | | धर्मकुमार | | बृ. |

A एमां उपयोगी गाथाओ छे. आ रत्नकोश तथा उपर जणावेला गाथारत्नकोशना श्लोक मळताज छे तेथी ते जुदा जुदा छे के बन्ने एकज छे ते बाबत तेनी प्रतो मेळवी नक्की करवुं जोइये.

B एनुं आदिचरण " इह ते जयंति कइणो " एवुं छे.

| अंक. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २१ | सुभाषितकोश |  | रामचंद्र A |  | बृ. |
| २२ | सुभाषितावली |  | सोमेश्वरदेव |  | डेक्कन. |
| २३ | सुभाषितरत्नसंदोह | पत्र ८३ | अमितगति (दिगं.) |  | डेक्कन. मुद्रित. |
| २४ | सुभाषित रत्नावली | ४८० | सकलकीर्ति B |  | A. S. |
| २५ | सुभाषित षट्त्रिंशिका |  |  |  | अ. १ |
|  | अवचूरि | पत्र ४ |  |  | अ. १. |
| २६ | सूक्तावली | पत्र १५ |  |  | बृ. पा. ३-४ |
|  | सूक्तावली ( बीजी ) | ६०० | दिगं. |  | A. S. |
| २७ | सूक्तिमुक्तावली | २३३२ |  |  | पा. ४ |
|  | सूक्तिमुक्तावली (बीजी) | १९०० | जल्हण |  | A. S. |
|  | सूक्तिमुक्तावली (त्रीजी ) |  | मेघप्रभ |  | पि रि. ५ |
| २८ | सूक्तरत्नाकर | ४२४० | रत्नसिंह |  | पा. २ |
|  | सूक्तरत्नाकर ( बीजो ) |  | धर्मकुमार |  | बृ. |
|  | सूक्तरत्नाकर ( त्रीजो ) |  | माघसिंह ( विद्यासिंहसुत ) |  | A. S. |
| २९ | सूक्तिसंग्रह | १०४० | दिगं. आसाधर |  | A. S. |
| ३० | स्मृतिपुराणश्लोक | १००० |  |  | पा. ४. |

A आ रामचंद्रसूरि ते हेमचंद्रसूरि शिष्य तेज होवा जोइये.

B आ सकलकीर्ति दिगंबराचार्य होवानो संभव छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ९ मो.** | | | | |
| | **पद्धतिदर्शक ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अष्टलक्षी A | १२४५ | समयसुंदर | १७४६ | पा. ५. |
| २ | उपाश्रयादिवर्णन | पत्र ४ | | | अ. २. |
| ३ | गोत्रोद्धार ( शतार्थवृत्ति ) | पत्र ५१ | | | अ. १. |
| ४ | चातुर्मासी व्याख्यान | ५०० | धर्ममंदिर | १७४९ | पा. ३. |
| ५ | चातुरीसूत्र | १२३ | | | पा. ४. |
| ६ | नरसंवादसुंदर B | पत्र १० | | | डे. पेज ११५. |
| ७ | पत्रपरीक्षा | पत्र ९ | | | अ. २. |
| ८ | वर्णनसागर ( प्रा. ) | पत्र २४ | | | डेक्कन. |
| ९ | विज्ञप्तिपत्री | १४२ | मेरुविजय | | पा. ५. |
| १० | विद्वद्‌गोष्ठी | पत्र १ | | | पा. ४. |
| ११ | विद्वज्जनालाप | पत्र ८ | | | अ. २. |

A एनुं अपरनाम " अर्थरत्नावली " एवुं छे.

B डेक्कन कॉलेजना लिस्टमां आ रीते तेनी नोंध करी छे, पण अमारा धारवा मुजब तेनुं नाम " नवसंवादसुंदर " हशे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | व्यवहारलेख्यपद्धति(तत्वासन) | पत्र २ | | | अ. २. |
| १३ | व्याख्यानकथनपद्धाति | १७५ | | | लीं. |
| १४ | शतार्थी | १००१ | उदयधर्मगणि | १६०६ | पा. ३-५. |
| | विवरण A | १५०० | मानसागर | | पा. ५ लीं. खं. |
| १५ | शुकदेवसंवाद | | | | पा. ३. |
| १६ | संवादसुंदर | ३३३ | समयसुंदर | | पा. ३-४ अ. २. |
| १७ | सभाशृंगार | पत्र ११ | | | पा. ३. |

A एनुं आदिचरण " परिग्रहारंभमग्ना " एवुं छे.

## लीस्ट नंबर ९

# जैन विज्ञान.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग १ लो.** | | | | |
| | ज्योतिष्ना ग्रंथो. | | | | |
| १ | अर्थकांड | | देवेंद्रसूरि शिष्य हेमप्रभसूरि A | | A. S. |
| | अर्थकांड ( बीजुं ) | ६०० | दुर्गदेव | | नगीनदास. |
| २ | अष्टांगहृदयसंहिता | पत्र ३३९ | वाग्भट | | A. S. |
| ३ | आयज्ञानतिलकवृत्ति | १८०० | दिगं. वामनंदि शिष्य | | A. S. |
| ४ | आयप्रश्न | ७० | | | बृ. |
| ५ | आयसद्भाव | १९५ | | | बृ. |
| | वृत्ति | १६०० | | | बृ. |
| ६ | आरंभसिद्धि | ४६० | उदयप्रभ | | पा. ३ |
| | वृत्ति | ५८९३ | हेमहंस | १५१४ | पा. ३. ५. |
| ७ | गणिततिलकवृत्ति | | सिंहतिलक | | बृ. |
| ८ | चंद्ररज्जुचक्रविवरण | २६० | | | पा. ४. |
| ९ | जन्मकुंडलीविचार | | | | पा. १. |

A एसियाटिक सोसायटीना रिपोर्टमां आ हेमप्रभसूरिना गुरुनुं नाम देवेंद्रसूरि जणाव्युं छे पण अमारा धारवा मुजब वि. सं. १३२७ मां चैत्यवंदननी संघाचार नाम्नी वृत्तिना करनार धर्मघोषसूरि थया अने तेमना शिष्य हेमप्रभसूरि हता तेओएज आ ग्रंथ रच्यो होवो जोइये अने रिपोर्टकारे गुरुनुं नाम नोंधतां भूलथी दादागुरुनुं नाम नोध्युं होय तेम जणाय छे.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १० | जन्मपत्रीविचार | | | | पा. १. |
| ११ | जन्मपत्रीपद्धति A | ४४०० | लब्धिचंद्र | | जे. डेक्कन. |
| १२ | जन्माभोधि | ८३ | नरचंद्र | | डेक्कन. |
| | ( बेडा ) वृत्ति | | ,, | | डेक्कन. |
| १३ | जातकाभिधान | १३०० | सिंहमल्ल B | | A. S. |
| १४ | जातकदीपिका | | हर्षविजय | | लं. |
| | वृत्ति | ३५० | ,, | १७६५ | लं. |
| १५ | जातकपद्धति | पत्र ८ | ( जैनी ) | | अ. १. |
| १६ | ज्योतिष् C | ताड२९२ | | | पा. २. |
| १७ | ज्योतिष्चक्रविचार ( प्रा. ) | | विनयकुशल | | पा. ३. |
| १८ | ज्योतिष्सारसंग्रह | | | | पा. ३. भाव. |
| १९ | ताजिकसारवृत्ति | ५४० | सुमतिहर्ष | | लीं A. S. |
| २० | तिथ्यादिसारणी | | | | पा. ३. |
| २१ | द्वादशभावजन्मप्रदीप | पत्र ८ | भद्रबाहु | | अ. १. |

A जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले एना श्लोक २५०० नोंधीने एना कर्ता हर्षकीर्तिसूरि जणाव्या छे. आ बाबतनो निर्णय जेसलमेरवाली प्रत नजरे तपासवाथी थई शके.

B आ सिंहमल्ल ते कोई दिगंबर होय तेम तेमना नाम उपरथी अटकळ करी शकाय छे.

C आ ज्योतिष् ते शुं छे ते बाबत पाटणनो भंडार नंबर बीजावाळी प्रत फरीथी तपासीने नक्की करवानुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ | नरपतिजयचर्या | ४८०० | | | वृ. भाव. A. S. |
| २३ | नवग्रहराशिविचार | १९६ | | | पा. ३. |
| २४ | नारचंद्र | ७९९ | नरचंद्र | | पा. १-४-५ |
| | टिप्पन | १३३५ | सागरचंद्र | | पा. १-३-४ |
| २५ | निधानादिपरीक्षाशास्त्र A | पत्र ३ | | | अ. १. |
| २६ | पंचांगतिथिविवरण B | १९० | | | वृ. |
| २७ | प्रश्नप्रकाश C | ३६० | नरचंद्रसूरि. | | वृ. |
| २८ | प्रश्नशत | २०० | नरचंद्र. | | डेक्कन. |
| २९ | फत्तेशाहप्रकाश | ६०० | | | भांडारकर. |
| ३० | भद्रबाहुसंहिता * | | भद्रबाहु | | पा. ४ |
| ३१ | भावसागर | ३३०० | | | A. S. |
| ३२ | भुवनदीपक | २६० | पद्मप्रभ | | वृ. |
| | ढुंढिका | ५०० | | | पा. १-३ लीं. |
| | अवचूरि | २३९ | | | पा. १ |
| | वृत्ति | १७०० | सिंहतिलक | | वृ. अ. १ राधण. |
| | वृत्ति ( बीजी ) | | हेमतिलक | | अ. १ |

A एनुं अपरनाम " अहिचक्र " एवुं छे.

B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " पंचाङ्गतिथिविवरणं करणशेषवृत्तिनामकं १९० " आवो नोंध छे.

C एना वीश प्रकाश छे.

* आ भद्रबाहुसंहिता नानी मोटी बे देखवामां आवे छे. तेमां नानीनुं भाषांतर छपायुं छे. एना कर्त्ता भद्रबाहु ते चौदपूर्वी होवानो घणी रीते संभव थतो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | मणितथाताजिक | १२१ | ( कोईजैन ) | | डेक्कन. |
| ३४ | मंडलपद्धती | ४८६ | हेमप्रभ | | पा. ३. |
| ३५ | यंत्रराज | ६०० | | | A. S. |
| ३६ | यंत्रराजागम | ३७० | महेंद्रसूरि | | पा. ४ A. S. |
| | वृत्ति | १३३३ | मलयचंद्र | | पा. ४ |
| ३७ | यंत्रराजरचनाप्रकार A | | सवाई जयसिंह | | A. S. |
| ३८ | यंत्ररत्नावली | | पद्मनाग | | A. S. |
| | वृत्ति | | स्वोपज्ञ | | A. S. |
| ३९ | योगायोगप्रकरण | पत्र ७ | | | अ. १ |
| ४० | रत्नकोष | | | | वृ. |
| ४१ | रत्नदीपक B | पत्र ६ | | | लीं. |
| ४२ | लग्नशुद्धि C | | हरिभद्रसूरि | | पा. ३ |
| ४३ | वराहसंहिता | | वराहमिहिर | | वृ. पा. २ |
| | वृत्ति | ४००० | | | वृ. पा. २ |
| ४४ | व्यवहारप्रकार | | | | भाव. |

A एने " जयसिंहकारिका " पण कहे छे.

B एमां बारभावपर फलादेश छे.

C सदरहू ग्रंथ पूर्वे हरिभद्रसूरिकृत ग्रंथोना वर्गमां नोंधायो छे, छतां इहां ज्योतिषना ग्रंथोनो वर्ग जुदो पाडेलो होवाथी इहां खास नोंध्यो छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्याः नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४५ | षष्ठिसंवत्सरी A | ३०० | सोमकीर्ति B | | बृ. जेसल. |
| | वृत्ति | पत्र ८ | | | अ. १ |
| ४६ | सेतुदीपिका | पत्र १६९ | | | जामनगर |
| ४७ | हर्षप्रकाश | | हर्षदेवगणि | | बृ. |

A आ षष्ठिसंवत्सरी ते आ वर्गनी शरुआतमां जणावेला अर्धकांडनो भाग छे.

B आं नाम जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्युं छे तेथी एना माटे शक राखवो पडे छे. बृहट्टिप्पनिकामां कर्तानुं नाम आप्युं नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **क्लास बीजो.** | | | | |
| | श्री हंसविजय जीए नोंधेला ज्योतिष्ना ग्रंथो. * | | | | |
| १ | अक्षप्रभा | पत्र ७ | | | जेसल. |
| २ | अष्टकवर्गरेखा | पत्र २ | | | ,, |
| ३ | कामधेनु | पत्र १६ | | | ,, |
| ४ | कुंडकेश्वर | पत्र १० | | | ,, |
| ५ | ग्रहदीपिका | पत्र ८ | | | ,, |
| ६ | ग्रहरत्नाकर कोष्टक. | पत्र १६ | | | ,, |
| ७ | ज्ञानप्रदीप | पत्र १३ | | | ,, |
| ८ | ज्ञानमंजरी | पत्र २ | | | ,, |
| ९ | धीष्णोपचारसार | पत्र २ | | | ,, |
| १० | ध्वजधूम | पत्र २ | | | ,, |
| ११ | नवग्रहवृत्ति | पत्र २ | | | ,, |
| १२ | नौयोगादि | पत्र ३ | | | ,, |
| १३ | पंचांगदीपिका | पत्र ६ | | | ,, |

* जेसलमेरमां ज्यारे श्रीमद् हंसविजयजी महाराज पधार्या हता त्यारे तेओए पोतानी करेली टीपमां नोंधेला ज्योतिषना ग्रंथोना नाम इहां तेनो एक जुदो क्लास करी अनुक्रमवार नोंध्या छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याने सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १४ | महादेवीटीका | पत्र ३८ | | | जेसल |
| १५ | महादेवी उपराग | पत्र ७ | | | ,, |
| १६ | मूलविधान | पत्र १३ | | | ,, |
| १७ | यंत्रराजवृत्ति | पत्र ३२ | | | ,, |
| १८ | योगमुहूर्त | पत्र ५ | | | ,, |
| १९ | रत्नप्रदीप | पत्र १० | | | ,, |
| २० | वक्रमार्गी | पत्र १ | | | ,, |
| २१ | शतांकी | पत्र ७ | | | ,, |
| २२ | षट्भूषण | पत्र १९ | | | ,, |

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **क्लास ३ जो.** | | | | |
| | जेसलमेरमांना शक पडता ग्रंथो. * | | | | |
| १ | कर्णशार्दूल | | | | जेसल. |
| २ | ज्योतिष्फलदर्पण † | | | | ” |
| ३ | पंचांगतत्व † | | | | ” |
| ४ | सिद्धियोगयंत्र | ७०० | | | ” |
| ५ | सूत्रेश्वरमंडल † | | | | ” |

* आ मथाळा नांचे फक्त हीरालालनी करेली टीपमां नोंधेला शक पडता पांच ग्रंथो नोध्या छे. सदरहू ग्रंथो श्रीहंसविजयजीनी टीपमां नजरे आवता नथी तेथी आ ग्रंथो त्यां छेके नहि तेना माटे शक राखवो पडे छे.

† आ निशाणीवाळा त्रणे ग्रंथ बबे पानाना छे एम हीरालाले पोतानी टीपमां नोंध्युं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग २ जो.** * | | | | |
| | **निमित्तना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अङ्गचेष्टाविद्या | | | | खं. |
| २ | अङ्गस्फुरणविचार | पत्र १ | | | पा. ३ |
| ३ | अंजनविचार | | | | लीं. |
| ४ | अर्थकाण्ड A | १४७ | दुर्गदेव | | वृ. |
| ५ | अष्टस्वप्नभाष्य B | १०० | जिनपाल | | जेसल. |
| ६ | उपदेशमालाशकुनावली | पत्र ६ | | | लीं. |
| ७ | काकरुत | | | | पा. ३ लीं. |
| ८ | कालज्ञान ( सं. ) | २६४१ | | | पा. ४ |
| ९ | खरस्वरविचार C | | | | पा. ३. |
| १० | खेलवाडी | गा१३९७ | माहूया D | | वृ. |
| ११ | चित्रवर्णसंग्रह | ४१ | | | खं. |

A एना दस अध्याय छे.

B आ ग्रंथ जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंध्यो छे बाकी ते क्यांपण जोवामां आव्यो नथी माटे जो तेनी प्रत त्यां मोजूद होय तो तेनो उतारो करावचो जोइये.

C गुर्जर भाषामां छे.

D आ माहूया ते कोण हता ते जाणवामां आव्या नथी कारण तेना माटे तेवो कोइ पुरावो मळी शकतो नथी.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | बिन्दुचतुर्विंशतिका | पत्र ३ | | | अजमेर |
| १३ | छींकविचार | | | | खं. |
| १४ | जयपाहुडप्रश्नव्याकरण. | २२८ | | | नगीनदास. |
| १५ | दुर्गाशकुन | ५५५ | नरपति | | पा. ४ |
| १६ | धातुवादप्रकरण A | २५ | | | खं. |
| १७ | नाडीसंचारज्ञान | | | | वृ. |
| १८ | नाथपुस्तिका B | | | | वृ. |
| १९ | नारदोक्तस्त्रीलक्षण | ३१ | | | लीं. |
| २० | पल्लीविचार | पत्र ४ | | | अ. १ |
| २१ | पल्लीशरटशांति | २० | वृद्धगर्गमुनि | | लीं. |
| २२ | पासाकेवलि | १८७ | गर्गर्षि C | | पा. १-२-३ लीं. |
| २३ | पिपीलिकाज्ञान ( प्रा. ) | | | | वृ. |
| २४ | पुस्तकेंद्रग्रंथ | गा. १५ | | | वृ. |
| २५ | प्रश्नव्याकरणवृत्ति | २३०० | | | वृ. पा. २ जे. |
| २६ | प्रश्नोत्तरसूत्र | ४६५ | | | पा. ४ |
| २७ | मातृकाकेवलि ( सं. ) | ५० | | | लीं. |

A एमां सोनारूपानी सिद्धिनी वात छे.

B एना माटे वृहट्टिप्पनिकामां " नाथ पुस्तिकायोगिनामाम्नाय ग्रंथसक्ता " आवो नोंध छे.

C आ गर्गर्षि ते सिद्धर्षिना गुरु दुर्गस्वामीना पण गुरु थता हता एटले तेओ लगभग विक्रमनी नवमी सदीनी शरूआतमां विद्यमान हता.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्याno सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| २८ | मेघमाळा ( मोटी ) | ४०० | | | लीं. |
| २९ | मेघमाला ( नानी ) | १०० | हेमप्रभ | | लीं. |
| ३० | रत्नलक्षण | | | | खं. |
| ३१ | रघुशकुनावली | | | | भाव. |
| ३२ | रिष्टसमुच्चयशास्त्र | ३०० | दुर्गदेव | | डेक्कन. |
| ३३ | रुतज्ञान A | २१५ | | | वृ. |
| ३४ | वसंतराजशकुनवृत्ति B | ३७५० | भानुचंद्रगणि | | जेसल. |
| ३५ | शकुनशास्त्र C | पत्र ११ | माणिक्यसूरि | | अ. १ |
| ३६ | शकुनसारोद्धार D | ५०८ | ,, | १३३८ | वृ. |
| ३७ | शकुनविचार | पत्र ३ | | | पा. ३. |
| ३८ | शकुनावली | ताड१३० | वसंतराय | | पा. २ |
| ३९ | शकुनरत्नावली | ११०० | | | नगीनदास. |
| ४० | शतसंवत्सरिका | पत्र ३५ | | | पा. ३ |
| ४१ | शिघालिखित | पत्र २ | | | अ. १. |
| ४२ | सामुद्रिकशास्त्र | १८७ | | | पा. ३-४. |

A आ रुतज्ञान ते पासाकेवलि विशेषरूप छे.

B हीरालाले सदरहू वृत्ति जेसलमेरमां त्रुटक छे एम जणाव्युं छे.

C, D आ बन्ने ग्रंथो एकज होवा जोइए कारण के तेनी श्लोकसंख्या तथा कर्तानुं नाम मळतुंज छे. फक्त नाममां सहेज फेर छे. ते वखते लेखकनो दोष पण संभवी शके.

| नंबर | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या·नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ४३ | सामुद्रिकशास्त्र | १००० | दुर्लभराज | | डेक्कन. |
| ४४ | सामुद्रिक | १९८ | ( जैनकृत ) | | लीं. |
| ४५ | सामुद्रिक | ६७ | | | वृ. |
| ४६ | सामुद्रिकतिलक | १००० A | दुर्लभतनुज जगद्देव | | लीं. |
| ४७ | सारोद्धारशकुनप्रकाश | आर्या ८०० | | | A. S. डेक्कन. |
| ४८ | सिद्धाज्ञापद्धति | | | | घृ. |
| ४९ | श्वानसत्तरी | २०० | | | जेसल-बे. |
| ५० | श्वानरुतविचार | पत्र ४ | नरपति | | अ. १ |
| ५१ | श्वानशकुनविचार | | | | खं. |
| ५२ | स्वप्नचिंतामणि | पत्र ७ | | | जामनगर. |
| ५३ | स्वप्नलक्षण | पत्र १० | | | पा. ३. |
| ५४ | स्वप्नविचार ( प्रा. ) | ८७५ | जिनपाल | | पा. ५. |
| ५५ | स्वप्नाष्टकविचार | | | | पा. १ |
| ५६ | स्वप्नसप्ततिका | | | | पा. १ |

A एनी ८०० आर्या होवा साथे ते सरस ग्रंथ छे. पण कर्ता स्व छे के अन्य छे तेनो तपास करी नक्की करवानी जरूर छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | स्वप्नसप्ततिका वृत्ति | | | | पा. १ |
| | वृत्ति ( बीजी ) | ८०० | सर्वदेवसूरि | १२८७ | पा. ३-५ |
| ५७ | स्वरोदय | ७९ | | | पा. ३-५ |
| ५८ | हस्तकाण्ड A | ९९ | चंद्रशिष्य पार्श्वचंद्र | | पा. ४ |
| ५९ | हरिमेखला B | | | | बृ. |

A आ ग्रंथ खास लखाववा लायक छे.

B बृहट्टिप्पनिकामां एना माटे " जनाश्चर्यकरांजनसिद्धयादियोगादिवाच्या " आवो नोंध छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ३ जो*** | | | | |
| | **वैद्यकना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | आयुर्वेदमहोदधि | ११०० | सुषेण | | A. S. |
| २ | चिकित्सोत्सव | १७०० | हंसराज | | A. S. |
| ३ | द्रव्यावली ( निघंटु ) | ९०० | महेंद्र | | A. S. |
| ४ | प्रतापकल्पद्रुम | ६००० | प्रतापसिंहदेव | | A. S. |
| ५ | माघराजपद्धति | १०००० | माघचंद्रदेव ( श्रु. ) | | A. S. |
| ६ | योगरत्नाकर | ९००० | आंच. नयनशेखर | १७३६ | ली. |
| ७ | योगरत्नसमुच्चय | ४५० | | | A. S. |
| ८ | योगशतक | २५० | | | A. S. |
| ९ | योगशत | पत्र २४ | | | पा. ३-४ |
| १० | योगचिंतामणि | २१०० | हर्षकीर्ति | | जेसल-बे. A. S. |

* आ वर्गमां वैद्यकना जे जे ग्रंथो अमारा जाणवामां आव्या छे ते ते अनुक्रमवार नोंध्या छे. विचार करवा जेवी वात छे के आपणा विद्वान् दूरदर्शी पूर्वाचार्योए अन्य साहित्यने खीलववा माटे करेला प्रयासनी सरखामणि करतां वैद्यक जेवा असाधारण उपयोगी विषयनी खीलवणी करवामां पोताना उच्च ज्ञाननो उपयोग कर्यो होय तेम अमोने मळेला ग्रंथो उपरथी जणातुं नथी. शिवाय अमे उपर जणावेला ग्रंथोपैकी केटलाएक ग्रंथो तेमना कर्ताना नामपरथी प्राये अन्य मतिना पण करेला हशे तेम संशय रहे छे. आम होवानुं कारण ए जणाय छे के वैद्यकनो विषय केटलाक आरंभ संरंभ, वनस्पत्यादिकनुं उपमर्दन, अग्नि विगेरेनो विनाशादि करावनार छे तेथी त्रिविधे त्रिविधे जीवहिंसानो त्याग करनार मुनिराज ए कार्यमां प्रवृत्ति न करी शके तेवुं छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | रत्नसागर | १८०० | ( अपूर्ण ) | | A. S. |
| १२ | रसचिंतामणि | ९०० | अनंतदेवसूरी | | A. S. |
| १३ | रसरत्नदीपिका | ६०० | मल्लराजमहीपति | | खं. |
| १४ | वीरसिंहावलोक | ४००० | वीरसिंहदेव | | A. S. |
| १५ | वैद्यवल्लभ | २६० | (तपा )हस्तिरुचि गणि | | लीं. A. S. |
| १६ | वैद्यकसारोद्धार | ८०० | हर्षकीर्ति | | A. S. |
| १७ | वैद्यकसारसंग्रह | ११०० | हर्षकीर्ति | | खं. |
| १८ | सिद्धयोगमाला | ५०० | सिद्धर्षि | | डेक्कन. |
| १९ | सिद्धसार A | पत्र ७९ | | | अ. १. |

A सिद्धसारना करनार कोइ जैन होवा जोइये एम अमदावादना डेलाना भंडारनी टीपमां नोंध छे. पण कदाच आ ग्रंथ वैद्यकना बदलामां धर्मग्रंथ पण होय तो होय.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ४ थो.** | | | | |
| | **कलाविज्ञानना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अपराजितपृच्छा | १३०० | भावदेवाचार्य | | भांडारकर. |
| २ | अश्वादिगुण | ६० | | | A. S. |
| ३ | कंदर्पचूडामणि | १८०० | वीरभद्र A | १६३३ | A. S. |
| ४ | कामप्रदीप | पत्र ५ | | | अ. १. |
| ५ | कामानुशासन | पत्र ३ | | | अ. १. |
| ६ | कोकमंजरी | | (अपूर्ण) | | लीं. |
| ७ | कौतुकरत्नावली | १००० | | | A. S. |
| ८ | गजपरीक्षा | १५०० | | | A. S. |
| ९ | गोधूलिकार्थ B | १४५ | | | पा. ५ |
| १० | चतुरंगविलासमणिमंजरी | १२०० | | | डेक्कन. |
| ११ | जगत्सुंदरीयोगमाला C | | हरिषेण | | A. S. |

A ग्रंथना नाम उपरथी कर्ता स्व छे के अन्य छे तेना माटे शक राखवो पडे छे.

B एमां स्वस्तिक करवानी रीत जणावी छे.

C आ जगत्सुंदरी योगमाला ते योनिप्राभृतनो एक भाग छे अने ते उपयोगी छे, पण दिलगीरीनी वात छे के एशियाटिक सोसायटीना रिपोर्टमां पण त्रुटक छे एम जणाव्युं छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| १२ | धनुर्विद्या | | | | वृ. |
| | वृत्ति | | | | वृ. |
| १३ | धनुर्वेद | पत्र १११ | | | A. S. |
| १४ | नागार्जुनविद्या | १००० | | | A. S. |
| १५ | पादलब्धि ( सं. ) | पत्र ८ | | | प्रो. मणि. |
| १६ | भरतशास्त्र | | | | वृ. |
| १७ | योगरत्नमालाA | १५० | नागार्जुन | | A. H. |
| | वृत्ति | | गुणाकर | १२९६ | A. H. |
| १८ | योगरत्नावली ( लघु ) | | | | डेक्कन. |
| १९ | लेखनप्रकार | पत्र ९ | | | डेक्कन. |
| २० | वास्तुशास्त्र | पत्र १३७ | भोजदेव | | पा. ४. |
| २१ | विज्ञानार्णव | पत्र ८६ | | | अ. १. |
| २२ | शाईनीकृति B | | | | जेसल. |
| २३ | शालिहोत्र C | पत्र ४ | | | लीं. |

A एने रत्नावली तथा आश्चर्ययोगमाला पण कहेवाय छे.

B एमां ताड तथा कागळपर लखवानी शाई बनाववानी रीत दर्शावी छे.

C एमां घोडा पारखवानी विद्या कही छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| २४ | शुंभलीमत | गा. ३०९ | दामोदरगुप्त | | नगीनदास. |
| २५ | समंतसामंतचक्रविधि | पत्र १४ | | | अ. २ |
| २६ | समस्तरत्नपरीक्षा | ६०० | | | A. S. |
| २७ | समरांगणसूत्रधार | १५६८ | भोजदेव | | डेक्कन. |
| २८ | संगीतदीपक | पत्र ३० | | | अ. २. |
| २९ | संगीतरत्नावली | पत्र २५ | | | अ. २ |
| ३० | सिद्धज्ञान A | पत्र २१ | मेघविजय | | अ. १ |
| ३१ | हीरकपरीक्षा | ९० | ( दिगं. ) | | A. S. |

A आ सिद्धज्ञान हस्तसंजीवन नामक ग्रंथमांथी उद्धृत करेलुं छे अने ते गुर्जर भाषामां छे.

| अंक | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ५ मो.** | | | | |
| | कल्पना ग्रंथो. | | | | |
| १ | अकालदंतकल्प ( प्रा. ) | पत्र १ | | | लीं. |
| २ | आसुरीकल्प | ३८० | | | A. S. |
| ३ | उलूककल्प | ७२ | गोविंद A | | A. S. |
| | उलूककल्प ( सं. ) | पत्र १ | | | लीं. |
| ४ | कल्परत्नावली B | | | | जेसल. |
| | वृत्ति | ४०० | | | जेसल. |
| ५ | काकरुततथाकाकनिलय | | | | रि. ६ |
| ६ | घंटाकर्णकल्प | | | | पा. ३ A. S. |
| ७ | धातुकल्प | १८०० | | | A. S. |
| ८ | नानाकल्प C | पत्र ५८ | | | अ. १ |
| ९ | नाकपरावर्तविधि | | | | रि. ६ |
| १० | पद्मावतीकल्प | पत्र ३२ | जीतसेनशिष्य मल्लिषेण | | बृ. पा. ३-५ |

A आ गोविंद कोण हता ते जाणवामां आव्युं नथी पण प्राये ते अन्यभंति होवा जोइये.

B आ ग्रंथ तेनी वृत्ति साथे जेसलमेरनी टीपमां हीरालाले नोंधेल होवाथी तेना माटे शक राखवो पडे छे.

C आ नाम सामान्य छे. अने ते अमदावादना डेलानी टीपमां नोंधेल होवाथी इहां नोंध्युं छे एमां लगभग बेंतालीस कल्पो छे एम अमारा जाणवामां आव्युं छे, पण तेना शुं शुं विशिष्टनामो छे ते तेनी प्रत नजरे जोया वगर जाणवुं मुश्केल छे.

| नं. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्या-नो सं. | क्यां छे? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | पद्मावतीचतुष्पदी | ४६ | जिनप्रभ | | पा. ५. |
| १२ | मणिपरीक्षाकल्प | पत्र १ | | | लीं. रि. ६. |
| १३ | वंध्याकल्प | | | | रि. ६ |
| १४ | वर्द्धमानविद्याकल्प | ४५० | सिंहतिलकसूरि | | पा. ३ डेक्कन. |
| १५ | विजयपताककल्प | | | | पा. १ |
| १६ | विजययंत्रविधि A | १२५ | | | डेक्कन. |
| १७ | वृक्षविनोद | ३०० | | | रि. ६ |
| १८ | श्लोककल्प | | | | वृ. रि. ६ |
| १९ | संवित्पटल B | ६५ | | | A. S. |
| २० | सुवर्णसिद्धि | | पादलिप्त | | डेक्कन. |
| | वृत्ति | पत्र २ | ,, | | डेक्कन. |
| २१ | सूरिमंत्रकल्प C | ३२० | | | रि. ६ |
| २२ | स्थापनाकल्प (सं.) | पत्र ४ | | | प्रो. मणि. |

A एने विजयपताका यंत्र पण कहेवाय छे.

B आ संवित्पटल विजयाकल्पमांथी उद्धृत करेल छे.

C एना पांच पीठ छे अने ते आचार्यपदधारक मुनिवर्यने खास उपयोगी छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| | **वर्ग ६ ट्ठो.** | | | | |
| | **मंत्रना ग्रंथो.** | | | | |
| १ | अक्षरचूडामणि | पत्र ३१ | | | डेक्कन. |
| २ | अनुभवसिद्धमंत्रद्वात्रिंशिका | पत्र ६ | भद्रगुप्त | | अ. १. |
| ३ | उड्डामरतंत्र | ५०० | | | A. S. |
| ४ | कक्षपुट A | ७०० | नागार्जुन | | A. S. |
| ५ | कच्छपुट B | पत्र ८१ | नागार्जुन | | डेक्कन. |
| ६ | गौतमीमंत्र | २५०० | | | A. S. |
| ७ | जिनदत्तीयविद्या | पत्र १ | | | ली. |
| ८ | ज्वालामालिनीविद्या | | | | A. S. |
| ९ | तृतीयज्वराष्टक C | | मल्लदेव | | A. S. |
| १० | मंत्रशास्त्र | पत्र ५ | मल्लिषेण | | पा. ३. |

A, B आ बन्ने ग्रंथो एकज छे के जुदा जुदा छे तेना माटे शक रहे छे. अमारा धारवा मुजब ते बन्ने एकज हशे पण फरक एटलो के डेक्कन कॉलेजमांनी वृत्ति हशे अने एसियाटिक सोसायटीमांनु मूळ हशे. छतां चोकस निर्णय माटे बन्ने प्रतो तपासवी जोइये.

C आ ग्रंथ वखते वैद्यकनो पण होयतो होय छतां ते मंत्राष्टक हशे एम धारीने इहां नोंध्यो छे.

| नंबर. | नाम. | श्लोक. | कर्त्ता. | रच्यानो सं. | क्यां छे ? |
|---|---|---|---|---|---|
| ११ | मंत्रमहोदधि A | | | | बृ. A. S. |
| १२ | मंत्रराजरहस्य | ८०० | सिंहतिलकसूरि | | अजमेर. |
| १३ | यंत्रचिंतामणि | | | | A. S. |
| | वृत्ति | ३०० | | | A. S. |
| १४ | यक्षिणीवेतालसाधन | १७० | | | A. S. |
| १५ | वसुधारा B | | | | पा. १-३. |
| १६ | सिद्धविद्याचक्र ( सं. ) | पत्र १२ | ( जैन ) | | डेक्कन. |
| १७ | सूरिमंत्रकल्प | | | | A. S. |
| | ,, सारोद्धार | ५५८ | आंच. मेरुतुंग | | A. S. |
| | ,, दुर्गपदविवरण | | | | A. H. |
| | ,, प्रदेशविवरण | | | | A. H. |

A आ वसुधारा बौद्धाचार्ये करी छे एम जाणवामां छे.

B एना माटे बृहट्टिप्पनिकामां " मंत्रमहोदधि प्रा. दिगंबर श्रीदुर्गदेवकृतः गा. ३६ "

# अनुक्रमणिका.

| अक्षरानुक्रमवार ग्रंथोना नाम. | पृष्ठांक. |
|---|---|


| अक्षरानुक्रमवार ग्रंथोना नाम. | पृष्ठांक. |
|---|---|

# अनुक्रमणिका.

## ग्रंथकर्त्ताओनी अक्षरानुक्रमवार अनुक्रमणिका.

## त.

### य.

# अनुक्रमणिका.

## रच्याना सालनी ग्रंथना नाम साथेनी अनुक्रमणिका.

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. |
|---|---|
| ६० | पद्मचरित्र (प्रा.) ... |
| १२५ | आप्तमीमांसा ... |
| १३० | योनिप्राभृत .... |
| ७३३ | ओघनिर्युक्ति चूर्णि ... |
| ८३५ | कुवलयमाला ... |
| ९१३ | उपदेशमाला वृत्ति (प्रा.) ... |
| ९१५ | धर्मोपदेश लघुवृत्ति ... |
| ९२५ | महापुरुष चरित्र ... |
| ९३३ | आचारांग वृत्ति ... |
| ९५६ | चैत्यसाधुवंदनश्राद्धप्रतिक्रमण वृत्ति |
| ९५६ | श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति ... |
| ९६२ | उपमितिभवप्रपंचा (कथा) ... |
| ९७५ | भुवनसुंदरी चरित्र ... |
| १००५ | मुनिपति चरित्र (सं) ... |
| १०१६ | यशस्तिलक (चंपू) ... |
| १०२५ | जिनशतक पंजिका ... |
| १०४२ | अध्यात्मकल्पद्रुम वृत्ति (बीजी) ... |
| १०७३ | नवपद प्रकरण वृत्ति ... |
| १०७३ | ,, वृत्ति ... |
| १०७३ | ,, ,, ... |
| १०७३ | ,, ,, ... |
| १०७६ | जंबूस्वामी चरित्र (बीजुं) ... |
| १०७८ | आराधनापताका ... |
| १०८० | अष्टकसूत्र वृत्ति ... |
| ११०८ | कथाकोश ... |
| ११२० | स्थानांग वृत्ति ... |
| ११२० | समवायांग वृत्ति ... |
| ११२० | ज्ञातधर्मकथा वृत्ति ... |
| ११२३ | षट्विधावश्यकसूत्र वृत्ति ... |
| ११२४ | पंचाशक वृत्ति ... |
| ११२५ | संवेगरंगशाला ... |
| ११२७ | विजयचंद्रकेवलिकथा (प्रा.) ... |
| ११२८ | भगवती वृत्ति ... |
| ११२९ | उत्तराध्ययन लघुवृत्ति ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. | रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. |
|---|---|---|---|
| ११३९ | पार्श्वनाथ चरित्र ( सं. ) ... | ११७२ | प्र. पंचाशकचूर्णि ... |
| ११३९ | महावीरस्वामी चरित्र (प्रा.)... | ११७२ | षडशीति वृत्ति ... |
| ११३९ | जिनभद्रीयबृहत्संग्रहणी वृत्ति ... | ११७२ | सार्धशतक वृत्ति ... |
| ११४० | मनोरमा चरित्र (प्रा.) ... | ११७२ | बंधस्वामित्व वृत्ति ... |
| ११५१ | शोभनस्तुति अवचूरि ... | ११७३ | निशीथविंशोद्देशक वृत्ति ... |
| ११५८ | कथारत्नकोश ... | ११७४ | उपदेशपद वृत्ति ... |
| ११६० | आदिनाथ चरित्र ... | ११७४ | नवतत्त्वगाथा वृत्ति ... |
| ११६० | शांतिनाथ चरित्र ( प्रा. ) ... | ११७४ | चैत्यवंदनाचूर्णि ... |
| ११६१ | पृथ्वीचंद्र चरित्र ( प्रा ) ... | ११७४ | चैत्यवंदन विवरण ... |
| ११६२ | जीवानुशासन वृत्ति ... | ११७५ | मल्लिनाथ चरित्र ( प्रा. ) ... |
| ११६४ | जीवसमास वृत्ति ... | ११७५ | पुष्पमाला वृत्ति ... |
| ११६५ | नवपदप्रकरण वृत्ति ( चोथी ) ... | ११७६ | पिंडविशुद्धि लघुवृत्ति ... |
| ११६५ | पार्श्वनाथ चरित्र ( प्रा. ) ... | ११७६ | रत्नकोशव्याख्या ... |
| ११६८ | न्यायप्रवेशकसूत्र टिप्पन ... | ११७८ | सप्तक्षेत्री ... |
| ११६९ | न्यायप्रवेशकसूत्र पंजिका ... | ११८० | पिंडविशुद्धि वृत्ति ... |
| ११७० | भवभावना ... | ११८० | पाक्षिकसूत्र वृत्ति ... |
| ११७० | भवभावना वृत्ति ... | ११८२ | नवपदप्रकरण वृत्ति ( पांचमी )... |
| ११७१ | सार्द्धशतक वृत्ति ... | ११८३ | श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र चूर्णि ... |
| ११७२ | धर्मरत्नकरंडक ... | ११८३ | प्रत्याख्यानस्वरूप ... |
| ११७२ | मुनिपति चरित्र ( प्रा. ) ... | ११८३ | ,, वृत्ति ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|
| ११८४ | दर्शनशुद्धिप्रकरण वृत्ति | ... |
| ११८५ | यतिप्रतिष्ठास्थापनस्थल | ... |
| ११८६ | परिग्रहप्रमाण | ... |
| ११८७ | विजयचंद्रकेवलि चरित्र | ... |
| ११९० | आख्यानमणिकोश वृत्ति | ... |
| ११९२ | नणिऊणक्षेत्रसमास वृत्ति | ... |
| ११९३ | मुनिसुव्रतस्वामी चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| ११९५ | सुरसुंदरी कथा | ... |
| ११९५ | गणरत्नमहोदधि | ... |
| ११९९ | सुपार्श्वनाथ चरित्र ( प्रा. | ... |
| १२०४ | उपदेशमाला कथा | ... |
| १२०७ | प्रद्युम्नचरित्र ( बीजुं ) | ... |
| १२०७ | उत्पादसिद्धि प्रकरण | ... |
| १२०७ | ,, वृत्ति | ... |
| १२१४ | सनत्कुमार चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२१४ | स्याद्वादकलिका | ... |
| १२१५ | नमिऊणसजलक्षेत्रसमास ति | ... |
| १२१६ | अनंतनाथ चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२१६ | नेमिनाथ चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२२० | नवतत्त्व वृत्ति | ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|
| १२२२ | श्रावकप्रतिक्रमणसूत्र वृत्ति | ... |
| १२२४ | पद्मप्रभस्वामी चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२२६ | पृथ्वीचंद्रचरित्र टिप्पनक | ... |
| १२२७ | जीतकल्प टिप्पनक | ... |
| | ( विषमपदव्याख्या ) | ... |
| १२२८ | पंचोपांग वृत्ति | ... |
| १२२९ | शीलभावना वृत्ति | ... |
| १२३३ | नेमिनाथ चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२३३ | नमित्तुवीरक्षेत्रसमास वृत्ति | ... |
| १२३८ | उपदेशमाला वृत्ति (दोघट्टी) | ... |
| १२४१ | कुमारपालप्रतिबोध | ... |
| १२४२ | प्रवचनसारोद्धार वृत्ति | ... |
| १२४८ | आत्महित कुलक | ... |
| १२४८ | विवेकमंजरी | ... |
| १ ५२ | अममस्वामी चरित्र | ... |
| १२६० | पल्योपमोपवासविधि | ... |
| १२६० | जयंतीप्रश्नोत्तरसंग्रह वृत्ति | ... |
| १२६१ | प्रत्येकबुद्ध चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२६४ | ऋषिदत्ता चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १२६४ | चंद्रप्रभस्वामी चरित्र (सं.प्रा.) | ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|
| १३३२ | द्याश्रय ( सं. ) वृत्ति | ... |
| १३३२ | बृहत्कल्प वृत्ति | ... |
| १३३३ | संघपट्टक लघुवृत्ति | ... |
| १३३४ | शालि चरित्र | ... |
| १३३४ | प्रभावक चरित्र | ... |
| १३३४ | शालिचरित्र काव्य | ... |
| १३३७ | विषयविनिग्रह कुलक वृत्ति | ... |
| १३३८ | शकुनसारोद्धार | ... |
| १३३८ | प्रवज्याविधान वृत्ति | ... |
| १३४९ | स्याद्वादमंजरी | ... |
| १३६३ | विधिप्रपा | ... |
| १३६४ | साधुप्रतिक्रमण वृत्ति | ... |
| १३६५ | भयहरस्तोत्र वृत्ति | ... |
| १३६५ | अजितशांतिस्तव वृत्ति | ... |
| १३६८ | गुरुपारतंत्र्यस्तव वृत्ति | ... |
| १३७२ | पुंडरीकचरित्र | ... |
| १३७७ | श्रामकधर्मप्रकरण वृत्ति | ... |
| १३८३ | चैत्यवंदनकुलक | ... |
| १३८३ | श्राद्धसामायिक प्रतिक्रमणसूत्र-व्याख्याप्रकरण | ... |

| रच्यानो संवत. | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|
| १३८५ | दीपालिकाकल्प ( छट्टो ) | ... |
| १३८५ | शत्रुंजयादित्रिषष्ठतीर्थकल्प | ... |
| १३८७ | दीपालिकाकल्प | ... |
| १३९० | हरिभद्रीजंबूद्वीपसंग्रहणी वृत्ति | ... |
| १३९२ | अंतरंगसंधि ( प्रा. ) | ... |
| १३९३ | विज्जाहल वृत्ति | ... |
| १३९४ | षडावश्यकविधि | ... |
| १४०० | स्तंभनपार्श्वप्रबंध | ... |
| १४०५ | चतुर्विशति प्रबंध | ... |
| १४१० | शांतिनाथ चरित्र ( सं. ) | ... |
| १४११ | कुमारपाल प्रबंध | ... |
| १४११ | श्राद्धदिनकृत्य वृत्ति | ... |
| १४११ | चैत्यवंदना वृत्ति बालावबोधा ( जूनीगुर्जर ) | ... |
| १४१२ | पार्श्वनाथ चरित्र ( प्रा. ) | ... |
| १४१२ | नरवर्मकथा | ... |
| १४१३ | ह्रस्वकथासंग्रह | ... |
| १४२२ | पारसीनाममाला | ... |
| १४२२ | सम्यक्त्वसप्ततिका वृत्ति | ... |
| १४२३ | दीपालिकाकल्प ( बीजो ) | ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|
| १४२६ | भक्तामरस्तोत्र वृत्ति | ... |
| १४२८ | श्रीपाल चरित्र | ... |
| १४२९ | प्रश्नोत्तररत्नमाला वृत्ति | ... |
| १४३६ | हरिविक्रमकाव्य वृत्ति | ... |
| १४३६ | उपदेशचिंतामणि वृत्ति | ... |
| १४३६ | उपदेशचिंतामणि अवचूरि | ... |
| १४४० | आवश्यक अवचूरि | ... |
| १४४१ | उत्तराध्ययन अवचूरि | ... |
| १४४२ | कुलमंडनसूरिकृतविचारामृतसंग्रह | |
| १४४७ | गुणस्थानक्रमारोह | ... |
| १४५५ | त्रैवेद्यगोष्ठी | ... |
| १४५५ | नमिऊणसजलक्षेत्रसमास वृत्ति | ... |
| १४५६ | यतिजीतकल्प वृत्ति | ... |
| १४५७ | सम्यक्त्वकौमुदी | ... |
| १४५९ | कर्मस्तव विवरण | ... |
| १४६२ | सम्यक्त्वकौमुदी ( चोथी ) | ... |
| १४६२ | धम्मिलचरित्र ( लोकबद्ध ) | ... |
| १४६२ | पुष्पमाला अवचूरि | ... |
| १४६२ | प्रबोधचिंतामणि | ... |
| १४६३ | रत्नशेखर कथा ( गद्यपद्य ) | ... |
| १४६३ | धन्नाकथा | ... |
| १४६३ | श्रीधर चरित्र | ... |
| १४६५ | सिरिनिलयक्षेत्रसमास अवचूरि | ... |
| १४६६ | गुर्वावली | ... |
| १४६६ | हैमधातुपारायण क्रियारत्नसमुच्चय ( सबीजक ) | ... |
| १४६७ | वारिविचार | ... |
| १४७८ | पर्वरत्नावली | ... |
| १४८० | अंचलमतदलन | ... |
| १४८४ | मित्रचतुष्ककथा | ... |
| १४८६ | पर्युषणस्थिति | ... |
| १४८९ | श्राद्धगुण विवरण | ... |
| १४९० | पंचदंडछत्रप्रबंध | ... |
| १४९० | विक्रमचरित्र | ... |
| १४९४ | पंचपरमेष्ठिस्तव | ... |
| १४९४ | ,, वृत्ति | ... |
| १४९५ | चित्रोडमहावीरविहारप्रशस्ति | |
| १४९५ | संदेहदोलावली लघुवृत्ति | ... |
| १४९६ | विक्रम चरित्र ( बीजुं ) | ... |
| १४९६ | षडावश्यक वृत्ति ( अर्थदीपिका) | .. |

| रच्यानो संवत. | ग्रंथनुं नाम. |
|---|---|
| १४९६ | सिंहासनद्वात्रिंशिका कथा ... |
| १४९७ | वस्तुपाल चरित्र ( बीजुं ) ... |
| १४९७ | अष्टादशस्तोत्र अवचूरि ... |
| १४९८ | षडावश्यकावधि ... |
| १५०२ | विंशतिस्थान चरित्र ... |
| १५०४ | कथामहोदधि .. |
| १५०६ | प्रतिक्रमणक्रमविधि ... |
| १५०६ | श्राद्धविधि वृत्ति ... |
| १५०७ | वाक्यप्रकाश ... |
| १५०९ | कथाकोश ... |
| १५१० | वीतरागस्तोत्र अवचूरि (चोथी) ... |
| १५१२ | पुष्पमाला वृत्ति ... |
| १५१२ | विमलनाथ चरित्र ... |
| १५१४ | आरंभसिद्धि वृत्ति ... |
| १५१५ | न्यायमंजूषान्यास ... |
| १५१५ | न्यायखंडखाद्य ... |
| १५१६ | आचारप्रदीप ... |
| १५१६ | मौनएकादशी कथा ( सं. ) ... |
| १५१८ | शत्रुंजयकल्प वृत्ति ... |
| १५१८ | उपदेशमाला अवचूरि ... |
| १५१८ | शत्रुंजयकल्पकथा ... |
| १५२५ | प्रतिक्रमण वृत्ति ... |
| १५३१ | श्रीपालनाटकगतरसवती वर्णन ... |
| १५४० | शालिवाहन चरित्र ... |
| १५४१ | चतुर्विंशति जिनस्तुति ... |
| १५४४ | उत्तराध्ययन वृति ... |
| १५४६ | उत्तराध्ययन दीपिका ... |
| १५४६ | दशश्रावक चरित्र ( प्रा. ) ... |
| १५५१ | कर्पूरप्रकरण अवचूरि ... |
| १५५२ | वर्द्धमानदेशना ... |
| १५५२ | उत्तराध्ययन वृत्ति ... |
| १५५४ | भुवनभानु चरित्र ( गद्य ) ... |
| १५५४ | श्रीपालचरित्र टीका ... |
| १५५४ | सोमसौभाग्य ... |
| १५५७ | श्रीपालकथा ... |
| १५६० | ज्ञानतरंगिणी ... |
| १५७० | दर्शनरत्नाकर ... |
| १५७३ | विचाररसायन प्रकरण ... |
| १५८२ | आचारांग दीपिका ... |
| १५८३ | सूत्रकृतांग दीपिका ... |

| रच्यानो संवत. | ग्रंथनुं नाम. | | रच्यानो संवत् | ग्रंथनुं नाम. | |
|---|---|---|---|---|---|
| १५९० | भरतेश्वर बाहुबलि वृत्ति | ... | १६३९ | जंबूद्वीप वृत्ति | ... |
| १५९१ | हैमवृहत्वृत्ति ढुंढिका ( वृहत् ) | ... | १६४१ | भावशतक | ... |
| १५९१ | हैमचतुर्थपाद वृत्ति | ... | १६४४ | इरियावहीषट्त्रिंशिका वृत्ति | ... |
| १६०३ | उपदेशसप्ततिका | ... | १६४५ | जंबूद्वीप वृत्ति | ... |
| १६०६ | शतार्थी | ... | १६४५ | पौषधषट्त्रिंशिका वृत्ति | ... |
| १६१५ | रायमल्लाभ्युदय | ... | १६४८ | गुर्वावली ( बीजी ) | ... |
| १६१७ | पौषधविधि प्रकरण वृत्ति | ... | १६५० | जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति वृत्ति(प्रमेयरत्नमंजूषा) | |
| १६१७ | औष्ट्रिकमतोत्सूत्र दीपिका | ... | १६५१ | स्तोत्रकोश | ... |
| १६२१ | वाग्भट्टालंकार वृत्ति | ... | १६५१ | अजितशांतिस्तव ( त्रीजो ) | ... |
| १६२३ | भावप्रकरण | ... | १६५२ | भक्तामरस्तोत्र वृत्ति | ... |
| १६२७ | पिंडविशुद्धि दीपिका अवचूरि | ... | १६५२ | रामचरित्र ( गद्य ) | ... |
| १६२७ | उपदेशरत्नमाला | ... | १६५२ | चतुर्विंशतिजिनस्तोत्र वृत्ति | ... |
| १६२८ | कल्पकिरणावली | ... | १६५३ | मंडलप्रकरण वृत्ति | ... |
| १६३० | हिताचरण प्राकृतवृत्ति | ... | १६५४ | मौनएकादशीकथामहात्म्य | ... |
| १६३२ | पार्श्वनाथ चरित्र ( सं. ) | ... | १६५४ | शब्दभेदनाममाला वृत्ति | ... |
| १६३३ | नयप्रकाश सटीक | ... | १६५४ | शिलोंछनाममाला वृत्ति | ... |
| १६३४ | स्थूलिभद्रचरित्र ( शीलप्रकाश ) | ... | १६५५ | ज्ञानपंचमीकथा | ... |
| १६३४ | गच्छाचार वृत्ति | ... | १६५६ | दानप्रकाश | ... |
| १६३६ | रूपसेन चरित्र | ... | १६५६ | ऋषभशतक | ... |
| १६३७ | उत्तराध्ययन दीपिका | ... | १६५७ | विचाररत्नसंग्रह | ... |

| रच्यानो संवत्. | ग्रंथनुं नाम. |
|---|---|
| १६५७ | उत्तराध्ययनकथाओ |
| १६६० | गौतमकुलक लघुवृत्ति |
| १६६० | पांडवचरित्र ( बीजुं ) गद्य |
| १६६० | हैमव्याकरण दीपिका दुर्गपदप्रबोध |
| १६६३ | अनिट् कारिका विवरण |
| १६६३ | तर्कभाषावार्तिक |
| १६६६ | ज्ञानादि कुलक चार वृत्ति |
| १६६७ | अभिधानचिंतामणि नाममाला सारोद्धार |
| १६६७ | स्याद्वादभाषा |
| १६६८ | कल्याणमंदिरस्तोत्र वृत्ति |
| १६६८ | नेमिनाथ चरित्र ( सं. ) |
| १६७१ | विवेकविलास वृत्ति |
| १६७४ | कल्पप्रदीपिका |
| १६७४ | अध्यात्मकल्पद्रुम वृत्ति ( बीजी) |
| १६७७ | कुमताहिविषजांगुली |
| १६७७ | कल्पदीपिका |
| १६७९ | उत्तराध्यन वृत्ति |
| १६८० | धातुरत्नाकर |
| १६८५ | विसंवाद शतक |
| १६८५ | अनेकशास्त्रसारसमुच्चय |
| १६८८ | विजयप्रशस्तिकाव्य वृत्ति |
| १६९६ | कल्पसुबोधिका |
| १६९७ | उपसर्गहरस्तोत्र वृत्ति ( त्रीजी ) |
| १७०५ | स्थानांगवृत्तिगतगाथा वृत्ति |
| १७०८ | लोकप्रकाश |
| १७१० | कल्याणमंदिर स्तोत्र वृत्ति |
| १७११ | जैनधर्मवर स्तोत्र |
| १७११ | ,, वृत्ति |
| १७१२ | पट्टावली |
| १७३६ | योगरत्नाकर |
| १७३७ | हैमकौमुदीलघुप्रक्रिया |
| १७४६ | अष्टलक्षी |
| १७४९ | चातुर्मासीव्याख्यान |
| १७५८ | हैमकौमुदी |
| १७६१ | प्रद्युम्न चरित्र |
| १७६५ | जातकदीपिका वृत्ति |
| १७८१ | उपदेशमाला वृत्ति |
| १७९१ | कल्याणमंदिर स्तोत्र ( बीजुं ) |
| १७९२ | हुताशिनी कथा |

# शुद्धिपत्र.

| पृष्ठांक. | पंक्ति. | अशुद्ध | शुद्ध. |
|---|---|---|---|
| २ | १४ | चार्णि | चूर्णि. |
| ४ | ३ | समवायाग | समवायांग |
| ,, | १२ | लघुवत्ति | लघुवृत्ति |
| ,, | १९ | वत्ति | वृत्ति. |
| ६ | १३ | द्वादशांगीवृत्ति | प्रवज्याविधान वृत्ति. |
| ८ | ६ | १६००० | १४००० |
| १० | ११ | ७०० | १७४६ |
| १२ | ३ | १०० | ११०० |
| ,, | ४ | प्रयम्न | प्रद्युम्न. |
| १४ | १३ | रच्यानो संवत् ८९० | श्लोक ८९० |
| १२ | ४ | अवचूर्णि | विशेषचूर्णि. |
| ,, | ५ | पर्याय | सर्वसिद्धांतविषमपदपर्याय. |
| १८ | १० | चेत्यवंदनावचूर्णि | चैत्यवंदनावचूर्णि |
| ,, | ५ | बृहच्चैत्यवंदनसटीक. | सकलार्हत् टीका. |
| ३२ | ९ | प्रतिक्रमणसंग्रहणी | आवश्यकनिर्युक्ति |
| ४८ | २ | पूव | पूर्व |
| ५० | ६ | रत्नसागर | रत्नसागर तथा सहजकीर्ति |
| ५२ | ८ | कल्पसमर्थन | कल्पांतराश्रितवृत्ति. |
| ५४ | ७ | श्लोक १८०० | श्लोक १७०० |
| ६६ | ७ | ¶ Dec. | अनेक पयत्रां छे. |
| ,, | ११ | योनिप्राभृत ‡ | डेक्कनमां अपूर्ण. |
| ७२ | ३ | S. H. | S. K. |
| ७६ | ३ | पंचविमर्श | आरंभसिद्धि |
| ,, | ४ | प्रमाणग्रंथ | डेक्कनमां नथी |
| ७८ | ४ | युक्तिप्रबोध | डेक्कनमां नथी |
| ,, | ५ | ,, ,, वृत्ति | डेक्कनमां नथी |
| ७९ | ३ | बादरत्नाकर | स्यादवादरत्नाकर |
| ,, | ६ | श्लो. ७००० | श्लो. ३००० |
| ८० | ६ | सिद्धांतरत्न | डेक्कनमां नथी |
| ,, | ७ | सिद्धांतरत्नावली | डेक्कनमां नथी |
| ८३ | १२ | सुमतिसाधु | साधुविजय |
| ८४ | ९ | अपौरुषेय देवनिराकमण | अपौरुषेय वेदनिराकरण |
| ८८ | ४ | जिवास्तित्ववाद | डेक्कनमां नथी |

| पृष्ठांक. | पंक्ति. | अशुद्ध | शुद्ध. |
|---|---|---|---|
| ९० | १६ | दृष्टिवाद | षट्दर्शन लघुवृत्ति |
| ९१ | १२ | न्यायसदर्थसंग्रह | अन्यमतीय |
| ९५ | ६ | अभावग्रंथव्याख्या | अन्यमती |
| १०० | १४ | हरिभद्र | हरिप्रभ |
| १०५ | १० | मुक्ताशुक्ति | प्रथमनाबेस्तबकविनानी |
| ११७ | १४ | शतक | डेक्कनमां नथी. |
| ,, | १५ | भाष्य | डेक्कनमां नथी |
| १२३ | ६ | जीवविचार ( बीजो ) | डेक्कनमां नथी. |
| ,, | ९ | चार्य | शैलाचार्य |
| १२५ | ७ | बृहन्नवतत्व | मूलनो गुजराति भाषार्थ छे. |
| १२८ | ५ | शास्त्रवार्तासंग्रह | शास्त्रार्थसंग्रह. |
| १२९ | ५ | अनेक शास्त्रसारसमुच्चय | बारभावनादिक अनेक प्रकरणो तुटक छे. |
| ,, | १० | ग्रंथसारसमुच्चय | डेक्कनमां नथी. |
| १३० | ५ | पंचास्तिप्रबोधसंबंध | डेक्कनमां नथी. |
| १३२ | १८ | जिनेश्वरनाम प्रकरण | जिनेश्वरसहस्रनामस्तोत्र. |
| १३९ | ६ | सिद्धसुखविंशिका | हरिभद्रसूरिनी वीशमी वीशी. |
| १४८ | १४ | आलोचना रत्नाकर | रत्नाकरपचीशी. |
| १५३ | १४ | उपासकपाठ | उपासकदशांगसूत्र. |
| १५५ | ८ | ओघसामाचारी | ओघनिर्युक्ति. |
| १५९ | ६ | केवली प्रकरण | डेक्कनमां नथी. |
| १६३ | ५ | मिथ्यात्वमथनचर्चरी प्रकरण | काळस्वरुप कुलक. |
| ,, | ६ | वादिविचार | वारिविचार ( मेरुतुंगकृत ). |
| ,, | ८ | विचारश्रेणि | महावीरस्वामीनी काळरात्रीसंबंधी चर्चा. |
| १६४ | १३ | वृत्ति | डेक्कनमां नथी. |
| १७३ | ८ | उपदेशशतक | १०० सो दृष्टांत. |
| १७६ | १२ | कृष्णयुधिष्ठिरधर्मगोष्टी | जैननोज छे. |
| ,, | १३ | कामघट | कामघटकथा. |
| १७८ | ४ | जयंतीप्रश्नोत्तरसंग्रह | डेक्कनमां नथी. |
| ,, | ५ | वृत्ति | डेक्कनमां नथी. |
| ,, | १३ | ज्ञानचतुर्विंशतिका | नारचंद्रज्योतिष. |
| १८२ | ६ | धर्मोपदेश | उपदेशशतक. |
| १८६ | ७ | भावना प्रकरण | भावना कुलक. |
| १८७ | १३ | रुपकमाला | कर्ता अन्यमती. |
| १९० | ३ | श्रावकप्रबोध | वर्धमानदेशना. |
| ,, | १५ | सम्यक्त्वपरीक्षा | सम्यक्त्वपरीक्षा बालावबोध. |

| पृष्ठांक. | पंक्ति. | अशुद्ध. | शुद्ध. |
|---|---|---|---|
| १९० | १५ | विमलसूरि | विबुधविमलसूरि. |
| १९२ | ७ | वृत्ति | डेक्कनमां नथी. |
| १९२ | ८ | संवेगचूडामणि. | डेक्कनमां नथी. |
| ,, | १० | संवेगद्रुममंजरी | संवेगद्रुममंजरीनी चोपाई. |
| ,, | ,, | संयमकवि | कुशलसंयमकवि |
| ,, | ११ | संवेगमंजरी | डेक्कनमां नथी. |
| १९३ | ५ | सिद्धांतरत्नावली | डेक्कनमां नथी. |
| २०५ | ४ | दवसूरि | देवसूरि. |
| २०९ | १५ | हेमविजय | ( दीगं. ) हेमविजय |
| २१४ | ५ | क्षमर्षिप्रबंध | अनेक प्रबंधो छे. |
| २१५ | ५ | नंदोपाख्यान | नवनंदकथा. |
| २१६ | १० | भोजप्रबंध | डेक्कनमां नथी. |
| २१८ | ८ | विक्रमादित्य चरित्र | विक्रमादित्य पंचदंड छत्रप्रबंध. |
| ,, | ,, | रामचंद्र | अभयचंद्रना शिष्य रामचंद्र. (रच्यानो संवत् १४९०) |
| २१९ | ४ | सोलकप्रबंध | कुमारपाळप्रबंधमांनो छे. |
| ,, | ८ | हरिवंश | कर्ता अन्यमति व्यास. |
| ,, | १५ | कनकावती चरित्र. | रूपसेन कनकावती चरित्र |
| २२२ | ९ | कृष्णचरित्र | डेक्कनमां नथी. |
| २२६ | ६ | पद्मावती चरित्र | पद्मचरित्र ( विमलसूरिकृत ) |
| २२८ | ८ | भरत चरित्र | डेक्कनमां नथी. |
| २३१ | ४ | दवविजयगणि | देवविजय गणि. |
| २३३ | १७ | श्रीचंद्रकेवली चरित्र | डेक्कनमां नथी |
| ,, | १८ | ,, ,, प्रशस्ति | डेक्कनमां नथी |
| २३४ | ११ | जयकार्ति | जयकीर्ति |
| २४५ | ४ | (सं.) | (प्रा.) |
| ,, | ५ | (सं.) | (प्रा.) |